श्रीपालचरित्र।

कठिन शब्दों के अर्थ सहित

कवि परिमल्लकृत।

जिसको

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी ने छपवाया

JAIN RELIGIOUS GRANTHA SERIES.

No. 4

सन् १९०४ ई०

मूल्य १॥) ☞ मिलने का पता—

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी मालिक दिगम्बर जैन धर्मपुस्तकालय लाहौर

पन्जाब एकानोमीकल यन्त्रालय लाहौर में प्रिन्टर लाला लालमन जैनी के अधिकार से छपा

भूमिका

दोहा।

लहोर नगर शुभ थान है, देश पंजाब मंझार ।
ज्ञानचन्द्र जैनी तहां, निवसत बृद्ध अकार ॥
बडा पुत्र जु शुमेरचंद, है वकील शुभ चित्त ।
उन से छोटा जयचंद, डाकटर परम पवित्त ॥
श्रीपाल चारित्र यह, उत्तम ग्रन्थ वसेख ।
छापन को तिनने कहा, कथन रसीला देख ॥
हमने लिखत शुभ ग्रन्थ यह, शुद्ध करो चितलाय ।
कठिन शब्द का अर्थ भी, तामें लिखो बनाय ॥
छापे खाने भेज कर, सुन्दर अक्षर माय ।
जैन लालमणि मित्र से, तुरत लियो छपवाय ॥
जयवंतो परिमल्ल कवि, जिन यह लिखो पुराण ।
सोलह सै बचावन विषे, विक्रम संवत् जाण ॥
नर नारी जे भव्यजन, पढें सुनें मन लाय ।
रिद्ध सिद्ध अति ते लहें, पावें सुख्य अथाय ॥
बढे कुटम्ब बहु संपदा, पुत्रादिक परवार ।
चक्रिवत सुख भोग कर, होवें भवदधि पार ॥
लधो बधो कुल बेलअति, सगरी जैनसमाज ।
ज्ञानचन्द्र की प्रार्थना, मानो श्रीजिनराज ॥

॥ ओंनमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ श्रीपालचरित्रप्रारंभः

मङ्गलाचरणम्।

॥ दोहा ॥

सिद्ध सिद्धिदायक सदा, तिहुं लोक तिहुंकाल।
मुनिगण ध्यावें ध्यान धर, गृहस्थ जपत ले माल ॥ १ ॥
विघ्नहरण मंगलकरण, नाम जिन्होंका जान।
मन बच काया सों नमूं, कर हो मम कल्यान ॥ २ ॥
सिद्धचक्रव्रत है महा, रिद्धि सिद्धि दातार।
पायो फल श्रीपाल जो, कहूं सुनो नर नार ॥ ३ ॥

पंचपरमेष्ठी की स्तुति।

॥ चौपाई ॥

सिद्धचक्रविधि केवल रिद्धि। गुण अनंत फल जाको सिद्धि।
प्रणमों परम सिद्ध गुरु सोइ। भविक संग ज्यों मंगल होइ ॥ ४ ॥

---

(१) माल = माला। (२) मम = मेरा। (४) चक्र = समूह। विधि = करणा। ऋद्धि = वृद्धि वा ज्ञान। भविक = मुक्तिगामी जीव। मङ्गल = विघ्नोंका विनाशक। सिद्धचक्र = अर्थात् सिद्धों के समूह का जिसमें पूजनादिक हो ऐसा जो व्रत उसकी विधि केवल ऋद्धि अर्थात् केवलज्ञानके देनेवाली है। इसका फल अनन्त गुणों की सिद्धि है अथवा जिसमें अनन्त गुण हैं और उसका फल सिद्ध होना है।

सिद्धपुरी सिद्धन को थान। सिद्ध पुरुष आनंद निधान।
प्रगटज्योति त्रिभुवनमें आहि। अलख देव को लखय न ताहि॥ ५॥
अंजनरहित निरंजन जानि। हीनबुद्धि क्यों सकूंवखानि।
जय जय नमो देव अरहंत। हैं प्रसिद्ध गुण जाहि अनंत॥ ६॥
जय जय आचारज मुनि राय। अमर खचर जन बंदहि पाय।
जय जय नमो परम उवज्झाय। उदित गुण तप कह्योनजाय॥ ७
जय जय साधुलोय वरबीर। अमृत बुद्धि वखाणो धीर।
जिह्को नमस्कार कर जोर। जासों काटे यम की डोरि॥ ८॥
जय जिनंद आदीश्वर देव। सुर नर कृत पद पंकज सेव।
जय अजितेश्वर गुण ही निधान। मान रहित मिथ्यातम भान॥९

---

(५) सिद्धपुरुष = मोक्षगयेहुये। आनन्द = सुख। निधान = खान। प्रकट = प्रत्यक्ष। त्रिभुवन = स्वर्ग, मर्त्य(भू), पाताल। इन तीनों लोकोंमें। प्रत्यक्ष = प्रकाशमान है। अलख = जिन्हें कोई न लखे (जाने) गुप्तरूप। अर्थात् उनको कोई भी चक्षुरादि इन्द्रियोंसे नहीं जान सकता।

(६) अंजन = सुरमा। परन्तु यहां अञ्जन पदका कर्मकलङ्क अर्थ है। निरञ्जन = कर्म कलंकरहित। अरहन्त = परमपूज्य। आचारज = मुनिसंघ के गुरु धर्माचरण करने कराने वाले। मुनिराय = मुनीके राजा (आचार्य)। अमर = देवता। खचर = आकाश में चलने वाले (तारागण)। जन = समूह। (पुरुष)परन्तु यहां देवताऔर तारोंके समूह यह अर्थ है।

(७) जय = जि, धातु (root) जीतने अर्थ मेंहै लोट् लकार (mood)आशीर्वादअर्थ मध्यम पुरुष (second person)एक वचन (singular number) अर्थात् तू जीत(सबसे उत्कृष्ट हो.)। उवज्झाय = उपाध्याय शास्त्र के पढाने वाले। उदित = उदयहुआ। वढाहुआ ऐसा गुण और तप जिनका वर्णा नहीं जाता।

(८) लोय = लोग (समूह)। वर = श्रेष्ट। वीर = बलवान्। अमृतवुद्धिवखाणो धीर = अमृत तुल्यबुद्धि वाले। धीर = धीरजसंयुक्त। यमडोर = यमकी फांसी

(९) सुर = देवता। पद = चरण। पंकज = कमल। अजितेश्वर = अजितनाथ निधान = निधि। तम = अंधेरा। भान (भानु) = सूर्य।

जय जिन संभव हरै विकार। सुमिरत अभय दान दातार।
जय अभिनंदन नन्दन वीर। गुण गरिष्ठ भव भंजन धीर ॥१०॥
जय सुमतीश्वरपरमउदास। सुमतिप्रकाशक कुमतिविनाश।
जय जय पद्मप्रभु पहुपाय। श्रीसंजुत कमलासन आय॥ ११ ॥
जय सुपास उपहास निकंद। प्रणमत दूर होय भ्रम फंद।
जय चंद्रप्रभु केवल नाम। होहु कृपाल सबै सुख धाम ॥ १२
जयजय पुष्प हरयो जिहि मार। दुद्धरधरियो चारित्र भार।
जय जय शीतलनाथ मुनिन्द। असुर यक्ष सेवैं सुरवृन्द ॥ १३ ।
जय श्रेयांस रहित विध नेश। उदित मुक्ति वधू परमेश।
जय जय वासपूज्य व्रतलीन। जैन धर्म्म उपदेश प्रवीन ॥१४॥
जय श्रीविमल देव तन चंग। विमल वर्ण गुण विमल अभंग।
जय अनंत जिनवर शुभथान। मन वच क्रम कर जान प्रमान ॥१५
जय श्री धर्मनाथ सुख गेह। कंचन वर्ण विराजत देह ।
जय श्री शांति पयासी शांति। दुःख हरण मूरति सो भांति ॥ १६ ॥
जय श्रीकुन्थ कुपंथ विनाश। केवल उदित ज्ञान परकाश ।
जय श्री अरहनाथ जगनाह। अतिवलिष्ठ जिहि मोह नसाह१७

---

(१०) अभय = भयका नाश। नन्दन = आनन्द देने वाले। वीर = बलवान्।
गरिष्ट = बडे भारे। भवभंजन = संसारके नाश करने वाले
(११) पहुंपाय = पैरों पडूं। श्रीसंजुत = शोभा वाले। कमलासन = पद्मासन।
(१२) उपहास = मखौल। निकंद = नाश करने वाले। धाम = गृह।
(१३) पुष्प = पुष्पदंत। मार = कामदेव। असुर = दैत्य। वृन्द = समूह।
(१४) नेश = निषेध। मुक्तवधू = मुक्तिरूपस्त्री। प्रवीण = चतुर।
(१५) विमल = शुद्ध। अभंग = न हारने वाले। प्रमान = प्रणाम।
(१६) गेह = घर। पयासी। तिसाए अर्थात् संसारमें भ्रमते जीवोंको शांति देने वाले।
(१७) कुपंथ = खोटा रस्ता। जगनाह = जगन्नाथ (जगत्के स्वामी)।

जय श्रीमल्लि मलो जिहमान। पुण्यतीर्थ महि जो परधान।
जय श्री मुनिसुव्रत मुनिराय। इन्द्र चन्द्र सुर सेवें पाय ॥१८॥
जय जय नमि रत्न त्रय धार। मन के छाडे सकल विकार।
जय श्रीनेमिनाथ गुण थान। तजि राजल पहुंचे निरवाण ॥१९
जय श्री पार्श्वनाथ जिनन्द। फणमणि मंडित त्रिभुवन चंद।
जय श्री वर्द्धमान जिन राय। केहरि लक्षण आसनपाय ॥ २०
चतुरवीस जिन ये गुणमाल। प्रणमत दूर होय भव जाल।
और जे विहर मान जिन बीस। महा विदेहमें हैं जगधीस ॥ २१
तीन लोक जिन मंदिर जिते। ऊरध मध्य अधो में तिते।
कीनो नमस्कार परिमल्ल। जिन तें दूर होय सब सल्ल ॥ २२ ॥

अथ ग्रन्थ प्रारम्भः।

॥ दोहा ॥

पंच परम गुरु को नमूं, नमूं चौबिस जिन राय।
श्रीपालचारित्र की, भाषा कहूं बनाय ॥ २३
मैं मतिहीन अशक्त हूं, सारद करो सहाय।
सारद माता जगत् की, तिष्ठो मुझ उर आय ॥ २४

---

(१८) मलो = नाश किया। मह्वि = बीचमें।

(१९) रत्नत्रय = सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र। थान = स्थान। निर्वाण = मोक्ष।

(२०) फणमणि = सांपके फणकी मणि। चंद = चंद्रमा। केहरि = शेर

(२२) सल्ल = शल्य (पीडा)।

(२४) अशक्त = असमर्थ। शारदा = सरस्वती (जिनवाणी)। उर = हृदय।

अशुभ हरणी जग बंदनी, विद्या के बल संग।
देह बुद्धि ब्रह्मायनी, होय उक्त नवरंग ॥ २५ ॥

॥ चौपाई ॥

जिनमुख अंबुज से उच्चरी। त्रिभवन माहिं कला विस्तरी।
द्वादशांग भाषत भगवती। जासु प्रसन्न होय बहुमती ॥ २६
विमल वर्ण वेदन में कही। निज निरपेक्ष अभंग भा रही।
निर्गुण ताहि कहे बहु चंग। गुण जामें राजे सरवंग ॥ २७ ॥
सारद गुण गाढो करि गहें। मूर्ख से पण्डित पद लहें।
षट् दर्शन मुख मंडन शार। मिथ्या कुमति विनाशन हार ॥ २८
स्वामिनी जन पर होहु दयाल। बढै कथा जो होय रसाल।
तोहि सुमरि करि लेखन गहूं। सिद्धचक्र विधि वर्णन कहूं ॥ २९
जो शारद पसाय मन लहूं। नवरस कथा प्रगट करि कहूं।
गुरु गौतम मो देहु पसाव। बाढै कथा होय मन चाव ॥ ३०

---

(२५) ब्रह्मायनी = ब्रह्माणी। उक्त = कथन। नवरंग = नूतन नया और खुश करने वाला अर्थात् मेरा कथन नया और आनंद दायक हो।

(२६) अम्बुज = कमल। भाषत = कहलाती है। मति = बुद्धि अर्थात् जिस पर प्रसन्न होय उसकी बुद्धि बडी होजावे।

(२७) विमल = शुद्ध (सफैद)। निज निरपेक्ष = जोकि दूसरे की अपेक्षा (परवाह) न रखे। अभंग = जिसकाभंग (नाश) नहो। भा = कान्ति (शोभा) अर्थात् जिसकीप्रभास्वयं प्रकाशऔर अभंग है। निर्गुण = गुणरहित अर्थात् शुद्ध। भावार्थजिसजिनवाणीमेंशुद्ध होनेसे रजो तमो आदि बंधहेतु गुण नहीं हैं। इस अभिप्राय से इसे निर्गुण कहे हैं। चंग = अच्छी (उज्वल)।

(२८) सारद = (शारदा) जिनवाणी। षट् = छै। दर्शन = शास्त्र। मंडन = भूषण। भावार्थ न्याय आदि छै हो हैं मुखकी शोभा जिसकी।

(२९) रस = स्वाद (आनन्द)। रसाल = आनन्द देने वाली अथवा रसीली (शृङ्गारहास्य आदि नव रसों वाली)। सिमर — ध्यापकर। लेखन = कलम।

(३०) पसाव प्रसन्नता (खुशी) कृपा। मनलहूं = मेरे परहो। पसाव = सहायता।

कोटी भट्ट श्रीपाल चरित । वरनन करूं सुनो धर चित्त ।
पढत सुनत मन उपजे चाव । कवि परिमल्ल हिए धरि भाव ॥ ३१
कैसे श्रीपाल अवतरो । कैसे कुष्ट व्याधि कर भरो ।
कैसे बन उद्यान हि गयो । कैसे सिद्ध चक्रव्रत लयो ॥ ३२
कैसे सागर डूबो जाय । कैसे कोढ जु गयो पलाय ।
कैसे दलतिन पायो घणो । क्यों तिन प्रगटयो बल आपणो ॥ ३३
कैसे राजकियो परवान । कैसे प्रगटयो चल्यो पुराण ।
मूलग्रन्थ के मैं अनुसार । भाषा करूं पढ़ें नर नार ॥३४
सम्वत् सोलह से उच्चरो । ता उप्पर इक्यावन धरो ।
मास असाढ पहुंचो आय । वरषा ऋतु को कहै बढाय ॥ ३५ ॥
पक्ष उजालो आठें जाणि । सुकरवार वार परवाणि ।
कवि परमल्ल शुद्धकरचित्त । आरंभ्यो श्रीपाल चरित्त ॥ ३६ ॥
बाबर बादशाह होगयो । तासुत शाह हुमायूं भयो ।
तासुत अकबर शाह प्रमाण । सो तपतयै दूसरो भाण ॥ ३७ ॥
ताके राज न होय अनीत । बसुधा सकल करी बस जीत ।
केतेक देश तासकी आण । दूजो औरन ताहि समान ॥ ३८ ॥

---

(३१) परिमल्ल = इस भाषा ग्रन्थ कर्ता का नाम है।
(३२) बन = जङ्गल = इस में वृक्ष और उजाड दोनों होय हैं । उद्यान = वृक्ष समूहादि जिसमें हों इसमें उजाड नहीं होती ।
(३३) सागर = समुद्र । पलाय = भाग जाना (जाता रहा)। दल = फौज ।
(३४) मूलग्रन्थ = आचार्य रचित आदिग्रन्थ ।
(३६) यह ग्रन्थ संवत् १६५१ = आषाढ शुदि आठें शुक्रवार को परिमल्ल कवि ने लिखना शुरु किया था।
(३७) उस वकत बावर के पोते हुमांयु के पुत्र अकबर बादशाह का राज्य था भान = सूर्य ।(३८, बसुधा = पृथ्वी।

ताके राज कथा यह करी। कवि परमल्ल प्रगट विसतरी।
जंबूद्वीप प्रगट शुभ थान। योजन लक्ष तास परमान ॥ ३९ ॥
जाचहुँ ओर सिंधु जल बहै। कोऊ जाको पार न लहै।
तामें भरत क्षेत्रपरधान। बहुत देश तामें परवान ॥ ४० ॥
मगध नाम राजे तहां देश। भूमंडल में सुयश अशेष।
नगरी राजग्रही सुबसाइ। ताकी शोभा कही न जाय ॥ ४१ ॥
अमरपुरी अमरन की जिसी। है प्रसिद्ध महिमंडल तिसी।
सुंदर गेह शनखने अवास। बाडी बाग कुवा चहुं पास ॥ ४२ ॥
श्रेणिक राज तहां अरिसल्ल। करै राज प्रगटो भुविमल्ल।
एक छत्र निवसे इह रीति। वसुधा घणीकरा वश जीति ॥ ४३ ॥
कथा नाथ है ताको नाम। पुण्यवंत सबको सुखधाम।
ताको सतसील जाणिये। धम्मीत्मा बसें बाणिये ॥ ४४ ॥
कोऊन ताके दुःखीयन लोइ। दया दान पालें सभ कोइ।
ताके बहुसुत महा सुजाण। तामें वारिषेण परधान ॥ ४५ ॥
चेलणा राणी है प्रधान। सत्य शील अरु गुणहि निधान।
बहुसुन्दरि कछु कहि नहिपरै। दर्शन होत पाप को हरै ॥ ४६ ॥

---

(३८) योजन = चारकोस। (४०) सिंधु = समुद्र।
(४१) मगध = देश जोकि काशी और गया के बीच है। भूमण्डल = सारी पृथ्वी। सुयश = अच्छा जस। अशेष(सारी दुनियांमें है। सुवसाय अच्छीतरह बसी।
(४२) अमरपुरी = अमरावती। अमरन = देवते। मही = पृथ्वी। मण्डल = घेरा। अवास = मकान। बाडी = बगीची (चमन)
(४३, अरिसल = दुशमनों को दुःख रूप। भुवि = पृथ्वी में। मल्ल = पहिलवान्
(४४) सुखधाम = सुखी का घर। (४५) बहु = बहुत। सुत = पुत्र। सुजान = पण्डित। प्रधान = बडा।
(४६) निधान = कान (खान)। परवीन = चतर।

मिथ्यादर्शन रहित सुजान। समकित की परतीति बखान।
अति ही जैनधर्म करि लीन। दया दान पालन परवीन ॥ ४७॥
करे राज्य श्रेणिक नरपार। बहुत राय सेवैं दरबार।
एक दिवस सिंहासण आय। बैठे सिरपर छत्र धराय॥ ४८ ॥
सेवक लक्ष सेवता करें। हय गय गाय चवर द्वै ढुरैं।
तहं अवसर आयो बनपार। हर्षवन्त मनमांहि अपार ॥ ४९ ॥
छहऋतु के फूलफल जु भये। अति मनोज्ञ राजा को दए।
विपुलाचल गिरवर परधान। आयो समोसरण तिहिथान ॥ ५०॥
चतुर वीसमों बीर जिणंद। दरसण तें दुःख दूर निकंद।
कोतूहलकछु कह्यो नजाय। सुरग लोक तहं ठैरो आय ॥ ५१ ॥
इंद्र चन्द्र धरणेंद्र फणेश। तिनको बहुत होय परवेश।
स्तुति करत जोर दोउ हाथ। ठाडे रहत सुणो हो नाथ ५२॥ ॥
अमर खचर गण गंधर्वजिते। सेव करण आवत हैं तिते।
ऐसी सुणि आनंद्यो राव। शीघ्रताहितेहि कियो पयाव ॥ ५३ ॥
करकंकण आभरण अपार। दीनो ताहि न लागी बार।
आसन ते उठि ठाडो भयो। मनको भरमसबै भजिगयो ॥ ५४ ॥

---

(४८) नरपार = (नरपाल) राजा। (४९) सेवकलक्ष = लाखों नौकर। हय = घोडा। गय = हाथी। बनपार = बनपाल (माली)।

(५०) गिर = पहाड। वर = अच्छा। गिरवर = अच्छा पहाड।

(५१) चतुर्वीसमों = चौबीसवां। वीर = महावीर। कौतूहल = कौतुकतमाशा देखने की ख्वाहिश।

(५२) फणेश = नागेन्द्र। प्रवेश = दाखिल होना।

(५३) खचर = आकाश में चलने वाले। पयाव = चलनेकी तय्यारी = वा चलना

(५४) अपार = अनन्त।

तिहते उपज्यो सुख अशेष। तीन प्रदक्षिण दई नरेश।
परोक्ष नमो मनमें सुखपाय। फूलो अंग न आंगन माय ॥५५॥
आनंदभेर दिवायसुखलहो। परिजन सहित राव उमगहो।
पाटवर्धना गुणन अभंग। नारी चेलना ताके संग ॥ ५६ ॥
गुण वरणत सो पहुंचो तहां। समोसरण श्रीजिनको जहां।
द्वादश कोठा देषण लए। धनपति आय आप निरमए ॥ ५७ ॥
तिनकीशोभा वरण जोकहूं। कहत कथा कछु अंत न लहूं।
मानस थंभ जु पेषियो राव। अतिआनंद भयो चितचाव ॥ ५८ ॥
तब जिनवर थुति लागो करण। जय जय जन्म जरा भवहरण।
जय जय उद्दित जोत जिनेश। जयजय मुक्तिवधूपरमेश॥ ५९ ॥
जयजय छियालीस गुणमंड। जय अतिशय चवतीस प्रचंड।
तीन लोक की शोभाताहि। कोऊ और न उपमा आहि॥६०
जयजय केवल णाणपयास। जयजय निर्नाशन भवत्रास।
जयजय मान रहित जिनदेव। सुरनर असुर करें तुम सेव ॥६१॥
जय जय जय जिनस्तुति करेय। वार तीन परदक्षिणा देय।
नयोप्रत्यक्षसवदुखभजिगयो। मनबचकाय सुखीअतिभयो ॥ ६२ ॥
गौतम स्वामी गणधर आहि। नमस्कार कियो नृपताहि।
जिहठां अर्जिकान को साथ। बंदन तहांकरो नृपनाथ ॥ ६३ ॥

---

(५५) अशेष = बहुतही। परोक्ष = आंखोंसेपरे(पीछे)। अंग = शरीर। आङ्गन = हाथ पांउ वगैरा अंग। अर्थात् वह खुशीमे भरे अंगीकार शरीर में नहीं समा सका।
(५६) आनन्दभेर = खुशीकाबाजा। उमगहो = खुशहुवा। पाटवर्धन—हाथीका नाम।
(५७) द्वादश = बारह। धनपति = कुवेर। निरमये = बनाये। (५८)पेखियो = देखियो
(५९) जरा = बुढापा। उद्दित = उदय (जागती)। वधू = स्त्री। परमेश = पति
(६१) णाण = ज्ञान। पयास = युक्त। निर्नाशन = नाशकरण वाले। भवत्रास = संसार को भय। (६२) प्रत्यक्ष = साम्हने। (६३) साथ = समह।

और क्षुल्लक तहां जुरे जोआय। समाधान तिन पूछो राय।
ताके हृदय न कछु कुभाव। नरकोठे तहां बैठो राव॥ ६४ ॥

१—अंग देश में चंपापुर का वर्णन

श्रेणिक पूछे वीर जिनेश। सिद्धचक्र फल कहो परमेश।
गुण अनंत राजें सर्वंग। बाणी तबउचरी जो अभंग॥ ६५॥
गौतमस्वामी गुणह निधान। लागे पूछन केवलज्ञान।
सुन सुन श्रेणिक रायप्रवान। सिद्धचक्रव्रत कह्यो बखान॥ ६६॥
जंबूद्वीप मनोज्ञ अपार। योजन लक्ष तास विसतार।
क्षारसिंधुता चहुंधा वहै। अति अथाह को पार न लहै॥ ६७॥
तामें भरतक्षेत्र सो सार। सबही क्षेत्रन में अधिकार।
तामें अंगदेश परधान। अवर देश नहीं ता सम आन॥ ६८
तहां नगर चंपापुर बसै। देखत जाहि चित्त उल्हसै।
साहैं तहां सतखने अवास। द्वारे कंचन कलश निवास॥ ६९
घर घर प्रतिमा चैत्य सुठाण। अति उज्ज्वल ते फटिकसमान।
विच विच ही ते बने सुरंग। चमकत तिनमें कंचनरंग॥ ७० ॥
घर घर सबै लोग परधान। लक्ष्मीवन्त सर्व गुण जान।
घर घर सूरि वेद ध्वनि करें। संस्कृत भाषा ते उच्चरें॥ ७१ ॥
सामुद्रिक व्याकरण पुराण। घर घर करते अर्थ बखान।
ज्योतिष अर वैदिक गुण लीन। सब नर कोष कला परवीण॥७२

---

(६५) उचरी = खिरी। अभंग = निरर्गल। (जोकि टूटे नहीं)। (६६) निधान = निधि। (६७) क्षारसिंधु = खारासमुद्र। (६८) तासम = उसके बराबर। आन = दूसरा। (६९) उल्हसै = खुश होवे। अवास = आवास (गृह, घर,) (७०) चैत्य = मन्दिर। सुठान = अच्छी जगह। कंचन = सोना। (७१) सूरि = पण्डित (७२) सामुद्रिक = हाथ की रेखाओं के फल कहने वाला शास्त्र।

सब ही दया धर्म को धरें । परहिंसा नहीं कोऊ करें ।
अतिरमणीक हाट बाजार । वसें तहां नर साहूकार ॥ ७३ ॥
वणजें नग निर्मोलक चुनी। जिनको यश बोले सब दुनी ।
कहूं होय बालक पेखणो । सो कछु ताहि कहत नहीं बणो ॥ ७४
कहिं कहिं नाटक नाचै ठाट । कहिं कहिं याचें ब्राह्मण भाट ।
कुली छतीस वसें जहां लोय । कुल की रीति न छाडे कोय ॥ ७५
अपने अपने चित्त सब सुखी । तिह पुर माहि न कोऊ दुःखी ।
आस पास खाति का सुवाण । वहु बावडी कुवा निवाण ॥ ७६
अर तहां बाग रवाने खरे । सघन दाख दाडम द्रुम फरे ।
बहुत भान्ति अमृतफल रूख । देखत नयन न लागे भूख ॥७७॥
फले नारियल अंब अभंग । बहुत फली नारंग सुरंग ।
अगिणत केला और खजूर । रहे विजोरा तहां भरपूर ॥ ७८ ॥
कुसम कदंब रहे वहु फूल । रहे भ्रमर तिनके रस भूल ।
तिह की शोभा कही न जाय । योजन वास रही महकाय॥ ७९ ॥

॥ वस्तुबन्ध छन्द ॥

केवरो केतकी मरवो मोगरो अरजाय
गुलाब कुंजो अवर करणो रह्यो तहां महकाय ।

---

(७४) नग = रत्न । निर्मोलक = अमोलक (जिनका मूल्य नहीं हो सके)
चुनी = चून्नी (लाल रत्न) । दुनी = दुनियां । पेखणो = खेल ।
(७५) याचे = मांगे । कुली = जाति ।
(७६) खातिका = खाई । सुवाण (सोपान) = पैडी । निवाण = झीलें तालावआदि
(७७) रवाने = सुन्दर । सघन = संघने । दाडिम = अनार । द्रुम = दरख्त ।
(७८) अंब = आम । अभंग = वेशुमार । सुरंग = अच्छे रंगवाली । अगणित = जो
गिणे न जावें । बिजौरा = निम्बूकीजातका खट्टाफल जिसमें सुईगल जावे
(७९) कसुम = फूल ।

मंजरी अरजुही चंपो राइ वेलि सुवास
पाण्डरु निबारो राइ चंपो देखत बढै हुलहास
फूली चमेली सरषडी मुचकुंद शोभित फूल
और अनेक सुगंध जितकित बहुत फूलै फूल ॥ ८० ॥

॥ चौपाई ॥

तहां फूल फूले बहु भाय। शोभा कछु कही नहिं जाय।
बहु कोकिल बोलें मधु भाष। सारस सूवा अगणितलाख ८१
पांडु खूमरी अवर चकोर। कहूंकहूं बोलें विचविच मोर।
जो सब पंछी वर्णन कहूं। कहत कथा कछु अंत न लहूं ८२ ॥
और तहां जो सरोवर भले। मानो उमगि आप ही चले।
तिन में अंबुज बहुत विशाल। लेते वास बन्धें अलिमाल ॥८३
चकवा चकवी केलि करांय। जल की कूकरी तहां फहरांय।
जिनकी शोभे मधुरी चाल। रहे निकट बहू यूथमराल ॥ ८४
जलचर जीव रहत जहं जिते। बढै कथा जो वर्णे तिते।
हैं मनोज्ञ सब ही विधि खरी। मानों इन्द्र पुरी खिस परी ॥ ८५

२—राजाअरिदमन, राणीकुन्दप्रभाकावर्णन

करे राज अरिदमन नरेश। ताको बहुत आहि अलवेश।
वीरदमन ता लहुरो वीर। कोटीभट्ट अरु साहस धीर ॥ ८६ ॥

---

(८०) इस में केवडा आदि फूलों के नाम हैं।

(८१) मधुभाष = मीठी बोली। (८३) उमग = उछलकर। अंबुज = कमल विशाल = बडे बडे। अलि = भौंरा। माल = बहुत से।

(८४) केलि = क्रीडा। फहराय = फिरें। यूथ = समूह। मराल = हंस।

(८५) खिसपरी = उतरी। (८६) लहुरो = छोटा। बीर = भाई।

हय गय पायक अगम अपार। परिग्रह बहुत लहे को सार।
शूर असंख रहें दरबार। जे ढावें छत्तीस हथ्यार ॥ ८७
आज्ञा देश देशांतर दूर। सुयश रह्यो महि मंडल पूर।
पट्टणगढ नगरी भूपाल। तिन की आवे बहुत रसाल ८८ ॥
एकछत्र सो आहि नरिंद। मानो सो है दूजो इन्द।
कन्दप्रभा राणी तसु अंग। पाटप्रधान जो गुणन अभंग ॥ ८९ ॥
शीलवंत सुन्दरी अतिसोय। तासम त्रिया अवर नहीं कोय।
जैसे रामचंद के सिया। प्रगट पुराण जनक की धिया ॥ ९०
जैसे शशि के रोहिणी नेह। जैसे कमला हरि के गेह।
समय समयके सुख हैं जितो। विलसतिपियकेसंगसो तितो ॥९१॥
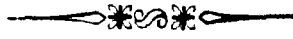
३—श्रीपाल का जन्म ॥

एकै दिन सो रैन अवास। सोय गई कर भोगविलास।
तीन याम निश बीती जबै। चौथो याम आइयो तबै ॥ ९२ ॥
भयो प्रफुल्लित ताको हियो।। अति उत्तम सुपनों पेषियो।
धवल महागिरि कंचन वर्ण। कल्पवृक्ष देख्यो सोरवण ॥९३॥
तब तहं अन्धकार मिट गयो। पहु पाटी भुणसारो भयो।
बहु बुधिवन्त सयानी खरी। नाह पास भाषे सुन्दरी ॥ ९४

(८७) हय = घोडा। गय = हाथी।
(८८) देशांतर = दूसरे देश। रसाल = खिराज।
(८९) आहि = था। (९१) शशी = चांद। नेह = प्रेम। कमला = लक्ष्मी।
(९२) रैन = रात्रि। अवास = महिल में। याम = पहिर।
(९३) पेखियो = देखियो। धवल = सफेद। रवण = सुन्दर।
(९४) पहुपाटी = पौहफुट्टी (पेलीफटी)। भुणसारो — तडका (सवेरा)। नाह = पति।

राय भने सुन सुंदर नार । सुपनेको फल कहूं विचार ।
भूधर सुरतरु धवल सुदीठ । ह्वै हैं सो फल तुम को ईठ ॥ ९५
बहुरो जंपे राई सुजान । महा कुशल अर बिनय प्रमाण ।
सकल परिग्रह को सुखकार । होवे सुन्दरी तोहि कुमार ॥ ९६
कञ्चन गिरि सम ह्वै हैं धीर । शोभित निर्भय होय शरीर ।
कल्पवृक्ष सम होय उदार । दुखित जननको करे प्रतिपार ९७॥
धर्म धुरन्धर लीजहु जान । बहुत कहां लो कहूं बखान ।
यह सुन दंपती बहु सुख भयो । निवसत धर्म करत दिनगयो ९८॥
सुरग थकी स्वर चय कर गिरो । राणी गर्भ आय संचरो ।
मुहु पांडुर देखियो अतिखिन्न । पुण्य भव्य दोहरा उत्पन्न ॥९९॥
थूल पयोधर भये पय भरे । अरु ता नैन देखिये हरे ।
दशों मास भये गर्भ प्रमाण । अति उदित रवि किरण समान १००
जन्मों नन्दन कुलहु पयास । दुर्जन जन प्रगटयो अति त्रास ।
सज्जन जनमनभयो आनन्द । लछणवन्त उगो कुलचन्द १०१।
ताको मुख देखियो नरेश । मनवांछित सुख भयो अशेष ।
कांसा ताल बजें अनिवार । ब्राह्मणवेद पढें झुणकार १०२
अतिप्रमोद मन भयो अपार । कहें सुहागणि मंगलचार ।
अरिदवण आनंदोचित्त । आदर कीयो बंधू अरमित्त १०३

---

(९५) भूधर = पहाड । जंपै = कहे । (९७) उदार = दाता (बेपरवाह)
(९८) धुरंधर = धुरा (भार) के उठाने वाला अर्थात् धर्म के भार उठाने वाला।
दंपती = स्त्री और पति (राजाराणी) निवसत = रहते ।
(९९) मुंह = मुख । पांडुर = पीला । दोहरा = अभिलाषा ।
(१००) थूल = मोटे । पयोधर = स्तन । पय = दूध ।
(१०१) कुलहपयास = कुल से चाहा हुवा । (१०२) अशेष = बडाभारी । कांसाताल = झांझ । अनिवार = लगातार । (१०३) बन्धु = सम्बन्धी ।

भयो उदार अति फूल्योगात। धन विलसैं भाषेंशुभवात ।
हीनदीन जे दुःखनिधान। तिनको दीनें विन उन्मान ॥ १०४ ॥
हय हाटक मुक्ताभरिथार। वहु धन दीनो मंगनहार।
तव तिन जन्म सफल कैचयो। बालक तीस दिवसकोभयो १०५
राजा राणी भयो सुख अंग। बालक लियो उठाय उचंग।
श्री जिन भवन पहुंचो जाय। परसे महामुनिवरके पाय ॥ १०६॥
जाको निर्विकार है हियो। भवसुख सकल छाडि जिन दियो।
ताके चरणन पारो बाल। रूपवन्त शोभै सुकुमाल ॥ १०७ ॥
मुनिवर आप उठायो सोय। धर्मबृद्धि दीनी मुख जोय।
नीके कर मुनिदर्शन दीठ। है है यह सब को मन ईठ ॥ १०८ ॥
मुनिवर बन्द गेह जब गए। बहुत हर्ष हिरदयमें भए ।
निमती एक बुलायो जहां। कुमर नाम नृप पूछे तहां ॥ १०९ ॥
निमती भाषे निमत विचार। याहि नाम श्रीपाल कुमार।
अरु यामें हैं गुण अधिकार। वरणत मोह होयगी वार ११० ॥
यह सुन नमस्कार तब कियो। दियो दान जोतिषि घरगयो।
जननी जनक लाडियो जान। वरस आठको भयो प्रमान ॥ १११
पण्डित पासपढनसो गयो। ओंकार परथमही लियो।
गण अक्षर में मति भयो लीन। तर्क छंद भया कोष प्रवीन ॥११२॥
सामुद्रिक सीख्यो शुभसार। पढो ग्रन्थ व्याकरण कुमार।
सब ही विधि सो कला विनान। सीखो बहु सो अर्थ पुराण। ११३

---

(१०४) विलसैं = लेवें। दुखनिधान = दुखिये। उन्मान = अन्दाजा
(१०५) हय = घोडे। हाटक = सोना। मुक्ता = मोती ।
(१०६) उचंग = गोद (१०७) सुकुमाल = सुकुमार (कोमल शरीर वाला)
(१०८)निमती = जोतिषी(निमित्तजाननेवाला)(१११)जननी = माता। जनक = पिता
(११२) तर्क = न्याय (११३) विनान (विज्ञान्) पण्डित।

कला बहत्तर प्रगट बिनान। करे नाद गंधर्व समान।
हय गय वाहन रथ विधि आहि। गुणछत्तीस प्रसिद्ध हैं ताहि॥ ११४
जल तरिवो सीखा निहवार। तर्क वितर्क पढ्यो अनिवार।
ज्योतिष वैदिक गन सीख्यो। आगम अध्यात्म पढ़ लियो॥ ११५
हैं प्रसिद्ध विद्या पद जिते। पढ्यो कुमर पण्डित पै तिते।

४—श्रीपाल को राजतिलक।

यौवन कर आरूढ्यो जवै। राजा चित्त हुल्हासो तवै॥११६
महाबली श्रीपाल सुजान। रूपवन्त अर गुण हो निधान।
अति प्रचण्ड कोटी भट सोय। जाके दर्शन अघ क्षय होय ११७॥
कबहू भूलन भाषै कूर। साहस धीर धर्म को मूर।
ऐसी जुगति काल कछु गयो। राजतिलक श्रीपाल हि दियो ११८
भयो निशल्ल को कहे बढाय। आप काल बश भयो सो राय।
हा हा कार कियो संसार। वीरदत्तणि दुःख कियो अपार॥ ११९
श्रीपाल राजा दुखलह्यो। हिरदै विचारि सोच कर रहो।
तीन लोक देख्यो अवगाहि। यहि मारग सवहीको आहि १२०
यह विचार अपने जिय धर्यो। मनको सोच दूर सवकर्यो।
कुंदप्रभा राखी समझाय। देख विचार रीति यह माय। १२१
जो माता अवकीजे सोग। तो सव हंसे देश के लोग।
क्षत्रियकुलजाको अवतार। श्रीपाल यों कहे पुकार॥ १२२॥

---

(११४) नाद = शब्द। आहि = जानता था। (११७) अघ = पाप।
(११८) कूर = क्रूर। साहस = हौंसला (हठ)। मूर = जड (मूल)
(११९) निशल्ल = निष्कंटक। (१२२) अवतार = जन्म।

ताहि शोक हूजे नहीं जान । वहुत कहांलो करूं वषान ।
मोसे कछुहोयगी जिती । माजी सेवा कर सूं तिती ॥ १२३॥
बात सुणत सुखताको भयो । हिरदे शोक मातको गयो ।
करे राज श्रीपाल प्रचंड । लीयो सर्व राजन से दण्ड ॥१२४॥
ताकीसेव सात सै वीर । जेवहु सहैं झुज्झ की पीर ।
ताकी कीर्त्ति भई अशेष । कीने वश तिसने सबदेश ॥ १२५॥
धर्म रूप राजा व्योहरे । परत्रिय परधन लोभ न करे ।
दुर्जन जीत सकल वशकीए । महादण्ड तिनपे से लीए ॥ १२६॥
कोउ अवर न ता आगवे । एक छत्र प्रगटचो चक्कवे ।

५-राजा श्रीपाल को कुष्ट होना ।

करते राज्य काल कछु गयो । पूर्व पाप उदय तब भयो ॥ १२७॥
कुष्ट व्याधि राजा को भई । धीरे धीरे बधती गई ॥
अंग सातसै अति हैं नेह । तिन हू कोढ व्यापियो देह ॥१२८॥
राध चले पीडे जो शरीर । तहां दुर्गंधित बहे समीर ॥
कोढ़ उदम्बर बेढो राय । नासा अंगुरी गरिगए पाय ॥ १२९॥
रक्त पित्त जाको तन दीस । ढारे चवर राय के शीश ॥
झरे प्रस्वेद छत्र सो गहे । देहदाह भंडारी रहे ॥ १३०॥
श्याम दाध जाके असमान । सो राजे हि खवावे पान ॥
मरदन कर ही जाहि नहीं कान । खजुवा करवावे अस्नान ॥१३१॥

---

(१२४)प्रचण्ड = तेजस्वी । (१२५)झुझ = युद्ध । (१२६) व्योहरे = व्यवहारकरे । त्रिय = स्त्री
(१२८)समीर = वायु । उदंबर = एक जाती के कोढ का नाम है ।
(१३०) रक्त = खून । प्रस्वेद = पसीना । (१३१) श्याम = काली । असमान = बहुत से

रुधर फुवारे धरें अजेज। भूपतिकी सोबिछावें सेज॥
कंठगूमरा है कुतवार। सूरज वर्ण सूर असवार॥१३२॥
जाको बहु गरगयोहै शरीर। सोनर वैको आहि वजीर॥
उर दुर्गंध मक्षिका जान। सो नरिंद्र को है परधान॥१३३॥
काछ द्राध जाकै तन माहि। सोदल को सेनापति आहि॥
वहै नाकव घिना न करें। ते राजा के पानी भरें॥१३४॥
जिनके गात गए सबसार। ते पायक देखियें अपार॥
जेसिरते रु पावते गले। सोई निसान बजावें भले॥१३५॥
जाकै रक्त वहै अति वास। सो नर वैको आहिखवास॥
जातन खुजल पीर वहु करै। सो नृप आगे भोजन धरे॥१३६॥
महारवाब मृदंग झनकार। जरदोनिया बजावै तार॥
जाकै माखी लागें दौर। बीन बजावें सो सिरमोर॥१३७॥
गरै खाखरे गावे गीत। पातरि नाचें वरी विपरीत॥
ऐसो तहां अखारा होय। राव काढ जाना सबकोय॥१३८॥
जो सब काढ वर्ण कर कहूं। वढे कथा कछु अन्त न लहूं॥
यह सामग्री राज कराय। सगली सभा जुहारे आय॥१३९॥
कबहु न राजा आवै वार। कै अंदर कै सभा मझार॥
सेवक साह जहारे जिते। राजा देख विसूरैं तिते॥१४०॥
मनमें कहत सबै सत भाव। यह श्रीपाल महाबल राव॥
अरु यह धर्म दया परवीन। राज नीति पालै गुणलीन॥१४१

---

(१३२) अजेज = जो। (१३३) आहि = है। उर = उंडं (भिनकैं)। मक्षिका = माखी।

(१३५) सिरते = सिरसे। रु = और।

(१०४) सेवक = नोकर। साह = शाहूकार। विसूरें = दलगीर होवें।

ताको कहां कर्म यह भयो। कुष्ट रोग ताके तन लयो ॥
कर्मगति कछु कही न जाय। महा नीच नीच को राय ॥१४२॥
उत्तमको मध्यम गति करै। मध्यम को उत्तम पद धरै ॥
नृपसेती तो कछु न कहाय। घर घर आपस में पछिताय ॥१४३॥
महाकोढ़ राजा के अंग। कोढ़े अंग सात से संग ॥
तह दुर्गन्ध बढ़ी जो अपार। फैल गई सब नगर मझार ॥१४४॥
जबै बयार बढे नहीं घटै। तब ही नाक सबन की फटै।
बहुत बात को कहे बढ़ाय। कोउ नगर नहीं भोजन खाय ॥१४५
कोउ बीनती सकै न मांडि। बहुतक लोग गए घर छांडि।
घर घर एक बुलावो फिरो। रैयत लोग नगर को घिरो ॥१४६
जो आवे सो कहे विचार। महाकुष्ट किम सकै सहार।
कोऊ कहे भाजो इस बार। जैसे राजा लहे नही सार ॥१४७॥
कोऊ कहे ऐसी न करेय। आयस मांगि राय पै लेय।
वन ही भजें छाड घर धाय। मर हैं दुख देखा नहीं जाय १४८
आपसमें सब मतो कराहि। आवो वीरदमण पै जाहि।
जो वह आयस दे हम जोग। सोई मान लेहु सब लोग ॥ १४९
मोती रत्न थाल भर लए। सब मिल वीरदमण पै गए।
जाय भेट तिस आगे धरी। सब सिर नाय बीनती करी। १५०
महादुख सभ को सन्देहु। स्वामी हम को आयस देहु।
तेरे देश अन्त कहुं रहें। राजा सों किम निकसन कहें ॥ १५१

---

(१४२) महानीच नीचको राव = कर्मगति (प्रारब्ध) महान् उत्तम को नीच करे है। और नीच को उत्तम कर देती है।

(१४४) बयार = हवा। (१४६) घिरो इकठे होए। (१४७) सार = खबर।

(१४८) आयस = आज्ञा। भजें = सेवें।

जाके राज सुख हम लयो। दुख दालिद्र सबन को गयो
जाके राज धर्म को वास। सबै करत हैं भोग विलास।१५२
जाके राज पाप की हान।जाके हृदय दया की बान।
जाकै राज्य शूल सभ गए।हम धन परियन पूरे भए॥ १५३
जाके राज सुवस व्है वसैं। कब हू दुर्जन दुष्टन कसैं।
जाके राज सवै जन सुखी। जीव रूप कोई नहीं दुखी॥ १५४
कुष्ट व्याधि अब ताकै भयो। नासा पाय अंग गरि गयो।
अर जे अंग सात सै वीर। तिन हूं को गर गए शरीर ॥१५५॥
तिनका महा दुर्गन्धता होय। सबही पुर में फैली सोय।
दिन दो चार अन्न विन भए। कछू मुए कछू भजगए॥१५६॥
जो ऐसी कहूं सुनिए कान। तो भोजन नहीं जावे खान।
हुई दुर्गंधित सकली मही। अब लों हम तुम सों नहीं कही ॥१५७
महाकष्ट सूं लेहु बचाव। सबही नगर भयो कहराव॥
क्योंहूं क्योंहूं धीरक धरे। स्वामी हमसों रह्यो न परे॥ १५८

६ श्रीपाल का वीरदमन को राज्य दे आप उद्यान को जाना।

चिंते बीरदमन तब राव। अब यह कीजे कौन उपाव॥
जो घरमें श्रीपाल रहाय। तोमोतें सब रैयत जाय॥ १५९
रैयत बिन शोभा नहीं रहे। रैयत बिन राजा को कहै॥
विना पंख है पंखी जिसो। रैयत बिन राजा है तिसो ॥१६०

---

(१५३) बान = स्वभाव(आदत)। शूल = पीडा(तकलीफें)। परियन = परिजन (परिवार)।
(१५५) अंग = साथ। (१५७)मही = पृथ्वी। (१५८)कहराव = कहर। धीरक = धीरज।

बिना पान तरुवर ज्यों ताहि। रैयत बिन त्यों राजा आहि॥
बिन पाणी ज्यों होय तलाव। रैयत बिन है तैसो राव॥ १६१
जैसो है उडुगण बिन चंद। रैयत बिन है तैसे निरिंद॥
बिन रूषनि जैसो उद्यान। बिना रैयत भूपति त्यों जान॥१६२
जैसे सघन घटा बिन मेह। रैयत बिन त्यों राजा एह॥
बिन हथयार ज्यों सुभट अनूप। तैसे रैयत बिन है भूप॥१६३
वारंवार सो विचारे राव। अब तो कीजे कहा उपाव॥
तब ही सब रैयत यह रहे। श्रीपाल बन मारग गहे॥१६४
रैयत बसे हमरी बाह। रैयत बसे हमारी छाह॥
ऐसे कहें सयाने लोय। राजा प्रजा बराबर दोय॥१६५
वीरदमण यह चित्त में साज। रैयत राखे ऊबरे राज॥
तीन पान को बीड़ो लियो। आपण श्रीपाल को दियो॥१६६
बन उद्यानन साहस धीर। जाय अशुभ भुंजो वरवीर॥
जौंलौं कुष्ट व्याधि तुम अंग। तौंलौं गैल सातसै संग॥१६७
जो लौं उदै कंवर तो पाप। तो लौं नहि कीजे संताप॥
जो लौं शुभ प्रगटे नही आय। तो लौं धरमति आवोराय॥ १६८
होइ पुण्य प्रगटे तुम तनो। आइ राज कीजे आपनो॥
जाको राज भार तुम देहु। सोई करे धरे तुम नेहु॥ १६९
यह सुन श्रीपाल उच्चरो। कछु कुभाव मनमें नहीं धरो॥
सुनहु तात भाषे श्रीपार। मेरे भी है यही विचार॥१७०
मेरी बढ़ी दुर्गन्धाघणी। होत दुखी नगरी मो तणी॥
बिनती कर न सके कोइ आय। मेरे चित यह बीती राय॥१७१

---

(१६१) पान = पत्ते। तरुवर = वृक्ष।
(१६२) उडुगण = तारे। निरिंद = राजा। (१६६) आपण = आप।

मेरो भी दुःख व्यापो हियो। मैं हूं बन ही को मन कियो।
भली हुई तम निकसन कहो। याको सुख मैं बहुत ही लहो ॥१७२
तुम सब लेहु राज्य को भार। परजा को कीजो प्रतिपार।
न्याय नीति कर कीजो सुखी। सुपने कोइन होवे दुःखी॥ १७३॥

॥ सोरठा॥

जो उबरेंगे प्रान, कुष्ट रोग जब नाशिये।
तब हो इन्द्र समान, राज्य करुंगो आय कै॥ १७४॥

॥ दोहा॥

जब लग पूर्व पाप मो, उदय फिरेगो साथ।
तब लग अपनो भुंजहुं, राज तुम्हारे हाथ॥ १७५॥

॥ चौपाई॥

सवै राज मैं दीनो तोहि। मन में तान राखियो मोहि।
कुन्दप्रभा को देय अभार। निकस्यो तब श्रीपाल कुमार॥१७६॥
ताके बली सात सै अङ्ग। कोढी सबै लागि यो सङ्ग।
बुरे भेष दीसे सब जना। ओढें कम्बल अरु वोढना॥१७७॥
राज विभूति जैसी वरनई। सामग्री सब गोहनि भई।
जब वे गांव बाहर भए। लोचन वीरदमन भर लए॥ १७८॥
रोवें सब नगरीके लोग। विधनातें कित कियो वियोग।
घर घर शोक सवैं जन धरें। अति विलख्यो वहु करुणा करें॥१७९॥
घर घर करें अमंगलचार। भूले सब ही सुख नर नार।
घर घर सून सान होगई। पुरमें रात द्यौसते भई॥१८०॥

---

(१७४) उबरेंगे = बचरहेंगे।
(१७५) भुजहुं = भोगूंगा। (१७६) अभार = वगैर कहे। (१७७) बोढना = चद्दर।
(१७८) गोहनी = साथ चली। (१८०) द्यौसते = उजालेमें।

वे चलि दूर पहुंचे जवैं। कुंदप्रभा सुध पाइतवैं।
तिस मनमें दुख कियो अशेष। आजि मूवो अरिदमन नरेश॥१८१
गहि भरि नैनन मूंकी धाह। अब हूं निज घर भई अनाह।
विधना ये बूझी नहीं तोहि। पूतविछोह कीयो कित मोह॥१८२॥
बीरदमन राखी समझाय। कछु कर्मगति कही न जाय।
शुभ अर अशुभ लिखो जो लीलार। कोहै ताहि मिटावन हार १८३
भाभी होनहार सो भई। सब सामग्री देखत गई।
कुन्दप्रभा मन गाढो कियो। धर्मध्यान पर चित राखियो॥१८४॥
श्रीपाल पहुंचो उद्यान। रहैं सबें भट देवलथान।
राज विभूति सबै तासंग। कोढारूढ सबनको अंग॥ १८५॥
कुष्टकुष्ट दीखे सब ओर। रक्त वहे सब ही की खोर।
देखो पाप करम परभाव। कुष्टभयो कोटी भटराव॥ १८६
पाप करम अत ही बलवान। पाप न माने काहू आन।
पाप उदय आवे जिस घरी। छाडत नाहीं चक्री हरी॥ १८७
तातैं पाप करो मति कोय। पाप महा दुखदाई होय।
पहली संधि पूरण भई। भाषा मूल अर्थ वरणई॥ १८८

छंद त्रिभंगी॥

श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं।
बुधजन मनरंजन पातक गंजन सिद्धचक्र विधिदुख हरणं॥

---

(१८१) अशेष = बहुत। (१८२) मूंकीधाह = छाती में मूकी से पीटना।
अनाह = अनाथ।

(१८३) लीलार = मस्तक। (१८६) रक्त = लहू। खोर = काया।

(१८८) बधजन = पण्डित लोग। मनरंजन = चित्तको आनंद दायक। पातक = पाप। गजन = नाशक।

त्रिभुवन सुखकारण भवजल तारण चौपई बंधपरिमल्लकृतं।
सातसै अंग ताके संगं श्रीपाल उद्यानभ्रमम् ॥ १८९ ॥

इति प्रथमसन्धिः।

७—मालव देशमें उज्जैनी नगरीके राजा पहुपाल की पुत्री मैनासुंदरी का वर्णन।

चौपाई ॥

श्रीपाल उद्यान हि रहे। कुष्ट व्याधि व्यापै दुख सहे।
यह तो कथा रही इस ठौर। आगे सुनो कहूं जो और ॥ १९०
राज पुत्रि मैना सुंदरी। ताकी कथा सुनो रस भरी।
देश मालवो सो सुखधाम। मध्यलोकमें प्रगट्यो नाम ॥ १९१ ॥
दुखनहीं दीठे वासर रैन। सुवस बसे जहां नगर उजैन।
नव कोसनकी बसे चौराय। बारां कोस बसे लंबाय॥१९२॥
श्रीनिवास महाजन जहां। चौथा काल प्रवर्त्ते तहां।
कनक रेण मणि मंडप जरी। अति रमणीक मनोहरखरी ॥ १९३॥
राज करे पहुपाल नरेश। ताकै परिग्रह बहुत अशेष।
योधा बहुत सेवतारहें। रण संग्राम बलीते बहें ॥ १९४ ॥
एक छत्र सो राज्य कराय। ताकी कीरति कही न जाय।
ज्यों माता सुत उपरि भाव। तैसे परजा पाले राव ॥१९५॥
ताकैं कामनी बहुतक गेह। अति गुणवंत रूप की रेह।
जो सब नामवर्णिके कहूं। कहत कथा कछु अंत न लहूं॥ १९६॥

---

(१९२) वासर = दिन। रैन = रात। सुवस = अच्छी प्रकार वसती। (१९३) श्रीनिवास = लक्ष्मीवान्। कनक = सोना। रेणु = धूलि। मण्डप = घर।(११६) रेह = रेखा॥

पाट प्रधान निपुण सुंदरी। मानो आ रम्भा अवतरी।
अति स्वरूप है उपमा काहि। कामदेव के ज्यों रति आहि ॥१९७
जैसे शंकर के पारवती। अतिस्वरूप सीतासम सती।
ताकै गर्भ सुता द्वै भई। रूपवती अति पण्डित कही॥ १९८ ॥
दोऊ अतिगुणज्ञ अवतरी। अतिलावण्य विराजे खरी।
प्रथम कवारि सुरसुंदरि ताहि। बहुत रूप शोभत है जाहि ॥१९९॥
पर शिवधर्म बसे जा चित्त। कुगुरु कुदेव सुध्यावे नित्त।
कछु विवेक जो ताहि नहीं होय। वंछे संसारी सुख सोय ॥ २०० ॥
लघु कन्या मेनासुंदरी। रूपवती अर सब गुणभरी।
अंग अंग की शोभा जिसी। वढे कथा जो वरणों तिसी॥ २०१ ॥
अर अति जैनधर्म परवीन। शीलवंत समकित कर लीन।
निर्मल जाके हिरदे जोई। कपट वचन बोले नहीं कोई ॥ २०२ ॥
बहुत विवेक चित्त ता रहे। मिथ्या वचन भूलि नहीं कहे।
सब सखियन में शोभे खरी। ज्यों सरिता में है सुरसरी ॥ २०३ ॥
मधुर वचन बोले विहसाय। सब कुटुंब रंजे सुखपाय।
धाइ धाइ त्रिय अंकोभरे। रहसि खिलाय लगावे गरे ॥ २०४ ॥
और बहुत को करे वखाण। तिहि को उपज्यो बहुत सयाण।
आपण मंत्र विचारे राय। अर तिन्ह लीन्ही प्रिया बुलाय ॥२०५॥

---

(१९७) रम्भा = एक अप्सरा (देवांगना) का नाम है ॥
(१९८) शंकर = महादेव। सुता = पुत्री।
(१९९) गुणज्ञ = गुणों के जानने वाली। लावण्य = सौन्दर्य। (खूबसूरती)।
(२००) शिव = कल्याण। विवेक = ज्ञान।
(२०१) लघु = छोटी। (२०३) सरिता = नदियें। सुरसरी = गङ्गाजी।
(२०४) रंजे = खुश होवे। धाय = दौडकर। त्रिय = स्त्रियें। अंको = गोदी में।
रहसि = एकान्त। (२०५) प्रिया = प्यारी (राणी)।

जुगल रीवाणो दीसै एह । देखत नैनन उपजै नेह ।
मेरे जी यह कहूं विचार । इन्हें पढाउं सुण वर नार ॥ २०६ ॥
सुणो राय इन भावे जहां । दोउ कुमरी पढावो तहां ।
तिन्है विहसि करि पूछे राव । पुत्री कहो आपणो भाव ॥२०७॥
जो गुर भावे तुम्हें सुजान । तापैं विद्या पढो पुराण ।
सुरसुंदरी कहै सुणहो तात । सांची कहूं आपनी बात ॥२०८ ॥
दिन दिन वृद्धि होइ गुण चढुं । अबहूं निज शिव गुरुपै पढुं ।
राजा भली भली वरणई । कवरि उठाई उछंगा लई ॥ २०९ ॥
शिवगुरु तब घालियो बुलाई । नाम कुणस को कहै बढाई ।
बोल्यो निकट कहै तब राय । विद्या सुरसुंदरी ही पढाय ॥ २१० ॥
जितनी होय कला अर ज्ञान । सब सिखायदे अर्थ पुराण ।
भली भली पांडे उच्चरी । मोपरि कृपा गुसांई करी ॥ २११ ॥
जो मोपें गुण होसी राय । याहि पढाउं सब निकुताय ।
सुणी बात तब विगसो राव । कछुक तांको कीयो पसाव ॥ २१२ ।
तब तिन भूपइ दई असीस । जुग जुग जीवो कोडि वरीस ।
महिमंडल में प्रगटो आन । राज तेज वृद्धो दिन मान ॥२१३॥

सोरठा ।

जोलौं शशि अर भान । जल गिर मेरु सुथिर रहैं ।
तो लौ इंद्र समान । मंगल होउ नरेशघर ॥ २१४ ॥

---

(२०६) जुगल = दोनों । रीवाणो = हुशियार । नेह = प्रेम ।
(२०७) भावे = पसंद होवे । (इच्छे) । भाव = अभिप्राय । (२०८) निज = अपना उछंगा = गोदी । (२१०, कुणस = कौन । (२११, गुसांई = मालिक (महाराजा) (२१२) पसाव = प्रसाद (खुशी) । (२१४) शशि = चांद । भान = सूर्य नरेश = राजा ।

चौपाई।

विप्र गयो घर कुवरि लिवाय। लागो ताहि पढावण जाय।
मैनासुन्दरिसों नृप कहे। पुत्री कहा तोहि मन रहे ॥ २१५ ॥
सुणों तात हूं कहूं सुभाय। पढिहों जिनचैत्यालय जाय।
दंपति सुख अति भयो अभंग। पुत्री लई उठाय उछंग ॥ २१६ ॥
राणी राव और जन भये। पुत्री ले देवालय गये।
पूजा अष्टप्रकारी ठई। जैसी परम गुरु वरणई ॥ २१७ ॥
जल गंधाक्षत पुष्प अनूप। नेवज दीप महागुरुधूप।
नाना विधि फल धरे वनाय। अर्घ दियो मन वचकर काय ॥२१८
फुनि निहृ पीछे पेखे मुनिन्द। जय जय तव उचरे नरिन्द।
धर्म्म वृद्धि दियो मुनीराज। भव समुद्रसो तरण जिहाज ॥ २१९ ॥
ध्यावें आतम गुण जु अखंड। तीन गुप्त पाले गुणमंड।
भव्य कुमद परि फुल्लण चन्द। दरसत जाहि वढे आनंद ॥२२० ॥
मिथ्या तिमिर विनाशन भान। जिन निज के छाड्यो अभिमान।
शत्रु मित्र जाके इकसार। मन के सबहि तजे विकार ॥ २२१ ॥
बाईस परिषह सहण समत्थ। केहरि दलन पंचमृग मत्थ ॥
तीन परदक्षिण दई समीप। नमस्कार तव कियो सहीप ॥ २२२

---

(२१६) दंपती = स्त्री और स्वांविद। अभंग = जो नहीं टूटे (बहुत)।
(२१८) गन्धाक्षत = गन्ध (घिसा हुवा चन्दनादि) और अक्षत = चावल। महा गुरु धूप = अच्छे अगर(चन्दन)वाला धूप। (२१९)। पेखो = देखा। भव = संसार।
(२२०) तीन गुप्ति = मन वचन काय के भेद से गुप्ति तीन प्रकार की है। अर्थात् मन वाणी और देह का वश करना(रोकना)। कुमुद = कमल
(२२१) तिमिर = अज्ञान (अन्धेरा)। भानु = सूर्य।
(२२२) समत्थ = समर्थ। केहरि = शेर। दलन = दलने को। पंचमृग = पांचों चक्षुरादि इन्द्रियां रूप मृगों को शेर। मत्थ = मथन करना।

हरषवंत मन मांहि अपार। वंदे चरण कमल नरनार।
दंपती पुनि मैना सुन्दरी। बैठे तहां शुद्धमन करी॥ २२३॥
जंपै राय हरष अति गात। स्वामी सुनों कहूं इक बात॥
लघु पुत्री मैनासुंदरी। अपने जी यह इच्छा करी॥ २२४॥
पुत्री कहै जोर दोउ हाथ। विद्या दान देहु जग नाथ॥
नरपति कह्यो सुनो मुनि जाम। दया करी ता ऊपरि ताम॥ २२५॥
अर्जिका एक शील की खान। दया धर्म्म जिह लियो मान।
मन वच काय शुद्ध ता चित्त। जानै एक शत्रु अर मित्त॥ २२६॥
रत्नत्रय व्रत पालन आहि। मुनिवर पुत्री समीपी ताहि।
राणी राव हर्ष अति भए। नमस्कार कर निज घर गए॥ २२७
मैनासुन्दरि के मन चाव। आर्जिका ता ऊपर भाव।
प्रथम पढ़ायो तिह ओंकार। दुःख हरण त्रिभुवन में सार॥ २२८
पढ़ाये बारा वर्ण विशेष। जामें उपजे बुद्धि अशेष।
पढ़ लीनो नीके कर चाहि। लघु दीर्घ जे अक्षर आहि॥ २२९,
जान लियो है चितव चित्त। पढियो चरित पुराण पवित्त।
गुण अरु अगुण निरमई जान। काव्य अनेक सु कहें बखान॥२३०
ज्योतिष पढ़्यो इसो परवान। आगम अर अध्यात्म जान।
सीखो नृत्य संगीत पुराण। नाटक साटक कहे बखाण॥ २३१
तर्क छन्द पुत्री पढ़ लियो। छह दर्शन पुत्री उर दियो।
भाषा सोय अठारा पढ़ी। विद्या कर दिन ही दिन चढी॥ २३२

---

(२२४) जंपै = बोले। (२२५) जाम = जब। ताम = तब।

(२२७) रत्नत्रय = सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र, ये तीन रत्न हैं। समीपी = सौंपी। २२८ आर्जि = आर्यिका। भाव = प्रेम।

(२२९) बारांवर्ण = बारांखड़ी। (२३०) चरित = चरित्र। पवित्त = पवित्र। निरमई = रचना करणी। (२३२) तर्क = न्याय।

कला बिनान बिचक्षण भई। फुन मुनिवर ही पढावण लई।
चार ध्यान अणुब्रत जो अब। सोला कारण भावना सब ॥ २३३
रत्नत्रय विधि गुण ही निधान। दश लक्षण जो धर्म प्रधान।
जो कछु द्वादशांग में कही। सो विद्या पढ़ सुन्दरि लही ॥२३४

॥ दोहा ॥

मुनिवर पै सब गुण पढ़ी,कियो कुवरि आनन्द।
मनबचकाय विशुद्ध ह्वै, जानो पाप निकन्द ॥ २३५

॥ चौपाई ॥

मन में पुत्री कियो आनन्द। जानो निश्चय पाप निकन्द।
श्रीजिन पूजा कर मन लाय। मुनिवर के नव वन्दे पाय ॥२३६
मैनासुन्दरि पढ़ घर गई। निज जननी पर पहुंचत भई ॥
प्रथम पुत्रि सुर सुन्दरी जेह। पढ़ी पुराण बहुत धर नेह ॥२३७
कोककला नाटक गुण जिते। सामुद्रिक व्याकरण सतिते ॥
पढ़ गुण महा विचक्षण भई। तब पांडे सो गोहण लई ॥२३८
राजा पास सो पहुंचो जाय। पुत्री देख राज विहसाय।
तब विप्र बोलो हो देव। मैं तुम बहुत करी है सेव ॥ २३९
सुन राय अति हर्षित भयो। बहुत दान पांडे को दयो।
दे असीस शिवगुरु घर गयो। पुत्री सभा देख सुख भयो ॥२४०
जे जे बात पयासे कोई। ते ते पण भाषे कहि सोई।
चपल चित्त यौवन श्री लही। राजा पास बात तिन कही ॥२४१

---

(२३३) विचक्षण। पण्डिता। (२३५) ह्वै = हुवे। निकंद = नाश (बुरे)

(२३८) सामुद्रिक = रेखाओं का फल कहने वाला शास्त्र। गोहण = साथ

(२४१) पयासे = पूछे। पुन = फिर। श्री = शोभा।

अर्ध सिंहासन जाइ वईठ। चहुं दिस जोवे चञ्चल दीठ।
राजा कही समस्या तेण। लहिए कुमरि तो कहा पुनेण॥२४२

॥ पुत्र्युवाच ॥ सोरठा ॥

पुण्य हि लहिए येह,विद्यायौवन रूप धन।
घरपरिणय का नेह, मन वंछित सुखपाइए॥ २४३ ॥

॥ चौपाई ॥

तब नृप रह्यो महां मुहचाहि। नीचे कर मुख चरच्यो ताहि।
मांग पुत्रि वर जो मन बसे। देखत जाहि चित्त उल्हसे॥ २४४॥
सुनहु तात हूं भाषो तिसी। मेरे मनमें बीतत जिसी।
कौशांबीपुर को नृप जान। हय गय रथ बहु सुभट वखान॥ २४५
ता नन्दन हरिवाहण वीर। ताहि रूप को कहे सुधीर।
नीको वर भायो मो साय। सांची बात कहूं हिय जोय॥ २४६
सुन कर राय विचारचा हिए। वाही योग्य वने यह दीए।
बोलो विप्र राय सो भने। शुभ दिन योग महूरत गिने ॥२४७
ताको विधि सो कियो विवाह। सब ही जन मन भयो उछाह।
उन हूं सुख मन भयो अनन्त। कौशांबीपुर गयो तुरंत॥ २४८
मैनासुन्दरि पहुंची तहां। आदीश्वर की प्रतिमा जहां।
पूजा करी शुद्ध मन कियो। भर वेला गंधोदक लियो॥ २४९
कछू न चित्त विचारी ओर। गई जहां राजा जिस ठौर।
आव आव राजा उच्चरो। गंधोदक ले आगे धरो॥ २५०

---

(२४२) दिस = दिशा। चंचल = चपल(हिलनेवाली) समस्या = इशारा।
पुनेण = परणाऊं।

(२४३) पुण्यहि = पुण्यों से। लहिये = पाइये। परिणय = विवाह।

(२४५) चरच्यो = बोला।

कहे राव कह पुत्रि विचार। यह कह कहां कहे सो कुवार।
मैनासुन्दरि उचरे बात। गंधोदक जिनवर को तात ॥२५१
होइ दुर्गंध देह जा दगे। सुन्दर दिव्य होय जा लगे।
नयन निरन्ध निहारे सार। नेक लगे देखे संसार ॥२५२
नेक लगे अरिकर्म निकन्द । जाकी इच्छ करत है इन्द।
जन्म भयो तीर्थंकर जबे। सायर ते सुर लाए तबै ॥ २५३
कलश हाथ अठोतर भरे। लाय जिनेश्वर के सिर ढरे।
सुर अर असुर इन्द हर्षियो। वारम्बार अंग परसियो ॥२५४
तात सुन हु गंधोदक सोय। कर वन्दना परमगति होय।
तब भूपति ने वन्दन करी। धर्मलीन पुत्री है खरी ॥२५५
राजा हर्षित हूवो सुजाम। अर्ध सिंहासन बैठी ताम।
सीस चूंब पूछे भर नेह। पुत्री कहे परीक्षा येह ॥ २५६
काजे पुण्य चित्त धाइये। ताते कहा लब्ध पाइये।
सुन सुन तात पयासुं तोह। जै नीके कर पूछो मोह ॥ २५७

॥ पुत्र्युवाच॥ दोहा ॥

जिनशासन निर्ग्रंथ गुरु, व्रत है निर्मल येह।
मुक्ति धाम शिव सुख करण, पुण्य ही लहिए येह ।२५८

॥ चौपाई ॥

सुन नरिन्द भए लोचन लीन। कही बात पुत्री परवीन।
पुनि निनभाख्यो मन अविवेक। मलिनबचनतिनबोल्योएक ॥२५९

---

(२५२) दगे = जल। दिव्य = देवतों जैसा। निरंध = अंधा। निहारे = देखे
(२५३) सायर = सागर (२५४) अठोत्तर = यहां एक हजार आठ रूप अर्थ है।
परसियो = छूना। (२५७) धाइये = शुद्ध करना। लब्ध = मिलना।
पयासु = बताऊं। (पुत्र्युवाच = पुत्रीबोली) (२५८) शासन = शास्त्र (आज्ञा)
(२५९) नरिंद = राजा। अविवेक = अज्ञान। मलिन = बुरा।

मन भायो जो करै विवाह। लोग सुनै हुवै हासि उछाह।
कछु रहै नहीं कुलकी रीति। सबकोई भाषै महा अनीति॥ २७८॥
अर जीत ही नित होय विचार। कोउ न धरै शील को भार।
ता अपयश सब कोउ करै। आपन इच्छो वर जो करै॥ २७९॥
और कहानी सुन हो राय। तासों कहों कथा समुझाय।
श्री आदीश्वर प्रथम जिनंद। जाकै वारे पाप निकंद॥ २८०॥
प्रगट पुराणन में वरणए। कच्छसुकच्छ राज द्वै भए।
तिन के भई सुभग द्वै सुता। नंद सुनन्द नाम गुणयुता॥ २८१॥
जोबनवंत हुई ते बाल। रूपवंत अर गुणह विशाल।
तिनहु यूं नहीं वंछियो हिए। रही सदा कुल रीति जु लिए॥२८२॥
तात बंधु जाको जो दई। आदीश्वर तिनको परणई।
ते भई लीन जिनेश्वरपाय। बहुत बात को कहे बढाय॥ २८३॥
जो मारग प्रगटचो सुन बात। सो पै छाड्यो जाय न तात।
पुन ब्रह्मी सुन्दरी द्वै पुनि। जगत भई विख्यात गुणजुनि॥२८४
माता पिता नहीं दीनी काम। तिन सब छाड्यो भोग विलास।
मन में लाज भई अवगाह। दोहू न छाड्यो छिन में व्याह॥२८५
भई अर्जिका ते शुभ चित्त। जाने एक शत्रु अर मित्त।
भेदाभेद कछु नहीं जान। जिनवर भाषित करे वखान॥२८६॥
लोक विरुद्ध व्याह की लाज। सब सुख छाड दीयो शुभ काज।
अर सुन उत्तर कहुं विचार। यों बैठ्यो निज नयन निहार॥२८७

---

(२८०) वारे = विनष्ट। (नाश हुए हुवे)। निकन्द = समूह।

(२८१) सुभग = सुन्दरी और सुशील। (२८३) बन्धु = रिश्तेदार।

(२८५) काम = किसी वर को। विलास = क्रीड़ा। अवगाह = छागई (व्यापगई)

तुम हूं देखी सुर सुन्दरी। हीनबुद्धि तिन मन में धरी।
ताहि दोष नहीं दीजे राय। इह कारण सब कुगुरु पसाय ॥२८८॥
जैसे जीव विचक्षण जान। है त्रैलोक्य मांहि परधान।
खोटा संग कर्म के रहे। ताते जीव बहुत दुःख सहे॥ २८९॥
छिन में नीच कहावे सोय। छिन ही में उत्तम पद होय।
छिन ही में दुखपावे घणो। छिन ही में सुख है तुम तणो ॥२९०॥
छिन ही में सु कहावें राय। छिनही में सुरंक हो जाय।
छिन ही में शंका परहरे। छिन में मूढ महा भय करे॥ २९१॥
छिन ही में सो दुर्गति जाय। छिन में स्वर्ग पहुंचे धाय।
जितनो दुःख पावे जड यह। तिननो कहां कहूं धर नेह ॥२९२॥
यह कछु जीवै खोर न जान। कर्म कुसंगतिका फल मान।
सुरसुन्दरी कुमति त्यों लही। कगुरु पढाई तैसी कही॥ २९३॥
अरु सुन राय वचन दे कान। जातें सुयश होय परवान।
माय बाप जाए गुण सार। कुल उत्तम जाको अवतार॥२९४॥
यौवनवंती देखे तात। छिन छिन मन चिंतवे सुबात।
मन इच्छयो वर मांगे जाय। शीलवंती नहि गिणिये सोय ॥२९५
बाप विचारै जाको चित्त। पुत्री को जब देखे नित्त।
निर्भय होय यह दीजे कास। को वर योग्य सुकुली पयास॥ २९६
यह चिंते परिजन जे महंत। सकल बैठ कीजे शुभमंत।
उत्तमकुल सोधिए परवान। विद्यावंत अर आप समान ॥२९७॥

---

(२८८) पसाय = मेहरबानी। (२८९) विचक्षण = चतुर।

(२९२) जड़ = मूर्ख। (२९३) खोर = देह। (२९६) सुकुली = उत्तम कुलवाला
पयास = प्यारा।

(२९७) शुभ मन्त = नेक सलाह। सोधिये = ढूंढिये।

सज्जन मिल सब मंगल करें। हो विवाह दोउ कुल उच्चरें।
कन्या दान भार वर लेइ। सो वो तूठि बहुत करि देइ ॥२९८॥
विनती करें जोड़ दोउ हाथ। सब कुटंब सोंपे जा साथ।
भावें अंध होउ मतिहीन। भावें होउ कला परवीन ॥२९९॥
भावें कूब होउ तन बुरो। भावें गूंगा होउ पांगरो।
भावें रोगी वाय पितपीर। भावें कुष्टी होउ शरीर ॥३००॥
भावें बालक होउ अयाण। भावें होउ सर्व गुणठाण।
भावें वृद्ध होउ विकरार। भावेंजोगी होउ गंवार ॥३०१॥
सब परियण सोंपे जा बांह। चलै कुलीन तास की छांह।
यह कुलधर्म सुनोचितलाय। अर विभ्रम सबदो छिटकाय॥३०२॥
चलिहों कुल मारग सुन तात। होवै है कर्म लिखी जो बात।
कर्म लिखे ते हूजे राय। कर्म ही ते रंक व्हे जाय ॥३०३॥
कर्म ही तै यश होयशशंक। कर्म ही ते नर होय कलंक॥
होय कर्म तैं आछी भाम। कर्म ही ते पावे शुभ धाम॥ ३०४॥
कर्म ही तै त्रिय होय सुहाग। कर्म ही तै प्रगटे शुभ भाग।
अरु अति सुख कर्म तैं होय। दुखी दुहागण कर्म से जोय॥ ३०५॥
कर्म ही तै जु होय तन भंग। कर्म ही तै ह्वै शोभित अंग।
यह परपंच कर्म को सर्व। कोउ और करो मति गर्व ॥३०६॥
विधना जा कुछ लिख्यो लिलार। शुभ अर अशुभ अंक शुभ सार।
जैसे निमित जास को होय। ताहि मिटाय सके नही कोय ॥३०७

---

(२९८) तूठि = सन्तुष्ट (खुश)। (२९९) भावें = ख्वा (अथवा)।
(३००) कूब = कुब्बा। पांगरो = लूला।
(३०१) गुणठाण = गुणी। विकरार = विकराल (बद शकल)।
(३०२) विभ्रम = भरम। (३०४) शशंक = चांद। भाम = भामनी = स्त्री।
(३०६) परपञ्च = संसार। (३०७) लिलार = माथा।

अमर खचर अरु गण गंधर्व । भासुर सुरगुरु रवि शशि सर्व ।
जो थे सब मिल करैं सहाय । कर्म खरं नहि मिटरे काय ॥३०८॥
पूर्व से पछिम रवि उवै । नर फुणिमेरु चुलिको छुवै ।
सायर ही में धूल उडाय । भावी तोउ न मेटी जाय ॥ ३०९ ॥
पवनें महि मंडल पर हरैं । प्राणी काल हुवा ऊवरैं ।
वासर थे जु निशा फुन होय । भावी लिख्यो न मेटै कोय ॥३१०॥
ऐसे वचन सुने जब राव । मन कांपन्त भयो तब राव ।
सुन सुन पुत्री अजो अयाण । कहां कर्म तेरो दिन मान ॥३११॥
पंचामृत शाल्योदन होय । छह रस भोजन मेरे सोय ।
तेसुख पुत्री भुक्तन लेय । तूतो कहै कर्म मो देय ॥३१२॥
मोकू आहि बहुत संदेह । तेगुरुने पढायो येह ।
जब नृप निंदा गुरु की करी । तब बोली मैनासुन्दरी ॥ ३१३ ॥
सुन अविवेकी तात विचार । तोसों कहुं कथा विस्तार ।
मैं शुभ कर्म कमायो सार । तेरे घर पायो अवतार ॥ ३१४ ॥
तातें भोजन भुक्तों सुख । नैकन पाऊं कहुं न दुःख ।
हो तो अशुभ कियो मैं काम । नीच घरां तो लेती जाम ॥३१५॥
तहां दुख लहती अधिकाय । सुख तु तहां न देतो आय ।
कहां अयाण होहु नर नाथ । शुभ अर अशुभ कर्म के हाथ ॥३१६

(३०८) अमर = देवता । खचर = तारागण । गण = समूह । भासुर – प्रकाशमान
सुरगुरु = देवतों का गुरु (बृहस्पति) । रवि = सूर्य । शशि = चान्द ।
मिटरे = मिटे । काय = किसी की ।

(३०९) उवे = उगे । सायर = समुद्र । तोउ = तो भी ।

(३१०) पवनं = हवायें । महिमण्डल = पृथिवी । परहरें = उड़ावें । कालहुवा = मरा
उवरें = जीवे । वासर = दिन । थे = से । निशा = रात ।

(३१२) पञ्चामृत = पांचों अमृत । शाल्योदन = (शालि) = धान । ओदन = चावल

पुत्री वचन सुने जब कान। राजा रिस उपजी तह थान।
मनमें धरत दुष्टमति गियो। मूक रहो उतर नहीं दियो॥ ३१७॥
कवि परिमल्ल कहै सतभाव। मन में ऐसो चितयो राव।
अबहू या को परखों जिसो। देखों कर्म याहि फल किसों॥ ३१८॥
याको कियो बहुत दिढाव। देखों ताको कर्म सहाव।
जिय में ऐसी पिशुनता धरी। मूह कहै धन मैनासुन्दरी॥ ३१९॥
पुत्री उठ चलियो निज गेह। करो पारणो खीनी देह।
तात वचन सुन उठी तुरंत। परफुल्लित मनमें विहसंत॥ ३२०॥
पंथ मांह सो निकसी जाय। पुरजन देखि रहे निकुताय।
धोखे रहे मुहा मुह चाहि। यह धौ कुमरि कौण की आहि॥३२१
काहू तो ऐसी वरणइ। सुरकन्या सुरगां ते चइ।
कोऊ कहै यह विचारो होय। यह तो नागकुमारी होय॥ ३२२॥
काहू काहू ऐसी भणी। यह पुत्री विद्याधर तणी।
काहू तो यह उपमा दिया। काहू आहि जनक की धिया॥ ३२३
कोऊ कहे यह देवी आहि। पटतर देख सके को ताहि।
षोडश वर्ष तणी परवान। कोऊ रूपन ताहि समान॥ ३२४

॥ शृंगार वर्णन ॥

तिह को मुख सोहे मकरन्द। मानों ऊग्यो पूण्यो चन्द॥
लोचन अरुण सुभग अति वर्ण। ज्यों चकित मृगशाव तरण॥३२५

---

(३१७) रिस = गुस्सा। मूक = गूंगा (चुप चाप)। (३१८) परखों = अजमाइश करूं।
(३१९ दिढाव = दृढ़ता। पिशुनता = खुटाई। मूंहकहे = जाहिरा कहे। (३२०)
पारणो = भोजन खाना। खीनी = सूखी। विहसन्त = हंसतीहुई (३२१)पन्थ = रास्ता
निकुताय = सारे। (३२२) नागकुमारी = सांप की पुत्री। (३२४) पटतर = जाहिरा
षोडश = सोलह। (३२५)मकरन्द = फूलोंकी गन्ध। अरुण = लाल। सुभग = सुन्दर।
वर्ण = रंग। चकित = हैरान। मृगशाव = हिरणका बच्चा। तरुण = जुवान।

करे कटाक्ष दिष्टि जो बाण। भ्रुकुटि कुटिल मनोजकमाण।
माथे मांग विराजे चारु। अति कोमल अतिश्याम सुटारु॥ ३२६
श्रवण कुण्डल राजत द्वैबृन्द। मानों बात कहें दोय चन्द।
नीके शोभित अधर अभंग। विद्रुम सुपकविराजहि रंग॥ ३२७॥
ऊंचीनाकइसीउनहार। मानों कंचन धरी सवार।
दसनपंति दीसे चमकंति। कुदलि दाडिम की शोभन्ति॥ ३२८
छोटी ग्रीव मुनीकी मार। ताकी जोति जगें अधिकार।
मृगपति लंक मध्य अतिक्षीण। त्रिवली तरंग शोभा कर लीण॥ ३२९
कोमल कमल पाणि नावाल। बांह जुगल सोभियो विसाल॥
चंपक वरण पहुप तन जाणि। अति कोमल को कहे वखाण॥ ३३०
अति सुगन्ध है तास शरीर। आवे लपटें बहुत समीर।
हंस चाल सो पहुंचो तहां। निज घर जननी जोवत जहां॥ ३३१
दिव्य अंबर पहरे मानो शची। तब जिनवर की पूजा रची।
अष्ट प्रकारी जिय धर नेह। मन बच काय छाड़ संदेह॥ ३३२
द्वारापेखण निन तब किया। मुनि कोउ न तहां देखियो।

---

(३२६) कटाक्ष = देखना। भृकुटी = भुवां। कुटिल = टेढ़ी। मनोज = कामदेव।
कमाण = धनुष। चारु = सुन्दर।

(३२७) श्रवण = कान। बृन्द = समूह। अधर = ओठ। विद्रुम = मूंगा।

(३२८) इसी = ऐसी। उनहार = अच्छी। कञ्चन = सोना। दसन = दांत।
पन्ति = पंक्ति। कुदली = कली। दाडिम = अनार।

(३२९) ग्रीव = गरदन। मुती = मोती। मार = माला। मृगपति = शेर।
लंक = लङ्क। मध्य = लङ्क। अतिक्षीण = पतला। त्रिवली = पेटके १बल।

(३३०) पाणि = हाथ। चम्पक = चम्बेली का फूल।

(३३१) समीर = हवा। जोवत = उड़ीकना।

(३३२) दिव्य = अच्छे स्वर्ग के। अम्बर = कपडे। शची = इन्द्राणी।

पुण्य हमारो वोछो आहि। मुनि कोऊ तह पहुंचो नाहि॥ ३३३
भावना भाई पूजी आस। फुनि भोजन को गई अवास।
शाल्योदन छह रस शुभ चित्त। रस तज भोजनपरणो पवित्त॥३३४
अति सुन्दर मुख सोध जु लई। तब रुचि सो उठ ठाढी भई।
ऐसे सुख भुंजे बहु काल। शीलवन्त अर गुणहिविशाल॥ ३३५
गाहा दोहा छन्द विवेक। परस्पर भाषें सखी अनेक।
मन वांछित सुख लहै प्रवीन। करे भक्ति मुनिवर पद लीन॥३३६
कबहु न बात पाप की कहे। निश दिन दया धर्म में रहे।
कब हू झूठ बात नहीं कहे। सांचा होय सु हिरदे चहे॥३३७
जाके हिरदे दया को वास॥ चित अपने में धरही हुलास॥
दूजी संधी यह वरणई। मूल अनुसार कर दई॥ ३३८

॥ दोहा ॥

सुख जननी परियण सकल, श्री जिनवर सुमिरन्त।
ऐसे बीते बहुत दिन, निज गृह में निवसन्त॥ ३३९

॥ छन्द त्रिभंगी॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं।
बुध जन मनरंजन पातक गंजन सिद्ध चक्र विधि दुखहरणं॥
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बन्ध परिमलकृतं।
मैनासुन्दरि प्रति उत्तर दीनो तात निरधारो नाम मयं॥ ३४०

इति दूसरी सन्धी संपूर्णम्

---

(३३४) वोछो = खोया गया। अवास = गृह।

(३३५) मुखसोध = चुल्लू करणा। ३३६) गाहा = गाथा।

(३४०) निरधारो = निश्चय कियो।

८-मैनासुंदरी का श्रीपाल से विवाह

॥ चौपाई ॥

राजा के मन उपज्यो कोय। जंपै होन हार सो होय।
एक दिना सब सेन पलाण। हय गय रथ को करे बषाण ॥३४१
नगर निकासह चालो जाय। मंत्री लीने संग लगाय।
यह भेद जाने नहि काय। हीनो वर चिंतत हैं राय ॥ ३४२
यह तो कथा यहां ही रही। कवि परिमल्ल प्रगट कर कही।
बहुरो कथा गई तिह थान। श्रीपाल जह वन उद्यान ॥ ३४३
नासा पाय गए गरि हाथ। ऐसे अंग सानसै साथ।
भ्रमत भ्रमत सो पहुंचो तहां। राजा वन विचरत है जहां ॥ ३४४
देख राव उठ ठाडो भयो। अति हर्षित हो भेटण लयो।
देखित सब मंत्रिन भई लाज। यह कोढी भेटो किह काज।
तब तिह ठायो बोलो राव। मंत्री सुनो कहूं सत भाव ॥ ३४५ ॥
या पर है मेरो अति चित्त। यह मेरो है प्रीतम मित्त।
मंत्री कहैं सुनो हो राव। गल्यो शरीर हाथ अर पाव ॥ ३४६ ॥
रही दुर्गंधा जित तित पूर। याहि देख के भजिये दूर।
तासो मिले कहा धर नेह। याको आह बहुत संदेह ॥ ३४७ ॥
यह सुन तहां पहुंचो राव। पुनि पुनि अवलोकै धर भाव।
पूछे तहां पहुपाल नरेश। कह तू आहि बहुत अलवेश ॥ ३४८ ॥
हांडत मही डोलै तनभंग। बहुत परिग्रह तुमरे संग।
क्यों यह नगर कियो पैसार। सांचो कहो आप व्यौहार ॥ ३४९ ॥

---

(३४१) कोय = कोप। पलाण = यात्रा। हय = घोड़ा। गय = हाथी
(३४५) भेटो = मिलो। ठायो = जगह। (३४७) आह = है। (३४८) पुनि—फिर।
अलवेश = सामान। (३४९)हांडत = फिरताहै। मही = पृथ्वी। पैसार = आना

तब श्रीपाल कियो परणाम। हम आये तेरा सुन नाम।
दयावंत सब कोउ कहै। अति उदारता तो जिय रहै॥ ३५० ॥
तातें हम आये सुन राय। बहुत कहा हम कहें बनाय।
यह सुन नृप फूल्यो सब गात। सुन कुष्टीनृप मेरी बात ॥३५१
मांग मांग मैं तूठों अबै। बहुरो त्याग लेइगो कबै।
विलमन कीजे अवसर यह। मन को छाड देउ संदेह॥ ३५२ ॥
जोई तू मांगेगो दान। सोई देउं राखूं मान।
तब तिन जंप्यो पुत्री देहु। राजन् प्रगट यहु यश लेह॥ ३५३ ॥
यह सुन राव कोप अति भयो। फुण अपने मनमें चिन्तयो।
यह निमित्त सो पहुंचो आय। बहुत कहो हूं कहों बढ़ाय ॥ ३५४ ॥
देखूं सुंदरि को हु कर्म। याहि देय भजूं सब भर्म।
यो मन मांहि विचारै राव। तब तिन जप्यो जी मन भाव ॥३५५॥
कुष्टी राव बात सुन मोहि। मैनासुन्दरि दीनी तोहि।
चलो शीघ्र ही परणही काज। मन वंछित सुख देखो आज ॥३५६॥
जब यह वचन राव को सुनो। तब सब मंत्रिन माथो धुनो।
यह नरनाथ कियो क्या कर्म। काये गुप्त न कहिये मर्म ॥३५७॥
यह कुष्टी तन भंग विकार। पुत्री दीजे कहा विचार।
जन्म जन्म को चढे कलंक। हसिहैं सब राव अर रंक॥ ३५८ ॥
राव सुणि जंपो तब तास। मंत्री किम निंदत सुपयास।
याकै सब सामग्री तिसी। होय और भूपन कै जिसी॥ ३५९ ॥
सिर पर छत्र चवर द्वै दुरें। आगे ऊभा खड्ग कर धरें।
भंडारी राखै भंडार। माल खजानो अगम अपार॥ ३६० ॥

---

(३५०) उदारता = सखावत। (३५२) तूठौ = प्रसन्न हुआ हूं।
(३५७) काये = क्यों। गुप्त = छिपा। मर्म = भेद। (३५८) सुपयास = प्यारी बात

दुखी लोग सेवत हैं यास। आगे नित्य होत हे रास।
गाहा गोन बात बहु भेद। सैंधव बहुत अरु गजा मेद ॥३६१॥
अर सब भांति देखिए सूर। भूलिन कबहू भाषै कूर।
अर देषिए दया अधिकार। दान देत हे चित्त उदार ॥३६२॥
यह सब ही विधि पूरो आह। ऐसो वर तजि दीजे काहि।
वारंवार वखाणे राव। याही ऊपर मेरो भाव ॥ ३६३ ॥
या सुण मंत्रीउठे रिसाय। अजुगति कहा कहत हो राय।
मनमें शंक बातते कहैं। वारम्वार चरण ते गहैं ॥३६४॥
राजा सुणो करो मति कोह। कीजे कछु सुता को मोह।
तुम तो करत कहांगा इसो। काहू मूढ कीयो हे जिसो ॥३६५॥
पायो नग निर्मोलिक एक। ताको कछु कियो न विवेक।
काग जिहाजि बेठो आय। सो विडारियो ताहि चलाय ॥३६६॥
काहु आय भेद जब दियो। ताको पछितावो रहि गयो।
होत कहागो तेसो एह। कन्या मति कोढीको देह ॥३६७॥
अपयश फैलि देश में जाय। अन्त तऊ पछितैं हो राय।
आगे शोचि काम जो करे। तो कबहू चूक न परे ॥ ३६८॥
अर तो अपजस देय न कोई। नीके करि देखो जिय जोई।
और सुणो जोयो भूपाल। पाथर ले मति देवो लाल ॥ ३६९॥
कहा कर्म पुत्री को करे। सोई होय बाप जिय धरे।
नीकै कर तुम देखो चाह। यामें कछु न धोखो आह ॥ ३७०॥

---

(३६१) यास = इसे गाहा = गाथा। सैंधव = घोड़ा। गजा = हाथी।
(३६२) उदार = सखी (दानी)। (३६४) शंक = भय।
(३६५) कोह = गुस्सा। सुता = पुत्री। (३६६) विवेक = विचार (परीक्षा)
विडारियो = उड़ाया।

यह सुण बोलो राय प्रचंड। मेण वचन मोहे लागत दंड।
तुम मंत्री जानो अनुमान। यह ही काज होय परमान॥ ३७१॥
मत जंपो तुम बारम्बार। को सामर्थ जो फेरन हार॥ ३७२॥
बहु भोजन श्रीपाल हि दियो। पुर बाहर तब उस राखियो।
मन में हर्षवन्त विकसाय। राजा गृह तबपहुंचो जाय॥ ३७३
जिह बैठी मैनासुन्दरी। तासो प्रथम बात उच्चरी।
पुत्री उत्तर देहु विचार। अज हूं आपनो कर्म निवार॥ ३७४
पाणिग्रहण करो तज लज्ज। सुन्दरी जंपै सुन हू विसज्ज।
कहा कहत हो हीणी बात। स्वस्थचित्त है सुन हो तात॥ ३७५
जो मुनि क्रियावन्त अति होय। दरशनभ्रष्ट कहा कीजे सोय।
कीजे कहा धर्म जो कहे। जाको चित्त दया नहि रहे॥ ३७६
कीजे कहा ध्यानधर एक। जाके हृदय नाहीं विवेक।
कीजे कहा त्याग बहु किए। जाको क्रोध प्रगट है हिए॥ ३७७
कीजे कहा पूति गुणरात। मेटै मात पिता की बात।
बार बार को करे वखाण। मेरे तात वचन परमाण॥ ३७८
निठुर चित्त है राणो गहो। दुष्ट कहाणो तासो कहो।
मैं दीनी पुत्री जिय जान। कुष्टी राव परणि सुख मान॥३७९
सुन्दरी सुने तात के बोल। तेई मन में धरे अडोल।
मन में कीनो हर्ष अपार। विहसन जंपे वारम्बार॥ ३८०
विधि निर्मयो हीन गुणवन्त। सुन हु तात वह मेरो कन्त।
सुन्दरबदन नरिंद जे आन। ते सब देखूं तुमह समान॥ ३८१

(३७१) मेण = मैनासुन्दरी। परमान = स्वीकार।

(३७५) पाणिग्रहण = विवाह। स्वस्थचित्त = सावधान दिलवाला।

(३७८) पति = पुत्री। गुणरात = गुणोंवाली। (३८०) अडोल = निश्चल।

यह तो कियो कर्म निरदोस । काहू सो कछु राग न रोस ।
शुभ अर अशुभ कर्म हैं संग । कोऊ मति भूलो भ्रम रंग ॥ ३८२
हरत परत अब सरचो मुझ । राजा कछु दोष नहीं तुझ ।
पुत्री सुन यों जंपे राव । तेरे पोते दुष्ट स्वभाव ॥ ३८३
अजो न तजत कर्म अतिगाह । ऐसे लागो होन विवाह ।
विप्र एक विद्याकरलीन । सामुद्रिक जोतिष परवीन ॥३८४
लीयो बुलाय आप नरनाह । हर्षवन्त पुत्री को व्याह ।
दिन शुभ घडी महूरत साध । लगन लियो जोसी आराधि ॥३८५न
भाष्यो विप्रह तबै निरुत्त । शुभ कर वासर आज पवित्त ।
सूरज शशि यह सुरगुरु चाह । वर कन्या को उत्तम आह ॥ ३८६
वरसर्वास जो सोधो राय । ऐसो द्योस न पहुंचे आय ।
हर्ष राव ताको कछु दियो । तब जोतिषी हियो भर लियो ॥ ३८७
त्याग लेत तो हाथन बहे । बारम्बार विप्र यों कहे ।
बात कहत सो करय न शंक । सुन हो राय कर्म के अंक ॥ ३८८
ताकूं कछु दीजे नहीं खोर । प्राणी बन्ध्यों विधि की डोर ।
जित खेंचे तितही ले जाय । यामें कछु न धोखो राय ॥ ३८९
या अजुगति कछु कहिय न परे । राजसुता को कोढा वरे ।
जाके रूप जगत् मोहिए । सो किम कुष्टी को सोहिए ॥३९०
राजा हिये बात यह धरी । तेरी बुद्धि विधाता हरी ।
ऐसो तें आरम्भो काज । है कछु बूड्यो चाहत राज ॥ ३९१

---

(३८३) हरत परत = कर्मों की पलटना । (३८५) जोसी = ज्योतिषी ।
(३८६) निरुत्त = उत्तर । सुरगुरु = बृहस्पति । (३८७) द्योस = दिन ।
हर्ष = खुश होकर । हियो = दिल । (३८८) खोर = दोष । विधि = कर्म

विप्र गये घर लियो न वित्त। लागो प्रगटन यहीचरित्त।
मन्त्री वरजे पुनि पुनि तास। स्वामी यह है धर्मविनाश ॥३९२

विनसे मंत्री संका धरे। विनसे भामन आयसटरे।
विनसे राव मंत्र जो तजे। विनसे सुभट देख रण भजे॥३९३

विनसे शूर क्रोध पर हरे। विनसे साधु बाद जो करे।
विनसे दाता विवेक न करे। विनसे सिध क्रोध जो धरे॥३९४

बिनसे अलि पंकज की वास। बिनसे रागी रहे उदास।
बिनसे चोर भेद जो देय। विनसे रोगी स्वाद जो लेय॥ ३९५

बिनसे साह उधारो देइ। बिनसे गणिका जो व्रत लेइ।
बिनसे अति कामातुर देह। विनसे नार फिरे परगेह॥ ३९६

बिनसे पात्र क्रिया जो हीन। विनसे तपसी लोभ है लीन।
वार वार मंत्री गण कहे। काहू को वरजो नहीं रहे॥ ३९७

अब लौं चलते मंत्र प्रवान। अब तुम कछु होगए अयान।
सुता रूप गुण सायर मान। सौंपत कुष्टी कहां सयान॥ ३९८

मानों बात कहुं ढिठकाय। अति हू दुख पावोगे राय।
तबै राव बोले मतिभंग। मंत्री मति भूलो भ्रम रंग॥ ३९९

मूरख होए विचारो कुबुद्धि। कहां गई जो तुम्हारी बुद्धि।
मैं जो तिलक कियो धर मौन। मेटन हारो कहो है कौन॥४००

तब मंत्रीगण चवे निसंक। कुल निर्मल मति देहु कलंक।
मनुष्य जन्म धर वो पद पाय। सो तुम अवमति हारो राय॥४०१॥

---

(३९२) वित्त = धन। (३९३) विनसे = नष्ट होवे। भामन = स्त्री। आयस = आज्ञा।

(३९४) विवेक = विचार। सिद्ध = तपस्वी। (३९५) अलि = भौरा। पंकज = कमल

(३९८) सायर = सागर। (३९९) ढिठकाय = ढीठता।

तन में ही दुख प्रबल सहो। मत तुम क्रोध दवानल दहो।
बात बढाई कहे को और। मति गारध सिर बांधो मौर ॥ ४०२ ॥
सुन कर कोप भयो अति राव। दुष्ट भाव बोलियो कुभाव।
राज रीति को धर्म न होइ। मंत्री तुम देखो जिय जोइ ॥ ४०३ ॥
अब लों तो राख्यो सन्मान। अब मरवो तू निश्चय जान।
मो मन और कहो तुम और। अब के बोलत मारूं ठौर ॥ ४०४ ॥
तब मंत्री बोले कर जोर। स्वामी हमें न दोजे खोर।
हम मंत्री बोले भय जीत। यहाँ हमारे कुल की रीत ॥ ४०५ ॥
स्वामी धर्म जिह ठाहर होय। दर्शे सोई पसायें सोय।
जो हम करें लाज मुन राय। तो कुल रीति हमारी जाय ॥ ४०६ ॥
अरु राजन को यह स्वभाव। जब जाणत है वसमो दाव।
तब मंत्री लीजिये बुलाय। बूझ ताहि भेद निकुताय ॥ ४०७॥
जोई बात कहे समझाय। सोई करे सबे छिटकाय।
औरन मन लावे अधिकार। ऐसो नृप कुल को आचार ॥ ४०८ ॥
तातें वार वार उच्चरे। कछुयन जिय को लालच करे।
चूक हमारी कछुयन आहि। नीके कर देखो चित चाहि ॥ ४०९ ॥
मन में समझो कछु न राय। मुह कर तिन सो उठो रिसाय।
और बात मति लावो चित्त। सामग्री तुम करो पवित्त ॥ ४१० ॥
सुन्दरि वर को शोभा धरो। वेग होहु वार मत करो।
सुनत वचन मंत्री दुःखी भए। हरे वांस मंडप अर ठए॥ ४११ ॥
चार खम्भ कञ्चन के बणे। चमकें नग निर्मोलक घणे।
चार कलश इकसोभन जरे। ते सोहें चहूं खूंटा धरे ॥ ४१२ ॥

---

(४०२) दवानल = बन की आग गारध = गधा। (४०७) निकताय = मिलकर
(४११) वार = देरी। (४१२) एकसोभन = एकसी शोभावाले। खूंटा = दिशा।

अर शोभा तिहि विधि प्रकार। मुक्ताहल की बांदरवार।
चौक सुवासणि देहिसुचंग। अति उज्ज्वल देखे अभंग ॥४१३॥
अरु तह दिये सुरंग उछार। तिनकी शोभा जगै अपार।
नन्ही चूनी दई फलाय। ते चमकै कछु कही न जाय ॥४१४॥
सबै सुवासणि रुदन कराय। शोभाचौंक सवारतिजाय।
सज्जन लोग जुरे सब आय। मलिन चित्त को नहि विकसाय॥४१५
ठाय ठाय झुरे सब कोय। अजुगति बात न ऐसी होय।
विधना कछु एह निरमई। राजा की मति बुध हर लई॥ ४१६॥
राजा राय जुरे सब जिते। अश्रुपात करत हैं निते।
अरु बजें वाजित्र अपार। तूरमृदंग भेरि सहनार॥ ४१७॥
गहरे शब्द बाजें सीसांण। मलिन शब्द अति सुनिये कान।
विप्र वेद धुनि पढ़ें अपार। नर नारी रोवें अधिकार॥ ४१८॥
राजा कहै व्याह केचार। वेगा करो होय अवार।
मेरे मन को ईठसु आय। वेग ज्वाई ल्यावो जाय॥ ४१९॥
करूं सब जो मोते होय। बार बार यों भाषे सोय।
मंत्री गये सीस धुन तहां। नगर निकासे वर जो जहां॥४२०॥
ले आये अति कुष्टी देह। वह राधि अर लागी खेह।
जो देखे सो हांसी करे। विधि को ठाठ न टारो टरे॥ ४२१॥
देखत राजा अति सुख कीयो। कञ्चन कलश न्हावण को दियो।
सोधें मर्दे बहुत अबीर। तो पण वास न तजे शरीर॥ ४२२॥
कङ्कन कर बांधो सेहुरो। मूर्ख राव भयो बावरो।
कामन घोडी गावें सबे। दुलह व्याहन चालो तबे॥ ४२३॥

---

(४१३)मुक्ताहल = मोती। सुवासनी = सुन्दरी। (४१४)उछार = उछाल लगाना (४१५)सुवासणी = सुहागन स्त्रियें। (४१६) ठाय = स्थान। (४१७)धुन = कम्पाना(४२१) खेह = भस्म।

चंचल तुरी चढावण लियो। मंत्री चाहे हांसी कियो।
वह दिढ वाग गही कर चाव। राज वंश किम मिटे सुभाव ॥४२४
चली बरात उडी तहां धूर। रही वहां वह अम्बर पूर।
रतन जडत सिर ऊपर छत्त। ढुरे चवर सो भले महत ॥ ४२५ ॥
श्रीपाल मन हर्षित भयो। मंडप द्वारे ठाडो भयो।
परियन सकल देखियो आय। तिन के बदन गए कुमलाय ॥४२६
मानों अंबुज हते तुषार। मानो तरुवर हते कुठार।
ऐसो भयो चित्त अनुराव। मानों भयो वज्र को घाव॥ २४७
ते बहु रुदन करे गह भरे। राजाकी ते निंदा करे।
राणी जन अंतेघर जिती। अति विलखाय विसूरे तिती॥ ४२८
तिनके विलखे कहा सिराय। राजा मनमें खरो लजाय।
मूढ रह्यो नीची करि नार। काहू दिश नाहि सके निहार ॥४२९
माता बहन खरी गह भरे। हाहाकार लोग सबकरें।
माता महा दुख तनदगी। पुत्री के गरकंठ सो लगी ॥ ४३०
हा पुत्री सागर दुख भरा। किमति रहै मैनासुन्दरी।
पूरब कहा कीयो तैं पाप। जातैं भयो नाहसन्ताप॥ ४३१
सुन्दरी बोला जिन मत लीन। समझावे परियण परवीण।
कोऊ दुख करो मति सोग। शुभ अर अशुभ कर्म को जोग॥४३२
जो प्राणी आयो संसार। ताकै गरै दुःख की मार।
जित ही देखे नैन पसार। तित ही वांधी दुख की पार ॥ ४३३

---

(४२४) तुरी = घोड़ी। (४२५) अम्बर = आकाश। (४२६) वदन = मुख।
(४२७) अम्बुज = कमल। तुषार = वरफ। कुठार = कुहाडा।
(४२८) गह = आह। अन्तेघर = अन्तःपुर (राणियों के रहने की जगह)।
(४३१) किमति = किस विध। नाह = पति। (४३३) मार = माला।

यह सागर संसार अपार । विरलो कोऊ न पावै पार ।
मात पिता सुत बन्ध अरमित्त । हय गय वाहनरथजु पवित्त॥ ४३४
माया और आह अधिकार । मिथ्या सर्वं रची करतार
कांको पिता कौन की माय । जीव अकेला आवै जाय ॥ ४३५
बैठे रहें हितू पैचास । बार बार चोवें चहुं पास ।
काहु पास न होय उपाय । जब कर केश गहे जम आय ॥ ४३६
सोई बड़ो हितू सुणि माय । कांधे धर मर घट ले जाय ।
राजेंद्र खोर देहुमति कोय । होण हार सोई परि होय ॥ ४३७
प्रति बोध्यो सगलो परिवार । गांवण कह्यो व्याह को चार ।
आपन हर्ष उठाई सुलियो । शशिवदनी सेहुरो बांधियो ॥ ४३८
मणिमय कुण्डल पहरें कन्न । कर कंकण सोहिए रवन्न ।
नेवर पहरे अति झुण कार । पहरी गल मोतिन की मार ॥ ४३९
सुर हि वास मरदियो शरीर । पहरयो अंग कसूंभी चीर ।
करि सिंगार पहुंची जास । श्रीपाल मण्डप थो तास ॥४४०
मैनासुन्दरि बैठी आय । परियण रहसि दियो छिट काय ।
तिह वा रुदन करें सब कोय । इकटक रहे मुहा मूह जोय ॥ ४४१
तब सुन्दरी उठ ठाडी भई । निज परियन माता पै गई ।
सुरसुन्दरी को गायो जिसो । मोकों क्यों नहि गावो तिसो ॥४४२
पुत्री जंपै बारंबार । करो उछाह अर मंगल चार ।
यह कहकै पुत्री बैठियो । माता बहन हियो भर लियो ॥ ४४३

---

(४३४) हय = घोड़ा । गय = हाथी । (४३६)कर = हाथ से । केश = बाल ।
(४३७) खोर = दोष ।
(४३८) प्रतिबोध्यो = समझायो । (४३९) नेवर = पांवटे
(४४१) रहसि = एकान्त में ।

ढुरैं चवर दूल्हे के सीस। जय जय शब्द करें नर ईश।
बाजें जहां गहर बाजणौं। जाचकजन विहदाचल भणौं॥ ४४४
चंदन रोरि दई लिलार। पहरे पाटंबर शुभसार।
नाचें गावें मंगल चार। बामण वेद पढैं झुणकार॥ ४४५
भांवरि सात फिरी सुभजवै। राजा गंधवो लीनो तवै।
मैनासुन्दरी पकरी हाथ। सौंपी श्रीपाल नरनाथ॥ ४४६
कन्या दान लियो नरनाह। तब नृप दियो मूह की धाह।
मंत्री जन सब लिये बुलाय। मेरो मूह मति देखो आय॥ ४४७
हा हा हूं पापी परवान। हा हा हूँ मतिहीन अयाण।
महा दुख परियण को दयो। अपजस कलंक लोक में भयो॥ ४४८
वारंबार ऐसी उच्चरै। ऐसो काम नीच नहि करे॥
सबै गंवाई कुल की रीति। नर भाषो यों करी अनीति॥ ४४९
अब कहा बदन दिखाऊं तोय। चढी कालिमा मेटै कोय।
हा हा पुत्री सब गुण लीन। जैनधर्म्म पालन परवीन॥ ४५०
मो निर्मल मति खोटी भई। तू कन्या कोढी को दई।
पुत्री कहै सुनो हो तात। मिटै केम जिनभाषित बात॥ ४५१
कछु खोरि दीजे नहीं तोहि। उदय कर्म आयो सुन मोहि।
जो कुछ निमति होय तह काल। तेई अंक लिखे मम भाल॥ ४५२
पहले विधिना या जिय धरी। पाछैं हूँ गर्भ औतरी।
जै कुछ आय करै करतार। ताको कीजे कहा विचार॥ ४५३
काहु पास न भावी जाय। अज हूँ कहां होयगी राय।
ऐसा वचन भूप जब सुनो। मन पिछतान्यो माथो धुनो॥ ४५४

(४४४) विहदाचल = वंशावली। (४४५) लिलार = माथा = (४४६) भांवरी = लावांफेरे। गंधवो = गंधादिक (४५०) कालिमा = सियाई। (४५२) भाल = माथेमें।

नीके करि देखो चित चाव । अपनी चूक सुनाऊं काव ।
इह चिन्तत दीनी ज्यौनार । सोब्रो दीयो अगण अपार ॥ ४५५
छत्र चमर दीयो भण्डार । दीयो मंगल तुरी तुषार ।
पाटम्बर दीए बहु चीर । जिन्हे लगे निर्मोलिक हीर ॥४५६
षोडश वरषां झीणै अंग । पहरैं कांचू सबै सुरंग ।
अतिसुन्दरि दासी गुण लई । एक सहस सुन्दरि को दई ॥ ४५७
सहस्र दास सुन्दर गुण रेह । दीने श्रीपाल को तेह ।
सेवक भलै भलै जे भए । वहौत और सेवक भी दए ॥ ४५८ ॥
पुत्री देख विसूरै राय । वार वार मनमें पिछताय ।
कंचू दीनी कही न जाय । बहु दीन्हे आभरण घडाय ॥ ४५९ ॥
खाई सात रची चौपास । नौतन दीए कराय अवास ।
पुरि वाहरि राषियो नरेश । दीयो बहुत पुर पाटन देश ॥ ४६० ॥
बहुत दिए वाजनें निसान । दियो सबै चिन्ह उनमान ।
राजा दियो अतिधन जितो । कवि परिमल्ल न वरण्यो तितो ४६१
लई कुमरि चंडोल चढाय । श्रीपाल घरि गयो लिवाय ।
यह सुन नगर भयो कहराव । सबै कहैं धृग धृग यह राव ॥ ४६२
रोवैं परियण बे अनुमान । रोवैं मन्त्री अर परधान ।
रोवैं रैयत कुली छत्तिस । रोवत पशु पंछी सब दीस ॥ ४६३ ॥
तू विधनां अति षोटो आहि । भलै बुरै नहीं देखै चाहि ।
घरि घरि झूर करैं पिछ ताय । राजा गारि देंय विलषाय ॥ ४६४ ॥

---

(४५५) चूक = गलती । (४५६) पाटंबर = रेशमी कपड़े । हीर = हीरे ।
(४५७) षोडश = सोलह । सहस = हजार ।
(४५८) रेह = रेखा । (४६०) नौतन = नवें । अवास = मकान (४६२) कहराव = कहर । धृग = लानत ।

बहुत बातको करै विचार। सुख निवसै श्रीपाल कुमार।
मैनासुन्दरि मनको ईठ। एकै दिन एकासण वीठ ॥ ४६५ ॥
तबे श्रीपाल कहैं हे नार। प्राण पियारी देख विचार।
तू विशुद्ध गुण शील अभंग। रूपवन्त कञ्चन मय अंग॥ ४६६
चन्द्रमुखी सुन अमी निवास। मति आगो छै मेरै पास।
जो लौं अशुभ उदय मो कर्म। तो लौं राखि आपणो धर्म॥ ४६७
वार वार हूं विनहू तोहि। सुन्दरि मति आलम्बे मोहि।
तुम वल्लभा सुख की दातार। संगति वढै दोष अपार ॥ ४६८॥
संगति गुणी निर्गुणी होय। संगति होय कुबुद्धि लोय।
संगति तपो भ्रष्ट व्रत तजे। संगति पाय सूर रण भजे ॥ ४६९
संगति साधु सुरा आचरे। संगति ही नर चोरी करे।
संगति सिंह स्यार ह्वै जाय। संगति अविक आमिष खाय ॥ ४७०
संगति विप्र तजे षट् कर्म। संगति धर्मी करे अधर्म।
संगति शील तजे कुलनार। भामन मन में देख विचार ॥ ४७१
संगति कोढ बढे दुःख लहे। श्रीपाल सुन्दर सो कहे।
मेरो संग बुरो मन आन। सुन्दरि वात हमारी मान ॥ ४७२
बोली नार बैन सुन येह। मन में उपज्यो अति संदेह।
बालम सुनो कही या तोहि। कर्कश बचन कहो मति मोहि॥ ४७३
नाके कर सोचो मन मांहि। जो लौं उदय कर्म की छांहि।
तो लौं भुगतो दुःख सुख संत। भूलन कायर हुजे कंत॥ ४७४

---

(४६५) वीठ = बैठी। (४६७) अमी = अमृत। आगोछै = आना। (४६८) विनहू = विनती करू हूं। संगति = संग। (४६९) सूर = बहादर। रण = युद्ध (४७०) सुरा = मद्य। आमिष = मांस (४७१) षट् = छै। भामन = स्त्री। ४७३) बालम = पति। कर्कश = कठोर

विधिना मोहि पटे लिख दियो । सोई मोकू निहचै भयो ।
तुम मेरे प्रीतम भरतार । तुम मेरे प्राण न आधार ॥ ४७५
तुम अति रूपवन्त गुणवन्त । तुम ही सुख सागर मो कन्त ।
नयन सुखी तोलौं ये चार । जोलौं देखो तुम्हें निहार ॥४७६
तोलौं मैं पवित्त शुभ ठाम । जोलौं जपूं तुम्हारो नाम ।
तोलौं हाथ धन्य सुन राय । जोलौ प्रछालूं तुम पाय ॥ ४७७
बाह धन्य कछु कही न जाय । जो आलंबूं कंठ लगाय ।
हूं त्रिय धन जोलौं जिय धरो । जबलग सेव तुम्हारी करो ॥ ४७८
शील विहूनी नार जो होय । पीय की निंदा कर है सोय ।
पतिव्रता सब ही गुण भरी । हो तो शीलवन्त सुन्दरी ॥ ४७९
शील है सो मेरो अति चित्त । शील पिता बंधु अर मित्त ।
शील परिग्रह मेरो संग । शील रूप मेरो सरवंग ॥ ४८०
शील द्वादश भरण विचार । शील है नव रस शृंगार ।
शीले जीवन शीले मरण । शीले सर्व सशीले सर्ण ॥ ४८१
शीले मेरे नग उनमान । तोलौं तजूं न जोलौं प्राण ।
सर्वस जाय शील जो रहे । तीन भवन में शोभा लहे । ४८२
यह सुन श्रीपाल हर्षियो । धन्य मैनासुन्दरि तो हियो ।
धन्य भामन तेरो अवतार । जिह दिढ धरचो शील को भार ४८३॥
ऐसी विपत्ति मांहिविहसंत । बहुत दिवस बीते निवसंत
कोढारूढ रहे चौपास । सुन्दर पेखत लेय उसास ॥ ४८४

---

(४७७) प्रछालूं धोवूं (४७८) शीलविहूनी = शील रहित । पीय = पति ।
(४८१) द्वादश = बारह । शर्ण = रक्षक । (४८२) सर्वस = सर्वस्व ।

९—श्रीपाल का कुष्ट दूर होना।

हाय कर्म दोषन के राय। तेरी कथा न वरणी जाय।
तेरो शरण आय जिह लियो। ताको दुख बहुत तैं दियो॥४८५
अरु जो फिरो दुष्ट तो साथ। ताकों भले लगाए हाथ।
तेरी आस रहे जिय जोय। अंतकाल ताको दुख होय॥ ४८६
जिहकाहू तो को दुख दियो। ताको बुरो न सर्वथा कियो।
जिह तेरो सेयो परसंग। ताको सदा भयो सुख भंग॥ ४८७

दोहा।

जिह तू मारचो दुःख दे, रे विधि अष्टविकार।
ते पहुंचे वैकुंठ को, तेरे मुख दे छार॥ ४८८
जिह तेरी आसा तजी, कीनो मूल विनास।
तिह भवसागर दुख तजो, लह्यो मुक्ति घरवास॥ ४८९

चौपाई।

निंदा बहुत कर्म की करी। और न काहू उपरि धरी।
मैनासुन्दरी उठी तुरंत। दिव्य वस्त्र पहिरे विहसंत॥ ४९०
शीलवंत अर गुणह निधान। निज भरता संयुक्त समान।
मनमें उपज्यो सुख अशेष। श्रीजिनभवन कियो परवेश॥४९१
तीन प्रदक्षिणा उत्तम बुद्धि। दीनी मनवचकाय विशुद्धि।
दंपति लगो स्तुति जु करण। जयजय मुनिवर भवभव शरण॥४९२

---

(४८५) शरण = सहारा।
(४८६) आस = उम्मीद। (४८७) सुखभंग = सुख का नाश।
(४८८) छार = भस्म (राख)। (४९१) निधान = निधि। (४९२) दंपती = मैना सुन्दरी और श्रीपाल। भव = जन्म।

जय मिथ्यातम हरण पतंग। सेवत सुरनर खेचर चंग।
निर्द्वंद्व निरामय नाना कोष। क्षय कीने अष्टादश दोष॥ ४९३
अनंत चतुष्टय गुणह निवास। इंद्री खेदन सदा उदास।
गदित सप्त तत्त्वारथ भास। वज्र दंड मोहारि विनास॥ ४९४
रत्नत्रय भूषण शुभ चित। एक रूप देखण अरि मित्त।
आनंद कर जयजय जगदीश। जयजय करुणा घर सब ईश ४९५
शुद्ध चित्त दोऊ सिर नाय। बैठे चरणकमल तटि जाय॥
तब सुंदरी बोली कर भाव। हूं पावन मोहे समझाव॥ ४९६
हो स्वामी कछु ज्ञान प्रकाश। संसो मेरा चित को नास।
जयजय मुनि श्रीपाल निहार। नाहभीख दे चित्त उदार॥ ४९७
कछु धर्म्म स्वामी कहि सोय। कुष्ट व्याधि जातें क्षय होय।
मुनिवर कहि पुत्री सुन एह। अणुव्रतगुणसमकितसुध लेह॥ ४९८
पुण्य शिक्षा व्रत सुन हु विचार। भणइ मुनीश्वर पक्षाहार।
गुरवो धर्म्म प्रगट इह आहि। नीके करि सुन भाषै ताहि॥ ४९९

मुनीश्वर उवाच।

॥ वसंततिलकाछंदः॥

धर्मे मतिर्भवति किं बहु भाषितेन
जीवे दया भवति किं बहुभिःप्रदानैः।
शांतं मनो भवति किं धनदे च तुष्टे
आरोग्यमस्ति विभवेन तदाकिमस्ति।

---

(४९३)पतंग = सूर्य। कोष = अन्नमय आदि पांचकोश। क्षय = नाश। अष्टादश = अठारह
(४९५) अरि = दुश्मन। मित्त = मित्र।(४९६) तटि = पास। (४९७) नाह = पति

॥ इंद्रवज्राछंद ॥

बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च
देहस्य सारं व्रतधारणं च।
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं
वाचःफलं प्रीतिकरं नराणाम्॥

प्रथम संस्कृत छन्द का अर्थ ॥

धर्ममें बुद्धि है तो बहुत कहने से क्या है। जीवोंपर दया है तो बहुत दानोंके देनेसे क्या है। मन शान्त है तो कुबेर के खुश होनेसे क्या है। तनदुरुस्ती है तो धन से क्या है।

भावार्थ—बुद्धि का निज धर्म में लगा रहना ही शास्त्र गुरु वचनों का फल है सो यदि बुद्धि धर्मनिष्ठ है तो शास्त्रादि उपदेश किस अर्थ। जीवदान सभी दानोंमें उत्तम है सो यदि जीव दया रूप दान है तो उसके आगे और दान किस अर्थ। यदि तृष्णा मिट गई तो कुबेर की खुशी भी किस अर्थ। धनादि सब सुखों में तन्दुरुस्ती बड़ा सुख है, यदि आरोग्यता है तो धनादि सुख गौण हैं। अथवा जिस की बुद्धि धर्ममें नहीं उसको बहुतउपदेश क्या है। जिसके हृदय में जीव-दया नहीं उसके बहुत दान भी वृथा है। जिस का मन शांत नहीं उसपर कुबेर प्रसन्न हो तो क्या है। और जो रोगी है उस को धन का क्या सुख है।

दूसरे संस्कृत छन्द का अर्थ।

बुद्धि का फल आत्मतत्व का विचार है देहका सार (फल) व्रतों का धारण है, धन का फल याचकों को दान देना है। वाणी का फल मधुर (मिष्ट) वचन बोलना है।

भावार्थ—आत्मतत्व के विचार विना बुद्धि (ज्ञान) वृथा है। व्रत ग्रहण के बिना देह का धारण (जीवन) वृथा है। सत्पात्र को दान दिये विना वृथा खर्चा धन व्यर्थ है मीठे बोलने बिना जिव्हा वृथा है।

॥ चौपाई ॥

निर्मल सिद्धचक्र व्रत लेहु। अष्टान्हिका बडो व्रत एहु।
तब ताकी सुनियो विधि साध। वसु दिन सिद्ध चक्रआराध ॥५००

---

(५००) अष्टान्हिका = अठाई। वसु = आठ।

प्रथम ही मंडल कीजे वानि। ओंकार परथम ही जानि।
चहुकूणै लिखि सोलह अठ। मध्य पंच परमेष्ट गरठ॥ ५०१
दलदल पर लिखये वसुवर्ग। अक चट तप यश हैं वसुवर्ग।
दल अंतर अंतर सुवनाय। दर्शन ज्ञान चरित्र सुभाय॥ ५०२
पुण चक्रिय ज्वाला मालिणी। अंबा परमेश्वर योगिणी।
चारों लिखि जे गुणह विशाल। लिखिजे तहां दशों दिकपाल ५०३
गौमूहयक्षेश्वर लेखिये। बारह मानभद्र थापिये।
दश मुख कै थापिये सुरंग। दश द्वार उद्योत अभंग॥ ५०४
वसुदिन पालहु शील सुभाव। इंद्रियनको उपसर्ग मिटाव।
मूल मंत्र निश दिन भाषिये। होय निचिंत भाव राखिये॥ ५०५
संक्षेपे विधि यामें कही। पुत्री सुनत भई गह गही।
दुष्टकुष्ट तनु नीको होय। रोग सोग सब डारै खोय॥ ५०६
व्यन्तर प्रेत भय न कछु करै। वशी करण मोहनि सब हरै।
होय शुद्ध जस वढे अपार। पुत्र कलत्र बढै परिवार॥ ५०७
नर अरु नारि सबै सुख लहैं। दुःख दालिद्र सबही दहैं।
सुण पुत्री पूजा विधि जिसी। तुमसों वर्ण करत हूं तिसी॥ ५०८
कातिक फागुण साढ़ वखानि। श्वेत पक्ष निर्मल अति जानि।
अष्टमी दिन कीजे उपवास। कीजे इन्द्रयनको सुख नाश॥ ५०९
वसुदिन ब्रह्मचर्य मांडिए। घर की चिन्ता सब छांडिए।
सिद्धचक्र वसु दिन तप माण। कीजे पूजा मिटे अवसाण॥ ५१०

---

(५०१) मंडल = मांडला। गरठ = सभसे बडे।

(५०२) नल = पत्ता। वग = पाच अक्षरों का समूह।

(५०६) गहगही = गदगदप्रसन्न (बहुतखुश)। (५०७) कलत्र = स्त्री। (५०९) श्वेतपक्ष = शुक्लपक्ष। उपवास = व्रतमें अन्न जलका त्याग करना। (५१०) अवसान = दुःख।

नीके कर थिर मन राखिए। मूलमंत्रपुण पुण भाखिए।
मन वाञ्छित फल पावे तवै। उद्यापन विधि कीजे जवै ॥ ५११
कीजे आठ भवन जिण तणे। धरिए आठ विम्व अति वणे।
कीजे सिद्धयन्त्र शुभ अठ। थापै मुनिवर गुण है गरठ ॥ ५१२
झालरि मुकट चवर शुभ थान। कीजे आठ आठ परमान।
कीजे आठ प्रतिष्टा सार। बहु धन खरचै चित्त उदार ॥ ५१३
पूजा आठ करै धरि भाव। अथवा एकै मन करि चाव।
उद्यापन कछु होय न चाहि। दूनौ व्रत कीजिये निवाहि ॥ ५१४
वित्त जोग बहु दीजे दान। चौ संग हि धरिये अति मान।
अर्जिकाने साडी पहराइ। आठ ग्रन्थ दीजिए लिखाइ ॥ ५१५
दुखिया दीन दलिद्री जिते। कर सनमान पोषिये निते।
सुन्दरि अर श्रीपाल कुमार। सुन मनमें सुख कियो अपार ५१६
गुरुको नमस्कार कर घणों। गए निज मन्दिर दोनोंजणों।
रहैं सुख बहु वढ उलहास। आय पहूंचो कातिक मास ॥ ५१७
शशि पक्ष अष्टमी दिन भयो। अति निर्मल प्राशुक जल लयो।
न्हाइ अंग अरु पहिरे वस्त। अति उजल देखिए समस्त ॥५१८
सरव द्रव्य मेले धरि भाव। अतिहर्षित मन उपज्यो चाव।
इछा युक्त गए जिनगेह। वीतराग वन्दो शुभ देह ॥ ५१९
तीन गुप्ति मनवच अरु काय। पण विवि श्रीजिनशासन पाय।
थिर मन होय कियो अति गाह। विधिसे पूजे श्रीजिननाह ॥ ५२०
वसु दिन व्रत विधिसौं मण्डियो। राग रोस दोउ छांडियो।
जानैं समत सत्तु अर मित। ब्रह्मचर्य पालै इक चित्त ॥ ५२१

---

(५११) पुण = फिर (५१२) भवन = मंदिर। बिंब = प्रतिमा।
(५१८) शशिपक्ष = शुक्लपक्ष। प्रासुक = शुद्ध। वस्त = वस्त्र। (५२१) समत = समान।

मुनि पै लिया कीया उपवास। उपज्यो दुष्ट कर्म को त्रास।
नीके सिद्धचक्र पूजियो। शुद्ध भाव गंधोदक लियो ॥ ५२२ ॥
अति सुगंध करे सुविचार। वंछित गई जहाँ भरतार।
सिर से तबै न्हवायो सोय। प्रथम ही दिन कछु नीको होय ॥५२३॥
श्रीपाल अरु सातसै अंग। देखो पुण्य फले जो अभंग।
वहु विधि पूज्यो भाव करेइ। मानो स्वर्ग निसैनी देइ ॥ ५२४ ॥
ढुरै चवर बाजे कंसाल। जल धारा दीनी सुकमाल।
मलिया गिरि सो कुंकुम गार। पूज्यो जिनवर विम्ब निहार॥ ५२५
शशि सम धवल अक्षत तह लये। सुन्दर पुञ्ज मनोहर दये।
पुष्प मनोहर नाना रूप। अति सुगन्ध देखिये अनूप ॥५२६ ॥
कछूक कीनी सुन्दर माल। श्वेत अरुण देखिये विशाल।
कछु कुसम अरु छूटे लये। भर अंजलि जिन आगे दये ॥ ५२७॥
नैवेद्य पकवान अपार। श्री जिन आगे रचे अवार।
चार धरे तह दीप अनूप। खेयो वर कृसनागर धूप ॥ ५२८ ॥
नाना विधि फल धरे सवार। मन वंछित को कहे विचार।
श्रीपाल पूजा की जहां। आठों द्रव्य चढाये तहां ॥ ५२९ ॥
कुसुमांजल दे सिर हू नायो। पुष्पांजली ले पाणी दयो।
प्रथम पूजा इक गुण करी। दूजे दिन दह गुण विस्तरी ॥ ५३० ॥
तीजे सौ गुण पूजा रची। सहसगुणी चौथे दिन सची।
पंचम दश सहस गुणी भणी। लक्ष गुणी षष्ठे दिन ठणी ॥ ५३१

---

(५२२) त्रास = भय। (५२५)सुकमाल = कोमल। मलयागिरि = चन्दन। कुंकुम = केसर
(५२६)शशी = चांद। धवल = सफेद अक्षत = चावल। (५२७)अरुण = लाल विशाल = लंबी
कुसुम = फूल। छूटे = बिना परोये। अंजलि = बुक। (५२८)कृष्णागुरु = कालाचन्दन।
(५३०) कुसुमांजलि = पुष्पांजलि। (फूलोका उंजला)। दह = दस। (५३१)सहस = हजार।

सप्तम दश लक्ष गुणी जान। कोटि गुणो अष्टम परमान।
ठाडे सुर सब कौतिक हार। मन में कीयो हर्ष अपार॥ ५३२॥
अति सुकंठलीनी जयमाल। उपज्यो कौतूहल तिन काल।
सुन्दर महा आरती रची। इन्द्र इन्द्राणी दोऊ नची॥ ५३३॥
सुरबाजे बाजें अनिवार। मधुरी धुनि शोभे अधिकार।
जन के मन न बरणे जाय। नाचे किन्नर अति मुसकाय॥ ५३४॥
अमरेश्वर सब चढे विमान। अमरे आपआपने थान।
पूजा करी भरम सब भगो। कोटिभट आठो निशि जगो॥ ५३५
तीन दिवस गंधोदक न्हाय। कोढ विनष्टो हर्षोराय।
कंचन वर्ण भयो तन इसो। सोहन कामदेव को तिसो॥ ५३६
और जे वली सात से मित्त। तिन हु के तन भये पवित्त।
और ही कुष्ट देह थे जिते। गंधोदक किये नीके निते॥ ५३७
भूत पिशाच निशाचरमंत। नाम्में गंधोदक परसंत।
मोहन वशीकरण जे आहि। विषहर डाइण साइण जाय॥५३८
नैन निरंध श्रवण विन जिते। नीके भये सबै नर तिते।
अरु जे दुष्टकर्म दुख दगें। सुख पावें गंधोदक लगें॥ ५३९
नर नारी मन वच कर कोय। सिद्धचक्र आराधे जोय।
सो प्रगटे तिहुं लोक मझार। सो भुंजे बहु सुख अधिकार॥५४०
बाढै विभव विना अनुमान। करै राज सो इन्द्र समान।
नाना फल विलसे सुखदाय। मरकै बहुरि मुक्त सो जाय॥५४१
जाके न्हाए तै कवि कहै। कुष्ट व्याध नहीं तन में रहै।
याको अचिरज कछु नहीं आहि। जो करि है सो पावै ताहि॥५४२

---

(५३५) अमरेश्वर = इन्द्र। अमरे = देवता।

(५४१) विभव = ऐश्वर्य धनादि।

मैनासुन्दरी पियकी देह। देखत गह भर आयो नेह।
तब तासों मुनिवर यूं कहो। यह फल अबतैं तुरत ही लहो॥५४३
स्वामी तुम प्रसाद सब येह। बहुत विनय कियो धरि नेह।
चरण कमल मुनि वरके बंद। दोऊ घरि आए आनंद॥ ५४४
गयो अशुभ सब धर्म सहाय। बाढ्यो शुभ को कहै बढाय।
धर्म एक त्रिभुवन में सार। धर्म ही दुःख विनाशन हार॥ ५४५
धर्म ही तें नर भव आइए। धर्म तें उत्तम कुल पाइए।
धर्म ही तें कीरति विस्तरै। धर्म ही तें कारज सब सरै॥ ५४६
धर्म ही तें बाढै परिवार। पुत्र कलत्र बढै अपार।
धर्मी ग्रह व्यापै नहीं कोय। धर्मही तै चक्रीश्वर होय॥५४७
धर्मही से नर वयरनि वहै। धर्मही से कोई बुरो नहीं कहै।
धर्मही से नर होय सुरंक। धर्म ही से नहीं चढै कलंक॥ ५४८
धर्म ही ताहि लेइ छुड़ाय। जब जम त्रास दिखावै आय।
गहे केस देह छाडै जबै। धर्म जे राख लेत है तबै॥ ५४९
धर्मही से सब मिटें कलेश। धर्म ही तै मर होय सुरेश।
वहुत बात को कहै बढाय। धर्म ही तै नर मुक्त होजाय॥ ५५०
कवि परिमल्ल कहै चित चाहि। धर्म विना कोऊ हितु नाहि।
प्राणी तज प्रपंच विचार। करो धर्म जिम उतरो पार॥ ५५१
और कछु सब दुख को धाम। धर्म एक है सुख को नाम।
धर्म ही तें श्रीपाल है रूप। मकरध्वज सम भयो अनूप॥ ५५२
कष्ट व्याधि थे लियो उवार। पाई महा मनोहर नार।
दोउपरस्पर सुख अपार। भोग भोगवें विविध प्रकार॥ ५५३

---

(५४५) अशुभ = पाप। (५४७) ग्रह = शनि आदि ग्रह। (५४८) सुरंक = (सुरंग) सुन्दर रूप वाला। (५४९) गहे = पकडे। केश = बाल। (५५२) मकरध्वज = कामदेव।

जिन मंदिर दिन दिन पग धरैं। निज गुरु की सो स्तुति हिकरैं।
विलसे विभव देंय बहु दान। गुणियन गर्व लहे तहां मान ॥ ५५४
अह निशि सिद्धचक्र गुण गाहि। मूल मंत्र जप पूजे ताहि।
महां सुख दोऊ नवरंग। सेवा करैं सात से अंग ॥ ५५५
इस विध दोउ सुख विलसंत। नित प्रति पूजत श्री अरहंत।
तासरी संधि यह वरणई। कवि परिमल्ल भाष कर दई ॥ ५५६ ॥

॥ छन्द त्रिभंगी ॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणम्
बुधजनमनरंजनपातकगंजन सिद्धचक्रविधि दुखहरणं ॥
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्ल कृतं
वरसुन्दर पायो व्यथा गमायो श्रीपाल सुखराज करम् ॥५५७

इति तृतीयसंधिःसमाप्तः ॥
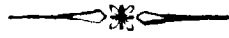
१०—माता का श्रीपालको जाकर मिलना।

॥ दोहा ॥

वर मैना सुन्दरि लहो, मिटो रोग अधिकार।
श्रीपाल शुभ पाइयो, सिद्धचक्र फल सार॥ ५५८

॥ चौपाई ॥

इतनी धर्म कथा यह रही। कवि परिमल्ल प्रगट कर कही।
वहुरो कथा गई सो तहां। महा नगर चंपापुर जहां॥ ५५९
कुंदप्रभा राणी दुख दही। श्रीपाल की सुध ना लही।
लोचन भर भर लेय उसास। पुत्र वियोग दुखको त्रास ॥५६०

(५५५) अह = दिन। नवरंग = नतन आनन्द।

शोक समुद्र परिग्रह भरे। दिन दूसरे सुभोजन करे।
खीणीदेह बहुत जब भई। तब सो श्रीजिनमंदिर गई॥ ५६१
तहां एक निस मुनिवर लहो। सबै भेद तब तासों कहो।
स्वामी कलाज्ञान परकाश। संसे मेट दुखको नाश॥५६२
यह सायर संसार असार। पसरो तहां मोह को जार।
तामें परो जीव दुख सहै। यह काहु सों बात न कहै॥ ५६३
पणविवि बहुरे जोरे हाथ। आई शरण तुम्हारो नाथ।
सोई बात कहो मुनिराय। जातें मम सब चिंता जाय॥ ५६४॥
कुष्ट व्याधि श्रीपाल है अंग। ताके वीर सात से संग।
गयो राज तज दुख को लयो। जीवत किधों काल वश भयो॥ ५६५
स्वामीमोपर दया करेहु। ताको भेद सबै मो देहु।
तब मुनिवर जंपै गुणराव। सुन सुन राणी मन धर भाव॥ ५६६॥
पुर उजैन मालवो देश। करै राज पहुपाल नरेश।
कोढ़ारूढ़ देश बहु धाय। तुम पुत्र तहां पहुंचो जाय॥५६७॥
राजसुता मैनासुन्दरी। राजा व्याह दई मन हरी।
दोनों सिद्धचक्र व्रत लयो। कुष्ट रोग तब ताको गयो॥ ५६८॥
अर वे हुते सात सै अंग। तिन हु के तन भये अभंग।
जाचक जन हि देय बहु दान। राजा बहुत करे सन्मान॥ ५६९॥
बहु सुख सो तिन ठान बसत। गुरु की स्तुति जिन भक्ति करत।
यह सुन हर्षवंत अति भई। नमस्कार कर घर तब गई॥ ५७०॥
ताको मोह व्यापियो हिए। वीरदवन पै आयस लिये।
चढ चंडोल पयाणो दियो। मन में कुछ सोच नहि कियो॥ ५७१॥

---

(५६३) सायर = समुद्र। (५७०) ठान = जगह। बसत = बसते हैं।
(५७१) आयस = इजाजत। चंडोल = डोला। पयाणो = यात्रा।

कुछयक दिनमें पहुंची तहां। नगर उज्जैन मनोहर जहां।
नगर निकास महल तातने। तिन की शाभा कहत न बने॥ ५७२॥
तिन तिन देखत उपज्या चाव। आगे परें न ताके पाव॥
थकित भई मन में सुख पाय। बार बार सोचे अकुलाय ॥ ५७३ ॥
मन ही मन राणी उच्चरे। कारण कछु न जाणा परे।
निकसो तहां वीर कोउ आय। तब तिस पूछापास बुलाय ॥५७४॥
कह कह वीर वात धर नेह। काको मंदिर दीपत येह।
माता बात सुनो कर चित्त। याको ऐसो आहि चरित्त ॥ ५७५ ॥
यह कुष्टी कछु कहियन जाय। बन में रह्यो कहुं थे आय।
कुष्टी और वहुत थे संग। नख शिख गले भये तन भंग ॥ ५७६॥
यहां रहत दिन वीते घणे। अचरज एक कहत नहीं वणे।
एक दिवस तह कथा अपार। राजा तहठैगयो सिकार ॥ ५७७॥
देखत ताहि मोह अति भया। भर भर अंगन भेटन लयो।
भेटन ताहि प्रीति अति भई। मैनासुन्दरी ताको दई ॥ ५७८॥
वरजे मंत्री गहि गहि पाय। तिनसों राजा उठा रिसाय।
घर ले आया हिये उछाह। वहुत भांत सो किया विवाह ॥ ५७९ ॥
राजा रैयत देत सब गार। सोंवा दिया अति धनसार।
अरु यह दिये महल करवाय। इन में रहत बात सुन माय॥ ५८० ॥
अब सो रोग गया सब कहें। सेवक संग सात सै रहें।
अरु वहु विभव कहां लो गणा। धर्म नेह पायो फल घणो ॥५८१॥
यह सुन हर्षवंत अतिभई। शीघ्रहु द्वारतासकै गई।
राजा सुध कीनी प्रतिहार। जैसे चिन्ह वात व्योहार ॥ ५८२ ॥

---

(५८२) शीघ्रहु = जल्दी। द्वार = दरवाजा। प्रतिहार = द्वारपाल।

श्रीपाल यह सुन हर्षियो। उपज्यो मोह हियो भर लियो।
अति आनन्द कहत नहीं बने। कोटीभट सुन्दरी सों भने ॥५८३॥
आवेछै जननी सुन येह। नीकै कर सनमान करेह।
स्वर्ण सिंहासन तब निर्मयो। श्रीपाल माता पै गयो॥ ५८४॥
नमस्कार कर बंदे पाय। बार बार रही उरही लगाय।
नयन प्रवाह चलो तब तिसो। वर्षत है भादों घन जिसो॥ ५८५॥
ताको सुख उपजो अधिकार। मुख चूमे सो बारंबार।
पुण पुण भेटे कंठ लगाय। लोचन नीर भरे सुख पाय॥ ५८६॥
तब सिंहासण बैठी आय। सुन्दरि उठी गहे ता पाय।
कुंदप्रभा ता उठावन लई। ताहि असीस विहस कर दई॥ ५८७॥
चिरही काल रहो पति तणो। सदा नेह बाढो पिय घणो।
और कहा मैं कहूं बढाय। वहु अंतेवर सेवैं पाय॥ ५८८
अर बाढो पहुपाल नरेश। हय गय परिग्रह लोग असेस।
और कहा भाखूं सुन बाल। कोटीभट जीवो चिरकाल॥ ५८९
तब बोली सुन्दरी तज गर्व। तुम देखत मैं पायो सर्व।
मेरे भर्म सबै भजि गये। अब दोऊ कुल उज्वल भये॥५९०
पाय पषारण कीनो जबै। मेरा जन्म सफल भयो तबै।
यह कह सो ठाढी हो रही। माता बात कुमरसों कही॥ ५९१
नीके हो सुत सुख हो गात। मोसों कहो आपनी बात।
तब श्रीपाल कहै सुन माय। अब नीके जब देखे पाय॥ ५९२

---

(५८४) आवे छै = आवे है। (५८५) उरही = छातीसे। घन = मेघ।

(५८७) विहस = हंसकर।

(५८८) बाढो = बढे। अन्तेवर = राणियां। (५८९) हय = घोडे। गय = हाथी।
असेस = सारे।

जीवन जन्म सफल अब भयो। माताने मुख चूमन लयो।
धन ये वासर घडी सुभाय। माता तुम अब धारे पाय ॥ ५९३
आज धन्य तिथि धन यह वार। आज धन्य मेरो अवतार।
आजहि पुण्यवंत मैं भयो। आज हि कुष्ट रोग मो गयो ॥ ५९४
आजहि गयो कलंक मिटाय। तुम भर देखी नैननि माय।
धन मंदिर यह धन यह देश। माता तुम कीनो परवेश ॥ ५९५
नमस्कार कर ठाडो भयो। ताको चित्त कहूं नहीं गयो।
तब श्रीपाल कहै सुन माय। याकी कथा कहूं समझाय ॥ ५९६
यह पहुपाल सुता गुण भरी। महा सुन्दर मैनासुन्दरी।
यह कल्याण रूप निन होय। यह इस जन्म सहाई मोय ॥५९७
याही विभव बहुत मो करी। याही कुष्ट व्याध सब हरी।
बहुत बात को कहुं बढाय। जो कुछ है सो याहि सहाय ॥ ५९८
यह सुन सुन्दर बोली बैण। हूं स्वामी चरणन की रैण।
बहुत कहा विनउं परकास। हूं तोहु दासिन की दास ॥५९९
सोये दोष लगै मो येह। मोको जो तुम उपमा देह।
बहुत परस्पर वह विहसंत। मन वांछत सुख फल भुंजंत ॥६००
जननी जन सुख पायो घणो। पुण्य फलो देखो तातणो।
निर्मल वपु देखो सो अभंग। सेवा करैं सातसै अंग ॥६०१
याचक जन आवैं दरवार। ते बहु धन पावैं अधिकार।
गुणिजनपावैं अति सनमान। हय हाटक जन दीजे दान ॥ ६०२
एकै दिन को कहै बढाव। मन में उपजो केवल भाव।
आप आपने कर शृंगार। जैसे दंपती के सुख सार ॥ ६०३

---

(५९४) अवतार=जन्म धारण (५९९) बैण=बचन। रैण=धूलि।
(६०१) वपु=शरीर। (६०२) हय=घोडा। हाटक=सोना।

तिस अवसर ते दीसें तिसे। सुर अपछरा राजत जिसे।
दोउ अति भर आये नेह। पहुंचे जाय जिनेश्वर गेह॥ ६०४
मुनिवर एक आहि तिह थान। तप गरिष्ठ अरु ज्ञाननिधान।
ताको नमस्कार कर सार। लागे वह स्तुति करन पसार॥ ६०५
जय जय मुनिवर गुणही निधान। जयजय करुणासर परधान।
जय जय अभय दान दातार। जय जय गत भव सागरपार॥६०६
जय जय चरण आचरण धीर। जय जय मोह दलन वर वीर।
जय जय क्षमावंत सुखधाम। जय जय शिवरमणी गलदाम॥६०७
जय जय सहन परीषह देह। जय जय दह लक्षण गुण गेह।
जयजय रत्नत्रय व्रत धरण। जयजय बारह विधि तपकरण॥ ६०८
पणविवि बार बार थुति करी। जाणी सफल वही शुभ घरी।
नमस्कार कर मन वच काय। दोउ बैठे मन सुख पाय॥६०९
घर पहुपाल राव दुख करै। पुत्री गुणसुमरे गह भरे।
काहु सों मुख सकै न दिखाय। कवहु सभा न बैठे आय॥ ६१०
चिंता नृप भोजन परिहरो। महा शोकसागर में परो।
रात्रि न सोवै मन पछिताय। भामनी लीनी पास बुलाय॥ ६११
प्राणवल्लभा सुन वरनार। मैं पाई पंचन में गार।
मैं अयुक्त कीनी किम रहूं। निशि वासर दारुण दुख सहूं॥ ६१२
मैं अपराध कियो धर भाव। किम कर मिटै मोह समझाव।
किमिही सोच मिटत है माहि। वारबार पूछत हूं ताहि॥ ६१३

---

(६०५) पसार = विस्तार से। ६०६) निधान = निधि। सर = सरोवर। अभय = भय दूर करना। गत = गुजरगया। भवसागर = संसार समुद्र। (६०७) चरण = धर्म चारित्र)। आचरण = करणा। वर = श्रेष्ट। वीर = बली। गलदाम = गलेकी माला (६०८) दह = दश। (६०९) पणविव = प्रणाम करना। (६१०) गह = शोक।
(६११) भामनी = राणी। (६१२) दारुण = भयंकर (बडाभारी)।

यह सुन राणी अति दुख कियो। लोचन झरें हियो भर लियो।
कंपे अबला महा बिलखाय। लागी कहन सुनो हो राय ॥६१४
लागे कहा दोष तुम तणो। लारहि फिरे कर्म आपणो।
लागे कहा तुमें नरनाथ। जो विधि लिखा आपनो हाथ ॥ ६१५
को सामर्थ जु मेटन हार। याको कीजे कहा विचार।
तुम नृप मति विलखो जिय जोय। विधनाकरे सो निश्चय होय॥६१६
काहु पै कछु है न वसाय। इंद्रादिक वस कहि न जाय।
वार वार भाषे कर जोर। स्वामी तुम्हे न लागे खोर॥ ६१७
अपने मनका सोच निवार। विधि निर्मयो सके को टार।
भो नरनाथ जु है यह कर्म। मुनि पूछे विन भजे न भर्म ॥ ६१८
आयस ले उठ ठाढी भई। तब जिनवर चैत्यालय गई।
देखो तहां महा मुनिराव। नमस्कार कीनो धरभाव ॥६१९
बैठो तहां धर्म धर नेह। ताके मन में अति संदेह।
रूप सुन्दरी जिन गुणरात। कछु इक तहां सुनी शुभ बात ॥ ६२०
पुन सो दृष्टि गई चल तहां। श्रीपाल सुन्दर हैं जहां।
तब सो रही महा मुहचाह। यह दुःख बड़ो सुनाऊं काह ॥ ६२१
महा निरूपम रूप कुमार। मानो आहि दूसरो मार।
मैनासुन्दरी बैठी पास। देख देख तब लेय उसास ॥ ६२२
सीस धुने मन चिंतै भाव। छाड दियो इन कोढी राव ॥
परसों प्रीति करी धर नेह। यह गुणगण निर्मल तन येह॥६२३

---

(६१४) अबला = स्त्री। (६१५) लार = साथ। (६१७) वसाय = पेशजाती।
खोर = अपराध। (६२०) गुणरात = गुणों से शोभित। (६२१) मुहचाह = संकोचना
(६२२) निरूपम = जिसकी कोई उपमा नहीं। मार = कामदेव।
(६२३) परसों = दूसरे के संग। गुणगण = गुणों का समूह।

मैनासुन्दरी कीनो जिसो। कोउ अवरन कर है तिसो ॥
या संसारमाहिसुखलियो। यह कुलकोमल कूचों दियो ॥६२४
दूषण आणो जिनवर धर्म। है है यह रचियो है कुकर्म ॥
मेरी कूख बज्र किन परो। कै यह गर्भ उदर किनगरो॥ ६२५
कै इन जन्मत ही किन मरी। पुत्री दुख भाजन अवतरी ॥
अर यह बात कर्म पर धरी। कुष्टी वर पायो गुण भरी ॥६२६
सो तज चली असंजम येह। शील रेण खोयो गुण गेह ॥
यह मन चिंत हियोभर लियो। अतिविलखायरुदनतहकियो॥ ६२
मैना दुख देखो ता तणो। मन में दुख व्यापो अति घणो ॥
रोमांचित है उमगो हियो। माता सों आलंबन कियो ॥ ६२८
कुंवरो तहां पहुंचो जाय। दोऊ जन बैठे निकुताय ॥
पुत्री बात कहै समझाय। यह ठां शोक न कीजे माय॥६२९
मन को छाड देहो संदेह। देख जवांई तेरो येह ॥
या में कछु न विभ्रम आह। नीके कर मन देखो चाह ॥६३०
वहीपुरुष है जो में जान। माता बात हमारी मान ॥
पुत्री कहा वियापहि माहि। यह क्यों कहत पूछिये तोहि ॥६३१
कहां लाज गई ता तनी। मिथ्या बात जो मो सो भनी ॥
पूर्व तें पश्चिम रवि जाय। तोउ यह न बात पत्याय ॥६३२
कुवर सास सें बोलो तवै। राणी यही कहो मत अवै ॥
धन यह वंश धन तू माय। जाके घर यह उपजी आय॥ ६३३ ॥

---

(६२५) वज्र = बिजली। उदरकि = छिनजाना। (६२७) रेण = धूलि।
(६२८) आलंबन = मिलना। (६२९) निकुताय = मिलकर। इकठे।
(६३१) वियापहि = वहकाती है।(६३२) मिथ्या = झूठी। भनी = कही। रवि = सूर्य।

अतिनिर्मल चित अति गुणवन्त। शील विशुद्ध निरूपम सन्त॥
याके हिये पुण्य परभाव। तातें कोढ गयो निकुताय॥६३४
अरु जे हुते सात सै संग। तिन हूं के तन भए अभंग॥
यह सुन पहुपाल की धणी। मन संतुष्ट भई शुभगणी॥६३५
अति आतुर व्हैठाढी भई। मुनि हू बातन पूछन लई॥
भामनि पीय सों भाषो जाय। मत दुख करो सुनो हो राय॥६३६
कुष्ट व्याधि अरु पीडा लयो। सो तो जमाई नीको भयो।
तासमीप पुत्री देखियो। तह मोसों आलंबन कियो॥६३७॥
जिन मंदिर में बैठो दीठ। मैनासुन्दरी के मन ईठ॥
तासु वचन सुन तूठो राव। राणी को बहु दियो पसाव॥६३८
कछुयक मन में आनंद भयो। कछुयक जिय को संशय गयो॥
ताम गयो जिन मंदिर राय। पुत्री लीनी कंठ लगाय॥६३९॥
रोवै दीरघ पुण पुण सोय। राजा लजित वहुत तव होय॥
मूह संकोच गयो कुमिलाय। विहस जवांई भेटो आय॥६४०॥
लक्षणवंत सर्व गुण जान। रूपवंत को करै बषान॥
हर्ष वंत नृप बैठो तहां। दोऊ जन बैठे हैं जहां॥ ६४१
कुवरि उछंग गयो संताप। लागै राजा निन्दन आप।
हूं पुत्री दोषन को धाम। मेरो भयो कलंकी नाम॥६४२
हूं अति अविनयवंत असार। हूं निर्मल वृछ तणो कुठार।
अर हूं मूढ पाप को अंक। मैं निर्मल कुल कियो कलंक॥६४३

---

(६३४) निकुताय = इकट्ठे॥

(६३५) अभंग = अच्छे। (६३८) पसाव = शाबस (मुबारकी)।

(६३९) ताम = उसी वकत। (६४२) उछंग = गोद में लेना। धाम = गृह।

(६४३) कुठार = कुहाडा। अंक = निशान।

मैं कुछ बात करी अविचार। आपन दई आप को गार॥
मुख पर चढ़ी कालिमा आय। सब ही से मुख रह्यो छिपाय॥६४४॥
परि हूं आज उजागर भयो। अपजस दोष हमारो गयो॥
तैं सब कुल कलंक मेटियो। तें मो मुख अब उज्वल कियो॥६४५
अपनी निंदा कीनी राय। पुत्री पूछी कारण काय॥
किह विध कुष्ट रोग तन गयो। श्रीपाल किम नीको भयो॥ ६४६
तब सुन सुन्दरि भाख्यो तिसो। विविध प्रकार कर्म फल जिसो।
सुनिकै हर्षवंत भयो राव। अति आनंद भयो चित्त चाव॥ ६४७॥
कछुयक ताको मन पत्याय। तो हू मन की गुढी न जाय।
मुनिवर तिह थानक पेखियो। हर्षित नमस्कार तिह कियो॥६४८
स्वामी मो मन संशय भानि। यह कैसे फलो कहो वखान।
करुणाकर मुनि भाषै येह। भो राजा मन करि संदेह॥ ६४९॥
महा गरिष्ठ लोक में सार। सिद्धचक्र भव तारण हार।
तेरी सुता आठ दिन कियो। मूलमन्त्र जपकै पूजियो॥ ६५०॥
भर अंजलि गंधोदक लियो। अपने पियको तन छिडकियो।
और जु हुते सात सै संग। तेहूं छिडके कीये अभंग॥ ६५१॥
और जु व्यथा रोग कर गये। तेऊ तब सब नीके भये।
श्रीपाल अतिसुन्दर भयो। यह व्रत याहि तुरत फल दियो॥६५२
जो नर जान महा तप करै। महा दुःख तजिसो उद्धरै।
यह सुन रायव्रत सोचरो। मन सन्देह दूर सब करो॥ ६५३॥
मन वच काय शुद्ध धर भाव। मुनिको नमस्कार कर राव।
फुनि तब कियो महोछो सार। बहु बाजे वाजित्र अपार॥ ६५४॥

---

(६४५) परि हूं = लेकिन। उजागर = निष्कलंक। (६४८) करुणाकर = दया की खान।
(६५०) सुता = पुत्री। (६५२) व्यथा = पीडा (६५४) महोछो = महोत्सव।

बहुत विनय कीनो समझाय। दोनों घरको गये लिवाय।
दोऊ कंचन कलश नल्हाय। एकासन बैठे विहसाय ॥ ६५५ ॥
वस्त्राभरण शोभित बहु लियो। दो कर जोर पुत्री को दियो।
तबैं जमाई सो नृप चयो। मैं तुमयोग्य महा दुख दयो ॥ ६५६ ॥
मो तैं कछू न सेवा भई। यह कन्या सेवा को दई।
यह जु दिढायो अपनो कर्म। विधना राखो याको धर्म ॥ ६५७ ॥
धन मैनासुन्दरी अवतार। जिह पायो तोसो भरतार।
अब तुम कुमर राज यह करो। सिर पर छत्र मनोहर धरो ॥ ६५८
बैठो सिंहासन परधीर। विभवो सुख भुंजो वरवीर।
मोकूं जो तुम आयस देहु। सोई करूं बात सुण लेहु ॥ ६५९ ॥
कीजे दया बात यह मान। हम सो करो फेर पहिचान।
सुन श्रीपाल कहे करजोर। भो प्रभु या मत कहो बहोर ॥६६०
में तो बहोपुरुष हुं देव। हूं सबही विधि चूको सेव।
तुम हमकों कीनो उपकार। कछुयन मन में कियो विचार ॥ ६६१
कन्या दीनी सुखको कंद। जानैं भयो सकल आनंद।
याप्रसाद दारुण दुख गयो। अरु सब ही विधि निर्मल भयो ॥६६२
में तो हूं दासन को दास। सेउं अबहूं चरण निवास।
कछू टहल मो दीजे इसी। मोतें होत जानत है तिसी ॥ ६६३ ॥
सोई करुं न लाऊं वार। आप सदा तिष्ठो दरवार।
ऐसी सुन आनंद्यो राव। शीघ्र तास को दियो पसाव ॥६६४
धन अटूट दीनो भंडार। अवर देश बहु दिये अपार।
आप साथभोजन असनान। नरपति करवावै दिन मान ॥ ६६५

(६५६) कर = हाथ। (६५७)दिढायो = दृढता करणी
(६५८) आयस = आज्ञा। (६६०)बहोर = फिर। (६६४)वार = देरी। पसाव = खिल्लत

आदर महिमा बहुत करेय। आखों अंतर होन न देय।
ऐसे श्रीपाल सुख रहै। सोई करे जो सुन्दरी कहै॥ ६६६
समकित चित यह पाले धर्म। दयावंत पेखो सब कर्म।
अर्जिक मुनि जन दीजे दान। सब ही को राखै सनमान॥६६७
वित्त दान जाचकजन देइ। दुखित दीन दारिद्र हरेइ।
विलसै विभव भोग बहुरंग। भुगतै मैंन जिसो रति संग॥ ६६८

११–उज्जैनीसे अकेले श्रीपालका गमन।

॥ चौपाई॥

वासर बहुत गये सुख बीति। एकै दिन दंपती अति प्रीति।
सुरत संग बंछा वह साय। दुहुन बदन रह हरषाय॥६६९
ऐसे रहत आध निश गई। श्रीपाल को चिंता भई।
उचटी निद्रा दुख अतिभयो। तन मुरझाय विलखठहै गयो ६७०
देखत मैना कंपी देह। विनयवंत पूछे गुण गेह।
अरू बालम के पकरे पाय। स्वामी कहा ज्ञान समझाय॥ ६७१
मोसों कहो आप व्यवहार। सोचत नाहीं कवन विचार।
मन में आय बसी है जिसी। मोसे बात पयासो तिसी॥ ६७२
कै नृपने कछु बुरो बोलियो। ताते भयो मलिन तुम हियो।
कै निजपट्टण करष्यो आय। कै किस लीनों चित्त चुराय॥ ६७३
कैकहूं चित्त अनंत ही वसे। तहां जावेको चित्त उल्हसे।
सिद्धचक्र विसरयो तुम जोग। कै काहू को भयो वियोग ॥ ६७४

(६६६) अन्तरं = अलग। (६६८) मैन = मैनासुन्दरी। रति = कामदेवकी स्त्री।
(६६९) दंपती = स्त्री और पति। (६७०, उचटी = न आना।
(६७२) पयासो = कहो। (६७३) पट्टण = शहर। करष्यो = याद आयो।

सो कारण पिय कहो विचार। अपने मनको शोक निवार।
तुम मेरे प्राणन आधार। मोसों भेद कहो इकवार॥ ६७५
श्रीपाल तब कहै कुमार। शशिवदनी मत करो विचार।
तेरो मलिन होयगो हियो। मम चित चिंता सो व्यापियो॥ ६७६
तातें कहन सकूं नहीं तोह। वार वार मति पूछै मोह।
तब भाषै सुंदरि सुन नाथ। चित्त हमारो तेरे साथ॥ ६७७
जो तुम हिये विचारो ज्ञान। मेरे तो सोई परमान।
पीय आयस जो चलि है टार। धृग सो वंश धृग वह नार॥ ६७८
तब बोला यों सुनवर नार। गुप्त बात है देख विचार।
जैसे राजा सुणे न येह। त्यों राखियो गूढ गुण रेह॥६७९
राज देश त्रिय कछू न चित्त। हिये अंदेसो व्यापो नित्त।
याचक जन भाषें धरि मान। सुसर नाम ले कहें वषान॥ ६८०
तातें लाज होय दुख लहुं। ऐसी बात कौण सो कहुं।
मेरे पिता नाम छिप गयो। यह संताप मोहि अति भयो॥६८१
जीवन जन्म वृथा सब येह। पिता नाम कोउ पढे न गेह।
देश गांवकुल कहें न कोय। तातें महादुःख मो होय॥६८२
सुन्दरी कहे सत्य यह कही। मोहे बात रुची यह सही।
रहे सासरे तुमको लाज। कितदुख देखत होवे काज॥ ६८३
एक जो रहे बहण के वीर। आयुध बिना लरे जो धीर॥
धन बिन दान देन जो कहे। अरु जो जाय सासरे रहे॥६८४
हंसा बसे पोखरि जाय। केहरी बसे नगर में आय॥
सतीतनो मन विकलप रहे। सूरवंत भज्ये को कहे॥ ६८५

(६७६) शशिवदनी = चांद के समान है मुख जिस का। (६७८) परमाण = मंजूर। आयस = आज्ञा। (६८५) केहरी = शेर।

बोलै काग अंबकी डार। मान सरोवर बगुला डार॥
कुंजर सिंहबन मांहि वसे। अरु जो परकामनी सो हसे॥ ६८६
मूरख कहे जु महापुराण। कुलभामनि जो मेटहि आण॥
इतने जन शाभा नहीं लहें। ऐसे वडे सयाने कहें ॥६८७
तुम हूं भली विचारी कंत। होती तोय विगुचण अंत॥
याते चतुरंग दल संग लेहु। चालो अपनो राज करेहु ॥६८८॥
कुमर भणे भामनि जिय जोय। मांग लिये दल राज न होय॥
मैं त्रिय हूं जावुं परदेश। तुम घर भुगतो सुख असेस॥ ॥६८९
महीपर प्रकट जगत जस लेहु। दुखी दलिद्री बहु धन देहु
अर्जिका मुनि जन दोज्यो दान। कछुस। चमतकरहिसुजान६९०॥
सासू सेव करो विहसंत। अरु जिनवंदन करो निरंत॥
गुर सेवा कीजिये विचार। भूल अलीक न बोले नार॥६९१
सुंदरी कहे स्वामी कहो मोहि। कब आगमण वंछुं तोहि॥
वेग बात पिय भाषो मोय। जेमें मेरो थिर मन होय ॥६९२
कुंवर ही उत्तर दियो तबें। बारा बरस वीते हैं जबें॥
अष्टमी दिनको कहे वषाण। भो सुन्दरी तोहिमिलहूंआण ६९३
दोहा–बारा पल सुन्दरी कहे, जो दर्शन विन जांय।
पल पल तरफे रैन दिन, लोचन दुःख लहाय ॥६९४

अडिल्ल छंद।

फेर कहूं पिय बात करण देके सुनो।
में पर करूं विचार आपणें जिय गुणो॥

---

(६८६) कुञ्जर = हाथी। (६८७) कुलभामनी = कुलवन्ती स्त्री। आन = शील।
(६८८) विगुचण = लज्जा। चतुरंगदल = घोड़े, हाथी, रथ, पैदल यह चार प्रकार की फौज। (६९१) निरंत = सदा। अलीक = मिथ्या

हांसी सी है बात सांच कर जाणिये॥
तोलौं सौपूं प्राण प्रीत पहचानिये ॥६९५
हो तुम कंत सुजान बहुर मति यूं कहो।
मति सुख में दुख देहु कामशर मत वहो।
जो चलिहो अकुलाय आपने रंग ही।
हे पिय तो मेरे प्राण जाहु ले संगही॥ ६९६

चौपाई।

क्यों मन राखो छाडो नेह। यह तो भयो बहुत संदेह।
मोह प्रगट है मेरे अंग। दिन दिन बढ़ो नाथ तुम संग॥ ६९७
बालक तें तरुणापन गहयो। रोम रोम तन में रम गयो।
मोह न मोपै छाडो जाय। किम कर चलणकहोअकुलाय॥६९८
तब जंपय अरिदवग कुमार। मोह शस्त्रगति छेदन हार।
मोह मतें कछु होय न रिद्धि। मोह विनासे केवल सिद्धि॥६९९
मोह मतें भव में दुख सहे। मोह तें जीव सुख नहीं लहे।
मोह मते प्राणी जड़ कूर। मोह जु सर्व पाप को मूर॥ ७००
ऐसो मोह छाड गुणरेह। हरषवन्त होय आयस देह।
उद्यम करुं लोक में सार। उद्यम सब ही सुख दातार॥ ७०१॥
अरु उद्यम बिन कछु न जन्म। उद्यम बिना करे कहा कर्म।
उद्यम बिन नर बहु दुख लहे। उद्यम बिन दारिद्र हि दहे॥ ७०२
उद्यम बिन जो बैठो खाय। पहलो हू धन वाको जाय।
उद्यम बिना न होवे मान। उद्यम है सब तें परधान॥ ७०३

---

(६९२) कामशर = कामदेव के बाण। (६९८) अकुलाय = उदास हो।
(७००) जड़ = मूरख। कूर = कुत्ता। मूर = मूल।
(७०१) आयस = हुकम (इजाजत)। उद्यम = कोशिश।

बहुत वात को कहे विचार। उद्यम है दूजो करतार।
तातें मैं उद्यम जिय धरो। चलो परदेश सुख परहरो॥ ७०४॥
यह सुन त्रिय छाडो अति गाह। स्वामी यह कीजिये निवाह।
मन वच काय पंच परमीठ। तीनकाल मन भूलो ईठ॥ ७०५
सिद्धचक्र व्रत मन विसराव। मत भूलो पूजा जिनराव।
निज जननी भूलो मत देव। आप मित्र मत भूलो सेव॥ ७०६
जिनदेव मत विसरो जान। मन विसरो गुरु वचन पिछान।
मिथ्याती मत करो विश्वास। अरु जो होय पहार है वास॥ ७०७
षोडश वरष चढी परवान। अति सुन्दर अति परम सुजान।
चंचलनयन सयानी खरी। जे पर चित्त हरें सुन्दरी॥ ७०८
तिन विश्वास मत प्राणअधार। अन दीयो धन तजो अपार।
बार बार सुन्दरी यों भनी। कीजो सुरत इस दासी तनी॥ ७०९
राज सुता है चंचल चित्त। तिन्हें देख मत भूलो मित्त।
कपट रूप डोलत हैं दूत। नाना भेष धरे अवधूत॥ ७१०॥
तिन तिन भूल दृष्टि मत करो। मिथ्यादेव भाव मत धरो।
मेरो वचन लेहु अतिमान। छाडो मत निज कुलकी वान॥ ७११
जो नहि ता दिन आवो कंत। तो जिनदीक्षा लेहु तुरन्त।
कै मोको आर्यक व्रत शरण। कर्म दुःख नाशन भवतरण॥ ७१२
श्रीपाल बोलो तिह काल। पुन पुन वात न कहिये बाल।
जो मैं तोहि परस्पर कही। सोही वात होयगी सही॥ ७१३॥
यह कह गमन कियो वरवीर। कामन व्याकुल हुई शरीर।
लोचन भरे चित्त उमगहो। मन गाढो कर अंचल गहो॥ ७१४॥

---

(७०५) गाह = हठ। (७०८) षोडश = सोलह। (७०८) विश्वास = विसाह।
(७१०) अवधूत = बहुरूपिये। (७१४) अंचल = पल्ला।

अहो प्राणवल्लभ कित जात। सांची कहो आपनी बात।
कै तुम मोसों हांसी करो। कै यह बात सांच उच्चरो॥ ७१५॥

॥ अडिलछन्द॥

या बूझिये न तोहि सुबात विचार कै
बालम चले विदेश मैंन शरमारकै।
बढ है पीर शरीर कौन सें भाष हुं
प्राण पयाणो करत कौन विधि राख हुं॥ ७१६॥

॥ चौपाई॥

बालम यह बूझिये न तोह। चले विदेश छांड कर मोह।
विरहानल तन में जब दहे। दासी तुमरी कासो कहे॥ ७१७॥
तब कोटीभट उठो रिसाय। भामन को सुभाव किम जाय।
चलत विदेश जु करहु अनीत। यह तुम्हारे कुल की रीत॥ ७१८
सुन सुन्दरी हियो भर लियो। अश्रुपात होय विलखो कियो।
आज ही मैं बिसरी पिय तोह। कर्कश बचन सुनाए मोह॥ ७१९
कुमर वचन सुन भाषे तबे। अवलोको सुन्दरि मुख जबे।
मैं तोसो कछु कहो न नार। प्राणवल्लभा देख बिचार॥ ७२०
अर तू भामन परम सुजान। शील धुरन्धर गुण है निधान।
तो सम त्रिया दूजी नहि कोय। देख सुलक्षण जियमें जोय॥७२१
जो त्रिय अंचल पकरे आय। असुगुन होय कहुं समझाय।
तातें यह वचन मैं कहो। भामन तैं मनमें दुःख लहो॥ ७२२॥

---

(७१६) शर = तीर। पीर = पीडा। पयाणो = यात्रा।
(७१७) बूझिये = पूछिये। विरहानल = विछोडेकी आग। (७१८) रिसाय = गुस्से होकर। (७१९) कर्कश = कठोर। (७२०) अवलोको = देखो।
(७२१) भामन = स्त्री।

तू मत बाला विसरे मोह। मैं अपनो मन सोपों तोह।
इन नैनन सो मैं परखियो। नख शिख तूठ विधाता दियो ॥७२३
चित्त चितेरे उद्यम कियो। तेरो रूप हिये लिख लियो।
अर विधिसो कछु नहि वसाय। ताते चलो तोहि छिटकाय ॥७२४

॥ दोहा ॥

मन वच काय विशुद्ध त्रिय, कहो न तोसों राख।
बोलो बोल निवाह हुं, सिद्धचक्र व्रत साख ॥ ७२५ ॥
सुन्दरि तबै प्रतीति कर, हठ छाडियो निदान।
बहुर कहा पिय अब चलो, सिद्धचक्र की आन ॥ ७२६ ॥

॥ श्रीपाल उवाच ॥ सोरठा ॥

सो हूं परम सुजान, सुन सुन्दरी गुण आगरी।
अब ही करुं पयान, तेरो बोलन खंडि हो ॥ ७२७ ॥

॥ चौपाई ॥

अजुगत वचन नार जब कहे। दांत जीभ दे स्वामी रहो।
दुचितो ह्वै जननी पै गयो। पणविवि पाय लागि वीनयो ॥ ७२८
स्वामनी मो पर कीजे नेह। चलो विदेशहि आयस देह।
मत संदेह करो कछु मात। तुम सो कहूं सियानी बात ॥७२९
ऐसी सुणके मूरछ गई। छांटी नीर जु बैठी भई।
माता हाय हाय उच्चरे। लेय उसास रुदन सो करे ॥ ७३०
अचरज ह्वै वचन तिह कहयो। तेरो चित भलो हो चहयो।
मनमें समझ देख सुकुमाल। बहुरो गामन कहो गुणाल ॥७३१

---

(७२३) बाला = सोलहवर्षे तनी (७२५) साख = गवाही (७२८) दुचित = डावांडोल
पणविवि = प्रणाम। (७३०) नीर = पानी। (७३१) गुणाल = गुणोका मंदिर।

पुण्यवंत मन हरण सुजान। निजकुल कमल प्रफुल्लत भान।
कुमति हरण सुबुद्धिपयास। निशिवासरजिन धर्म निवास ॥७३२
मुनिजन बंदन सहज सुभाव। दुःख वचन मत मोहि सुनाव।
तेरे पिता प्रथम दुख दयो। देखत तोहे विसर सो गयो ॥७३३
कुष्टव्याधि जब वधी अपार। हूं अकेली तजी कुमार।
निकस गयो तब सुध न लही। तब तैं मैं तेरे दुख दही ॥७३४
कठिन कठिन तू देखो नयन। अब तैं बुरे सुनाये बैन।
तोह मिले बिन मन नहीं रहे। बारबार माता यों कहे। ७३५
तो पेखत संतोखे नैन। कर्ण संतुष्टे सुनते बैन॥
तो पेखत मनको दुख जाय। तो पेखत मो सभी सुहाय ॥७३६
तो पेखत मैं छाडो सोग। किम कर तोसों करो वियोग।
साची कहूं बात सुन एह। मोह मार पग आगे देह ॥७३७

कोटीभट्ट उवाच।

कायर हृदयहोय मतमाय। सुण तू बात कहूं समझाय।
रहत सासरै बहु दिन गए। मेरे सूल हिया में भए॥ ७३८
राजा बहुत करे सनमान। जाचक जनहीं देऊ दान।
पिता नाम कोउ नहीं कहे। महादुःख मेरे मन रहे ॥७३९
कोउ न जाने कुल की रीत। ऐसे दिवस गए बहु बीत।
अब मोहे पास रहियो नहिं जाय। मनसाबहुउमगी मेरीमाय ॥७४०
हूं निजको अबचलूं विदेस। भुजबल दल धन करो असेस।
बारा बरस जांय सब काज। जननी आए करूंगो राज॥ ७४१
तुम तो जपो श्रीजिनराउ। तिहुंकाल शुद्ध कर भाउ।
अरु चहुसंघही दीजे दान। जो दुर्गति हर सुख निधान ॥७४२

---

(७३२) भान = सूर्य। पयास = प्रकाश (७३६) पेखत = देखते। कर्ण = कान।

सेवा मैनासुंन्दरी पास । करवावो शुभ वचन पयास ।
अरुजे अंग सातसै मित्त । तिनको आदर कीजो नित्त ॥ ७४३॥
मैं गच्छूं आयस दे मोहि । मोह मते कायर मत होहि ।
दीन्ही सिद्ध चक्र की आण । मैनासुन्दरी परम सुजाण ॥७४४
ताते मोपै रहो न जाय । अब ही चलूं मोह ,छिटकाय ।
माता चलत जाणियो तबें । लागी कहन संदेशो तबें ॥७४५
सुणो पुत्र नीके मन लाय । शिक्षा भली कहूं समझाय ।
मत विश्वास अपणो जिय जोय । जो कोऊ पाखंडी होय ॥७४६
जो दण्डी दम्भी अधिकार । अरु जो बहु बोले ही लवार ।
परधन परत्रिय इच्छा रहे । अर जो जूवा खेलण कहे ॥७४७
अरु जो सुरापान आ चरे । अर जो बिन ही कारण लरे ।
अरजो आमिष भखे विरंग । ताके सुत लागो मति संग ॥७४८
मत विसहरसोंमांडो रार । काहू को नहीं दीजो गार ।
जल ठग चौर और कुतवार । कृपण धीठ अरु तजो लवार ॥७४९
नख दृढ राखें जे विकराल । इनसों प्रीति मत करो कुमार ।
पंखी की भाषा मत सुणो । पर अवगुण मत मन में गुणो ७५०
जिनको परपहार है वास । तिनको सुनमत करो विसास ।
कंजनैन नर हैं जो बौन । अर जे कुब्ज जटाधर मौन ॥ ७५१
लहुरी ग्रीवा विसयर दन्त । मारग में खल दुष्ट अनन्त ।
डायण सायण दासी घणी । मत विश्वासो वेश्याकुटणी ॥ ७५२

---

(७४४)गच्छूं = जाउं(७४५)संदेशो = सन्देसा । (७४७)दम्भी = ठग । लवार = लपाटिया
(७४८)सुरापान = शराबपीना । आमिष = मांस । (७४९) विसहर = सांप ।
(७५१) कंज नयन = कैरी आंख वाला । बौन = बांउना । कुब्ज = कुबा ।
(७५२) लहुरी ग्रीवा = छोटी गरदन । विसयर = ज़हरीले । खल = बदमाश ।

अन दीयो मत लीजो वित्त । परदारा मत लावो चित्त ।
तुमसे बड़ी नार जो होय। मात बराबर गनियो सोय ॥ ७५३ ॥
होय त्रिया जो आप समान । ताहि जानियो बहन प्रमान ।
जा कामन तुमसे लहु आह । पुत्रीसम तुम गिनियो ताह ॥ ७५४
रहियो जिन भक्ति संजुत। लछमीबल मति गरवो पुत ।
निजगुरुवचन तजो मत चित्त। सर्व जीवसम भाव ही नित्त ७५५
गुणियन को वहु धरियो मान । दुखी जनन हि दीजो दान ।
वहुत बात को कहुं सुजान । चलियो व्रत संयम परमान ॥ ७५६

॥ दोहा ॥

जननी भाषो परस्पर, मन में मोह असेस ।
हिये सिद्धव्रत राखियो, मैं यूं कहों संदेस ॥ ७५७ ।

॥ चौपाई ॥

लीजो कुवर बचन ए मान । मैं तोसों जे कहे वखान ।
कोहू मत भूलो वरवीर । शुद्ध राखियो साहस धीर ॥ ७५८॥

॥ दोहा ॥

श्री बढे जो अतुलबल,शरीर सहे परनेह ।
चवरंग दल को संग ले,आइयो सुत निज गेह ॥ ७५९॥
यह असीस जननी कही, मन में धर अनुराग ।
मुख चूंवुं जब आई हो, तब ही मेरो भाग ॥ ७६० ॥
धन्य मुहूर्त धन्य घड़ी, धन्य सुवासर आह ।
जा दिन तेरो बदन मैं, नयन न देखूं चाह ॥ ७६१ ॥

---

(७५८) श्री = लक्ष्मी ।

॥ चौपाई ॥

दही दूब अछत सिर धरे। रोचन तिलक निवाछन करे।
अंग अंग हर्षित अति भए। झलहलन्त लोचन भर लए ॥ ७६२
धाय मूकी शुभदी तिहवार । राखी तब श्रीपाल कुमार।
विविध चरण कमल को नयो। माता तिह मुख चूमन लयो ॥ ७६३
वीर राति ही पचिम जाम। खाई साथ नाखियो ताम।
चन्द्रहास दक्षण कर खरगा। जातै त्रास लहैं अरिवर्गा ॥७६४॥
सिर पर शशिमंडल समान। लयो चमर कर राखन प्रान।
निर्भय तन मन में विहसंत। छाडी माता रुदन करन्त। ७६५
छाडी प्राणपियारी नार। सिद्धचक्र की आन संभार।
भेटे नहीं सातसै अंग। एको मीत न लीनो संग ॥ ७६६ ॥
भेटो नहीं राव पहुपाल। छाड मोह गाछियो गुणाल।
बन उपबन गिरि नाखत जाय। परसत महा मुनिन्द्रहपाय ॥ ७६७
एकै पाय पंथ पग धरे। प्रेरो कर्म कहा नहि करे।
कर्म प्रेरत सूर हि आय। पूर्व स पछिम चल जाय ॥ ७६८ ॥
कर्म ही प्रेरत शशि छवि चढे। तातें कला घटे अरु बढे।
कर्म हि प्रेरो कीनो सोग। राम हि सीता पडा वियोग ॥ ७६९
कर्म हि प्रेरो किया अकाज। रावण को बूडो कुल राज।
कर्म जीव को प्रेरो फिरे। पुन पुन जन्मे पुन पुन मरे ॥ ७७०
कर्म कथा कछु कही न जाय। सुर असुर नर दंडे राय।
श्रीपाल सो और ही भेस। तजत चलो पुरपट्टण देस ॥ ७७१

---

(७६४) जाम = पहिर। चन्द्रहास = तलवार का नाम है। खरगा = तलवार।
त्रास = भय। अरि = दुश्मन। वर्गा = समूह। (७६७) गाछियो = चला।
(७६८) एकै = अकेला। पाय = पैदल। सूर = सूरज।

पर्वत दुर्ग नदी नाखन्त। सरवर बन में केल करन्त।
पाय पयादो और न संग। रूपवन्त देखियो अभंग ॥ ७७२ ॥
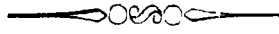
१२-श्रीपाल कर विद्याधर को विद्यासाध देना।

हर्षित कोटीभट गयो तहां। वत्स नगर इक शोभे जहां।
पूरण धनकन रिद्ध अपार। मन्दिर अति उतंग तहां सार ॥ ७७३
कनक कलश तिन द्वार दिपन्त। कुल छत्तीस बसे धनवन्त।
ताहि देख रञ्जो वर वीर। फूल गयो तानणो शरीर ॥ ७७४ ॥
ता आगे नन्दन वन आह। कुसम पुञ्ज देखे तहां चाह।
अरुण अरुण द्रुम नवरितु अंग। अमृत बाणी चवैं विहंग ॥७७५
अति रमणीक मनोहर सोई। जा देख तिस भूषन होई।
अबलोकित मन राग उपन्न। चंपक बन देखियो रुवन्न ॥ ७७६
तातरु तल इक देखो वीर। भयो क्रुश कर क्षीण शरीर।
वस्त्राभूषण मंडो सोय। जंपै मंत्र ता सिद्ध न होय ॥ ७७७॥
अति शोचित अरु मुख कुमिलान। सो पूछो श्रीपाल सुजान।
कहा मंत्र ध्यावत हो मित्त। छिनछिन चपल होत है चित्त ॥ ७७८
सुनत वचन सो औचक पडो। देख रूपता आदर करो।
सम्यक भाव हिये में धरो। द्वै कर जोर वचन उच्चरो ॥ ७७९
विद्या मंत्र मोह गुरु दियो। सो ईठे हम जंपन लियो।
चंचल चित्त न मो थिर रहे। सीझे मंत्र न विद्या लहे ॥७८०

---

(७७२) दुर्ग = कठिन है गमन जहां। नाखन्त = देखता।(७७३) धनकन = धनिलोग
(७७४) रञ्जो = खुश हुआ।
(७७५) कुसमपुञ्ज = फूलोंके समूह। अरुण = लाल। द्रुम = वृक्ष। विहंग = पक्षी।
(७७७) मंडो = शोभित।(७७९) औचक = चौंकना।

सहन शील तुम होय कुमार। तू यह विद्या साध अपार।
तासो शत्रुदवन सुत कहे। उपकारी नर शोभा लहे॥ ७८१॥
रत्नों से कंचन छवि देय। साधु जो सोई क्षमा करेय।
वैरागी सो हिये मुनींद। सुप्रभात सो हिए जिनन्द॥ ७८२॥
बहुत सेन से सो है राय। सोहै श्रावक दया कराय।
सोहै बालक मांडे आर। सो है शीलवंत जो नार॥ ७८३
पंडित सोहे पढ़ पुराण। द्रव्यसो है जो दीजे दान।
सरवर सोहे पंकज वार। सूरह सोहै लरै पछार॥ ७८४
वरकुंजर सोहे दल मांहि। सोहै द्रुम अति शीतल छाह।
कररी बात सोहरा दूत। सोहे कुल जो होइ सुपूत॥ ७८५
त्यों उपकारे सोहे धीर। जाको निरभय होय शरीर।
हम तो चले पंथ अब जात। जाणें कहा मंत्र की बात॥ ७८६
यह सुण वीर विलख हो गयो। द्वय कर जोर बहुर वीनयो।
सुन स्वामी हूं भाखो तोह। निरभय दान देउ तू मोह॥ ७८७
बहुत बात को कहे बढाय। मेरे भाग न पहुंचे आय।
स्वस्थ चित्त बैठो मन साध। एक वार देखो आराध॥ ७८८
मर्म भेद सब दीनो तुझ। विद्या सिद्ध होयगुर मुझ।
तुम तो आहि दयालु कुमार। और कहा कहिये अधिकार॥ ७८९
जपो मंत्र अति लावो बार। जिम गुरु उपदेशो शुभसार।
निश्चल तन कर बैठो आप। मनको छांड देहु संताप॥ ७९०
जबे होय है कारज सिद्ध। कौन भांत प्रकटे तो रिद्ध।
विधि व्योहार देख सब जान। बहुत कही तुम सों पछतान॥ ७९१

(७८३) आर = जिद। (७८४) पंकज = कमल। पछार = मारे।
(७८५) वरकुंजर = मस्त हाथी। द्रुम = वृक्ष।

यह विध दीन वचन जब चयो। कियाउं कोटीभट भयो।
तुरत मंत्र तापै तें लियो। मनवचकाय अचलनै कियो॥७९२
धरो ध्यान निरभय तन मांड। राग रोस विभ्रम सब छांड।
विद्यासाधन लागो राय। मन बच काय अचल ठहराय॥ ७९३
शुद्ध भाव नीके ध्यावंत। एक रात दिन गयो तुरंत।
विद्या साधी मन बच काय। फुरि ताहि शोभित अधिकाय॥७९४
विद्यागुण सीझो सुप्रसन्न। नाना गुण जिह मांही रवन्न।
देखत वीर उठा अकुलाय। कोटीभटके पकरे पाय॥ ७९५
धन्यधन्य साहस वरवीर। निरभय तन भय भंजन धीर।
जाउं गेह मांहे आयस देह। विद्यागण सगरो तुम लेह॥७९६
मनमें बहुत गयो मुरझाय। मुह कर बात कहे विहसाय।
तब कोटीभट कहे विचार। विद्याधर यह बात संभार॥७९७
बाट जात में उद्यम कियो। अरु में हूं निज परखो हियो।
या में कौन कियो में काज। लै अपणा विद्यागुण साज॥७९८
परसुत होय सपूती माय। अंत काल मन में पछताय।
यह कह विद्यागुण सब दयो। आपण न्यारो ठाढो भयो॥७९९
तुम प्रभु बहुत कियो उपकार। तो सम को है और उदार।
महिमा असम कहां लों भणूं। हूं सेवक स्वामी तुम तणूं॥ ८००
विद्या भली भली तुम लेहु। अपने हाथ कछु मो देहु।
तुम सों बात कहूं सतभाव। इतनों मोमें कहा समाव॥ ८०१
दास योग जाने गुण जितो। दीजे किपावन्तव्है तितो।
श्रीपाल बोलो चित चाह। यामें मेरो कछु न आह॥ ८०२

---

(७९३) रोस = गुस्सा। (७९५) सीझो = सिद्ध भयो।

१३–विद्याधर कर श्रीपाल को जलतारणी शत्रुनिवारणी दो विद्या देना।

विद्याधर दोनों कर जोर। कहत भयो स्वामी सुन मोर।
एक युगल ये विद्या लेव। इन का मन तुम फेरो देव॥ ८०३
शत्रुनिवारण जलतारणी। द्वय विद्या द अस्तुति भणी।
पुन सों अपने घर ले गयो। पञ्चामृत वहु भोजन दयो॥ ८०४
पुन विद्याधर पकरे पाय। सुन हु बात रायन के राय।
हूजे देव आपने भेस। कछु दिवस विरमों यह देस॥ ८०५
दास भयो मैं सेवा करुं। उरण ह्वै क्यों हों उपगरूं।
यह सुन कुवर कहो हरषाय। हम जावें इत ठहरत नाय॥ ८०६
कोटीभट चलियो सुख पाय। विद्याधर आयो पहुंचाय॥
चौथी संधि यह वरणई। मूल देख भाषा कर दई॥ ८०७

॥ छन्द त्रिभंगी॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणम्
बुधजन मनरंजन पातकगंजन सिद्धचक्र विधि दुख हरणम्।
त्रिभुवन सुखकारण भवजल तारण चौपई बन्ध परिमल्लकृतम्
उद्यम मन धरियं सुखपरहरियं, आशावश परदेश गयम्॥ ८०८
साहस मन राखो दीनन भाखो अवरन कोई संग लयं
बन घन निवसंतो गिर नाखन्तो वत्स नगर बन में बसयं।
विद्यागुण पायो मनहुनलायो ह्वै उदास उपकार कियम्
विद्याधर थायो सुयश पायो सेवक कर आगे चलियम्॥ ८०९

॥ इति चतुर्थसन्धिः समाप्तः॥

---

(८०३) युवल = दो (शत्रु निवारनी और जल तारनी) विद्याओं का नाम है।

॥ चौपाई ॥

आगे चलो महा वरवीर। नाखत बन उपबन धर धीर।
तिन मन कीनो भ्रमर समान। तजत चलो पुरपट्टण थान ॥ ८१०
चलत चलन सो पहुंचो तहां। भृगुकच्छपुर पट्टण है जहां।
सो तो आहि सुरलोक विशेष। मोहैं अमर खचर जा देख ॥ ८११
रत्नाकर ता निकट हि बहे। महा मनोहर दुःख को दहे।
महाराज तहां राज कराय। ताकी महिमा कही न जाय॥ ८१२
श्रीपाल ता मध्य हि आय। कंचन हाटन बैठो जाय।
तहां सो विद्याजुगल संभार। दोऊ भुजन राखियो विचार ८१३
घडी दोय तिह थान बसंत। बहुरो विहमत उठो तुरन्त।
पुर की शोभा देखन जाय। बन्दन जिनभवनन जिन पाय ॥८१४
सिद्धचक्र भूले नहि ताहि। भोजन करे छहो रस गाहि।
पुन उतंग गिरि देखे जान। ता ऊपर जिनवर के थान ॥ ८१५
देखत ही मन में हर्षियो। तहां जायके वह परसियो।
बहुत बात को कहे वढाय। मन में उपजो केवल भाय ॥ ८१६
दोहा—उपवन देखे दुख गयो, रहो तहां सुख पाय।
सघन कदम्ब छाय तरु, शयन कियो अकुताय ॥ ८१७॥
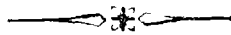
१४—धवलसेठ का वर्णन।

॥ चौपाई ॥

यह तो कथा रही यह ठौर। भवियन सुनो कथा अब और।
कवि परिमल्ल कहे मन भाय। कौशांबीपुर सुवस वसाय ॥८१८

---

(८१०)भ्रमर = भौंरा। (८११)खचर = तारागण।(८१२)रत्नाकर = समुद्र। (८१५) छहों रस गाह = मधुरआदि छैरसोंवाला। (८१७)कदंब = एक जातिकावृक्ष है। अकुताय = थककर

तहां राय रथवाहन जान। ताके धवलसेठ परधान।
तिह व्योपारी उद्यम कियो। वणजारे तब तिह बोलियो॥ ८१९
अतिविचित्र मंत्री सरवंग। पोहण लाद लीये तह संग।
बहुत द्रव्य को गिणती करे। महापंच से प्रोहण भरे॥ ८२०
बणिवर रंजे चित्त अपार। योधा लीने आठ हजार।
वैरी दल जे शंकन धरें। अर आयुध छत्तीसह लरें॥८२१॥
इंधन पाणी अन्न जु भरो। सामा बरस बारा को करो।
बाजे तहां बाजित्र अपार। भेर मृदंग तूर सहनार॥ ८२२
जलजंतह जब पूजा करी। देखो शुद्ध महूरत घरी।
दही दूब तिल तेल जु लियो। चन्दन चन्दन सो चरचियो।८२३
पूजे तहां जलदेव अनन्त। धवलसेठ तब चल्यो तुरन्त।
लहर झकोरन पहुंचो तहां। भृगुकच्छपुर पट्टण जहां॥ ८२४
एक महाद्रह निकसो आय। पर परोहण तामें जाय।
वणिवर योधा खेवट जिते। हांक देह अरु पेलें तिते॥ ८२५॥
सब मिल तहां रहे पचि हार। चले नहीं जलजंतु संभार।
अरु तहां मंदपवन हु बहाय। सायर नीर रहो ठहराय॥ ८२६॥
जिम ध्रुवतारो अचल रहाय। बिन दीने जिम यश न चलाय।
बिन पवने तरुहले न जिसो। रहे थाक सब प्रोहण तिसो॥ ८२७
धवल सचिन्त भयो जिय तबें। ताह पेख बिनवे ते सबें।
कर मीडें अरु विसुरें चित्त। कारण कौन थके जलजन्त॥ ८२८
धवलसेठ उतरो तिहवार। आपन गयो नगर में सार।
लखराय तो गयो शरीर। तहां एकपूछा वर वीर॥८२९

(८२०) को = कौन। (८२१) शंक = भय। (८२२) सामा = सामान।
(८२६) सायर = समुद्र। (८२८) जलजंत = जहाज। (८२९) लखरा = सुस्त।

सब गुण विद्या पढो अपार। जाने सवै वनज व्यवहार।
तासो कर जोरे अकुलाय। कह तू बीर बात समझाय॥ ८३०
आये चले दूर देशंत। अब ये कहा थके जलजंत।
दिन उठ सूर सवै बल करें। कहूं पास नहि टारे टरें॥८३१
अर हूं बात कहां लो भणुं। मेरे मनमें संसो घणुं।
वार बार हूं पूछो तोहि। किस विध चालें प्रोहण मोहि॥ ८३२
सुन हुं सेठ मनमें धर भाव। यो तें अशुभ कर्म कछु आव।
विन कारण अचल ह्वै रहे। जलदेवोने इन को गहे॥ ८३३॥
लक्षणवन्त महा गम्भीर। जाको निर्भय होय शरीर।
बलि दीजे मन में धर नेह। प्रोहण चलें नहीं संदेह॥ ८३४॥
ऐसो भेद सेठ जब लहो। सबै आय मंत्रन सो कहो।
यह सुन कियो जो सबन विचार। यह विदेश सारो शुभसार ८३५
सुनो नाथ तुम सो भाखिये। कीजे बुद्धि आप राखिये।
चलो देशके पति पै जाय। जो कछु होय सो बात कहाय॥८३६॥
यह सुन धवल फूलगयो अंग। सगल वणिवर लीने संग।
जाय राय सो विनती करी। कछु भेट ले आगे धरी॥ ८३७॥
देखत ही संतोषो राय। वणिवर मांग जास पर भाय।
अति उदारता उपजी मोहि। जो कछु कहे सो देहुं तोहि॥ ८३८
द्वय कर जोर धवल उच्चरे। जे कछु राव दया मन धरे।
लक्षणवन्त महा गुण रेह। एक पुरुष सो हम को देह॥८३९
बूझे राव बात जिय जोय। कारण कछु सुनावो मोय।
मेरे मन विकलप भयो आय। कौन बात यह मो समझाय॥ ८४०

---

(८३०) कर = हाथ। (८३४) प्रोहण = जहाज।

(८३८) जास = जिस। भाय = भावना। उदारता = सखावत। (८४०) बूझे = पूछे।

॥ सेठ उवाच ॥

महाराज सुनिये देकान । नीके कर हूं करूं बखान ।
कौशांबीपुर वसे सुठाम । महाराजा रथवाहन नाम ॥ ८४१
तिह पुरथे जु गमन हम कियो । द्रव्य असंख साथ कर लियो ।
भरे पंच से प्रोहण चंग । याधा बहुत हमारे संग ॥ ८४२
बहुतक दिवस चालते भए । मारग छांड न इत उत गए ।
यहां को आय पहुंचे वहे । अब ये कछु अचल ह्वै रहे ॥ ८४३ ।
किये बहुत परपंच उपाय । क्यों हु चलें नहीं सुन राय ।
अब ये मंत्रिन किया विचार । जानें सबे बात व्योहार ॥ ८४४
कोऊ छुवे सलक्षण हाथ । तब वे चलें सुनो नरनाथ ।
के दीजिये पुरुष बालदान । तब ये निज कर छाड थान ८४५
यह सुनि राजा अचिरज भयो । सब ही जन को आयसदयो ।
थके सूर सब लेय उसास । पेले जांय न काहू पास ८४६ ॥
निज पेलन तब उठियो राय : क्यों हूं टरे न और उपाय ।
तब सो कहे सोच जिय आहि । कोई कहांथे लावो चाहि ८४७
देख अकेलो और न साथ । लावो पकड कहे नर नाथ ।
ऐसो जब आयस पाइयो । वणिवर बृन्द सबै धाइयो ८४८
देखें ते मन माहि विचार । बन अर नदी सरोवर पार ।
देखत देखत पहुंचे जहां । उपवन में केलिद्रुम तहां ॥८४९॥
तानरु कुवर सुयो गुणगेह । बहु विधि लछण मंडित देह ।
पुण्यवन्त कोटी भट येह । सुन्दर सुभग लछको गेह ॥ ८५०

---

(८४५) थान = स्थान ।।
(८४७, पेलन = धकेलना । (८४८) वृन्द = समूह । आयस = आज्ञा
(८४९) केलि = खेल(सेर) । द्रुम = वृक्ष ।

लंब बाहु निर्भय अरि वहैं। देख परस्पर बातें कहैं।
पायो भलो वीर यह आज। यातें सबै ह्वै गो काज ८५१ ॥
पर यह द्रुमतलतें नहि टरे। अरु काहू पै गहो नहि परे।
घेर हि करत समय कछू गयो। जागा कुवरसो बैठो भयो ॥८५२
सुभटन देख शंक मन धरी। द्वै कर जोर बीनती करी।
डरपै चित्त कहैं सुन देव। आये करण तुम्हारी सेव॥ ८५३
हम को आयस दीजे येह। तुम देखत मन उपजो नेह।
नीके कर देखहु जिय जोय। हम से स्वामी पाप न होय॥ ८५४

कोटीभट्ट उवाच ॥

कैसे पाप कहो सति भाय। नीके कर मोको समझाय।
मन में कछू सोच मन करो। जिम ही हो तिम ही उच्चरो ८५५

॥ वणिवर उवाच ॥

स्वामी सेठ धवल है एक। ताके मन से गयो विवेक।
प्रोहण थाके सागर नीर। क्योंहू टरें नहीं सुन वीर॥ ८५६
ताके मन उपजो संदेह। मंत्री मंत्र विचारो येह।
एक पुरुष बलि दीजे लाय। तबै चले ये प्रोहण धाय॥ ८५७
ढूंढत हम डोलन हैं सबै। पावें नहीं रहे थक अबै।
तातें रहे अपन योठार। रीते जाहि तो मारे डार॥ ८५८
अरु हम कछु न सके विचार। क्यों हूं लीजे शरण उवार।
हमें सेठ को डर अधिकार। जो वह क्यों हूं पावे सार ८५९
तो योधा बहु देय पठाय। ते मारेंगे दुःख दिखाय।
यह भय बहुत भयो मन माय। स्वामी तिन से लेहु बचाय॥ ८६०

---

(८५२) तल = नीचे। गहो = पकडा। (८५६) विवेक = ज्ञान।
(८५८) योठार = इस जगह। (८५९) सार = खबर।

॥ श्रीपाल उवाच ॥

यह बात की शंक मत करो। मत अकुलाय हिये में धरो।
जो तुम कहो तो लेहु उबार। सूर अनेकन घालूं मार॥८६१
जो तुम कहो तो ऐसो करुं। कोटि बीर छिनक में दरुं।
जो तुम कहो चलूं पुनि तहां। धवल सेठ सागर तट जहां ८६२
मोतें कारज हो है जोय। कर हुं सेठ सयाणो सोय।
सो तुम देहु सवारो दाव। मोसों बात कहो समझाव॥८६३॥

॥ वणिवर उवाच ॥

जो पर यह विचारी धीर। हम पर दया करी वर बीर।
चलो तो जीव सबन को रहे। तुम सो सेठ कछू नहि कहे॥ ८६४
येतो वामें कहा समाव। तुम तन चितवे दुष्ट कुभाव।
तुम अतिबली महा परचंड। अति लांबे दीसत भुज दंड॥८६५
अरु तुम दीसो रूप अभंग। देखत मोहे कोटि अनंग।
तुम में सर्व सुलक्षण आहे। तुम तन को उसके नहि चाह॥ ८६६
काहू की तुम सो न बसाय। देखत सेठ गहेगो पाय।
तो तुम भली करो हो नाथ। जो तुम चलो हमारे साथ॥ ८६७
ऐसी बात जबै सुन लई। सतनें तबै दया अति भई।
कछू न मन में सोच न लयो। उठके तिन के गोहण भयो ८६८
वणिवर रंजे अंग न माय। ताको मुख देखे पछिताय।
कोटी भट चालो हरखंत। बार बार मन मांहि कहंत॥ ८६९
तुरत जाहि हूं देखन जिसो। होनहार कौतूहल तिसो।
अपनो बल हूं लेह पिछान। मिट यो गई कि है कुलवान॥८७०

(८६१) उबार = बचाऊं। (८६२) दरुं = दलूं। (८६४) वर = उत्तम। (८६५) प्रचंड = भयंकर
(८६६) अनंग = कामदेव (८६८) गोहण = साथ (८६९) रंजे = खुश (८७०) कौतूहल = आश्चर्यबात

बात अपूरब पहुंची आय। इन नैनन हूं देखूं जाय॥
विधिनासो सन्मुख ह्वै लरूं। हर्ष विषाद न मनमें धरूं॥८७१
मन में मैनासुन्दरकंत। विहसत जाय यही सोचन्त।
धवल सेठ बैठो है जहां। निरभय कर पहुंचो सो तहां॥ ८७२॥

॥ वणिवर उवाच॥

सुनो सेठ छांडो संदेह। लक्षणवन्त पुरुष यह लेह।
देखत सेठ हरष अति भयो। चिन्तत हूं जैसो विध दयो। ८७३
कछु बात नहि पूछो ताहि। को तू वीर कहा को आहि।
ताको कछू न उपजो मोह। लोभ अंध ह्वै चितवे द्रोह॥ ८७४
लोभ अंध जो मानस होय। पाप पुण्य नहि जाने सोय।
लोभ अंध जाके है प्रान। मलिन भाव नहि तजे निदान॥ ८७५
लोभ अंध जो प्राणी नित्त। सो पर उदय न वंछे चित्त।
लोभ अंध जाको मन रहे। सो न भली काहू की कहे॥ ८७६॥
लोभ अंध चाहे बहु वित्त। लोभ अंध के इष्ट न मित्त।
लोभ अंध के दया न जान। भव्य अभव्य न लेय पछान॥८७७
लोभ अंध वेश्या के जाय। लोभ अंध फुन आमिष खाय।
लोभ अंध मदरा आचरे। लोभ अंध पुनि चोरी करे॥ ८७८॥
लोभ अंध के जूवा दाव। लोभ अन्धको कर्कश भाव।
लोभ अन्ध के कछू अनमान। लोभ अन्ध कछू देय न दान॥८७९
लोभ अन्ध को क्रिया न कर्म। लोभ अन्ध के बुद्धि न मर्म।
लोभ अन्ध के धर्म न ध्यान। लोभ अन्ध के सत नहि ज्ञान ८८०

---

(८७३) विध = किसमत।
(८७६) पर उदय = दूसरे की तरक्की। (८७७) वित्त = धन। (८७८) आमिष = मांस
(८७९) कर्कश = कठोर।

लोभ अन्ध औगुण गह लेय । गुण अर शील सभी तज देय ।
लोभअन्ध सुख दुख नहि गिने । लोभ अन्ध पुनि मानस हने ८८२
लोभ अन्ध यश को पर हरे । लोभ अंध अपजस जिय धरे ॥
लोभ अंध नयन सो अंध । नैन अंध सो अंधन बंध ॥ ८८२
लोभ अन्ध किम किम नहि करे । प्रीति भाव मन में नहीं धरे ।
लोभ अंध सभ गुण परि हरे । लक्ष्मी देख महा सुख करे ॥ ८८३
तैसे सेठ अन्ध ह्वै गयो । कछु न मन में सोच न लयो ।
मन में कीनो हर्ष अपार । गावें यवती मंगल चार ॥ ८८४ ॥
बाजे भेर तूर नीशान । देयदान सो विन उनमान ।
श्रीपाल तब लियो बुलाय । भले अरघ जासों उपठाय॥८८५
जल सो नव्हायों कियो अभंग । चन्दन सोधा चर्चो अङ्ग ।
वस्त्राभूषण मंडा सोय । जो देखे ताही दुख होय ॥ ८८६ ॥
कहे सेठ मन में आनन्द । विधिना सहज काटियो फन्द ।
कोलाहल बहु हूवा तवे । कुवर घर ले चाले जवे ॥ ८८७ ॥
शत्रुदवन सुन हरषो गात । काहू सो न कहे मन वात ।
बार बार विहसे उच्चरे । स्वार्थ कोन कहा नहि करे ॥ ८८८ ॥
यह चिन्ते मन गुण है विशाल । सर्व जन न पर रूठो काल
निजभुज बल में प्रगटूं आज । याको भलो संवारुं काज ८८९
बहुरो श्रीपाल यों भणी । देखो गति हूं कर्म ही तणी ।
कछू न मन में करो विचार । होनहार सोई है सार ॥ ८९० ॥
श्रीपाल गह लेगए तहां । सायर थके प्रोहण जहां ।
कोउ कछु करो मत गर्व । शुभ अर अशुभ कर्म तें सर्व ॥ ८९१

(८८१) मानस = मनुष्य । हने = मारे ।

(८८४) युवती = जुवान स्त्री । (८८५) उनमान = अंदाज (८८७) कोलाहल = शोर

प्रथम तीर्थ श्री आदि जिनन्द। प्रगटे सो त्रिभुवन में चन्द।
लंबा बाहु कीयो तप सार। धरो ध्यान आत्म आधार॥ ८९२
गत षट् मास भए पुन जबैं। आहार को जिन उतरे तबैं।
विधि नहि समझत लोक अजान। अन्तराय तब भयो निदान ८९३
वन ही परीषह सही अभंग। कर्म फिरो तिनहूके संग।
श्रीपाल मन चिन्ते भाव। यह कछु पूर्व कर्म उपाव॥ ८९४
कछू न कीजे मन अभिमान। होयजो कछु विधि को निरमान।
अपनो सीस निवायो तान। सूर न खड्ग उठाया जान॥ ८९५
श्रीपाल जंपियो तुरंत। पर फुल्लित मन में विहसंत।
धवल सेठ भो कुलहमयंक। मन वच काय छाड़ सब शंक॥८९६
जीवही बध तू चाहत आज। कै प्रोहण चलिवे सों काज।
सुन कर सेठ बचन उच्चरे। प्रोहण चले जीव उबरे॥ ८९७
जो तू अबैं चालावे वीर। कोऊ नो दुःख देन शरीर।
यह सुन श्रीपाल यों कहो। तुम शठ मेरो मर्म न लहो॥ ८९८
सुनो सेठ तुम कितोक मान। कितेक तेरे सूर सुजान।
कोटक मल्ल जो करें अखार। मारुं सबन एक ही वार॥८९९
अर मेरी जो सुने हकार। प्राण तजत तिन होय न वार।
हूं कोटीभट बैरि न शल्ल। पर दल बल जीतन भुविमल्ल॥९००
प्रोहण चलवे की कहा बात। चाहो किया होय सो तात।
अरु जो आप बडाई कहूं। तो हूं कछु न शोभा लहूं॥ ९०१
सुणि हो सेठ अधममति कूर। दयाहीन अदया को मूर।
सब ही ते देखिये महन्त। सब तें रूपवन्त गुणवन्त॥ ९०२

---

(८९२)आधार = आश्रय,८९३गत = गुजरे। षट् = छै। अन्तराय = विघ्न। (८९५)विधि = कर्म। निरमान = रचा (८९६) मयंक = चांद (८९७)उबरे = बचे(९००)भुवि = दुनियां में।

सब ते महाबली रण धीर। सब ही ते शोभिये शरीर।
मोहे देख तें सोच न कियो। तैंतो भर अञ्जुलि विष पियो ९०३
मोहे देखतैं दया न करी। स्वार्थ वश अदया मन धरी।
तोहे कछु दीजे नहीं खोर। तेरे गले लोभ की डोर॥ ९०४
धाता सेती कछु न बसाय। को है ताको सकै छुडाय।
तोको मैं कीनो उपकार। मून्दों दोर नरक को द्वार॥ ९०५
महा पाप तेरो मेटियो। पाप कूप तें कर ऐंचियो।
कछु विवेक न तो को भयो। मोसों सज्जन मान न कियो॥९०६
कवर रिसानो जानो जबैं। द्वय कर जोर वीनियो तबैं।
दयावन्त अरु गुण गंभीर। कोटीभट बड साहसधीर॥९०७
तुम सब दुःख विनाशन हार। तुम दुःखितजन के प्रतिपार।
तू तो सर्व धर्म को मूल। तू कुल कमल प्रफुल्लण सूर॥९०८
तू तो सब ही सुख दातार। शीलवन्त अति लक्षण सार।
तब श्रीपाल दया मन धरी। बहु विध नवन सबन मिलकरी ९०९
प्रोहण सजो संक मत करो। जी को दुख सबैं परिहरो।
तासुवचन सुख भयो अपार। वणिवर सब ही चढे उदार॥ ९१०
चढे सूर वाजे नीसान। चढियो धवल सेठ परवान।
तब सो उठो सुन्दरी कंत। सिद्ध मंत्र ध्याइयो तुरन्त॥ ९११
हांक मूकी सब जन तूठ। ताको विद्या जुगल संतूठ।
फुनि पद कमल छुवै श्रीपार। प्रोहण चले न लागी वार॥ ९१२॥
वल आरूढ कुवर जानियो। धवल सेठ मन सुख मानियो।
भेरी मृदंग तूर बाजिया। जय जय शब्द देव गाजिया॥९१३॥

---

(९०३) अञ्जलि = बुक (अंजुला) (९०४) खोर = दोष (९०५) धाता = ईश्वर। (९०६) कार = हाथ। ऐंचियो = खेंचा (९०७, रिसानो = गुस्से (९०८) प्रफुल्लण = खिलाना। सर = सूर्य

देखत मंत्रिन कियो विचार। पुण्यवंत कोउ यह सार।
ये जलजंतु रहे गहिठौर। याह बिना कुणकाढे हि और ९१४
मंत्री कहें मंत्र यह भलो। याहि संग ले आगे चलो।
यह विरतंत सेठ सोचियो। तब तिह भलो भलो वरणियो॥ ९१५
वणिवर गण सब गोहण भयो। आप न श्रीपाल पै गयो।
कवि परिमल्ल सु करे बखान।। श्रीपाल को कर सनमान ९१६
बहुत भांति कर विनती करी। विहसत सेठ बात उच्चरी।
अर सब वणिवर पकरे पाय। हम पर दया करो संभाय॥९१७

१५—धवलसेठ कर श्रीपाल को संग लेजाना।

सोरठा॥

भो परदेशी मित्त, हम संग चालो वेग तुम।
जो कछु इच्छो चित्त, सो मांगे देवुं तुम्हें॥ ५१८

॥ दोहा॥

श्रीपाल तब उच्चरे, सुनो सेठ तुम येह।
अब हूं चालूं शीघ्रही, दशम हिस्सा धन देह॥ ९१९॥

गाथा

तब वणिवर इम कहिये किं अचिंत अद्भुत यह जंपै।
जो निवहे सो मंगहि भो कुमार पंथी सुणियं॥९२०॥

॥ चौपाई॥

शत्रुदवन सुनकहे संभार। सुनो सेठ तुम बात विचार।
दशम हिस्सो बोलो धन लेहुं। संग तुम्हारे काज करेहुं॥९२१॥

(९१६) गोहण = साथ। (९१९) दशम = दसवां।

॥ सेठ उवाच ॥

जो कुछ कहो सो दीनो तोहि । चल तू साथ धर्मसुत मोय ।
याहि बात को न हो खंड । सेठ उठायो वंसह दंड ॥ ९२२ ॥
तब प्रतीति कोटी भट करी । मन की गांठ सबी परहरी ।
तब निन कुछ विलंबन करा । मरजिया सिर टोपा धरा ॥ ९२३ ॥
भेरण्ड पंखी को भय होय । निश सोवै निद्रा वश होय ।
महा सिंधु देखियो अथाह । वणिवर मनको तजो उछाह ।९२४ ॥
लहर झकोरनि हालें जबै । सगरे जन दुख पावें तबै ।
कोउइकझमें गिर गिर परें । कइक जन वौन तब करें ॥९२५॥
कइक देखे वहु विस्तार । कब जगदीश जाएंग पार ।
कई कहें बुरो या कर्म । अहलो जावत मानस जन्म ॥ ९२६ ॥
कछु विचार न कीजे येह । दुखरा सायर जल गेह ।
संयम धर्म ठोर इह सार । तब हि कुल मिले है परिवार ॥९२७॥
गरबकलेश होय जादवं । पुण्य अर्थ सो दीजै सर्व ।
मन वैराग धरे वरवीर । देय दान सब तजे शरीर ॥ ९२८ ॥
गावत नाचत हर्ष अनंत । अति विनोद देखें जलजंत ।
निशवासर तकहु न रहें । पापी कर्म वशी यों वहें ॥ ९२९ ॥
पवन चलत चालें जलजंन । परसपरस भट भेट लहंत ।
सुखहीमें ते सिंधु तिरंत । मरजीया बोलो भय वंत ॥ ९३० ॥
साजहु साजहु सूर जुझार । सन्मुख आवत चोर अपार ।
सुनत भये भय भीत वणीस । कैइक जणे गहे कर सीस ॥ ९३१ ॥

---

(९२२) सुत = बेटा । खंड = तोड़ना (९२३) मरजिया = नाखुदा (जो जहाज की उपरली चोटी पर बैठकर दूर दूर तक देखता रहता है) । (९२६) अहलो = वृथा ।
(९३१) साजहु = तैय्यार होवो । सूर = योधा । जुझार = युद्ध ।

कैइक जंपैं सर्वस जाय। जाय न सहो कुंत को घाय।
कई कहें भजें इस बार। जो न होय सागर की धार ॥ ९३२ ॥
परसपरस यह भाषत जाम। लूटा आय पहुंचा ताम।
धवल सेठ कंपियो जु अंग। आठ सहस्र योधा ले संग ॥ ९३३ ॥
परे जाय ते जल मंझार। अपने अपने गह हथियार।
असिवर करी छुरी तरवार। धनुष बाण निज गेह संभार ॥ ९३४
सल कुंतमुद्‌गर अनिवार। गोफणि चक्र गदा अधिकार।
कोउक गहे मर्गवी डंग। कोउ त्रिशूल लिये बलिवंड ॥ ९३५
कैईयक शकति लिये मयवंत। लगे जायसो मरे तुरन्त।
तुपकदार को करे बखान। मारहिं वापस को ते जान ॥९३६
बहुतक गहे और हथियार। तिन की कछू न जानूं सार।
कवच सनाह शरीराबाध। कोउ करण करि है धरसाध ॥९३७॥
सन्मुख चोर हकारे जाय। महा अपर बल उठियो धाय।
निर्भय मार मारते करें। काहू की ते शंक न धरें ॥ ९३८॥
बहुत चोर झूझे आगरे। देश देश के संघट जुरे।
सोरठ मरहठ कुंकण देश। षगरबर्बर चोर अशेष ॥ ९३९
कैइक दुष्ट झूझि जब गये। भागे तबैं पिछोह भये।
धवल सेठ तिन पीछे भयो। काहू पै न निवारो गयो ॥ ९४०
तब उन चोरन भई संभार। बहुरो फिरे न लागी वार।
मार हि मार करे गल दार। गही लाज मन माहि अपार ९४१
भाजो सेठ सूर भय भरो। वणिवर बृन्द सबै लरखरो।
धरें न धीर गए सबवाय। बहुतन प्राण तजे अकुलाय ॥ ९४२

---

(९३३) लूटा = लुटेरे। (९३५) कुन्त = भाला

जो ले श्वास न साहस गहे। चोरन सन्मुख होन न कहे।
यह विधि झूझ होत है जिसो। श्रीपाल तब देखो तिसो ॥ ९४३
सुभट न विपति परी दुख होय। आपन पर नहि जाने कोय।
हांकत तस्कर गाजे भले। जीवत सेठ बांध ले चले ॥ ९४४

१६—श्रीपाल कर धवलसेठको लूटेरों से छुडाना

श्रीपाल देखे मुसकाय। कछूक जिय रिस उपजी आय।
अब इन तोहु न देहुं जान। सेठ हि लेउं छुडाय निदान ॥ ९४५
यह मन चिंते पुन पुन सोय। कुवर कहे किम ऐसी होय।
मोछत धर्म तात दुःख लहे। उत्तम किम ऐसी रिस सहे ॥ ९४६
तो ले वगिवर पहुंच तहां। कोटीभट सोचन जहां।
तासो सब कारण उच्चरो। वह पुन सबै देखबो करो ॥९४७
कर जोरे सब पकरे पाय। अब के सेठहि लेहु छुडाय।
बांध लयो है सुणों कुमार। जो बल है तो लगो पुकार ॥ ९४८
यह सुन महाबली परजरो। मानों अनल मांहि घृतपरो।
मानों सिंह पर डेली परी। मानों पूछ कारेकी भरी ॥९४९॥
भयो अति अरुण नयन रिस भई। सब सुभटनको धीरज दई।
जो लौं मेरे कंठ पराण। तो लौं सेठ न पावे जाण ॥ ९५०
कितोकचोरन में बल आहि। मोछत सके सेठ तन चाहि।
अब लो मैं यो भेद न लहो। अजुगत वचन आय तुम कहो ॥९५१
ऐसो वचन चयो श्रीपाल। कर ले खड्ग चालो तिह वार।
पंच परम गुरु मन सुमरंत। रण को चालो सुन्दरी कंत ॥९५२॥

---

(९४३)। झूझ = युद्ध। (९४५ रिस = क्रोध। (९४६)तात = पिता।(९४९ परजरो = प्रज्वलो (भडका)। अनल = आग। घृत = घी (९५०) अरुण = लाल रिस = क्रोध

पुण्य गरिष्ट सुनिभंय वीर। रण सन्मुख गयोसाहस धीर।
कोऊ और न लीनो साथ। आयुध कछू न पकरो हाथ ॥९५३
दई हांक बलिचंड रिसाई। थर थर चोर भजे भह राई।
मानों सिंह दहारो तहां। मृगदल बहुत चरत है जहां ॥९५४
मानों मदगर दोडो मंत। गधंभगण जिह ठानि वसंत।
मानों गरुड़ पहूंचो जाय। जहां भुजंग जरे अधिकाय ॥ ९५५॥
श्रीपाल की सुनी गुंजार। कायर चोर भगे विगरार।
शंका भई बहुत भय करें। थाके ठौर ठौर थर हरे॥ ९५६॥

कोटीभट उवाच।

सुनों दुष्ट तुम भेदो त्रास। कबहु न छूटोमेरे पास।
महा विरुद्ध गुण है यह कियो। मेरों पिता बांध तुम लियो ॥९५७
जाणों चोरन तब निज मरण। पकरो आय तासको शरण।
तसकर सबैं ऊठयो भाख। स्वामी मारक तू लै राख ॥९५८
तब रिस कोटी भटकी गई। कछू दया तांके मन भई।
त्रासन दीनों कीनी संध। सबैं परस्पर लीने बंध ॥ ९५९
धवल सेठ के बंधन छोर। तासों विनय करी जुवहोर।
करे विचार तात मन मोर। ये मारिये कि दीजे छोर॥ ९६०
तुमजो कछु मो आयस देह। सोई करुं सुनो तुम येह।
यह सुन धवल सेठ विहसाय। मंत्री लीने पास बुलाय॥ ९६१।
करो विचार वात उच्चरो। इनको बूझ ऐसो ही करो।
कोऊ कहे बोड मारिए। कोउ कहे ज्वाला जारिये ॥ ९६२॥

---

(९५३) पुणय गरिष्ठ = पुण्यों मे बड़ा महान्

(९५४) हांक = ललकारना (९५५) मदगर = मस्तहाथी। भुजंग = सांप।

(९५८) तस्कर = चोर (९५९) संध = मिलाप (९६२) बोड = डुबोना। ज्वाला = आग

को कहे हाथ पाय तोरिए । कोऊ कहै सिंधु छोरिए ।
कोऊ कहे खडग की धार । इन सिर काट न लावो वार ॥ ९६३ ॥
कोऊ कहे सर्वं पर हरो । खाल काढ के तूरी भरो ।
सगरे कहें यह दुख लहे । छोड न तिनकी कोई न कहे ॥ ९६४ ॥
सेठजु कहे भली है अबे । दुख दे दुष्ट मारिए सबे ।
अरु इन त्रास दीजिये घणों । भाखो सेठ मनो आपणों ॥ ९६५

कोटीभट उवाच ॥

हाय हाय मारे दुख होय । इनको पाप इछ है कोय ।
मेरी मान लेहु तुम तात । ऐसी भूल कहो मत बात ॥ ९६६ ॥
जांके नहीं दया को वास । तांको तोहे मूल विनाश ।
मुनिवर जो संयम आचरे । मनवचकाय ध्यान जव धरे ॥९६७ ॥
सहे परीषह वाईसगात । दया विना निष्फल सुन तात ।
श्रावकचले धर्मआचार । क्रिया कर्म पारे अधिकार ॥ ९६८
निशवासर जे देवें दान । याचक जनही पयासें मान ।
शीलवंत पारे धर भाव । भूल अमारग देय न पाव ॥९६९
जाके मन में दया न होय । मिथ्या सबें तात जिय जाय ।
अरु जो नर सामायिक करे । दह लक्षण व्रत जियमें धरे ॥९७०
अर जो पूज देव दिन मान । मनवचकाय धरे शुभ ध्यान ।
जानें नहीं दया की वात । ओर सभी निष्फल सुण तात ॥ ९७१
ओर सबे गुण जाके चित्त । जो विलसे बहुते धन नित्त ।
बहु आचार चले निकुनाय । दया हीन अहल सबजाय ॥९७२
पण्डित वाचे महा पुराण । बहु विधि जाणें अर्थ वखाण ।
दया रूप मन में नहि भाव । झूठो सब है और उपाव ॥९७३

---

(८६६) कोटीभट उवाच = श्रीपाल बोला। (८७१) निष्फल = बेफायदा।

दया बिना जप तप सब शून्य। दया बिना मिथ्या सब पुण्य।
दया हीन जस शून्य होजाय। सुन हो तात कहुं समझाय ॥ ९७४

दोहा--और बात बकवाद सब, ज्ञान ध्यान आचार।
शिवदायक संसार में, दयाधर्म है सार ॥ ९७५ ॥

॥ चौपाई ॥

यह सुन सेठ लाज मन धरी। सीस निवाय बात उच्चरी।
बार बार मन पूछ हि मोहि। सोई कर जो भावे तोहि ॥ ९७६
यह सुन श्रीपाल तिन लाय। निज प्रोहण में बैठो आय।
तिन के बन्धन दीने छोर। ठाडो भयो सो द्वय कर जोर ॥ ९७७
सुनो वीर हो मेरी बात। तुम जो कछु दुख पायो गात।
मेरी चूक नाहि है मित्त। देखो सोच आपनो चित्त ॥ ९७८
तुम सब आये आयुध संधि। मेर पिय लेचाले बंधि।
तातें तुम घणों दुख दीयो। करी न काण बांध सब लियो ॥ ९७९
वार वार कहतहूं अबै। यह अपराध क्षमो तुम सबै।
समता भाव हिये में धरो। क्रोध कषाय सभी परहरो ॥ ९८०
सोधो मल जलसो जो न्हवाय। वस्त्राभूषण सभ पहराय।
पंचामृत जोनार जिमाय। भलो अरगजा अंग लगाय ॥ ९८१
दिये सबन को पान मंगाय। लागो विनय करण मन भाय।
अब तो हो तुम मेरे मित्त। कछु कुभाव धरो मत चित्त ॥ ९८२

॥ चौरा ऊचुः ॥

स्वामी तू दूजो करतार। तू हम प्राणन को रखवार।
धन्य पिता जाके अवतरो। धन्य सु माई गर्भ जिह धरो ॥ ९८३

---

(९७४) शून्य = व्यर्थ। (९७५) शिव = सुख। (९७८) संधि = साज कर। काण = परवाह
(९८१) मल = मैल। अरगजा = चन्दन। (९८३) ऊचुः = कहते हुवे।

धन्य सोवंश जहां तूभयो । धन वह गृह जन्म जहां लयो।
धन्य वह घरी धन्य तिथिवार। धन रजनी धन वासर सार। ९८४
धन्य श्रीपाल सर्व गुण सथ । दया धर्म पालन समरथ ॥
चोरन पाय गहे ह्वै दीन । हम किंकर चरणन में लीन ॥ ५८५
हम तें कछू न ह्वै है सेव । तेरो नाम जपेंगे देव ।
पण विवि बहुत रहे गहि पाय । लीने तब श्रीपाल उठाय ॥९८६
दीनी विदा बहुत सुख पाय । अपने घर ते पहुंचे जाय ।
यह कौतूहल जैसो कियो । वणिवर सबै तैसो देखियो ॥ ९८७ ॥
जय जय शब्द किया विहसंत । कछु न कीनी सोच तुरंत ।
सब मिल धवल सेठ पै गय । कहें बात सब ठाढे भये ॥ ९८८ ॥
स्वामी सुना बात दे कान । नीके कर हम करें बखान ।
सकुचन हिय पयंपत बैन । अचिरज एक देखियो नैन ॥ ९८९ ॥
बांध चोर सर्व विगरार । पापी लंपट दुष्ट लवार ।
तिनको घर में गया लिवाय । कोटी भट दीन्हे छिटकाय ॥९९०॥
अरु फुनि एक अपूरब कियो । तिन आगे द्वै कर जोरियो ।
कीनो विनय बहुत अधिकार । पंचामृत दीन्ही ज्योणार ॥ ९९१ ॥
सोधो भलो अरगजापान । दिये वस्त्र आभरण सुठान ।
क्षमा क्षमंतर तिन सों कियो । दीन्हीं विदा गेह पहुंचियो ॥ ९९२ ।
यह सुन सेठ अचंभो भयो । हर्षि कुवर तब भेटन लयो ।
तहां बजे वाजित्र अपार । तूर मृदंग भेर सहनार ॥ ९९३ ॥
गहर शब्द वाजे नीशान । कियो महोछव दीनो दान ।
निज घर तबसो गयो लिवाय । सेठनी हू के बन्दे पाय ॥ ९९४ ॥

---

(९८४) रजनी = रात । वासर = दिन (९८६) पणविवि = प्रणाम ।
(९८७) कौतूहल = आश्चर्य । (९८८) पयंपत = कहते हैं । बैन = वचन ।
(९९२) सोधो भलो = भली प्रकार स्नानादि से शुद्ध कर । अरगजा = सुगंधित द्रव्य ।

दूब दही ता माथे धरो। अक्षत रोचन टीको करो।
हर्षित ह्वै कर दई असीस। जीवो कुवर चिर कोडिबरीस॥ ९९५
युवती गावें मंगलाचार। करी बधाई अगम अपार।
इस विध निवसे सुख अनिवार। धवल सेठ श्रीपाल कुमार॥९९६
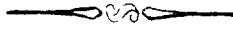
१७-चोरोंकरसातप्रोहणरत्नोंकेश्रीपालकोदेना

अचरज और सुनो अधिकार। उन चोरन घर कियो विचार।
जिह हम को इतनो गुण कियो। निर्भय प्राण दान जिह दियो ९९७
हम हू ताको कछु कराह। आवो कछु भेट ले जाह।
भले भले निर्मोलक खरे। रतनन सात पराहण भरे ॥ ९९८ ॥
श्रीपाल को दीने जाय। नमस्कार कर बंदे पाय।
वार वार बिनवे यों भने। स्वामी हम सेवक तुम तने ॥ ९९९॥
हम आयसकारी हैं मित्त। कृपा निधान राखियो चित्त।
यह कह गेह आपने गए। तहां वणिवर सब धोखे भए॥ १००० ।
परसपरस जंपैं मन भाव। देखो याको पुण्य सहाव।
एक लक्ष इन चोर बांधिया। कछू नहीं आयुध सांधिया॥१००१॥
अरु इन सबै दये मुकताय। दया धरी मनमें निकुताय।
रौरवि पापी चोरन सेन। आये लक्ष हमारी लैन॥ १००२ ॥
तिन अब एक अपूरव कियो। बहुत द्रव्य श्रीपाल हि दियो।
पूर्व कीयो कछु शुभ कर्म। कै आराधो जिनवर धर्म॥१००३॥
कै इन कियो महातप सार। कै दशलक्षणधर्म विचार।
कैइन दिये सुपात्रन दान। कै मुनिजनह पयासो मान ॥ १००४॥

---

(९९५) रोचन=गोरोचन। (१०००) आयसकारी=आज्ञाकारी(१००२) मुकताय=छोड देना। रौरवी=नारकी लछ=धन

कै रत्नत्रय व्रत आचरो। दया भाव मन मध्यहि धरो।
कोऊ पुरुष महाबलवीर। लखोन जावे साहस धीर ॥ १००५ ॥
कै कोऊ देवन में यह आहि। कै गंधर्व सब देखो चाहि।
कै यह किन्नर नाग कुमार। कै यह यक्षबली अधिकार ॥१००६॥
कै यह विद्याधर है कोय। या सम योधा और न होय।
गुप्त रूप कोऊ यह बली। याकी रीति सबै है भली ॥ १००७ ॥
यह विध वणिवर करत विचार। चले जात परोहण में सार।
पांचमी संधि यह वरणई। कवि परमल्ल भाष कर दई ॥१००८॥

॥ वस्तु छन्द ॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं
बुधजनमनरंजन पातक गंजन सिद्धचक्र विधिदुख हरणम्॥
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चोपई ग्रंथ परिमल्ल कृतं
श्रीपाल निरंदो त्रिभुवन चंदो लक्ष चोर जिह जीतलय
निहधवल छुडायो जगयश पायो पुण्य गरिष्ठसुप्रगटभयम्॥१००९

॥ इति पंचम सन्धिः समाप्तः ॥

॥ सोरठा ॥

जाके पोते पुण्य, ताके हय गय अतुल धन।
सुकृत बिना सब शून्य, देखो हिये विचार के ॥१०१०
जाकी धुर है धर्म, सो एकै है कोटिवर।
अब भाजो सब भर्म, श्रीपाल को देख कर ॥ १०११

॥ चौपाई ॥

पुण्य भाव जाके मन रहे। सो त्रिभुवन में बहु यश लहे।
बढे विभूति बहु अधिकार। हय गय वाहन अगम अपार ॥ १०१२

(१०१०) पोते = पास। हय = घोडे। गय = हाथी। सुकृत = पुण्य।

जाकी ध्वजा धर्म अधिकार। सोही एक कोटि वर सार।
सोई पुरुष आहि गुणवन्त। सोई परम विचक्षण सन्त ॥१०१३
सोई बखतवन्त नर आहि। रूपवन्त सो देखो चाहि।
सोही शीलवन्त शुभ धाम। ताही को अति उत्तम नाम ॥ १०१४
सोई अति प्रचंड बल वीर। सोई जाने साहस धीर।
ताको देख भजें दुख दंद। ताहि देखउपजेआनन्द ॥ १०१५
जाके दया धर्म का वास। काकी उपमा दीजे तास।
सो श्रीपाल धर्म को कन्द। भयो सभाको निज कुलचन्द ॥१०१६

१८-हंसद्वीप का वर्णन।

यूं सुख विलसे सुंदरी कंत। पवन हि वस चलिया जलजंत।
निश वासर चलिया अधिकाय। पहुंचे हंसद्वीप तिहजाय ॥१०१७
ताकी महिमा सको न जान। जासें प्रगट अठारा खान।
कनक रतन मातंग तुरग। श्रीखंड कृष्णागर हैचंग ॥१०१८
कस्तूरी कर्पूर अपार। विद्रुम मुक्तन के अंबार।
शशि समान वरणत है जिसी। कहूं कहूं उपजे मन तिसी॥ १०१९॥

१९-हंसद्वीपके राजाकीपूछो रयनमंजूषाका वर्णन

वस्तु अपूर्व जे कछु आहि। उपजत हैं सबरी तां माहि।
वणिवर सबन द्वीप सो दीठ। देखन ही सब ठौर सु मीठ ॥१०२०

(१०१३) कोटिवरसार = करोड़ोंमें उत्तम। विचक्षण = पण्डित। (१०१५) दन्द = जोड़।
(१०१६) कन्द = अंकुर। (१०१७) निश = रात। (१०१८) कनक = सोना। मातंग = हाथी। श्रीखण्ड = चन्दन। (१०१९) विद्रुम = मुंगा।

सब ही ठौर जिनेश्वर धाम। सुन्दर गृह अरु सुन्दर भाम।
सब ही तें रमणीक महंत। सब ही बन उपबन सोहंत ॥१०२१
सब ही ते सब सुखन निवास। सब के लक्ष्मी तनो परकास।
तहां प्रोहण थाके विचित्त। मुद्गर मेल दिये जित तित्त ॥ १०२२
उतरो सेठ द्वीप में गयो। देखत ही मन हर्षित भयो।
महा विचक्षण सब गुण जान। पैज आपनी करे प्रमान॥ १०२३
कनककेतु राजा अरिशल्ल। प्रगटो राज करे भुविमल्ल।
जिनशासन व्रत जाने सार। दुर्जन जन को त्रासनहार ॥ १०२४
कीरति खंड खंड जो होय। और न उपमा आवे कोय।
शीलवन्त भामन अरधंग। ज्यों रति कामदेव के संग ॥१०२५
लोचनतें लाजिये कुरंग। मुखतें शशी अति कोमल अंग॥
चलतचाल हंसन की हरी। कटितें लाज केहरी वरी॥ १०२६ ॥
वाणी तें कोकिलदुख लहे। वेणी तें भुजंग दुख दहे॥
और बहुत गुणसकूं न जान। जैनधर्म्म पालन परिमान॥ १०२७॥
सम्यक् भाव धरे जुमहत। मुनिवर दान देय विहसंत॥
कंचन माला नाम सुपाह। रूपन अपछर पूछे ताह॥ १०२८॥
तिनद्वय सुत जाये गंभीर। चित्र विचित्र नाम बलबीर॥
गुणगरिष्ट और महा निशंक। ते दोऊ कुलके जु मयंक ॥१०२९॥
तीजे गर्भ सुता अवतरी। रयनमंजूषा सब गुण भरी।
लोचन शुभ सब दुखको हरें। अमृत वचन सो कुंकुम जरें॥१०३०

(१०२१) भाम = स्त्री। (१०२४) अरिशल्ल = दुश्मनों को सल्ल।
(१०२५) खंड = भारत खंडादिमें। (१०२६) कुरंग = हिरण। कटि = लंक। केहरी = शेर
(१०२७) वेणी = बालों की गुत्त। भुजंग = सांप।
(१०२८) मयंक = चान्द।

यौवनवन्ती गुण ही विशाल । तात सचिन्तो देख तो बाल।
दोउ पुत्र लिये तिन संग । मन में कियो विचार अभंग ॥ १०३१॥
तीनों जने पहूंचे तहां । मुनिवर ज्ञानदीप है जहां ।
देखतअतिनिर्मलभयो हियो। पणविविनमस्कारतिन कियो॥१०३२
जय करुणारस सुख दातार । जय जय जगवन्दन शुभ सार ।
जय जय मानरहित शुभकन्द । जयजयदूरकरणयमफन्द ॥१०३३
जय जय कुमति हरण मुनिसन्त । जय जय गुण सागर गुणवन्त
जयजयज्ञानपयासन सार। जय जय त्रिभुवन के आधार ॥१०३४
जय जय शिवमार्ग साधङ्ग। जय जय कुगति विनाशन बङ्ग ।
जयजयकोहदवानल नीर । जय जय शिवफल चाखण कीर॥१०३५
जय जय भवतम हरण दिनेश। जय जय दश लक्षण उपदेश ।
वहु विधि स्तुति करी वैसियो। द्वयकर जोर सुपूछन लियो ॥ १०३६
स्वामी मोपर दया करेह । शीघ्रही भानो मुझ संदेह ॥
रयणमंजूषा को वर जोय । दीनानाथ पयासो सोय॥ १०३७

मुनिवर उवाच

मुनिवर जंपै सुन हो राय। सहसकूट चैत्यालय आय॥
करसो पटन उघाडे जोय । वह वरहु यह गुणनिधिसोय ॥१०३८
है विशुद्ध सुनियों हरषन्त। नमस्कार कर उठे तुरन्त ॥
बहुत बात को कहे बढाय। अपने घर ते पहूंचे जाय॥१०३९
जन दशवीसक सूर बुलाय। कही बात तिन सों समझाय।
रहियो चितवत मन में धाय। जिनमन्दिर तुम वैठो जाय ॥१०४०

(१०३५) साधंग = साधने वाले। कोह = क्रोध। दवानल = बन की आग।
नीर = पानी। कीर = तोता।
(१०३६)तम = अन्धेरा। दिनेश = सूर्य। (१०३८) पट्टन = ताक (किवाड)।

कोउ पट्ट उघारे जवैं। मोसों आन भाषियो तवैं।
आयस लेकर पहुंचे तहां। सहस्र कूट चैत्यालय जहां।१०४१
वैठे सुभट सु देखत रहे। कोउ तहां न आवन लहे।
निश दिन रहे यही व्यवहार। पंथ निहारें करें विचार॥ १०४२
तिह अवसर श्रोहण आइया। श्रीपाल मन में भाइया।
जिन चैत्यालय वन्दों जाय। तव ही भोजन कर हूं आय॥ १०४३
हाषत सो नगर में गयो। पुर शोभा तव देखन लयो।
घर घर शोभन कलश सुठार। मानीन की सव वन्दरवार॥ १०४४
ताहि देख आनन्दो हियो। भूल गयो आयस जो लियो।
कौतूहल देखो दिन गयो। ताके मन में सोचन भयो॥१०४५
चकित ह्वै सुध आई जवै। गुरु को वचन सनारो तवै।
शुभगति कर जिनमंदिर जहां। वन्दो जाय जिनेश्वर तहां॥१०४६
अरु मुनिवर के वन्दुं पाय। भोजन करुं सवारो जाय।
यह भावत हिए भावन्त। अंग अंग मनमें हरषन्त॥१०४७
जिनमन्दिर देखियो महंत। तव आनन्दो सुन्दरी कन्त।
अति उतंग कनकाचल तूल। नैनन देख भई जिय फूल॥ १०४८
चाल उताल तवी धाइयो। ताके सन्मुख जव आइयो।
जो देखे तो दिये किवार। तव इन मन में कियो विचार॥ १०४९
श्रीपाल किंकर पूछिया। कारण कौन पट्ट यह दिया।
कै काहू या दियो कलंक। कै विंतर या माहि निशंक॥ १०५०
कै कोउ है मिथ्याती देव। कारण कहा कहो तुम भेव।
सोई वात कहो समझाय। जिससे मेरा विकलप जाय॥ १०५१

(१०४१) पट्ट = किवाड। आयस = आज्ञा। (१०४६) चकित = हैरान।
(१०४८) सुन्दरीकन्त = श्रीपाल। कनकाचल = सुमेरु। (१०५१) विकलप = शङ्का।

२०–श्रीपाल का सहस्रकूट चैत्यालय खोलना।

स्वामी यह है जिन को धाम। सहस्रकूट चैत्यालय नाम।
वज्र किवारन मूंदो द्वार। कोउ नहीं उघाडन हार॥ १०५२
यामें कछून और विकार। पंथी सुनो बात यह सार।
यह बात सुन लीनी मान। कछून कीनी तिन की कान॥ १०५३
मनमें कीनो हर्ष अपार। धायो तब श्रीपाल कुमार।
सिद्धमंत्र तब जंपन लियो। और परमगुरु जिन सुमरियो॥ १०५४
ॐनमः सिद्ध मन लन्त। उदघाटे जु कपाट तुरन्त।
उघडनवार भर्म सब गयो। पण्य फलेनें दर्शन भयो॥१०५५
जिन प्रतिबिंब देखियो जबें। जय जय कार उचारो तबें।

२१–श्रीपालका दर्शन स्तोत्र।

जयजय निःकलंक जिनदेव। जयजय स्वामी अलखअभेव १०५६
जय जय मिथ्यातम हर सूर। जय जय शिवतरुवर अंकूर।
जय जय संयम बन घन मेह। जयजय कंचनसम द्युति देह १०५७
जय जय कर्म बिनाशन हार। जय जय भवगति सागर पार।
जय कंदर्पगज दलन मृगेश। जय चारित्र धराधर सेश १०५८
जय जय कोह सर्प हत मोर। जय अज्ञान रैन हर भोर।
जय जय निराभरण शुभ संत। जयजय मुक्ति कामनी कंत १०५९
बिन आयुध कोउ शंक न लहे। राग द्वेष तुम को नहीं चहे।
बिन थूले शोभें जिनचन्द। भविजन मन बाढे आनन्द॥ १०६०

(१०५२)मून्दो = बन्द। (१०५३) पंथी = मुसाफिर। (१०५५)उदघाटे = उघडे। (१०५७) सूर = सूर्य। शिवतरु = मोक्ष रूपी वृक्ष। कंचन = सोना।(१०५८)कंदर्प = कामदेव रूपी हाथी गज मृगेश = शेर। सेश (शेष) = शेषनाग (१०५९) कोह = क्रोध। रैन = रात्रि। भोर = प्रभात।

आज धन्य वासर धनवार। आज धन्य मेरो अवतार।
आज धन्य मो नयन विसार। तुम स्वामी देखे जु निहार॥१०६१
सीस धन्य आज मेरो भयो। तुमरे चरण कमल को नयो।
धन्य पाय मेरे भए अबै। तुम लों आय पहुंचो जबै॥ १०६२
आज धन्य मेरे कर भये। स्वामी तुम पद पर्शन लये।
आजहि मुख पवित्र मो भयो। रसनाधन्य नाम जिनलयो॥१०६३
आज हि मेरो सब दुख गयो। आज हि मो कलंकछय भयो।
मेरो पाप गयो सब आज। आज हि सुधरो मेरा काज॥१०६४
अति मोदितभयो ताको हियो। पणविवि नमस्कार जब कियो।
बहुत स्तुति करी विहसंत। तब बैठो सुन्दरी को कन्त॥१०६५
ह्वै विशुद्ध सामायिक लियो। सर्व जीव समता राखियो।
फुनि नवकार मंत्र निह ठयो। धर्म निधान ध्यान में भयो॥ १०६६
ऐसी विधि जब देखी सबैं। किंकर मन में हर्ष तबैं।
अति फूले आनन्दित भए। कछुयक जने राय पै गए॥ १०६७
जाय राय सों जोड़ हाथ। विनती एक सुनो नरनाथ।
सुन्दर पुरुष पहुंचो आय। ताकी महिमा कहीन जाय॥ १०६८
हम जिनभवन दिखायो ताहि। तिन ताके पट खोले चाहि।
अरु बन्दो तामे कोउ देव। संस्तुति कीनी जानो भेव॥ १०६९
कियो सामायिक को आरम्भ। धर ध्यान मानोकंचन खम्भ।
कछूयक जने उठे ही रहे। कछूयक तुम पै को उमहे॥ १०७०
मानस देव न जानो जाय। उठिए तुरत भेटिए राय।
यह सुन मन सन्तोषो राय। बहु धन तिनको दियो पसाय १०७१

(१०६१) विसार = विस्तार। (१०६३) रसना = जिव्हा (जुबान)। (१०६७) किंकर = नौकर
(१०६८) पट = ताक(किवाड़) (१०७०) कंचन = सोनेका। उठे = वहां।

रोमांचित भर आई देह। भयो भूप सर्वांग हि नेह।
पुर डोंडी द्राई नर नाह। सुन लोगन मन भयो उछाह ॥ १०७२
जिनवर जात पयासो भाव। उमड़ों लोग भयो मन चाव।
आपन हर्षो चलो नरिन्द। संग सकल युवतिन को वृन्द ॥ १०७३
परियन लोग और जो भयो। सोई सकल साथ कर लयो।
बाजे बाजें तहां अनिवार। तूर मृदंग उपंग सुतार ॥ १०७४ ॥
झलरि झंजत है सब ठान। ढोलन फिरी और नीसान।
गावें सुन्दरी मंगलाचार। कोउक जुरि नाचै अधिकार ॥ १०७५ ॥
उमडो लोग नगर को इसो। मो पै कहो न जाहै तिसो।
ऐसो संघट जुरो अपार। पवन न तहां लहिये सार ॥ १०७६
दिन कर वूरो उडी अति धूरि। गगन पंथ सब रहियो पूर।
मत्तगयन्द तुरंग जु भले। वाहन बहुत राय के चले ॥ १०७७
मन में उपजो सुख अशेष। जिन मंदिर तब गयो नरेश।
जिनवर देखो कृपा निधान। सन्मुख राय गयो रंजान ॥ १०७८
भीतर राव पहुंचो जबै। लागो स्तुति उच्चारण तबै।

२२--राजा कनककेतु दर्शन स्तोत्र।

तुम जिन सर्व कलेशन हरण। तुम जिन श्रीलंकृत शुभकर्म १०७९
तुम बिन जीव फिरे संसार। जोनी संकट सहे अपार।
तुम बिन कर्म छाडेना संग। तुम बिन मन उपजे भ्रमरंग ॥१०८०

(१०७३) युवति = स्त्री। वृन्द = समूह।
(१०७६) उमडो = आनंद से इकठे हुवे। (१०७७) दिनकर = सूर्य। वूरो = डूबा (छुपा)
गयंद = हाथी। तुरंग = घोडे। (१०७८) रंजान = खुश।
(१०७९) लंकृत = अलंकृत (शोभमान)

तुम बिन भव आताप हि सहे। तुम बिन जरा जन्म मृतु दहे।
तुम बिनकोउ न लेय उबार। तुम बिन कर्म न मिटे लगार १०८१
तुम बिन दुरय दुःख को हरे। तुम बिन कौन परम सुख करे।
तुम बिन को काटे जम फन्द। तुम बिन को पूर्वे आनन्द॥ १०८२
तुम बिन उपजे कुमति कुभाव। तुम बिन अवरन कोउ सहाव।
तुमबिन हितू न दूजो कोय। तुम बिन शुभगति कछून होय १०८३
तुम बिन हूं पापी भंडियो। काल अनादि वाद हंडियो।
तुम बिन मैं दुख पायो घणो। वेदन शूल कहांलो गिणो॥ १०८४
मैं मनमें नहि जानो सोय। जाने दर्श तुम्हारो होय।
दया धर्म नहि कियो दिढाय। वारवार राजा पछिताय॥ १०८५
यह विधि स्तुति जु कीनी घणी। निन्दा बहुत चई आपणी।
नाना विधि रचना शुभ सची। अष्ट प्रकारी पूजा रची॥ १०८६

२३—कनककेतु राजा का श्रीपाल से मिलाप।

पुन देखो सब सुखदातार। भेटो तब श्रीपाल कुमार।
कुशल क्षेम पूछी बहु भाय। मन में तबै चिंतयो राय॥ १०८७
पूर्व पुण्य सवारो काज। वर सुन्दर अति पायो आज।
धन्य सुगुरु जिह कियो पसाव। पायो फल जैसा मनभाव॥१०८८
बोलो भूप सुनो हो मित्त। मत डालो तुम आपनों चित्त।
तुम देखत उपजो मो नेह। सोय सुनो कहानो यह॥ १०८९
मुनिवर ने भाषो हो जोग। सोई पूजो आय नियोग
जिह ठावे जो मिलनो है कहो। तिही ठा पुण्य वन्ततूलहो॥१०९०

(१०८१) भव आताप = संसार में जन्म, मरण का दुख। जरा = बुढ़ेपा। उबार = निकालना।
(१०८२) पूर्वे = पूर्ण करे। (१०८४) वाद = वृथा। हंडियो = फिरा। (१०९०) ठावे = जगह में

चल हु तुरत अब निर्भय होह । कन्यादान देऊं अब तोह ।
कारण कवन पहुंचे आय । किम जिन मंदिर खोले जाय ॥ १०९१
केवल नाम चरित है जिसो । मो सों प्रगट पयासो तिसो ।
यह सुन सुन्दरिकन्त सुजान । निजमन चिन्ते गुणहै निधान ॥
बूझे राव मर्म नहि लहे । अपनो नाम न उत्तम कहे ।
किम कर प्रगटो मन अकुलाय । यह विचारत पहुंचो आय ॥१०९३
मुनिवर जुगल सर्व सुख गेह । जिन बन्दियो धरो मन नेह ।
फुन तिह ठौर गवन तिनकियो । पट्टासन स्वामी बैठियो ॥१०९४
तब तांई श्रीपाल नरिन्द । हर्षित व्है बन्दियो मुनिन्द ।
बहुत स्तुति करी धर भाव । बैठो कोटीभट अरु राव ॥ १०९५
ते बाईस परीषह सहन । गुरु धर्म मुनि लागे कहन ।
पहिलो समकित व्रत धारिए । जिनवर कथित धर्म पारिए १०९६
अरु गुरु देव सेव मानिए । भेद भिन्न नाहि जानिए ।
पुनि पंच परमेठ धर भाव । नीके कर बन्दों कर चाव ॥ १०९७
प्रथम हि श्री जिनवर अरहन्त । दूजो सिद्ध जपो गुणवन्त ।
तीजो आचारज गुरु पाय । चौथो उवझाय मन लाय ॥ १०९८
पंचम साध लोक गुण धीर । शुभ गतिकर नाशन भव पीर ।
तीन हु काल धरो दिढ चित्त । सेवो दंसन नान चरित्त ॥१०९९
अर नवकार जपिये नित । त्रिभुवन में जो सार महत ।
नवकारो लहिए शिव सिद्ध । नवकारा लहिए सब रिद्ध ॥ ११००
नवकारो सुर नर सेवंत । नवकारे गुण गग जु अनन्त ।
नवकारे कल्याणक कन्द । नवकारे भंजन दुख दन्द ॥ ११०१

(१०९२) पयासो = कहो। (१०९४) पट्टासन = लकड़ी का आसन।
(१०९९) भवपीर = संसार की पीड़ा। (११००) शिव = मोक्ष।

नवकारे परिगह अरु वित्त। नवकारह बधू अरमित्त।
नवकारे पितु जानहु माय। नवकारे हरे नीच सुभाय॥ ११०२
जे तीर्थंकर भये पवित्त। नवकारह ध्यायो दिढ चित्त।
नवकारे आराध्यो तेण। श्रीपाल वर भेटो येण॥११०३

राजोवाच

स्वामी सुनो कहों धर भाव। को श्रीपाल कहावे राव॥
कृपा निधान कहो समझाय। जैसे मेरो विकल्प जाय॥११०४

मुनीश्वर उवाच

नीके कर तुम देखो चाहि। यह जु देख ढिग बैठो आहि।
जो नीके कर पूछो मोहि। यांको चरित सुनाऊं तोहि॥ ११०५
अंग देश देशन में सार। चंपापुर तामें अधिकार।
करे राज अरिदवन नरेश। जाके परिग्रह बहुत अशेष॥ ११०६
वीरदवन ता लहुरो वीर। कोटीभट अर साहस धीर।
कुन्दप्रभा राणी अरधंग। रूपवंत गुणसायर चंग॥ ११०७
ताके गर्भ जन्म यह लियो। राज भार सब याको दियो।
आपन भये काल बश राव। यह परजा पर राखो भाव॥ ११०८
राज करत दिन बीते घने। पूर्व अशुभ कहत नहि बने॥
कुष्ट व्याधि उपजी या अंग। सेवक हुते सातसै संग॥११०९
तिन हूं को तन कुष्टी भयो। वासर बहुत महा दुख दयो।
चिन्ता बहुत व्यापी ताय। वीरदवन था गो निकुताय॥ १११०
अंग सातसे संग लगाय। आपन बन में पहुंचो जाय।
पुर उज्जेनी मालवोदेश। करे राज पहुपाल नरेश॥ ११११

(११०२) वित्त = धन(११०४) विकल्प = संदेह (शक)। (११०७) गुणसायर = गुणोंकी समुद्र
(११०८) कालवश = मरणा। (१११०) वासर = दिन। (११११)आपन = आप।

कर्म योग ऐसी मति भई। मैनासुन्दरी याकों दई।
अष्टान्हिकाको ब्रत तिन कियो। बहुविधि सिद्धचक्र पूजियो ११११२
गन्धोदक सो छिडको अंग। ऐसो निर्मल भयो अभंग।
अरजे अंग सातसै बीर। निर्मल तिन को भयो शरीर॥ १११३
तहां रहत मन उपजी लाज। उद्यम कियो राज के काज।
चलो विदेश अकलो अंग। दूजो जनो न लीनो संग॥ १११४
माता तहां मिली थी आय। चालो ताहू को छिटकाय।
आपन वन गिरवर नाषन्त। गया एक बन मांहि तुरन्त॥ १११५
तहां एक विद्याधर वीर। विद्या साधत दहे शरीर।
आवै क्यों हूं हाथिन ताहि। बिनती कीनी या तन चाहि॥ १११६
दया मोह याके मन भयो। विद्या गण साध ता दयो।
द्वय विद्या याको तिन दई। सुकचत तापै से इन लई॥ १११७
ताहि छाडि आगे पग धरो। उपबन एक तहां चलगयो।
द्रुम तर रहो थकित ह्वै सोय। ताम कहां लौं अचरज होय १११८
धवलसेठ विणजारो आहि। द्रहमें परे परोहण ताहि।
टारे टरे न संशय भयो। मंत्री एक मंत्र तब दियो॥ १११९
एक पुरुष वलि दीजे जबै। सेठ प्रोहण चलत हे तबै।
तिह मतिहीन दूत पाठए। याहि बोल तापै ले गए॥११२०
तिह पापी मन अदया धरी। तब ही यह बात उच्चरी।
प्रोहण चले जीव सो रहे। तातो कछू न कोऊ कहे॥ ११२१
यूंही जे तू देय चलाय। तो हम पकरे तेरे पाय।
यों सुन दया भई मन आय। पेल परोहण दये चलाय॥११२२

(१११५) छिटकाय = छोडकर। (१११८) द्रुम = वृक्ष। तर = तले।
(१११९) द्रह = खाड़ी। (११२२) पेल = धकेलकर।

बल देखत मन लालच भयो। धवलसेठ गोहण कर लयो।
प्रणमत कर चरणन गहि रहो। दशम हिस्सा धन देनो कहो ११२३
आगे चल महा सुख पाय। लाख चोर तह पहुंच आय।
तिन संग्राम सेठ सो कियो। घर्डायक झूझ बांध तब लियो॥११२४
वणिवर पहुंचे यापै आय। छिन में लीनो सेठ छुडाय।
नेकन आयुध लीनो सन्ध। सबै परस्पर लीने बन्ध॥११२५
बहुरो तिन ले गयो निज थान। बहु सन्मान कियो दे पान।
तिन को बिदा दइ धर भाव। ते घर गए कियो मन चाव॥११२६
रत्नन भरे परोहण सात। पूर्व कर्म थकी या बात।
दीने श्रीपाल को आय। बहुरो गेह गए गहि पाय॥ ११२७
अचरज कीनो सब ही संग। हर्षित भयो सेठ सर्वङ्ग।
वहां से चले को कहे बढाय। तेरे नगर में पहुंचे आय॥ ११२८
अब लो भयो चरित हो जिसो। तासों प्रगट कहो हम तिसो
आगम चरित घनो है और। अब कहिबे को नाहीं ठौर॥११२९
जो कछु भयो सो तासो कहो। हरषो भूप भेद सब लहो।
पणविवि श्रीपाल अरु राय। मुनिवर युगल गयो समझाय॥११३०

२४—रयनमंजूषा का श्रीपाल से विवाह।

कनककेत रंजो अधिकार। बाजे तहां बाजे अनिवार।
श्रीजिनवर वन्दो बहु भाय। अपने घर तब गयो लिवाय॥११३१
धवलसेठ तह लियो बुलाय। सोई तिहठां बैठो आय।
बहु सन्मान तास को कियो। वणिवर बृन्द सबै हरषियो॥११३२

(११२३) गोहण = साथ। (११२४) झूझ = युद्ध करके। (११२५) नेकन = एक भी नहीं।
(११२८) आगम = आगामी (होने वाला)। (११३०) पणविवि = प्रणाम।

तब शुभ घडी लगन तिह ठई । मंगलचार नाद धुन भई ।
पुन तहां मंडप कीनो चार । जैसो होय वंश व्योहार॥११३३
रयनमंजूषा गुणह विशाल । श्रीपाल व्याही सुखमाल ।
सोवो दीयो तुठि के राय । चवर छत्र हय गय अधिकाय ॥११३४
दीनो मणि रत्नन भंडार । दासी दास दिये शुभसार ।
और बहुत को कहे बढाय । दीने नये महल करवाय ॥११३५
रयनमंजूषा के सो संग । कोटीभट भुञ्जे बहु रंग ।
नित नित जिनमन्दिर पगधरे । मुनिवरदान भक्तिबहुकरे ॥११३६
भूपति बार बार यों कहो । भलो जवांई पुण्यहि लहो ।
बढी प्रीति प्रगटी सुखखान । करे भोगसो इन्द्र समान॥११३७
ऐसे रहत गए दिन जबै । धवलसेठ यो बिनयो तबै ।
भो कल्पद्रुम रायन के राय । तुम सो कहन सके मन पाय ॥११३८
प्रोहण भरे वस्तु शुभ आन । बासर बहुत गए इस थान ।
अब तुम हम पर कृपा करेह । संग दो कुवर प्रगटजस लेह ॥११३९
सागर नापें वचन सुनेव । सवै अंग अकुलाने देव ।
ऐसो वचन भूप सुन लियो । बोलो कछू न उत्तर दियो ॥ ११४०
मौन ही यह पहुंचो निज गेह । राणी वरजो भरियो नेह ।
सुख सों कछुक गए दिन जाम । बहुरो धवल बीनयो ताम ११४१
हम पर कृपा करो नरनाथ । देहो विदा हम जोरत हाथ ।
यह सुन मनमें सोचे राव । अनिहठ किये बिनसे यह चाव ११४२

(११३३) नाद शब्द । (११३४) सोवो = दहेज । हय = घोडे । गय = हाथी ।
(११३६) रंग = सुख । (११३८) कल्पद्रुम = कल्पवृक्ष
(११३९) कुवर = श्रीपाल कुमार ।
(११४०) संग = साथी । अकुलाने = उदास होगये हैं । (११४१) मौन = चुपके रहना ।

राजा यह विचारो चित्त । रयनमंजूषा जोग पवित्त ।
दीने भूषण वस्त्र अपार । दीने गज मोतियों के हार ॥ ११४३
दीने नग निर्मोलक खरे । तिन के कछु परोहण भरे ।
अगणित दीए पटंबर ओर । कुवरी जोग दीन चंडौर ॥ ११४४
कछू सेन दीयो शुभसार । कवि परिपक्ष न जानो सार ।
राजा सुता अंक भर लई । तासो प्रथम बात यह चई ॥ ११४५
गह भर कहे पुत्री सुन भाय । हम तो आनइ जन्म मिलाय ।
जननी भेटी कंठ लगाय । सकल परिग्रह भेटो आय ॥ ११४६
झलहलंत भर लाने नैन । लागो राव तबै सीख दैन ।
सासु सुसर को धरियो मान । तेरो पुत्री यह है सयान ॥ ११४७
चलियो कुलकी रीतन जाय । यह सीख गहियो निकुताय ।
जननी बहुत भेटियो सोय । यह मिलन बहुरो नहि होय ॥११४८
या सुन कुवरी हियो भर लियो । अश्रुपात रुदन तब कियो ।
गह भर राव कहे शुभसार । सुन हो कोटीभट श्रीपार ॥ ११४९
मोते कछू न ताको भई । यह दासी सेवा को दई ।
सब अपलक्षण यामें आहि । अतिकुरूप है सब ही चाहि ॥११५०

कोटीभट उवाच

बोलो शत्रुदवन सुत जोय । राजा तुम सम अवरन कोय ।
तुमहम जोग परम पद दियो । तुम जस प्रगट देशमें भयो ॥११५१

राजोवाच

सुन सुन कुवर कहो सब सोय । पुण्य जोग दर्शन लहो तोय ।
सो अब हम को दुद्धर भयो । दोउ मिले हिये भर लियो ॥ ११५२

(११४४) पटंवर = रेशमी कपड़ । चंडोर = डोला । (११४५) सेन = फौज ।
(११४६) गहभर = आंसु भर कर । आनइ = दूसरे । (११४८) निकुताय = सबप्रकारसे
(११५०) अप लक्षण = खोटे लक्षण (दोष) (११५२) दुर्द्धर = मुशकल ।

बोलो राव सुनो श्रीपार । मनमें राख जो सुख दातार।
और कहां हूं कहूं बनाय। कब हूं दर्श दीजियो आय ॥ ११५३

कोटीभट उवाच

स्वामी सुनो बात दे कान। नीके कर हूं करूं बखान।
सज्जन वसे कोस सै चार। प्रीति न टरे देखियो टार॥ ११५४
पंक्षी टटीहरी कहे विचार।अंडा देय सिंधु की पार।
आपन देश देशांतर जाय। मन में तैंअंडान भूलाय॥ ११५५
रहे गगन में शशिकी छांहि। पद्मिनी रहे सरोवर मांहि।
मन में प्रीति भाव दिढ रहे। विगसावे सब कोऊ कहे॥ ११५६
बादल यद्यपि राके ताहि। सो ना दूर देखियो चाहि।
मनमें सुरनि रहे अति नेह। विकसावे कुमुदनि के गेह॥ ११५७
सुनो राय देखो जिय जोय। मन को प्यारो प्रीतम होय।
नेह न टरे रहे भरपूर। रहे समीप कि निवसे दूर॥ ११५८
दुर्जन सदा समीप हि रहे। गुण छाडे दिन ओगुण गहे।
तासों प्रीति कीजिये घणी। अरु सेवा कीजे ता तणी॥ ११५९
पंचामृत दीजो जो नार। सो दुःखदेय अंत अधिकार।
जो भुजंग बन में ते लाय। अपने गेह राखिए आय॥ ११६०
अमृत भष दीजे दिनमान। कालकूट हो जाय निदान।
क्षण में डसे न राखे नेह। दुर्जन कथा सबै सुन लेह॥ ११६१

(११५५) सिन्धु = समुद्र। देशांतर = दूसरा देश।
(११५६) गगन = आसमान। शशी = चांद। पद्मिनी = कमलनी। विगसावे = खिले।
(११५७) यद्यपि = अगरचे। कुमदनी = कमलनी। (११६०) भुजंग = सांप।
(११६१) कालकूट = एक किस्म की जहिर। निदान = आखिर में।

॥ दोहा ॥

दुर्जनजन सब तें बुरों, तजे न दुष्ट स्वभाव।
ज्युं भुजंग अमृत पीए, विष उगले मन चाव ॥ ११६२

॥ चौपाई ॥

सज्जन जन की उलटी रीति। जो दुख लहे तो मन में प्रीति।
बहु प्रपंचतास को होय। सहज स्वभाव न छाडे सोय ॥ ११६३

॥ दोहा ॥

ईष काटिये दुःख दे, बहु सुख देवे मीठ।
कनक अगन जिम जिम तपै, तिम तिम कान्ति गरीठ ॥११६४

॥ चौपाई ॥

सज्जन जन को नीको संग। कबहु न होय प्रीति को भंग।
मोसे दास तुम्हारे घणें। मोहे राखियो मन आपने ॥ ११६५

राजोवाच

झूठी एक अंग की प्रीति। ऐसी एकनके हू रीति।
अगलो मरे चित्त अकुलाय। इन मायाके कछून भाय ॥११६६
ऐसी प्रीत धरे चित मीन। जलमें रहे अहो निशि लीन।
जल बिन प्राणतजे अकुलाय। जल मूरखको कछून जाय ॥११६७
सुनो बात कोटीभट वीर। सुरत राखियो साहस धीर।
तुमतो पुण्यपुरुष अब आहि। तुमबिछुरत हमदुख लहाहि ११६८

॥ दोहा ॥

जो मेरे मन में रहे, तुम सों प्रीति उछाह।
सो तुम कोटीभट सुनो, कीजो प्रीति निवाह ॥११६९

(११६४) ईष = गन्ना। मीठ = गुड़ आदि। कनक = सोना। गरीठ = शुद्ध भारी।
(११६५) भंग = टूटना। (११६७) अहो = दिन। निशि = रात्रि।

२५-रयनमंजूषाकोलेश्रीपालकाहंसद्वीपसेचलना

चौपाई–ऐसो बचन सबै सुन लिए। दोनों गह भर हिये लिए।
दोनों मिले बहुर उर लाय। फिरो राव को कहे बढाय॥ ११७०
फिर फिर पाछो जोवत जाय। दोउ मिलने को ललचाय।
अति विलखानो मन दुख पाय। राजा गेह पहुंचो आय॥ ११७१
श्रीपाल भामनी समझाय। दोनों प्रोहण बैठे पाय।
परस्परस उपजो आनन्द। दोहन परो प्रेम को फन्द॥११७२
सोवो सबै भंडारे भरो। ताको कछु गणत नहि करो।
दोहून के मन हर्षित भए। दोउ चतुर मैण शर हए॥११७३
रयनमंजषा गुणह निधान। शीलवन्त सीता समान।
दोनों जन भुंजें सुख जिसो। मकरध्वज रतिके संग तिसो ११७४
महा पवन चलियो अधिकार। प्रोहण चले न लागी वार।
वणिवर सबै रंजियो चित्त। श्रीपाल के देख चरित्त॥ ११७५
आपस में जंपैं धर नेह। देखो पुण्य तनो फल येह।
उपबन सोवत हो त्रिगार। मारण लाए हुवो उदार॥ ११७६
धन भंडारभरासोंपो आहि। सेठ पून कर बोलो चाहि।
इन ही एक अकेलो जान। लक्ष चार बांधे परवान॥११७७
जाय उघाडो जिन को गेह। दर्शन काजे कीनो नेह।
राजा तहां पहुंचो आय। गेह आपने गयो लिवाय॥११७८
कन्या दीनी रूप निधान। सोवो दीयो बिना उनमान।
तहां रहत सुख पायो घणों। यह तो पुण्य चयो आपणो॥११७९

(११७० उर = छाती। (११७१) जोवत = देखता। (११७२) भामनी = स्त्री।
(११७३) सोवो = दहेज। मैन = कामदेव। शर = तीर। (११७४) मकरध्वज = कामदेव
(११७६ जंपे = कहे। (११७८) उघाडो = खोलो (११७९) उन्मान = अंदाजा।

याके पोते पुण्य सहाय । यह होय भूमी को राय ।
वणिवर कहें सवै जिय जोय । पुण्य सहाय सवै कछु होय ॥ ११८०

॥ दोहा ॥

वरयुवती हय गय सुधन, सुरसुख शिव सुख जोय ।
सो त्रिभुवन में हैं सही, पुण्य बिना नहिं होय ॥ ११८१

॥ चौपाई ॥

यही पुण्य फल कहो तुरन्त । सायर चले जात जलजन्त ।
रयनमंजूषा और श्रीपार । भोग भोगवें सुख अधिकार ॥ ११८२
एक दिवस की कहीन जाय । कोटिभट बोलो विकसाय ।
तात तुम्हारे अजुगत करी । मुहि परदेशी कन्या वरी ॥ ११८३
ऐसे सुने मंजूषा वैन । जल भर रूप लिए कर नैन ।
वारवार विलखे मुरझाय । श्रीपाल बोलो अकुलाय ॥ ११८४
सुनहु नार तासों उच्चरों । भेद आपणों प्रगटही करों ।
देश अंग है कंचन खान । वसे नगर चंपापुर थान ॥ ११८५
तहां भयो अरि दवण नरेश । कालवश भयो सुयश अशेश ।
कुंदप्रभा जननी मो तणी । सत शील सीता सम गुणी ॥ ११८६
कारण एक पहुंचो आय । तब ही सुख चाल्यो छिटकाय ।
वीर दवन काको मो तणों । ताहि राज सोंपो आपनों ॥ ११८७
दूजो देश मालवो वसे । पुरी उजैनी तहां सु वसै ।
करै राज पहुपाल प्रचंड । लीनो सब रायन पै दंड ॥ ११८८

(११८०) भूमि = पृथ्वी । ११८१) युवती = स्त्री । हय = घोडे । गय = हाथी
सुरसुख = स्वर्ग का सुख । ११८२) सायर = समुद्र ।
(११८५) कंचन = सोना । (११८६) कालवश = मृत्यु के वश (मरा) जननी = माता ।
(११८७) काको = चाचा ।

तास सुतामैनासुंदरी। रूपवंत सवही गुण भरी।
सो मेरी प्रीतम वर नार। रूपवंत रंभा उनिहार॥११८९
अर मेरी जननी शुभसंत। अवर मित्त सातसै महंत।
तहां रहत को कहे वढाय। तीजै धवलसेठ निकुताय॥११९०
चौथी तू वरनी वर नारि। पर देशी हूं लेह विचारि।
यह सुन चाहि बहुत सुख भयो। तबतैं दुखतासको गयो॥११९१
खेलें हसै महा सुख रहें। सुपनै हूं तै दुख न लहें।
पूर्व कर्म अशुभ कियो जोय। बहुरो प्रगट न लागो सोय॥११९२
एक ही वासुर सेठ निहारि। रयनमंजूषा सो वर नारि।
होनहार ताकी मति गई। कछु कुबुद्धि तासकों भई॥११९३
देखत दुष्ट विकल हो गयो। विरह विथा अति व्यापन लयो।
मूर्छि परो कछु नही संभार। सुध पाई श्रीपाल कुमार॥११९४
भरी अंकतसु उठावन लियो। चपल निलज्ज पवन पैषियो।
कोटी भट तब छिडक्यो नीर। उठि बैठो सो चेति शरीर॥११९५
पूछै वीर ताहि विलखंत। कारण कहा कहो विरतंत।
कैकाहू व्यंतर चापियो। कैसायर जल तैं कांपियो॥११९६

सेठ उवाच

सुनो बात भय भंजनवीर। दुख नाशन अर साहस धीर।
वाइ मरोरी भई प्रचंड। उपजतलखो प्राण नखंड॥११९७
वरस पांच दश बीत जवें। यह मोकों व्यापत हैं तवें।
धवल सेठ यह कहीं वनाय। अंतर पाप न परगटो जाय॥११९८

(११८९) रंभा = एक अप्सरा का नाम है। (११९३ वासर = दिन।
मति = अकल। (११९४) विकल = बेहोश। व्यथा = पीड़ा।
(११९६) चापियो = पकड़ गया है। (११९८) अंतर = मनमें होनेवाला।

शत्रुदवण सुत विलखो भयो। शुद्ध चित्तसों थानकि गयो।
रवि आथयो प्रगट भय चंद। पापी चड्यो विथा को कंद ॥११९९
तलफै सेठ भई मति हीन। ज्यों बांछे जल तलफ मीन।
ज्यों कपि लोटें बीछू खाय। त्यों पापी लोटै बिललाय ॥१२००
काहू की नहीं बात सुनाय। गीत विनोद कछू न सुहाय।
अति कंपै तल उलटी सास। वणिवर मन्त्री बैठे पास॥ १२०१
औषध वैद करै ज्यों अपार। त्यों त्यों रोग बधै अधिकार।
विथा होय तांको उपचार। क्योंकरि मिटै काम की झार ॥१२०२
तब मन्त्री बोलिया सुजान। कारण कवन कहो परमाण।
छिनछिन दुख बाढत है घनों। स्वामी कहा भाव आपनों ॥१२०३
जोई औषधि तुमें सुहाय। सोई करैं कहो समझाय।
यह सुन महा दुष्ट उच्चरै। ऐसो कर्म कहा नहि करै॥ १२०४
मन की लाज दई छिटकाय। सबही सों बोल्यो विहसाय॥
रयनमंजूषा भेटौ जबें। मेरो दुख भाजे गो तबें॥ १२०५
या में कछू न दूजो आन। विन भेटे मोहि जाय परान।
पापीवचन जबै इम सुनों। वणिवर मंत्री माथो धुनों॥ १२०६
हा हा कार कर तजि सब। अजुगत बात कही तुम देव।
मिथ्याती जो जी में धरै। भलीन ऐसो कर्म हि करै॥ १२०७
यह श्रीपाल कीयो तैं मित्त। तामें बसै तुम्हारो चित्त।
अर सबहीको सुखदातार। तेरे प्राण न को रखवार॥ १२०८
धर्म पूत है देख विचारि। यह सुंदर वर ताकी नारी।
उत्तम कुलजाको अवतार। संयम शील गहे व्रत भार॥ १२०९

(११९९) रवि = सूर्य। (१२००) तलफै = तड़फै। कपि = बंदर।
(१२०५) छिटकाय = छोड़कर। (१२०९) अवतार = जन्म।

धर्म मूल है सुन निकुताय। दर्शन देखत पातक जाय।
ता तन तूं कुदृष्टि मन धरै। मति दुर्गति विण काजहिपरै ॥१२१०
नरह जन्म अति उत्तम आहि। पाया है मतिखोवो ताहि।
बात हमारी जिय में मान। मति तुम करो सर्व सुख हान १२११
पर घरणी पातक को अंग। पर घरणी तैं चढै कलंक।
पर घरणी विष बेलिज कहै। मूरख ताकौं लालच गहै॥ १२१२
पर घरणी पाप को धाम। जल मरिये ताकौं लिए नाम।
पर घरणी सर्पिणी उनहारि। पर घरणी तैं आवै गारि ॥ १२१३
पर घरणी सब दुख को मूर। पर घरणी नर सेवैं कूर।
पर घरणी तैं बढै उपाधि। पर घरणी मति देखो साधि॥ १२१४
पर घरणी तैं बाढै त्रास। पर घरणी तैं मूल विनास।
परघरणी रावण वांछियो। सब कुल सहित सीस तिह दियो१२१५
पर घरणी साहसगति चाह। दुरगति गयो हण्यो सिर ताह।
पर घरणी की चोरी बुरी। अंत काल सो रहै न दुरी ॥ १२१६
पर घरणी तजिये परवान। पैवह तेरी बहू समान।
अरु ये सुध कोटीभट लहै। हमैं तुमैं कुल सूधा दहै॥ १२१७
वहुत वातकों कहै बढाय। सागर,जल मैं देय बहाय।
ऐसे वात सेठ सुनि लई। ताके मनमें तैं चलि गई॥ १२१८
पोयण पत्त परै जल आय। छिन मैं ता परितैं टरिजाय॥
पापीके मन मैं गुरु कहै। बात न एक धर्म की रहै॥ १२१९

(१२१०)पातक=पाप(१२११) मति=नहीं। १२१२) पर=दूसरे की।
घरणी=स्त्री। (१२१४) मूर=मूल (जड़)। कूर=कुत्ते।
(१२१५)त्रास=भय। (१२१६) दुरी=छुपी।
(१२१७) बहू (बधू)=पुत्र की स्त्री। (१२१८)पोयण पत्त=कमल पत्र।

श्लोक

काम लुब्धे कुतोलज्जा, अर्थ हीने कुतः क्रिया।
सुरापाने कुतः शौचं, मांसाहारी (रे) कुतो दया॥

चौपई (अर्थ)

काम लुब्ध लज्जा परिहरै। अर्थ हीन क्रिया नहीं करै।
सुरा पान तें शुद्धि सुजाय। दया हीन है आमिष खाय॥१२२१
धवलै बात न कछु सुहाय। सब मंत्रिन सों उठो रिसाय।
अरे ढीठ मति कछु कहाव। आप अपने थान की जाव॥ १२२२
मेरे मन की लखो न कोय। सोही कहत जो मो दुख होय।
इन मूढन कछु भेद न लहो। काम वश को को नहि गहो॥ १२२३
काम वश शंकर वर चन्द। पार्वती लीनी अरधंग।
काम बाण हिरदै जब हुयो। ब्रह्मा चार बदन है गयो॥ १२२४
काम वश सुरपति अर इन्द। काम वश रवि और फणिंद।
काम वश कामनिमें प्राण। निज पर कथा न सुनिये कान॥१२२५
वणिवर मंत्री सब ही सुणी। बहुरो तासो बिनती भणी।
स्वामी वह श्रीपाल कुमार। तेरा कीयो कहा विगार॥ १२२६
सायर में थकीयो जल जन्त। तब तिन काढ चले तुरन्त।
तसकर ले बांधा तू पार। तिन पै तें जो लियो उबार॥१२२७
अर वह पुण्यवन्त गंभीर। जाके पुण्य न पावे तीर।
वचन हमारो जियमें धरो। ता तन मति कुदृष्ट तुम करो॥१२२८

(१२२१) लज्जा = शरम। अर्थ = धन। सुरा = शराब आमिष = मांस।
(१२२४) शंकर = महादेव। बदन = मुख। (१२२५) रवि = सूर्य।
फणीन्द्र = शेषनाग। (१२२७) सायर = समुद्र। तस्कर = चोर।

पापकर्म मति बांछो अवै। जै यह कहैं सायर में सव।
तब पापी को उपजो कोह। मारण को कीनो दय छोह ॥ १२२९
मंत्री तबै मिले ते आय। महा दुष्ट दुष्टन के राय।
धवलसेठ सो बिनतीकरी। स्वामी जो कछु तुम जिय धरी॥१२३०
सोई करें तजो संदेह। बोलो सेठ धरो मन नेह।
सोई मंत्र करो जो कहुं। जैसे रयनमंजूषा लहुं॥ १२३१

२६–धवलसेठकर श्रीपालको समुद्रमें गिराना।

यातो बात कहां है देव। हम तो बहुत करेंगे सेव।
मंत्र हमारो उपजो जिसो। तुम सो अवै पयासो तिसो॥१२३२
मरजीयें कछु लोभ दिखाय। कहिए सब तिरतन्न बुलाय।
झूठे हो उठ करो पुकार। सुर सुभट दौडो तिह बार॥ १२३३
उमगन वर्त चढेगो जबै। हम यहां काढ देहंगे तबै।
जाय परेगो सिंधु मझार। रयनमंजूषा ताकी नार॥ १२३४
यह सुन सेठहि अति सुख भयो। ता छिन बोल मरजीया लियो।
ताको कछु द्रव्य तिन दियो। अरु सन्मान तासको कियो॥१२३५
तासो बात कही समझाय। झूठा झोर कीजियो जाय।
धावो धावो सूर जु होय। चढो वेग देवता सोय॥ १२३६
जो कोउ चढ है अकुलाय। देह सायर मांहि गिराय।
यह सुन मरजीया जिय धरी। लालच बन्ध संक नहि करी॥१२३७
सब भान्तिन ते उठे पुकार। ध्यावहु वनिवर संग संभार।
ध्यावहु श्रीपाल इतवार। नातर कलहे वढे अतिसार॥१२३८

(०२२८)(कोह=गुस्सा १२३३) मरजिया=ना खुदा (जो जहाज के ऊपर बैठा रहे है। (१२३४) वरत=बड़ीऊंची लकड़ी। (१२३७) संक=भय।

डोलत देखत हो जलजन्त । लागे वेग पुकार करन्त ।
तब सगरे बोले अकुलाय । कहां कहो तू कह समझाय ॥१२३९
किधौ मछ जलमें उछरो । किधो चोर आवत भय भरो ।
किधो भवर तो देखन लियो । बहुत हि शोर कहां तो कियो १२४०
यह सुन श्रीपाल रिस भई । सब निझांटे गारी दई ।
जोलौं भेद कहेगो यह । तालौं कलह बन्ध संदेह ॥१२४१
कोटीभट यों रहो न जाय । आपन बढो वर्त पर धाय ।
धीरे धीरे संधि कराय । कोउ जियमें मत अकलाय॥ १२४२
इतनों बोल बोलियो जबै । पापन वरत काटियो तबैं ।
परो सिंधु मांह झंपुन कियो । सिद्धमंत्र तिन जंपन लियो ॥ १२४३
हय हयकार सबन मिल करो । बारबार तब यों उच्चरो ।
श्रीपाल भट वैरि निःशल्ल । रयनायर पडियो बहु मल्ल ॥ १२४४
धायो धवल सुनी जब कान । तातन देख गयो अवसान ।
मन मैलो कर मुंह मुसकाय । आपसमैं सगरे पछताय ॥ १२४५
धवल जु रोवे चित्त विकार । दई धाह दुख सहो अपार ।
मुहकर कहे महादुख दियो । जिय में ताहि बहुत सुख भयो १२४६
या सुन रयनमंजषा बात । मूरछ परी अचेतन गात ।
नेकन तां के फुरहि निसास । छाटी नीरसो उठी उदास १२४७
नाह नाह जंपै सुन्दरी । हा विधि कर्म कहां ते करी ।
अनमांगो दुख दीयो मोह । विधिना या पूछि सुन तोह ॥१२४८
धाहजमू की दुःख अपार । करता पासन कहु उबार ।
पूर्व कहां पाप मैं कियो । ऐसो दुख विधना किन दियो ॥१२४९

(१२४१) रिस = गुस्सा । कलह = लड़ाई । (१२४२) वर्त = सभ से ऊंची लकड़ी । सिद्धमन्त्र = नवकारमन्त्र (१२४४) वैरी = दुश्मन । रयनायर = रत्नाकर(समुद्र) (१२६)धाह = पीटना

कै मैं पर पुरुषह मन धरो। कै पिय आयस जिय से टरो।
कै मैं काहू को व्रत हरो। कै मैं भविजन भाव न करो॥ १२५०
कै मैं निंद्यो जिनवर धर्म। कै मैं अशुभ कमायो कर्म।
कै मैं जीवदया पर हरी। कै हू कहूं अग्नि में जरी॥ १२५१
कै मैं मिथ्या गुरु सेइयो। कै मैं कुपात्र दान जो दियो।
कै मैं कहूं उघारो अंग। कै मैं कियो वरत को भंग॥ १२५२
कै गुरुकहो लियो न मान। कै मैं झूठो बोलो जान।
कै मैं परगुण मेटो पाय। कै कहु गिरी नदी में जाय॥ १२५३
कै मैं कहूं दुःख दीयो वीर। कै अन छानो पीयोनीर।
कै मैं कन्द मूल फल खान। भरो उदर अर पोषे प्राण॥ १२५४
कै मैं शीलरयन छाडियो। कै कबहूं निज कुल भांडियो।
कौन पाप मैं कियो जोग। जाते परो कन्त को शोग॥१२५५
हा कोटीभट साहस धीर। जीवदया पालन गंभीर।
हा मकरध्वज रूप सुजान। हा कुलकमल प्रफुल्लन भान॥१२५६
स्वामी अब हीं कृपा करेह। क्यों न हमें दिखाई देह।
तडफत है दोउ मो नैन। तडफत श्रवण सुनावो बैन॥१२५७
तुम बिन को कर है जिन सेव। तुम बिन को जाने बहु भेव।
तुम बिन सिद्धचक्र व्रत सार। को कर है गुण गुणिन अपार।१२५८
तुम बिन मूलमंत्र को गुणे। तुमबिन को जिनधर्म हि सुणे
हा परोहण चालन सुकुमाल। हा तसकर गण के प्रतिपाल॥१२५९

(१२५०) आयस = आज्ञा। भाव = प्रेम। १२५३ गिरि = पहाड़।
(१२५४) नीर = पानी। कन्द = जिमीकन्द। १२५५ शीलरयन = शीलरत्न। कंत = पति।
(१२५६) मकरध्वज = कामदेव। भान = सूर्य। (१२५७) श्रवण = कान।
(१२५८) तस्करगण = चोरों का समूह।

हा उदघाटन जिनवर गेह। हा भविजन रंजन गुण रेह।
हा अरिजन भंजन सुप्रचंड। हा सज्जन रंजन वलि वंड॥१२६०
हाय पिता हा जननी मोहि। अब हूं कहा देख हो तोहि।
चित्र विचित्रह बीरहा वीर। हू अनाथ सागर के तीर॥ १२६१
हा मैनासुन्दरि गुणाल। किम सहि है यह दुख विशाल।
को अरिदवन वंश उद्धरे। को चंपापुर राज हि करे॥१२६२
सब सुख पूर करे को जाय। मग जोवनी कुन्दा माय।
कोकरही मम संगह गोण। बारा बरस पूजिहे कोण॥ १२६३
को पूजा कर है अष्टांग। को राषिह सात से अंग।
नाह अकेली सागर तीर। तुम क्यों छाडी साहस धीर॥ १२६४
हा वालम तू देख विचार। शोक समुद्र से लेहु उभार।
प्रीतम यह बूझिए न तोहि। छाड गए तट ऊपर मोहि॥ १२६५
आपन परे सिंधु में राय। यह दुःख मो पै सहो न जाय।
तुम तो हौ नागर गुणवंत। सो अब कहां गमायो कंत॥१२६६

दोहा—हय सुख गय सुख राज सुख, मैनासुन्दरि नार।
सबनिछाड सायर परे, मनमें कहा विचार॥ १२६७

चौपाई

हय सुख गय सुख छाडा राज। मैनासुन्दरी अर सब साज॥
अरमोसी दासी छिटकाय, क्यों तुम परे सिंधु में जाय॥१२६८
नाह तुरत मो उत्तर देहु। कै अब मेरी हत्या लेहु।
यह पुण पुण जंपै सो बाल। आंसू परें मोतिन की माल॥ १२६९

(१२६०) उदघाटन = खोलनेवाला। (१२६३) मग रस्ता। जोवती = देखती।
(१२६३) गोण = गमन। (१२६४) अंग = मित्र। (१२६५) तट = किनारा।
(१२६८) हय = घोडे। गय = हाथी। सायर = समुद्र। सिन्धु = समुद्र

कंपे अधर बहुत बिलखाय। चकितह्वै चिंते अकुलाय ॥
वणिवर सयल मिले निहवार। मनमें दुख व्यापो अधिकार॥ १२७०
आये रयनमंजूषा पास। तामैं जोवैं लई उसास ॥
सवै जोर कर ठाडे भये। ताके चरण कमल को नये ॥ १२७१
हे पुत्रि तू देख विचार। अपने मन को शोक निवार ॥
जो कछु भावी विधि निर मई। सोई ताकों निश्चय भई ॥ १२७२
जो दशहुं दिश भ्रम वो करे। जो गिरवर ऊपर पग धरे ॥
जो बूडे सागर में जाय। अमृत रस जो भष अगाय ॥ १२७३
शरणागत सुरपति के रहे। हर हरि आयु आप कर गहे ॥
बहुत कहां कीजिए दृढ़ाए। छाडे नहीं उताउ यमराय ॥ १२७४
अरु यह अशुभ कर्म को जोग। ताको कहां कीजिए शोग ॥
पूर्व अशुभ उदय भयो आय। लछमन राम रहे बनजाय ॥ १२७५
अर सीता है तिनके साथ। अतिहि दुख पायो रघुनाथ ॥
बन फल खाय बहुत दुख भरे। सयन कीयो कुशके साथरे॥ १२७६
दुखसुख निशिवासुर भर लियो। विधिना सो कछु चलै न कियो॥
अशुभ कर्म सीता को दयो। महा दुखराखिस वशभयो ॥ १२७७
बारां बरस गए चलि जबै। रामचन्द्र फुनि कोपो तबै।
महा युद्ध रामने कियो। रावण मार जगत जस लियो ॥ १२७८
इत उत को बहु दल संघारि। घर ले आयो सीता नारि।
ता परि बहुरि कर्म कोपियो। देश निकालो ताकों दियो ॥ १२७९
रावण भयो पुहमि को राव। सेवन जाहि बहुत भट वाह।
लंका सों गढ़ लग्यो अवास। सायर की खाई चहु पास ॥ १२८०

(१२७०) अधर = ओठ। चकित = हैरान। सयल = सकल (१२७४) हरि = विष्णु।
हर = शिव। आयु = उमर। कर = हाथ। (१२७८) दल = सेना = (फौज)

नाती पुण्य बहुत अधिकार। हय गय वाहन अगण अपार।
कर्मकोप जब कियो निदान। कुलबल सहित गयो क्षयमान १२८१
महा बलिष्ट साहसगति राव। अशुभ कर्म ता कियो सहाव॥
हर लीनी तारा सुन्दरी। काहू की निन संक न करी॥ १२८२
ताको कछु विलंब न भयो। छिणक मांहि माटी मिल गयो॥
सबतैं बली कर्म को फन्द। सदा रहै थिर दुःख को कंद॥ १२८३
ताकी कथा कहत नहीं वणों। सुर नर नृपति विडंबै घणों॥
मन मैं बात साच यह जाण। पुत्री बात हमारी मान॥ १२८४

॥ दोहा॥

प्राणी वश है कर्मके, जिन डोरे नित जाय।
ते पहुंचे निर्वाण पद, जिन दीनो छिटकाय॥ १२८५
आशा जाकी पास है, करता बली अपार।
सुख की बात न जाणिए, दुःख के भरे भण्डार ॥१२८६

॥ चौपई॥

मन में श्री जिनके व्रत लेह। पियका शोक छांड तू देह।
अरु तुम धरहु शील का भार। दुःख भंजन त्रिभुवनमेंसार१२८७
यह सायर गंभीर संसार। पसरयो तहां मोह का जार।
प्राणी परे मीन ज्यूं आय। दुःख पावे मन मैं पछताय॥ १२८८
पुत्री मोह देय छिटकाय। कोह पुत्र पिता को माय॥
को काको बालम को नारि। नीकें कर तूं देख विचारि॥ १२८९
कर्म पाश बांध्या दुःख सहै। मूरिख दुःख ही को सुख कहै॥
सुख की बात न भावै चित्त। भूलो भव के देख चरित्त॥ १२९०

(१२८१) नाती = सम्बन्धी। हय = घोड़ा। गय = हाथी। वाहन = असवारी। क्षय = नाश
(१२८३) विलंब = देरी (१२८८) पसरो = फैला हुआ है। जार = जाल। मीन = मछली।

परि हर दुःख जु यह विचार। शील पुरुष सब सुखदातार।
सकल क्लेश हने गुण धार। या प्रसाद लहिये भव पार॥ १२९१
यह सुन के सो उपशम भई। दुख की बात बिसर सब गई।
मायाजाल प्रगट जिय जोय। मिथ्या कर जानो तिन सोय १२९२
करनी जाप विचारे ज्ञान। श्री जिन ऊपर राखे ध्यान।
बोले कबहि न मुख कर बैन। निशि दिन रहे नवाए नैन ॥१२९३
दिन दो चार गए मन धरे। पानी पीवे न भोजन करे।
तेल अंग नहीं करय शरीर। न्हायन कबहु मैले चीर॥ १२९४
संयम ज्वाला सो तन दहे। असे परम वियोगिनी रहे।
यह विध गए बहुत दिन जाम। पापी धवल विचारी ताम। १२९५
परे न कल अतिमन अकुलाय। द्वय दूती तब दई पठाय।
बैठी जाय तास के पास। जो देखे तो खड़ी उदास॥ १२९६
कपट रूप बोली दुख पाय। हे पुत्री मन को समझाय।
जो कछु होनहार सो भई। सुख की निधि तेरी गिर गई॥१२९७
विधना ताको अति दुःख दियो। पुत्री अब गाढो कर हियो।
अपने मनमें देख विचार। तू तो धर्म विचक्षण नार॥ १२९८॥
तालों शील पालिये नित। धर्म ध्यान धरिये दिढ चित।
अरु धरिये संयम को भार। जोलों सिरपर हो भरतार॥ ॥१२९९
अब तू नीके कर जिय जोय। मुवो कंत जाने सब कोय।
पुत्री तो निरंकुश भई। अबतो चिन्ता तेरी गई॥ १३००॥
जो तेरे मन बरते आय। सोई कर सब दे छिटकाय।
यह मन चंचल चाहे सुख। ताको तू तज पावे दुख॥ १३०१॥

(१२९१) भव = संसार॥(१२९२)उपशम = शान्ति। (१२९३)निश = रात्रि।
(१२९६) कल = चैन। द्वय = दो। (१२९७) निधि = खान। हियो = दिल।
विचक्षण = चतुर। (१३००) निरंकुश = जिस को किसी काभय नहीं।

जो तृण चरै जो पीवे नीर। मकरध्वज ता दहे शरीर।
तू तो छह रस भोजन करे। पीवे जल अरु सुख व्योहरे॥ १३०२
बिछुरे सबै मिलन हैं आय। जोवन गए चित्त पछताय।
या संसार मांहि जो भयो। पुत्री सुन मरो सो गयो॥ १३०३॥
कोऊ दिनदो आगे जाय। कोऊ पाछे पहुंचे धाय।
यह समझ तजिये दुख वास। पुत्री कीजे भोग विलास॥ १३०४॥
यह तू कहो हमारो मान। इच्छा सुख मन में तूं आन।
धवल सेठ सब गुणह निवास। श्रीपाल थो जाको दास॥ १३०५
रूपवन्त बहु गुणह निधान। जो सब देस देस परवान।
सुन्दरी छाड देह सब सोग। इच्छ नाहि जो चाहे भोग॥ १३०६
यह सुन रयनमंजूषा कंप। कोपारूढ़ उठी यह जंप।
तुम कुल भंडन धीठ पर वान। तुम दूती पापनकी खान॥ १३०७
मा पिय तनो जनक सो आहि। मेरा सुसरो कहे सब ताहि।
तासो तुम मो रमण कहाय। पापन तेरी जीभ गल जाय॥ १३०८
या सुन दूती विलखी भई। लंपटी सेठ जहां तहां गई।
कहे वरतन्त सुनो परधान। वह तो नाहीं हमसे मान॥ १३०९॥
दूतिन कही सुनी यह जाम। आपन कामी चलियो ताम।
काहू को वरजो नहि रहे। विरह विथा तापै दुख दहे॥ १३१०॥

शार्दूल विक्रीडितच्छन्दः

य:कश्चिन्मकरध्वजस्यवशग:किंब्रमहेतत्कृते
नोलज्जानचपौरुषंनचकुलंकुचास्तिपापान्विते

(१३०२) तण = घास। मकरध्वज = कामदेव। (१३१५) = इक = बांका कर।
(१३०७) धीठ = ढीठ। (१००८) जनक = पिता। रमण = भर्त्ता।
(१३०९) लपटो = कामी। (१३१०) विरह = विछोड़ा। बिथा = पीड़ा।

नोधैर्यंचपितुर्गुरोश्चमहिमाकुत्रास्तिधर्मस्थिति:
नोमित्रंनचबान्धवानचगृहंध्वस्त:स्त्रियंपश्यति

श्लोकौ

कामवान् न कुत: पापं पापार्थीचकुत: सुखं
नास्तितत्प्राणिणांकर्मद्:खदंयन्नकामजं १३१२
यथामातायथापुत्रीयथाभगिनीयथास्त्रिय:
कामार्थी च पुमानेता एकरूपेण पश्यति ॥१३१३

चौपाई

जैसी नारी है जिय जोय। मयन रूप जब प्राणी होय।
तैसी माता पुत्री आहि। तैसी भगिनी देखे चाहि॥ १३१४॥
कामी जन के हिये न लाज। कामी जन बोले बेसाज।
कामी जन वेश्या के जाय। कामीजन फुन आमिष खाय॥१३१५
कामी पुरुष सुरा आचरे। कामीजन पुन चोरी करे।
कामी जन जूवा फुनि छवे। कामी जन मिथ्यात्व चवे॥ १३१६
कामी जन वंछे पर नार। कामी जन मन भावे गार।
कामी जन छाडे गुरु सेव। माने मात न पूजे देव॥ १३१७॥

(१३११) जो नर काम देव के वश मे है उसकी बाबत क्या कहें. उस पापी को न शरम, न बल, न कुल, न गुरु, न धर्म, न मित्रादि, केवल स्त्री ही सब कुछ है। (१३१२) कामी को पाप क्योंन हो पापी को सुख कहां। वह कर्म ही नहीं जो काम जनित होकर द्:ख न दे। १३१४) भगिनी=भैन।
(१३१५) आमिष=मांस। (१३१६) सुरा=शराब।

कामी जनकी उलटी रीति । उत्तम तजि मध्यम सों प्रीति ।
कामी जन के मित्र न बंध । नैण न देखे सदा निरंध ॥ १३१८ ॥
काहू की न करै कछु कांन । छांडे सब ही सों पहचान ॥
निशि दिन पाप कथा विस्तरे । कामी जनें नींद नहीं परे ॥१३१९
तैसे धवल सेठ अकुलाय । लाज सुकच दीनी छिटकाय ।
परत्रिय लंपट पहुंचो तहां । रयणमंजूषा बैठी जहां ॥ १३२० ॥
रोम रोम हरषा विहसाय । ताके सन्मुख पहुंचा जाय ।
काम अंधपापी मदमंत । तिन सन्मुख देखो आवंत ॥ १३२१ ॥
मन में व्यापो दुःख अपार । कौन कर्म लागे मो लार ।
भय भरके चितइ चौपास । कुमलाई सा लेइ उसास ॥ १३२२॥
घूंघट पट दीया विलखाय । मन में कहे यह भरमाय ॥
है दुरात्मा आवत एह । याको मोकों बहुत संदेह ॥ १३२३ ॥
शीलभंग मो आयो करन । अब जिन देव तुम्हारो शरण ॥
इह चिंतत सो मनि आरणं । सेठ बात तब तासों भणं ॥ १३२४
सुणि सुणि रयण मंजूषा बात । मन भय भीत होय तू गात ॥
श्रीपाल बालम तुम तनों । ताको सुण विरतांत भणों ॥ १३२५
वह मैं मोल लियो है दास । माता पिता न बंधव तास ॥
ताको कब हू चित्त न भयो । भली भई परपंची गयो ॥ १३२६ ॥
महा सिंधु में परयो जाय । मगर मछ सो घालो खाय ॥
ताको अजहौं सांसो तोह । छांड सोग त्रिय इछो मोह ॥ १३२७॥
भामनि यह कीजे पसाव । तूं राणी मैं तेरो राव ॥
तो विन दुःख पावत मो देह । शीघ्र हि चलो हमारे गेह ॥१३२८

(१३१८) बंध = संबंधी । निरंध = आंधा । (१३१९) निशि = रात । १३२०) त्रिय = स्त्री (१३२४) शरण = रक्षक हो (आसरा) । (१३२५) बालम = भर्ता । (१३२७) सिंधु = समुद्र । (१३२८) पसाव = क्षया ।

मो तूं अबै कंत कर जाण। इछ भोगन के सुख मान॥
जो निरास करी है तू मोह। जीव हत को पातिक तोंह॥ १३२९
त्रिखावंत प्राणी अकुलाय। पाणी पीवा सरवर जाय॥
सरवर जो न देइ जल दान। ता समहीन बुद्धि नहि आन॥१३३०॥

सोरठा।

बनमें लगी दवार मृग कर जोरे मेघसों।
त्यों तूं लेहु उधार नातर मेरो पापतो॥ १३३१

चौपाई॥

बनमें लगी आग अधिकार। तामें जलें जीव अनिवार॥
मृग बिनवें बन में अकुलाय। धृगमा मेघ न लेय बुझाय॥ १३३२
यह कहे सो ठाढो ह्वे रहो। उत्तर शीलवंत यों कहो॥
रेपरतिय लंपट मति कूर। दुष्ट धीठ पापिन के मूर॥ १३३३
माईबाप हूं जाई धिया। हीण बुद्धि परदेशी दिया॥
तासों मेरो कहा बसाय। तासों बात कहों समझाय॥ १३३४
मेरो तो श्री जिन भरतार। सुसरा है चारित्तह भार॥
तू तो मोह धर्म को तात। हीण कहि तूं क्यों न लजात॥१३३५
तूं तो नीच नीच कुल भयो। प्रेत निशाचर के सम ठयो।
तूं तो है तिरजंच समान। बैठ उसरियो धीठ अयान॥ १३३६
ऐसी कहे मन सोचे बाल। कहे कहानों भयो उर साल॥
है निरक्ष मद मातो येह। यह मेरी छूवे गो देह॥ १३३७

(१३३१) दवार = बन की आग।

मृग = हिरण। कर = हाथ। मेघ = बादल १३३३) परतिय लंपट = दूसरे की स्त्री को चाहने वाले। मूर = मूल। (१३३५) मोह = मेरा। तात = पिता।

(१३३६) निशाचर = राक्षस। तिरजंच = पशुपक्षी।

भई सचिंत कहा मैं करूं। कै मैं या सागर में परूं॥
कै जिह्वा षंडो दुख पाय। यह कहि कहि मनमें विलखाय ॥१३३८
सोचे बारबार पछिताय। काहि समारों बाप न माय॥
तुम आगे पुकारुं दुख हरण। अब जिन देवतुम्हारो सरण॥ १३३९
या कह कुवरी रही मुरझाय। जिन देवी तब पहुंची आय॥
चक्रेश्वरी अंबा पद्मणि॥ अर काली ज्वाला मालिणी ॥१३४०
मानभद्र पुन तहां आइया। अंधकार सायर छाइया॥
दारुण पवन चलायो तबें। कल्लोलनिहारो जल जबें॥१३४१
अति डगमगे सयल जलजंत। दौरी देवी देव तुरंत॥
बांध्यो धवल सेठ तिहवार। दीनी गदा चक्र की मार ॥१३४२
चक्र खाइ कर भाखो सोई। ताहि बचाय सके नहि कोई॥
ताहि दुख दियो अधिकार। पाप कर्म कीनो विस्तार॥ १३४३
वारे लूका लेय उठाय। ताके मुह में धरे आय॥
मुह कारो कियो दे गार। नरक दियो ताके मुख डार॥ १३४४
बहु उपसर्ग तासको होय। वणिवर रहे मुहा मुह जोय।
सगरे ताकी करें पुकार। लखें न वाहीं मारनहार॥ १३४५॥
समझें कछू न चक्रित भए। रयणमजूषा पै तब गए।
कर जोरें विनवंते सबें। स्वामिनी करो कृपा तुम अबें ॥१३४६
तू तो जिनशासन व्रत लीन। शील धुरंधर धर्म प्रवीण।
दुष्ट न जान्यो तेरो भाव। पुत्री अब तुम करो सहाव॥ १३४७
वा पापी को होत विनाश। अरु डूबत हैं हम घर वास॥
शुद्ध चित्त हो लेय संभारि। हमें आपने सरण उबारि ॥ १३४८

(१३४२)डगमगे = डोले। सयल = सर्व। गदा = गुरज(१३४४)लूका = जलतीलकड़ी।
नरक = मैं ला।(१३४६)चक्रित (चकित) = हैरान। (१३४८) उबार = बचाले

धर्म रूप ह्वै कीजे नेह। होहु कृपाल वचन सुनि लेहु।
यह सुनि दयावन्त अति भई। ताके मनकी सवरिसि गई ॥१३४९
ठाडी हो तब जोरे हाथ। बिनती एक सुनो जिननाथ॥
जो कोउ यह देवी देव। दीखत नाही अलख अभेव॥ १३५०॥
दुर्बल देख दया मन धरा। जिन काहू मो रक्षा करी॥
सतसंयम मो व्रत राखिया। प्रगट सहाय शीलको किया॥१३५१
जैसो इस पाप बोलिया। तैसो तुम याको दुख दियो।
अब प्रतीति मेरे मन भई। तुम पहिचान उपाई नई॥ १३५२
अब मुकताय बन्ध यह देहु। उपशम ह्वै कर दया करेहु।
तब उपसर्ग दूरि सब गयो। वणिवर सबनि हिये सुखभया॥१३५३
पुन देवी भाषे गुण रात। सुणि सुणि रयण मंजूषाबात॥
हे पुत्री मिलि है भरतार। महाराज करि है अधिकार॥ १३५४॥
तेरा मान बहुत सो करै। अब तू दुख कछू मति करै॥
तेरे आसि पासि हम आहि। तो तनकोउ सके नचाहि॥ १३५५
ता मन धीरा करि परमान। देवी देव गए निज थान॥
रयणमंजूषा सुख भयागात। यह काहू सों कहेनबात॥ १३५६
और कछू दूजी नहीं कहै। जपै जाप सो बैठी रहै॥
निज आसन हो बैठी जहां। आपन सेठ पहुंतो तहां॥ १३५७॥
होय सलज्ज नीचो चिन्तयो। बहुविधि चरण कमलको नयो।
तुम मम पुत्री सुख को धाम। हूं पापी पापी मोनाम॥ १३५८
शील धुरंधर गुणह निधान। तो सम पुण्यवती नहि आन॥
या सुन ताकी सब रिसि गई। तापर कृपावन्त अति भई॥१३५९

(१३५३) मुकताय = छोड़ दो। बन्ध = बन्धन। (१३५४) गुणरात = गुणों से शोभित
(१३५६) निज = अपने। (१३५८) रिस = क्रोध।

गयो सेठ थानक आनन्द। पुण पुण रयण मंजूषा वन्द।
चले परोहण पवन सहाव। सुन्दरी के मन केवल भाव। १३६०

२७–श्रीपाल का समुद्र को तिर पार होना।

निवसै यह विधि जिन जिय धरै। सुणियों श्रीपाल ज्यों तिरै।
कवि परिमल्ल कहै धरिभाव। भवियण सुणो करो मनचाव१३६१
कोटीभटकेरी द्वै बांह। मूलमंत्र जपियो मन मांह॥
यह इक बात अपूर्व भई। काठ आय मिलियो इक सही। १३६२
जाणिक मित्र पूर्व भव तणो। ताहि मिलत सुख पायो घणो॥
हाथ सहाय चल्यो सो जाय। याके यहां चढै सुख पाय। १३६३
नक्र चक्र मच्छादिक जीव। निकट आय भय करें सदीव॥
तब हि मित्र परिहै असवार। भुजबल खेई चले अणिवार।१३६४
जब ही नींद दबावे भार। वहै काठ परि सोवे सार।
कहि भुजबल कहि काठ सहाव। तिरै समुद्र राइनकोराव।१३६५
तिरत तिरत सो आयो तहां। पुर पट्टण तट मारग जहां॥
जिन नामांकी पढी जयमाल। मनवच काय विशुद्ध विशाल।१३६६
रिद्धि सिद्धि वर मंगल करण। जिनवर नाम अमंगल हरण॥
सुख कारण मन रंजन सोइ। जानें घर संपति अति होई। १३६७
श्री गणधर जंपे गुण धाम। रोग दुःख खण्डन जिन नाम॥
जिणनामें कुञ्जर भय हरै। जिन नामें केशरि वशि करै॥ १३६८
जिन नामे ते सर्प न डसै। जिन नाम तें पातिक खिसै॥
जिन नाम तें ज्वाला प्रजलंत। फरै मद नहीं दहै महंत॥ १३६९

(१३६३) जाणिक = मानों के। भव = जन्म। (१३६४) नक्र चक्र = मगरमच्छों का समूह।
(१३६८) गुण धाम = गुणों का घर। कुञ्जर = हाथी। केशरी = शेर।

जिन नामैं जलनिधि तिर जाय । बीच न कहूं रहे ठहराय ।
जिन नामें अरि करे न घाव । और कछू न होय उपाव ॥ १३७०
जिन नामें शंका सब हरै । कबहूं संकट नाहीं परे ।
जिन नामें दुर्गति क्षय होय । मुक्ति बधू लाभै नर सोय ॥ १३७१
जिन नामें पीडा सब जाय । कुष्ट गंड गल गूम नसाय ।
जिन नामें ते दलिद्र न रहे । डायण सायण योगनी बहे ॥ १३७२
जिन नामें व्यापै नहीं रार । पंथदेश घर मुसे न चोर ।
जिन नामें ठाकर बठ पार । कालकूट तें लेय उबार ॥ १३७३
जिन नामें कर ज्वारी बिलाय । इकन्तर ताप तजरो जाय ।
क्योंही उच्चाटन नहीं होय । थावर मोहन वश्य न सोय ॥ १३७४
जिन नामें दिन सुख में जाय । जिन नामें सब पाप नसाय ।
जिन नामें संपति थिर रहे । दुर्जन दुष्ट दुःख नहि दहे ॥ १३७५
जो जिन गुण चारितह धरै । दिढ गुण समकित व्रत आदरे ।
प्राणी दुरित दूर सब बहे । जो मन चिंते सो फल लहे ॥ १३७६
जो नर होय जिनेश्वरलीन । भूलत कबहूं भाषे दीन ।
मनमें श्री जिनवर सुमरन्त । भुजबल कर उछला तुरन्त ॥ १३७७
जाय लगो सोसागर तीर । महाबली अरु चरमशरीर ।
गिरवर सम गुरवा गंभीर । कोटीभट अरु साहस धीर ॥ १३७८
प्रबल तरंगन सों नापन्त । मछ कछ जल जीव बचन्त ।
बडवानल नहि भेटन लयो । सिंधुपार कोटीभट भयो ॥ १३७९

(१३७०) जलनिधि = समुद्र । अरि = शत्रु । (१३७१) शंका = भय । मुक्तिबधू = मोक्ष रूपी स्त्री । (१३७२) बहे = भागते । (१३७३) ठौर = नरक । कालकूट = महाविष
(१३७४) उच्चाटन = शत्रु का स्थान से भगाना । (१३७६) दुरित = पाप ।
(१३७८) चरम = आखिरका ।

उपजातिछन्दः।

बनेरणेशत्रु जलाग्निमध्ये,
महार्णवेपर्वतसंकटेवा।
सुप्तंप्रमत्तं विषमस्थितंवा,
रक्षयंति पुण्यानि पुराकृतानि॥ १३८०

चौपई (अर्थ)

वन में भूल परे जो जाय। अरि समूह जो लागे धाय।
जो दावाग्नि में नर परे। धर्म सहाय तहां ऊबरे॥ १३८१
पाछे जो जल नदी गहराय। आगे सिंह दहारे आय।
ऊपर वज्र शब्द जो करे। धर्म सहाय तहां उबरे॥१३८२
अजगर बैठा बदन पसार। धावनि आवत कुञ्जर धार।
लाख चोर में जो पग धरे। धर्म सहाय तहां ऊबरे॥ १३८३
धर्म सहाय कियो श्रीपाल। सागर सेती लियो उबार।
छठी संधि पूरण भई। संस्कृत देख अर्थ यह कही॥ १३८४॥

छन्द त्रिभंगी

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं
बुधजनमनरंजन पातक गंजन सिद्धचक्र विधि दुःख हरणम्।
त्रिभुवन सुखकारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्ल कृतं
मंजूषा व्याही सब गुण ग्राही महासिंधु सायर परियं
पढियं जिननामं शिवसुख धामं जलनिधि तिर सो पारभयं॥१३८५

(१३८०) सुप्तं = सोया हुवा। (१३८१) अरि = दुश्मन। दावाग्नि = बनकी आग।
(१३८२)दहारे = भभकारे। (१३८३) अजगर = बडा सांप। बदन = मुख। कुञ्जर = हाथी

॥ दोहा ॥

जल ज्वाला अरु करि, घटा केहर उठै दहार।
विषधर ठगछलछिद्र से, धर्म हि लेय उबार॥ १३८६
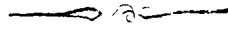
२८-श्रीपाल का गुणमाला से विवाह।

चौपाई

तिरत तिरत सो पहुंचो तहां। कुंकुमद्वीप निकट बन जहां।
तरवर एक छांह गंभीर। ता तल शयन कियो वरवीर॥ १३८७
खेद खिन्न जलमें अति भयो। निद्रा बढी सोय सो गयो।
ता अवसर चर पहुंचे आय। ताहि देखत रहे लुभाय॥ १३८८
परसपरस बातें उच्चरें। अति आनंदित स्तुति जु करें।
राज कन्या को पुण्य अपार। आय मिलो वर निहचै सार॥१३८९
आयो भुजबल जलतिर वीर। अति चमकत देखिए शरीर।
गुपत रूप काऊ यह आहि। महा पुरुष सब देखे चाहि॥ १३९०
काउ कहे इन्द्र यह कोय। काउ कहे धरणेंद्र जु होय।
काउ कहे खचर है जान। काउ कहे यक्ष परिवान॥ १३९१
कोउ कहे यह है गंधर्व। नीके रूप देखिये सर्व।
कोउ भाष नागकुमार। कै किंनर लीनो अवतार॥ १३९२
कोउ कहे विचार विचार। यह तो कामदेव उनहार।
कै काउ यह गुरवो राव। कै काउ योधा मन चाव॥ १३९३

(१३८६) करि = हाथ। घटा = समूह। केहर = शेर।
(१३८७) तरवर = बडा दरखत। (१३८८) चर = दूत।
(१३९१) खेचर = आकाशचारी। (१३९३) गरवो = बडाभारी।

कोऊ कुछ कोऊ कछु कहै। ताको मर्म न कोऊ लहै ॥
आपस में यह घेर करंत। उठ बैठो सो कुवर तुरंत ॥ १३९४
लोचन अरुण विराजें खरे। अति दीर्घ मानों रिस भरे ॥
तामुख देख डरे वे सबें। कोटीभट यों बोलो तबें ॥ १३९५
को हो तुम सांची उच्चरो। कछू संकमति जिय में धरो ॥
निर्भय ह्वै भाखो विहसाय। कारण कहा कहो समुझाय ॥१३९६
काहे कारण पहुंते आय। क्यों मो सों तुम रहे थहराय ॥
क्यों जोवतहो मुख मो तनो। क्यों तुम होविसवासे घणों॥१३९७
किह कारण स्तुति जो करो। सोई बात सांच उच्चरो ॥
यह सुन तेजंग करि सेव। कारण सुणों कहैं हम देव॥ १३९८
कुंकम पट्टण लछि निधान। दुर्जन दल भंजन परवान ॥
शीलवंत जिन भक्ति समान। तिह में नर सोहैं मतिमान ॥१३९९
कनकरतनमणि मंडप जरे। अति उतंग विराजत खरे ॥
तिनको देखत भूख पलाय। शोभत लेख लिखो अधिकाय॥१४००
बन उपवन सोहे चौपास। नर नारी नागर सुख वास।
तहां राव सो अपर गुणाल। भूमंडल मंडण भूपाल ॥ १४०१
सतराजपाले सो चंग। रूपवंत देखिए अभंग ॥
बनमाला ताके घर नारि। राजे रति रंभा उणि हार ॥१४०२
बोले मीठे अमृत बैण। मुख देखें पावें सुख नैण ॥
राजा के प्यारी परवान। शीलवंत जिन भक्ति समान॥१४०३

(१३९४) मर्म = भेद। (१३९५) अरुण = लाल। दीर्घ = विशाल।
(१३९७) थहराय = कांपते हो।
(१३९९) लछि = लक्ष्मी। मति = बुद्धि।
(१४००) कनक = सोना। (१४०१) नागर = चतुर। गुणाल = गुणों का घर।

ताके गर्भ सुता इक भई। रूपवंत अतिगुण वरणई॥
ताकी शोभा कही न परे। देखत देवन को मन हरे॥ १४०४
जिणवर लीन सुगुणह विशाल। वर सुन्दरी नामा गुणमाल॥
यौवनवंत भई वह जबें। राजा तिह अवलोकी तबें॥ १४०५
तब मुनिवर पूछा नरधार। स्वामी भेद कहो निरधार॥
गुण माला को वर का होय। मोसों अबें पयासो सोय॥ १४०६
चिंता देह रही भरपूर। करुणा सागर कीजे दूर।
तब मुनि जंपे सुणि हो राय। चिंतामन की दे छिटकाय ॥१४०७
सागर तिरि जो आवे वीर। सो गुणमाला परणे धीर॥
यह सुन राव महासुख पाय। अपणे गेह पहुंचो आय॥१४०८
सोचे राजा महा सुजान। निशि दिन जावे सागर थान॥
राजा हमें राख यहां गए। देखत सिंधु बहुत दिन भए॥१४०९
अब हम देखे जैसे कहे। सायर तिर आए तुम लहे॥
चलो विलंब न करो सुजाण। व्याहो अपणी वरी परमाण।१४१०
कछूयक नृप पे पहुंचे जाय। तासों वात कही समझाय॥
राजा जो जैसा मुनि कहा। तैसा ही वर निश्चय लहा॥ १४११
मानस देवन भाखा जाय। पुण्य तुमारा पहुंचो आय॥
केईक चर जु उठ ही रह। केईक तुम पै आये रहे॥ १४१२
यह सुन राजा अति सुख भया। बहुत द्रव्य तिन को तब दयो॥
पहले उहां गए परधान। तेल फुलेलादिक लेनिधान॥ १४१३

(१४०५) गुणमाल = गुणमाला। यौवन = जुवानी। अवलोकी = देखी।
(१४०६) पयासो = कहो। (१४०७) करुणा सागर = दया के समुद्र।
(१४०८) निश = रात। सिन्धु = समुद्र।
(१४१०) विलब = देरी। वरी = गुणमाला।

कुंकम कस्तूरी रज वाद। तप्तोदक मर्दन को साज॥
वस्त्रा भरण कुवर को जिते। राजा गेह अपूर्व तिते॥ १४१४
आनंद भेरी छाई गंभीर। चहुं दिशि खबर भई धर धीर॥
खबर कंवर की आई जबें। करी राव असवारी तबें॥ १४१५
अति फूलो सो अंग न माय। दल बल सहित चलो अकुताय॥
शुभ दिन शुभ वेला शुभ सार। मिले आय राजा श्रीपाल॥१४१६
पर सो कोटीभट निहवार। भली बुरी सब पूछी सार॥
कंठ लाग आलंबन किया। दोऊ को आनंदा हिया॥ १४१७
जय जय शब्द करे नरनाह्। घर ले चालो किया उछाह॥
पट्टण शोभा करी अपार। घर घर तोरण बन्दर वार॥ १४१८
नर नारी जन चढे अवास। रहे झूमि देखें चहुं पास।
मन रंजय यह कहती भाख। यह वर आयो सागर नाख॥१४१९
सब ही उपज्यो सुख अशेश। श्रीपाल पुर कियो परवेश।
किये महोछो मंगल चार। राजा सुख पायो अधिकार॥ १४२०
तांम राव ब्रह्मण बोलियो। शुभ दिन घरी ताहि पूछियो।
घड़ी सोधि पांडे दिन दियो। राजा के मन आनन्द भयो॥ १४२१
पंच शब्द बाजे अनिवार। बामण वेद पढें झुणकार।
रच्यो व्याह समदी गुणमाल। सोवो बहुत दियो जु विशाल१४२२
कनक रत्न मणि मंड पहार। चमर छत्र दीने भंडार।
हय गय पट्टन दिए प्रवान। कवि परिमल्ल न सकै बखान॥ १४२३
पुन राजा विनती उच्चरी। मन जुहार नीकै करि करी।
मो कीरति बहु प्रगटी भई। यह दासी सेवा को दई॥ १४२४

(१४१४)कुंकम = केशर। तप्तोदक = गरमपानी। (१४१८)तोरण = लाटू।
(१४१९) अवास = महल। (१४२०)महोछो = बडा उत्सव। (१४२१) पांडे = पंडित। (१४२२
समदी = संबंधी। सोवो = दहेज। (१४२३) हय = घोडे। गय = हाथी। (१४२४)कीरति = यश

मोतैं चूक पड़ी है जोय । कोटी भट सब क्षमियो सोय ।
कछु रोस जिय में मति धरो । मा परि कृपा निरंतर करो ॥१४२५
श्रीपाल भाखे कर जोरि । स्वामी यह मति कहो बहोरि ।
हूं बह आयो जलके तीर । औगण मोमें गिणै अधीर ॥ १४२६
बहुत अलक्षण घेरै मोहि । राजा उरणि नहीं हूं तोहि ।
कन्या नग मेरे कर दियो । तुम सनबन्ध पुहमि पर कियो ॥१४२७
मोहि दास करि जाणो राय । आयस दीजे जिसो उपाय ।
मोतें सेव होयगी जिसी । भो स्वामी हूं करि हो तिसी ॥ १४२८
यह सुण राजा अति सुख भयो । द्वय कर जोर बहुरिवीनयो ।
सुन हो श्रीपाल गुण धार । तै तो महिमा लही अपार ॥ १४२९
तुम तो प्रगट पुहमि परि भयो । तुमहम जोगि परम पद दयो ।
गह भरि आयो परम उल्हास । नूतन दिए राय आवास ॥ १४३०
तहां रहे मन में सुख पाय । भोग भोग वे कही न जाय ।
बहुत सुख दुख दुख घात । छिन छिन वीती जाय दिन रात १४३१
अन्यहदिनगुणमाला नार । पूछ्यो बालम कहा विचार ।
निज पुर मात पिता उछाह । मोसों कहा सु लक्षण नाह ॥१४३२
यह सुन श्रीपाल विहसाय । तासों बात न कछु कहाय ।
मन ही मन सोचे मुसकाय । गुणमाला बोली अकुलाय ॥ १४३३

गुणमाला उवाच ।

स्वामी कृपा करो परमान । कहो बात मोहे दासी जान ।
कारण कवन राज छिटकाय । किम परदेस पहुंचे आय ॥ १४३४

(१४२७) उरणि = अनृणि (जिसने करजा दिया है। (१४२८) आयस = आज्ञा ।
(१४२८) द्वय = दो । कर = हाथ । (१४३०) नूतन = नए । अवास = घर ।
(१४३२) अन्यह = दूसरे । बालम = पति । नाह = नाथ

कारण कहा सिन्धु में परे। तामें ते क्यों करिऊबरे।
कछ मछ जलजीव अनन्त। तिनसे किम उवरे गुणवन्त१४३५
नीकैं कर तुम कहो विरतंत। कैसे पार भए तुम कंत।
मेरे मन को विकलपजाय। प्रीतम बात कहो समझाय॥ १४३६

कोटीभट उवाच।

सुन सुन्दरि कहौं शुभ सार। सागरवंश भयो अवतार।
पाणी पिता पंक मामाय। वड़वानल बन्धव गुण राय॥ १४३७
प्रबल तरंग जु अगण अपार। यह परिवार हमारो सार।
तिन्हें छांडि हूं पहुंचो आय। और कहो तो कौन पताय॥१४३८
यह सुन सुन्दरि विलखी भई। मानों वज्र घाव सो दई॥
चितवे नहीं रही मुरझाय। भई लाज मन में शरमाय॥ १४३९

कोटीभट उवाच।

सुन सुन्दरि कहूं धरनेह। मनको छांडि देहु सन्देह।
वहुत कथा मेरी वरनारि। कैसे कहिये कहा विचारि॥ १४४०॥
जो तू हठ कर पूछे मोह। सुन अब कथा सुनाउं तोह।
अंग देश दुर्जन को कसे। तहां नगर चंपापुर वसै॥ १४४१
शत्रु दवणराजा तातणों। सो मो पिता मुवो दुःख घणों।
कछुक दिवस में कीनो राज। विधना वहुरो करयो अकाज॥१४४२
ऐसो योग आय कछु भयो। राज भार काकाको दयो॥
पुरी उज्जनी पहुंचो जाय। है पुहपाल तहां को राय॥ १४४३॥

(१४३५) उबरे = बचे। कछ = कछुवा।

(१४३७) पंक = कीचड। बडवानल = समुद्र की आग।

(१४३८) पताय = विश्वास करे। (१४४२ दिवस = दिन। विधना = किस्मत।

(१४४३) काका = चाचा।

मोह देख दया तिह भई। महा मनोहर कन्या दई।
मैनासुन्दरि नाम विचार। छांडी प्राणपियारी नार। १४४४
ताहि छाड आगे पग धरो। वीच पराक्रम बहुते करो।
भेटा धवलसेठ परमान। तासो मोह वढो असमान ॥१४४५
हम हूं प्रोहण लिये चढ़ाय। पहुंते हंस द्वीप में जाय।
कनककेतु राजा अरि शल्ल। करे राज प्रगटो भुविमल्ल ॥१४४६
में जिनभवन उघारो जाय। तहां राय भेटो निकुताय।
ताके जिय में करुणा भई। रयणमंजूषा कन्या दई ॥ १४४७
आगे चलो सो लीनी संग। मनवांछित सुख भयो अभंग।
कर्म कथा कछु कही न जाय। सुखही में दुःख पहुंचो आय। १४४८
कारण पाय कछु लर परो। महा सिन्धु मेंऊं पुण करो।
सिद्ध मंत्र मैं जपण लयो। अरु जिन नाम सहाई भयो ॥१४४९
भुज बल तिर आयो दुख जार। अब तू व्याही सुन वर नार
ऐसी मेरी कथा चरित्त। भामनी धरोदिढ समकित्त ॥ १४५०
प्राणी दुरित दूर जब चहे। जो मन इच्छै सो फल लहे।
जो नर होय जिनेश्वर लीन। भूल न कब हू भाषे दीन ॥ १४५१
मन मैं श्री जिनवर सुमिरंत। भुजबल कर उछलो जु तुरंत।
दूजो और सुने मति कोय। मम उत्पत्ति लेहु जिय जोय ॥ १४५२
यह सुन ताहि महा सुख भयो। मन को विकलप न्यारो भयो।
भुञ्जे सुख सो प्रगट प्रवान। कोटीभट को करे वखान ॥ १४५३
राजा बहुत करे सन्मान। रूपवन्त सो आहि सुजान।
सब दिन रहे राय के पास। कोटिक जन जीवें कर आस ॥१४५४

(१४४५) पराक्रम = बल। (१४४६) भुवि = पृथ्वी में। (१४४७)करुणा = दया।
(१४४८) महासिंधु = महा समुद्र। (१४५१) दुरित = पाप।(१४५२) विकल्प = भ्रम।

जाही पान दिवावे राव। ताही देय हिये धर भाव।
शत्रु मित्र ताकै इकसार। दया धर्म पारे अधिकार ॥ १४५५

२९—धवलसेठ का गुणमाला के पितासे मिलाप

ऐसो सुख बीतें दिन जाम। प्रोहण धवल आइयो ताम।
कुंकुम द्वीप लगे ने आय। तहां सेठ उतरयो विहसाय ॥ १४५६
वणिवर गण कछु संगह भयो। मोती रत्न थाल भरलयो।
आनंद ते सो पहुंचो तहां। महाराज बैठो हो जहां ॥ १४५७
आगे धरो थार शुभ सार। आगे ह्वै कर कियो जुहार।
राजे बहुत कियो सनमान। आसन दे पूछो परधान ॥१४५८
कौन द्वीप तें आवण भयो। किम इह देश पांव तुम दयो।
कहो बात वणिवर वरवीर। पुर पुरगाहन साहस धीर ॥ १४५९
ताहि देख मन उपज्यो चाव। भली करी अब धारे पाव।

सेठ उवाच ॥

दीप अनेकन आवें जाहि। हम दीपनको वटनो खाहि ॥ १४६०
आये हंस द्वीप तें अबै। नाम तुम्हारो सुन करि जबै।
देखत तुम्हें महा सुख भयो। मनको दुःख सगरो मिटगयो १४६१
तासु वचन सुन तूठो राव। श्रीपाल ता जाण्यो भाव।
तबै तंबोल बहुत कर लए। आप न कुवर सेठकों दए ॥ १४६२
देखत सेठ विकल भयेगात। चल्यो प्रस्वेद न आवै बात।
विदा मांग निजथान हि गयो। ताकै हिये सोच अति भयो १४६३

(१४५५) भाव = प्रेम। पारे = पाले।(१४५८) जुहार = प्रणाम। (१४६१) सगरो = सर्व।
(१४६३) विकल = व्याकुल। प्रस्वेद = पसीना

में यह दियो सिन्धु में डार। जामें कछ मछ की धार।
तामें तें क्यों निकस्यो एह। यह मोकों भारी सन्देह ॥ १४६४
रायपास किम प्रकट्यो आय। यह अचिरजजान्यो नहिं जाय।
बहु दुःख हिये व्याप्यो आय। कोई पूछ्यो वीर बुलाय ॥१४६५
को यह नृपके आगे रहे। वीरा जाय देय सो लहे।
कहे वीर तब सुनि हो साह। यह सागर जो अगम अथाह ॥१४६६
तामें तें तिरि आयो येह। राज सुता व्याही कर नेह।
श्रीपाल है याको नाम। सब ही को प्यारो सुखधाम ॥ १४६७
यह सुन सेठ विकल ह्वै गयो। मानो वज्र घाव सो भयो।
चिन्तें मन ही मन विलखाय। मंत्री लीने पासि बुलाय ॥ १४६८
पूर्व पाप सेठ यों कहे। वणवर सुनों अन्न को लहे।
यह कोटीभट साहस धीर। अति गुणवन्त महाबल वीर ॥ १४६९
दया निधान धर्म को कंद। जो देखत मन बढे आनंद।
किन में वह सागर डारियो। किनमें गुन्हों तासको कियो १४७०
बांधो पाप प्रकट भयो आय। को तापै तें लेय बचाय ॥
कहां जाउं भज कहूं न जोर। में वांको हूं पूरो चोर ॥१४७१
भयो मरण को कहे बढाय। कोऊ न करे है पाप सहाय ॥
वणिवर सो कछु करो उपाव। जिम तापै ते होए बचाव ॥१४७२
सोई करो सेठ यों कहे। जिम दुःख जाय अपनपो रहे ॥

वणिवर उवाच।

सुनों सेठ तू कहूं ठहराय। वाही के शरणागत जाय ॥ १४७३

(१४६६) सागर = समुद्र। (१४६७) सुखधाम = आनन्द का घर।
(१४७०) गुन्हों = अपराध। (१४७३) अपनपो = मेरा जीव।

वह तो दयावंत गंभीर। मारे नहीं तोहे वरवीर॥
तेरो मान धरे अधिकाय। अवरन किम ही होय उपाय ॥ १४७४
आरय गुण छाडे नहि सोय। तातें कछु कुभाव न होय॥
अवगुण कछू न मनमें धरे। वह तो सब ही को गुण करे १४७५
मंत्र हमारो आयो जिसो। तुम सों अबै प्रकाशो तिसो॥
दुष्ट मंत्री तब ही बोलियो। सुनों सेठ हम मंत्रजो कियो॥१४७६
तुम जो दियो सिंधु में डार। अरु जांकी तुम इच्छी नार।
जाको इतो गुणों तुम कियो। सो तुमको छोडे किम जियो १४७७
तापै गये सो क्या फल होय। तुम हू देखो जिय में जोय॥
सो तो लेइ सर्व धन डांड। क्यों हू जीवत देय न छांड॥१४७८
ये वणिवर मति वर्जित मूढ। जानें कहा मंत्र अति गूढ॥
हम जो कहें सो कीजे देव। कछु करो स्वामी की सेव॥ १४७९
मंत्र हमारो आयो इसो। तुम सों प्रकट कहें हम तिसो॥
वह परदेशी आइ कुमार। सह वासी जाणिए मनसार॥ ४१८०
सागर में ते आयो वहो। वाको भेद न काहू लहो॥
नृप नहीं जानी कुल पहचान। कन्या दीनी सुन्दर जान॥१४८१
निशिवासर सो आगे रहे। ताको मर्म न कोऊ लहे॥

शार्दूलविक्रीडित छन्दः।

श्रीपालोवरवंशजातकुशलो
भूमंडले विश्रुतः।

(१४७५) आर्य = महात्मा (श्रेष्ट पुरुष। (१४७६) मंत्र = सलाह।
(१४७९) मति वर्जित = बुद्धि हीन (मूर्ख) (१४८२) अच्छी वंश में पैदा हुवा।
भूमण्डलमें मशहूर श्रीपालहै। रिपुसूदनात्जातः = अरिदवन का बेटा।

राज्यंमान्यसुरेंद्रतुल्यनृपतेः
कीर्त्तिःसदावर्द्धते।
जातोऽयंरिपुसूदनाद्गुणनिधि
र्लक्ष्म्याश्चनाथश्चिरात्।
सहवासोजानातिएवप्रभुता
मन्येननोज्ञायते। १४८२

चौपाई

सहवासी वाको नहीं कोय। राजा सो विनवेगो जोय।
याके लीये भांड बुलाय। तिनसो कहिये बात बनाय॥१४८३
तिनको बहु धन देय बुलाय। भांड विगोवो कर हैं जाय।
राजा रिस कर मारे डार। हम तुम उबरें चलें पचार॥ १४८४
यह सुन सेठ महा सुख भयो। तिन को अधिक अषय धन दियो
भलो मंत्र तुम कियो विचार। यातें सब को होय उबार॥१४८५
यह सुन वणिवर भयो संदेह। आपसमें जंपै सब येह।
बहुर बुराई उपजी अबें। पाप सेठ कीजे है सबें॥ १४८६
यही सोच उठ ठाडे भए। धवलसेठ तब पूछन लए।
कहो आपने मनकी बात। शंको मत तुम अपने गात॥१४८७

वणिजऊचुः

सुनो सेठ तुम रिस मत करो। बात हमारी सुन जिय धरो।
जातें भली होय सो करो। स्वामी बुरी बात परिहरो॥१४८८

(१४८३) सहवासी = साथ रहनेवाला (साथी)। विनवे = विनय (अर्ज) कर छुडावे
(१४८४) उबरें = बचें। (१४८५) अषय (अक्षय) न नाश होने वाला।
(१४८७) शंको = डरो। (१४८८) रिस = गुस्सा।

मंत्र हमारो आयो येह । कृपाकरो सोउ सुन लेह ।
नख शिख सुनके जिय में धरो । हमको मारमार मत करो ॥१४८९
सुनो सेठ श्रीपाल नरिंद । धर्म तरुवर करुणा कन्द ।
सब सुलछन हैं सो आह । तासम कोउ औरन नाह ॥ १४९०
ताको सुनो पराक्रम सार । महाबली देखिये कुमार ।
भ्रमत अकेलो और न साथ । वन में सोवत हो सुन नाथ ॥१४९१
बलिदेवे को लाए चाहि । तुम आभार दियो सब ताहि ।
जाके छुवे पराहण चले । कोटिन पै जे नेक न हले ॥१४९२
लाख चोर मिल आए वरी । तुम देखत कीनी अपचरी ।
हम भाजे सब मन में डरे । कछ्यक मूए कछु लर खरे ॥ १४९३
तुम तो बल कीनो अति घनो । लोटो कर्म जब आपनो ।
तब तुम कहा करो निहवार । बांध तुमें ले चले गंवार ॥ १४९४
कोपो तब कोटीभटवरी । तुम जानत हो अद्भुत करी ।
एको कछून आयुध लयो । परफुल्लित सो रण में गयो ॥ १४९५
देखत ही सगरे भय भरे । आप बांध सब पाइन परे ।
तुम को तिन पै लए छुडाय । तिनको निजघर गयो लिवाय१४९६
पंचामृत ज्वाई जोनार । बहुत बिनय कीनो अधिकार ।
वस्त्राभूषण दिये अभंग । सांधो भलो लगायो अंग॥ १४९७
दिये पान को कहे बढाय । ते सब दीने घर पहुंचाय ।
तिन हू एक अपूर्व कियो । सात पराहण भर धन दियो ४१९८
जिनको मंदिर अगम अपार । वज्र कपाट लगे हैं द्वार ।
छिनमें जाय उघारो सोय । प्रगट बात जाने सब कोय ॥१४९९

(१४८८) नखशिख = शुरू से आखीर तक ।

(१४९५) वरी = बली (बल वाला) अद्भुत = आश्चर्य । आयुध = हथियार ।

(१४९६) सगरे = सारे । (१४९९) उघारो = खोल दिये ।

तहां भेट राजा सो भई। रयनमंजूषा ताको दई।
बहुत अर्थ धन पायो घनों। महिमा और कहां लों भनों १५००
सो तुम दीनो सिंधुमें डार। रयनमंजूषा ताकी नार।
ता तन तुम कुदृष्ट मन धरी। बुद्ध तुम्हारी विधना हरी॥ १५०१
ताको धर्म सहाई भयो। तुम जानत जैसो दुःख दयो।
कोटीभट सागर तिर गयो। राजा के घर प्रगट ही भयो॥ १५०२
कन्या व्याही बहु सुख लहो। आयो हो सागर में बहो।
अबै चित्त न सुनिये बेन। यह तुम देखी अपने नैन॥ १५०३
मानस देव न जानों जाय। धर्म सहाय करत है आय।
संकट बहुत रहे भरपूर। छिन ही भीतर डारे चूर॥ १५०४
धर्म सहाय अहो निशि रहे। दुख में जाय तहां सुख लहे।
सेवा देव करें जो आय। तासों तेरो कहां बसाय॥ १५०५
वाको भलो किये फल होय। बुरो किये दुख पावे सोय।
याको कर्म फिरे या साथ। दया धर्म रहे जाके हाथ॥ १५०६
ताको जो कोई करे कुभाव। ताही को उपजे अनुराव।
वाको सुदिन सवारे काज। मारण पठये पावे राज॥ १५०७
ताको तुम कुदृष्ट मत करो। स्वामी हीन बात परिहरो।
अरु परपच देहु छिटकाय। ताको वेग मिलो तुम जाय॥ १५०८
वह आगे तो आदर करे। प्रीति पुराणी जियमें धरे।
टेढी कछू न तुमसो कहे। तुम हम सबै साथ सुख लहे॥१५०९

(१५००) अर्थ=पदार्थ। (१५०१) सिंधु=समुद्र। विधना=होनहारने।
(१५०५) अहोनिशि=दिन रात। बसाय। पेश जावे है।
(१५०७) कुभाव=खोटा खियाल। सुदिन=खुशकिस्मत।
(१५०८) कुदृष्टि=बुरी नजर। हीन=माड़ी।

यह सुन सेठ विचारे तवैं। बिनसन हार होत नर जवैं।
पहले मति ताको तज जाय। दूजो धर्म चले छिटकाय ॥ १५१०
तीजा सत्य चले धुन सीस। पौरष छीन लेय जगदीस।
महिमा ताके पास न रहे। मान ताहि तज मार्ग गहे ॥१५११
संयम शील तजे पुण ताहि। दया विवेक चले चित चाहि।
इतनो जवे पयानों करें। साहस धन पाछे परिहरें ॥ १५१२
पहिले दुर्मति बैठे आय। भेटे अपयश कंठ लगाय।
बहुरो ह्वै अदयासो प्रीति। बहुर असत्य करे बश जीति ॥ १५१३
बहुरो कायर गुण मन बसै। बहुरो तामें पातिक धसै।
अनाचार ता तजै न साथ। पाछे दारिद पकरे हाथ ॥ १५१४
ताहन क्यों हू छांडन कहे। नींदर ताहि गाढो कर गहे।
एको पल न देय छिटकाय। आवे नरक माहिं पहुञ्चाय ॥ १५१५
बिनसन हार सेठ त्युं भयो। सुमति विवेक ताहि तज गयो।
भलीन एको बात सुहाय। बुरी बात को लागो धाय ॥१५१६
जैसी दुष्ट जलौका होय। लगे पयोधर में जिय जोय।
अमृत खीर तजे मति हीन। सोखे श्रोणित सदा अघलीन॥१५१७
चन्दन सोंधों धरिये आय। सब को सुख दायक महकाय।
मांखी हीन ताहि परि हरे। अति मलीन ऊपर मन धरे ॥१५१८
तैसे पापी सेठ अयान। गही बुराई हिये निधान।
बणिवर सबन बात यों कही। कछुन ताके मन में रही ॥१५१९

(१५१०) विनसन = विनाश का समय। मति = अक्कल। (१५११) धुन = कंपाकर।
(१५१२) पयानो = चलानो। (१५१३) दुर्मति = खोटी बुद्धि।
(१५१४) पातिक = पाप। (१५१७) जलौका = जोंक। पयोधर = स्तन।
श्रोणित = लहू।

मंत्री दुष्टन कही बनाय । सोई बैठी मन में आय ।
पापी लीने पास बुलाय । बहुरा ते पूछे विहसाय ॥ १५२०
तुम तो मतो विचारो सार । सब काहूको होय उबार ।
वणिवर सबै सयाणे कहें । वाह मिले ही सब सुखलहें ॥ १५२१
जाहीं तें कछु नीके होय । तुम हू बात विचारो सोय ।
कछु लाज मत जियमें धरो । भलो होय सोई तुम करो ॥ १५२२

दुष्टमंत्रिणऊचुः ।

सुनहु सेठ यह तो उनमान । तुमहूं ते को और सयान ।
अपने जियमें देखो जाय । सोई करो सिद्ध जो होय॥ १५२३

सेठ उवाच

साहिब मंत्र करे धर मौन । तब मंत्री को पूछे कौन ॥
यह में सुनी न और उपाव । मंत्री कहो सदीजे दाव ॥१५२४

दुष्ट मंत्री उवाच।

सुनो सेठ जानो सब कोय । जामों कछु बुराई होय ।
ताके वशजो परिये जाय । सो कचों देय ताहछिटकाय ॥ १५२५
मीठो खात जाय जो रोग । भामनि संग रहे जो जोग ।
जो विषखाए रहें पराण । वादि यतन करे नर सुजाण ॥ १५२६
वेश्या सेवत सुख जो होय । घृत निकसे जो सलिल विलोय
घरमें रहे सांपफण धरे । और यतन काहे को करे ॥१५२७
तुम सों बात कहें समझाय । जो परिपंचन बैरीजाय ।
तो कित कीज और उपाव । मनो हमारो हिये दिढाव ॥१५२८

(१५२४) मौन = चुपचाप ।

(१५२६) भामनी = स्त्री । जोग = योग (ब्रह्मचारी) (१५२७) सलिल = पानी ।

३०–धवल सेठकर श्रीपाल का भागड बिगोवा करवाना ॥

सुनी सेठ जब सब निकुताय। तब तिह लीने भांड बुलाय।
तिन सों कहा सबै व्योहार। कपट रूप सो भयो उदार॥ १५२९
टका लाख द्वय दिया बुलाय। पाछे बात कही समझाय।
राजा आगे रहे कुमार। सायर तिर आयो श्रीपार॥ १४३०
जाति पात कुल लखे न कोय। राजा सुन्दर देखो सोय।
अति रीझो तब कन्या दई। ताकी मति काहु हरि लई॥ १५३१
अब तुम जाति आपणी भनो। कोऊ कहो पुत्र मो तनो।
कोऊ नाती कहिये चाह। कोऊ कहियो भ्राता आह॥ १५३२
ताकी बांह पकरियो जान। मत तुम करो राय की कान।
अर तुम लावन जानो निते। तुम तिह ठौर कीजियो तिते॥ १५३३
ज्यों त्यों ताहि आपनो करो। कछू शंक मत जिय में धरो।
मो मन भायो ह्वैगो जबै। रोर तुम्हारो हरिहों तबै॥ १५३४
यह सुन भांड सबै हरषिया। पहुंचे जाय राय परसिया।
ताके आगे अवसर कियो। रीझो राव तबै तूठियो॥ १५३५
बहु धन देकर जंपै येह। श्रीपाल इन बीड़ा देह।
कुवर हाथ उच्च कीयो जाम। हा हा कार करे सब ताम॥ १५३६
कोऊ कंठ लागियो धाय। कोऊ ताके पकरे पाय।
काहू बांह गही अकुलाय। कोऊ मुख चूंबे बिहसाय॥ १५३७

(१५३०) द्वय = दो। सायर = समुद्र।
(१५३२) नाती = पोता। (१५३३) कान = परवाह। (१५३४) शंक = भय।
(१५३५) अवसर = तमाशा। तूठियो = खुश।

कोऊ पूंछे उसको अंग। ताहि देख हर्षों सभसंग।
कोऊ कहे धन्य भूपाल। याको जहां भयो प्रतिपाल॥ १५३८
कोऊ कहे पुत्र मा तनो। दइ धाह सुख पायो घणो।
कोऊ वृद्ध कहे विहसाय। मेरो नाती सुन हो राय॥ १५३९
बहुत दिना को विछरो येह। ताको अब भागो संदेह।
धन्य यह वासर धन्य यह घरी। मिलो हमें सुत है यहवरी १५४०
सुन कर राव मलिन अति भयो। उपजो कोप सतावनलयो।
कोटीभट नहींकरे संदेह। मनमें कहे कर्म कछु येह॥१५४१
अब ही देख लेय हु तिसो। भावि होनहार है जिसो।
ऐसे कुवर विचारे भाव। मातंगण तब पूछे राव॥ १५४२
रे पापी किम कहो निरुत्त। वार वार भाषो अजुगत।
यह सुन्दर अर मीठा बात। तुम कुरूप अर हीने गात॥ १५४३
मेरे आगे करो वखान। तुम सो आहि कहा पहचान।
नीके कर नातो उच्चरो। मेरी कछू शंकमति करो॥१५४४
ऐसी सुन जंपै इक नार। सुनो राय तुम कहा विचार।
द्वय सुत मोहि जोरवा भए। क्षीर पान ने पोखन लए॥ १५४५
दोऊ भए सयाने जबै। भाजन कारण लरिए तबै।
इन अति क्रोध चित्त में धरो। जाय महा सागर में परो॥ १५४६
याको मोह बहुत मो भयो। दूजो कालवश मर गयो।
तब मो शोक वियापो हिया। दिनदश पानी अन्न न कियो॥१५४७
तिन के दुखन मरा भरतार। हूं पापनी जीऊं अधिकार।
धन्य तू राव प्रगट परवान। जिन मोह दियो पुत्रकोदान॥ १५४८

(१५४०) वरी = बली। (१५४२) मातंगन = भांड। (१५४४) नातो = संबन्ध
(१५४५) द्वय = दो सुत = पुत्र। जोरवा = जोड़ा। क्षीर = दूध।

बहुत भूप मांगे जिय जोय। तो सम दूजो और न कोय।
काहू हय काहू गय घनो। काहू दाम न जाहीं गिणो ॥ १५४९
काहू भोजन कबहु दियो। पुत्रदान नहि काहू दियो।
तैं सकबंध कियो चित चाहि। तेरी उपमा दीजे काहि॥ १५५०
प्रगटो यश को करे बखान। तो सम राजा और न आन।
राणो सुनो सांच उच्चरो। कछू विवेक न जिय में धरो॥ १५५१
सिर धुन राय कोह मंडियो। इन मो निर्मल कुल भंडियो।
महा दुष्ट यह पापी हीन। गुण माला व्याही परवीन॥ १५५२
पुन हिये मुनिवचन संभार। चित्त चितवे ता रूप निहार।
बहुतो भूप सोच यह करे। हीन पुरष सागर किम तिरे॥ १५५३
मनमें कियो एसो विचार। परम्पर बूझ श्रीपार।
निज कुल मोसों कहि परवान। का तू हमें मको नहीं जान॥ १५५४

कोटीभट उवाच

सांची कहुं सुनो हो राय। यह परिग्रह यहहै माय माय।
यह विरतन्त कहे हैं जिसो। मोको सुनों भयो है तिसो॥ १५५५

३१—राजा कर चंडालों को श्रीपाल के लिये सूली का हुकम

यह सुन राय क्रोध अति भयो। चंडारन को आयस दयो।
मेरो डर जिय में मन करो। या पापी को शूली धरो॥ १५५६
बांधो तब चंडाल निधाय। शूली देने चले लिवाय।
श्रीपाल यह जिय में भणी। देखु गति कर्म हि तणी॥ १५५७

(१५५०) शकबन्ध = जो शका (संवत्) चलावे, जैसे विक्रम। (१५५६) आयस = आज्ञा

भुञ्जों अशुभ कर्म को भाव। आन जनम नहि होय मिलाव।
सब ते वली कर्म गुरु कहे। आदि अंत सब ही को दहे॥ १५५८

इन्द्रवज्रा छन्दः

इक्ष्वाकुजातःसहिविश्वनाथो
इन्द्रादिदेवार्चितपादपद्मः।
तथा नरासेवनसं वितोपि,
नकर्मणःकोपिवलो समर्थः॥१५५९

चौपाई

खग नर गण गंधर्व अरदेव। ब्रह्मादिक सब जाकी सेव।
आदि अन्त कीगति विस्तरी। कर्म वाहि नहि कोऊ बरी॥१५६०
असुर यक्ष शंकर की सेश। चक्रेश्वर शशि और दिनेश।
ये न पांव आगे चलि धरें। कर्म करावे तैसे करें॥१५६१
धाता सब ही पर परधान। कहा करे नर सूर सुजान।
बुद्धि बल जाके कछु नहि होय। कर्म नचावेसो ही होय॥ १५६२
जो मैं अब इन सो बल करुं। तो सबको छिन में संघरुं।
विधाता सो कछु न बसाय। यह मन सोचे अरु विहसाय॥ १५६३
सब ते महाबली अधिकार। करता पास न कछु उबार।
इसही जन्म सबै दुःख सहुं। जैसे कबहु फेरन लहुं॥१५६४
मन ही मन सोचे धरधीर। कायर होयन नेक शरीर।
कोऊ एक पहुंची नहां। गुणमाला निजमंदिर जहां॥ १५६५

(१५६०) खग = आकाश में चलने वाले। (१५६१) सेश = शेषनाग। शशी = चान्द। दिनेश = सूर्य। (१५६२) सूर = बहादुर। (१५६४) कर्त्ता = ईश्वर।

कर दर्पण लीने वर नार। नयनन काजल देत सवार।
मृगमद तिलक रचो तिहठान। तास भेद को कहे वखान ॥१५६६
राय वेलचंवेली जुही। कुसम सुगंधन वेणी गुही।
मोतिन मांग सवारी चंग। पाता वली कुंकुमके रंग॥ १५६७
दर्पणमें प्रतिबिंब विहसाय। अति सुवासित वाल दिखाय।
सोधों बहुत मर्दियो अंग। अति अनूप देखिये अभंग॥१५६८
साजोमुक्ताफल को हार। रुचिरवर्णबनि सबै सिंगार।
पहिरे अंग कसूमल चीर। मन्द मन्द तहां वहे समीर॥ १५६९.
वढो प्रमोदन अंग सुमाय। दर्पण मुख देखे विगसाय।
अति सुहाग मद बाढो जवै। एक कामिनी बोली तबै॥ १५७०
जाको तू श्रृंगार करन्त। जाको पलपल मग जोवन्त।
जा देखत सुख लहती नैन। ताहि ले गये शूली दैन॥ १५७१
भांडन आय विगोवो घनों। सबै कहें ये सुत मो तनो।
श्रीपाल भी लीनी मान। माता पिता लिये पहचान॥ १५७२
ताते नृप कोपो चित चाहि। अब चण्डार मार हैं ताहि।
या सुन मूरछित भई कुमार। धरनी पर नहि सकी संभार १५७३
सखीयन जल सों छींटन लई। चेती तब सो बैठी भई।
अति चक्रित ह्वै चिते नैन। सूधी वात न आवे वैन॥ १५७४
शोकारूढी लेय उसास। पहुंची श्रीपाल के पास।
जो देखे तो ठाडो धीर। अति निरभय सा हिये शरीर॥१५७५
ताहि देख गुणमाला बाल। मुरछी धरणि पडी बेहाल।
चंद्रमुखी अंबुज लोचनी। होय सचेत पीयसो भनी॥१५७६

(१५६६)दर्पण = शीशा। मृगमद = कस्तूरी। (१५६७ वेणी = गुत्त (१५६८)समीर = पवन
(१५७३) चंडार = चंडाल। (१५७४) चक्रित = हैरान। (१४७६) अम्बुज = कमलफूल।

भो स्वामी कहिये कर नेह। कहा चरित्र कियो तुम येह।
मोसों अबै कहो सतभाव। कोतू आहि कुन के जाव॥ १५७७

कोटीभट उवाच

सुन हो त्रिया हमारी जात। भांड वंश मेरी उतपात।
भांड पिता भांडन मो माय। बहुत कहा हुं कहुं बढाय॥१५७८

गुणमालोवाच

पहले तुम मोसो उच्चरी। सोई सांची जिय में धरी।
अब तो सबै भूल तो गई। अब तुम सब याही सो चई॥ १६७९
भो बालम यह झूठी जोय। हीन वंश किम तोसो होय।
तू अति रूपवंत गुण धाम। अर तेरो है उत्तम नाम॥ १५८०
अर तुम देखिये महाधर धीर। कोटीभटअति गहर गंभीर।
अर तो चित्त दया को वास। अर तू जाने भोग विलास॥ १५८१
अब तुम कहो जिनेश्वर आन। सांची बात जु है परमान।
तुम हू यह देखो जिय जोय। मध्यम कुलक्यों उत्तम होय॥१५८२

शार्दूलविक्रीडितछन्दः

यापुंसिदेदीप्यमानसुभगेह्यारोग्यताजायते
गंभीरंभयवर्जितंगुणनिधिंसंतोषजातंचिरं।
विख्यातंशुभनामजातिमहिमाधैर्याद्युदारत्वमं
नेचानंदकरोनभूमिपतिजोह्यहीनेकुलेजायते १५८३

(१५७८)उतपात = जन्म।
(१५८२) आन = सौगन्ध। मध्यम = हीनो।

चौपाई ॥

जो कोउ अति सुन्दर होय। जाको रोग न व्यापै कोय।
जाके होय न अरि को त्रास। जाके चित करुणा को वास ॥१५८४
जाको निर्भय होय शरीर। कोटीभट सो साहस धीर।
कमला जाके सेवे पाय। कीर्ति दिग्दशरहे समाय ॥ १५८५
जो मुख बोले अमृत बैन। जा देखत सुख पावें नैन।
जाहि देख दुख भाजे दूर। सुखी रहे सब ही सुख पूर ॥ १५८६
सो किम हीन वंश अवतरे। बात तुम्हारी किम जिय धरे।
सांची बात कहो समझाय। नातर प्राण तजुं अकुलाय ॥ १५८७
मो पै कछून और उपाव। खण्डुं जीभ कहो सतभाव।
यह सुन श्रीपाल अकुलान। है अबला मति हीन अयान॥ १५८८
याके और न दूजो काय। मेरे सुख याहू सुख होय।
मेरो कछून काउ करे। या अकुलाय प्राण परि हरे ॥ १५८९

कोटीभट उवाच

सुन भामनि मैं कहूं विचार। अपने मनको शोक निवार।
सागर तीर थके जलजन्त। तहां जाय तू वेग तुरन्त॥ १५९०
तिनमें एक सुन्दरी आहि। पूछ देख नीके कर ताहि।
रयनमंजुषा ताको नाम। जाने है मो कुल अरु गाम ॥ १५९१
जो कछु मोह चरित व्योहार। सब वह प्रगट कहेगी सार।
या सुन ताह भयो चित चाव। वरजे नीच न पाडे घाव॥१५९२

(१५८४) अरि = दुश्मन। त्रास - भय, करुणा - दया। (१५८५) कमला = लक्ष्मी। दिग् = दिशा। दश = दस (१५८८) अबला = स्त्री। (१५९०) जलजन्त = जहाज। (१५९२) पाडे = करी। घाव घात।

साहस कर सो पहुंची तहां। सिंधु तीर परोहण जहां।
ठाडी है मनमें विलखाय। लागी टेर देन अकुलाय ॥१५९३
जो कहूं रयनमंजूषा नार। मोसों बोले चित्त विचार
मेरी दया कछु मन धरो। वेग देह मो उत्तर करो ॥१५९४
ऐसे शब्द कहे इन जबै। रयनमंजूषा सुनियो तबै।
चमक उठी मनमें संदेह। कारण कहा बुलावन येह ॥ १५९
सोचत सोचत सो चल गई। प्रोहण ऊपर ठाडी भई।
अति दुर्बल देखियो शरीर। मैल जडित ता साहै चीर॥ १५९६
रोवत नैन मलिन अति भए। अर कपोल अति मुरछित गए।
मैलो वदन ऐसो मकरन्द। मानो श्याम बादल में चन्द ॥१५९७
हीनी भाष महा दुख भरी। नाह नाह जंपै सुन्दरी।
गुणमाला वह बोली जबै। नमस्कार कर पूछी तबै॥ १५९८
हे स्वामिनि सुन मेरी बात। को है श्रीपाल की जात।
जासो मेरो सब दुःख जाय। तेसी कह तू सांच बनाय॥ १५९९

रयनमंजूषोवाच

हे त्रिय कोन दुःख है तोहि। किह कारण पूछत है मोहि।
सोई सांचो कह व्योहार। काहे ते यह दुःख अधिकार॥ १६००

गुणमालोवाच

हे स्वामिनि सुन कहों विचार। सायर तिर आयो श्रीपार।
मेरे पिता ताहि मैं दई। कही मुनि सोई सो भई॥ १६०१
भोग करत बहु सुख भुजन्त। बहुत दिवस बीते विहसंत।
अन्तर भयो कहानो जाय। तोसों कहुं बात सुन माय ॥१६०२

(१५९३) साहस = हठ। (१५९६) चीर = कपडे। १५९८) नाह = स्वामिन्।
(१६०२) अन्तर = बीच में।

भांडन कीनो अवसर आय । सबन गहो कोटीभट धाय ।
रोवें बहुत शोर ते करें । बारबार ऐसे उच्चरें ॥१६०३
यह तो वंश हमारे भयो । पूत पूत सब ही यों चयो ।
राजा को दुःख उपजो तवैं । आयस भयो मार है अवैं ॥ १६०४
तातें पूछन आई तोह । नाथ भीख दे सुन्दरि मोह ।
कह तू मोसों कारण येह । जिय मेरा भाजे संदेह ॥१६०५
रयनमंजूषा सुनियो जाम । तासों बात पयासी ताम ।
चालत वेग कहूं मैं जहां । तेरा पिता राव है तहां ॥१६०६
बहुत बात कह भई उदास । पहुंची जाय राय के पास ।
देखत राजा रहियो चाहि । रहसवन्त हो पूछे ताहि ॥१६०७
कह कह देवी तू सत भाव । श्रीपाल यह काको जाव ।
नीके कर हूं पूछो तोह । सगरो चरित्त सुनावो मोह ॥ १६०८
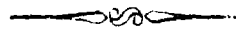
३२-रयनमंजूषासे जातिपूछ श्रीपालको छोडना

रयनमंजूषोवाच

राजा बात सुनो दे कान । श्रीपाल गुण करूं वखान ।
अंगदेश चंपापुर थान । स्वर्ग लोक है ताह समान ॥ १६०९
तहां अरिदवन राव अधिकार । ता सुत है श्रीपाल कुमार ।
पुरी उज्जैनी मालवोदेश । ताहि प्रगट पहुपाल नरेश ॥१६१०
ताको यह जामाई भयो । मैनासुन्दरी को वर थयो ।
अरु सुन हंसद्वीप सुविशाल । निवसे कनककेतु भूपाल ॥१६११

(१६०६) जाम = जब ।(१६०७) रहसवंत = एकान्त में गुप्त बात मालूम करने वाला
(१६०८) जाव = बच्चा । सगरो = सारा ।

तिन में याह दई नर नाथ। चलियो धवलसेठ के साथ।
तिन मो देख पाप इच्छयो। यह छल कर सायर डारियो। १६१२
पापी सेठ गयो मो पास। दुष्ट वचन बोलो उपहास।
तब जिनदेवी कियो सहाव। पापी वरजो दियो सजाव॥ १६१३
बांधो मारो अति दुःख दियो। बहु उपसर्ग नाश को कियो।
मोसो देवी कहो विरतन्त। सुन पुत्री तू मिल है कन्त॥१६१४
तातैं सर्ब सरेगो काज। महा सुख भुजेंगो राज।
अबलग प्राण रहे इस आस। अब यह कथा भई तुम पास॥१६१५
गुणमाला मोसों कहो जाय। तातें मैं आई अकुलाय।
देखत तुम्हें सोच अति भयो। दशवो हिस्सो शीलको गयो॥१६१६
मनमें तात बराबर जान। तुमसो बात कही तज कान।
मेरी कछू चित्त मत धरो। तुमको जो भावे सो करो॥१६१७
रमनमंजूषा की सुन बात। हरषो राव न मावे गात।
तत्क्षण श्रीपाल पै गयो। द्वय कर जोर मूढ बिनयो॥१६१८
भो कोटीभट साहस धीर। भो प्रभु दयावन्त गंभीर।
मो पर कृपा करो जियमान। हूं पापी पापन की खान॥१६१९
हूं निकृष्ट विचना कित कियो। बे काम तुम को दुख दियो।
बोलो श्रीपाल सुन राय। तोहि दोष कछू कहोन जाय॥ १६२०
पूर्व कर्म कमायो जिसो। भो नरनाथ भयो अब तिसो।
एक बात यह नीकी चई। भावी ही सो अब ही भई॥१६२१
बहुत सुख उपजो जिय जोय। मोसों बहुर न संबंध होय।
भावी बुरी गई मिट जाय। तुमें खोर दीजे अब काय॥१६२२

(१६१४) उपसर्ग = पीडा देनी। (१६१७) तात = पिता। १६१८) तत्क्षण = उसही वक्त
(१६२१) नीकी = अच्छी। भावी = होनहार (१६२२) खोर = दोष

यह पछितावा मो मन गयो । तुम को कछु विवेकन भयो ।
यह सोच मेरे मन घणों । कहा विवेक गया तुम तणो ॥१६२३

शार्दूलविक्रीडित छन्दः

किंविद्याधरवादिनादनिपुणोद्गारःकृतोधीर्यवान्
किं योगीश्वरकाननंचकथितंध्यानंधृतंकेवलं ।
किं राज्यंसुरनाथतुल्यभवतोभूमंडलेविद्यते,
यच्चित्तंचविवेकहीनमनिशंदुःखंचपुंसोधिकं१६२

चौपाई

यह सुन राजा रहा लजाय । स्तुति करे अरु चिन पिछताय ।
धन्य धन्य श्रीपाल सुजान । कोई पुरुष न तोह समान ॥ १६२५
तब नृप स्तुति करी अधिकार । कछूक लाज मन कछू उदार ।
श्रीपाल मन हर्षित भयो । नाहि विहस के उत्तर दियो ॥ १६२६
राजा कछु सोच मन करो । मेरी लाज हिये मत धरो ।
उत्तम औगुण गण पर हरे । एको गुण घट अन्तर धरे ॥ १६२७

श्लोकः-उत्तमेचक्षणिकःकोपो मध्यमेप्रहरद्वयं।
अधमस्यअहोरात्रं नीचस्यमरणांतकं१६२८

चौपई (अर्थ)

उत्तम कोप एक पल करे । मध्यम पहर दोय जिय धरे ।
अधम अहो निशि मन चिंतवे । नीच मरण वेला जो ठवे ॥१६२९

(१६२३) विबेक = ज्ञान । (१६२४) जिस को ज्ञान नहीं,उस को विद्याधर गंधर्व विद्यादि वृथा हैं और योगीश्वर होध्यान धरना भी उस का कुछ नहीं, तथा स्वर्ग समान पृथिवी का राज्य भी निष्फल है।(१६२७) गण = समूह । घट = चित्त । (१६२८) अहो निशि = दिन रात ।

राजा सुनो बात दे कान । नीके कर मैं कहूं बखान ।
पंडित वाद लेहु चित चाहि । सभा न उत्तर आवे जाहि ॥ १६३०
कोकिल बिना वाद वन होय । कुल सो बाद सपूतन होय ।
गुणी वाद निगुर्णी के साथ । संपति वाद कृपण के हाथ ॥ १६३१
रक्षक विना वाद सब सार । दीसे वाद शील बिन नार ।
सरवरवाद कमलबिन जान । कमलवाद अलिभ्रमें न आन १६३२
पुरुष वाद भाषे ते डरे । सूर वाद अरि तें भय करे ।
राग वाद दुःख हरे न नित्त । राजा वाद विवेक न चित्त ॥१६३३
श्रीपाल यों भाषी जाम । राजा सीस नवायो ताम ।
आतुर ह्वै आयो हरषाय । कोटीभट गज लियो चढाय ॥ १६३४
पंच शब्द बाजे अनिवार । पट्टन शोभा करी अपार ।
ठौर ठौर रमणीक सुथान । दीसे सो सुरलोक समान ॥ १६३५
सब ही नगर वधावो भयो । श्रीपाल निज मंदिर गयो ।
हेम कुम्भ सो जल भर न्हाय । अपने आसन बैठा आय ॥ १६३६
दुहु नार तब वन्द्यो नाह । हर्षिन आसू बहे प्रवाह ।
रयनमंजूषा अर गुणमाल । देखी श्रीपाल दो बाल ॥१६३७
हर्षित होय अंक भर लई । शील धुरन्धर द्वय वरनई ।
अति सुख भयो मन में अशेष । भामन भई उरवशी भेष ॥१६३८
श्रीपाल सुख कियो विशाल । सुरपति सम सोहै तिहकाल ।
ये सुख मैं ऐसो निवसन्त । कीयो कोप भूपाल तुरन्त ॥ १६३९
पठिये सूर करो मति संध । लावो पापी धवले बंध ।
ये सुन सेवक धाए सवैं । प्रोहण भीतर पैठे तवैं ॥१६४०

(१६३०) वाद = निष्फल(निद्य) । (१६३१)कृपण = कंजूस (लोभी) । (१६३२) अलि = भौंरा
(१६३४)गज = हाथी(१६३६)हेमकुम्भ = सोनेके घडे(१६३८)अंक = गोदी । उर्वशी = अप्सरा

लहुरे बडे जिते पाइया। नृप पै बुरे भेष लाइया।
धवल बांध मारो वहु साय। नृप आगे मुख रहियो गोय ॥ १६४१
बार बार यों कहे नरिंद। या पापी को करो निकन्द।
काहू पै मत दया करेह। वित्तसमान सब ही दुख देह ॥ १६४२
अरु लीनो श्रीपाल बुलाय। ताही बात कही समझाय।
यह तुमको दुःख दियो अपार। देख सुलंपट बांधो वार ॥ १६४३
जिह विधि कुछ तुम मोसों भनों। त्योंही या दुख दीजे घनों।
यह सुन कोटीभट उच्चरै। द्वयकर जोर बीनती करे ॥ १६४४
भोराजा छांडो कर नेह। धर्मतात है मेरो येह ॥
इनमो को ज्यो औगुण कियो। सोई माकौं गुणपरणयो ॥ १६४५
जो यह सिंधु न देतो डार। किम लहतो गुणमाला नार॥
यह सुन राय कोप छांडियो। महा हर्ष मनमें मांडियो॥ १६४६
शत्रु दवण सुत चित्त विचार। अपने हाथ निहार निहार ॥
धवल सेठ के बंधन तोर। अरुवणिवर सभ दीने छोर॥१६४७
निज मंदिर ले गयो लिवाय। पंचामृत ज्योंणार जिमाय॥
धवल सेठ सों द्वय कर जोर। लाग्यो स्तुति जु करण बहोर॥१६४८
तवपसाय सुख पायो घणौं। तू तो धर्मतात मो तणौं॥
तो पसाय म प्रगटो भयो। दुःख दारिद्र मेरो सब गयो ॥ १६४९
यह सुन सेठ रहो मुरझाय। गल्यो गर्व मनमें पछिताय ॥
महा उसास एक तब लियो। निकरे प्राण हियो फट गयो॥१६५०
नरक सातवें पहुंचो सोय। सहे दुःख जहां अति भय होय॥
सप्तम सन्धि पूरण भई। मूल देख भाषा वरणई॥ १६५१ ॥

(१६४५)गुणपरिणयो = गुणपरिणाम वाला। (१६४८) तव = तेरी। पसाय = कृपा।

छंद त्रिभंगी।

इतिश्री पालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं
बुधजनमनरंजन पातिक गंजन सिद्धचक्र विधिदुखहरणम्।
त्रिभुवन सुखकारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्ल कृतं
गुणमाला परणी सब सुख करणी मातंगनि उपसर्ग कियं।
सो उपसन्नं नृपसु प्रसन्नं धवल धेठ उर फाट गयं
द्वयनारी संजुत्तं जिणसुमिरंतं निवसंतं भूपाल घरम्॥१६५२

चौपाई।

धवल सेठ को फाट्यो हियो। ताको दुःख कोटीभट कियो॥
बहुरो सो सेठनी पै गयो। कहे बात सो बिलखो भयो॥१६५३
माता जी तुम दुःख मति करो। धीरज तन अपने जिय धरो।
यह जैसी ही विधि निर मई। भावी होनहार सो भई॥ १६५४
अब तुम मो कूं आयस देह। सोई करूं तजो संदे॥
यहां रहो तो सेवा करूं। जो घर जाय तो आदरकरूं॥ १६५५
अरु सब दर्व तुमें हि दयो। अपनो शुद्ध करो तुम हियो॥
कछू शंक मति करो शरीर। शीलवंत है गुण गंभीर॥ १६५६

सेठानी उवाच।

भो सुत करुणा करवर बीर। धन्य धन्य पुण्य वंत गंभीर।
भली भई पापी मर गयो। पहुंचो नरक बसेरो भयो॥ १६५७
अरु तुम आयस देहु अभंग। पहुंचुं घर भलो है संग॥
वणिवर सबे रहे गह पाय। कोटीभट आयो पहुंचाय॥ १६५८

(१६५५) आयस = आज्ञा। (१६५७) करुणाकर = दया की निधि।

तिह पुर रहे पुण्य अधिकार। देश देश प्रगटौ यश सार।
बहु सन्मान करे ता राव। भुंजे भोग महा सुख चाव ॥१६५९

———<>◇<>———
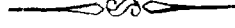
३३–श्रीपालका चित्ररेखासे व्याह।

इय कामनी सो है अति नेह। दुखी दरद्री पोषे तेह।
एक दिवस की कही न जाय। कोऊ वणिवर पहुंचो आय ॥ १६६०
नमस्कार कर ठाडो भयो। इयकर जोर सो यों बीनयो।
स्वामी बात सुनो दे कान। कहूं संदेसो एक प्रमान ॥१६६१
बडो नगर कुण्डलपुर नाम। कंचन रयन भरत शुभ ठाम।
वसे लोगतिह पुण्य परवीन। कोऊ भूल न भाषे दीन १६६२
मकरकेतु राजा ता तनों। चतुरंग दल ताके है घनों।
कपूरतिलका ताके नार। ताको रूपन सकों विचार ॥ १६६३
ताके गर्भ सर्वथा वर्णी। चित्ररेख पुत्री उत्पनी।
लक्षणवन्त शील की खान। ताके गुण को सकै बखान ॥ १६६४
तुम सम्बन्ध सो कही मुनेन। ता कारण हूं आयो लेन।
चलहु वेग मति लावो देर। परणो ताह करे बहु सेव ॥ १६६५
यह सुन श्रीपाल विहसंत। भामनि आयस लयो तुरन्त।
चलियो तवें न लागीवार। पहुंचो जाय नगर पै सार ॥ १६६६
सो बणिवर आगे चल गयो। जाय राय सों सो बीनयो।
स्वामी सो नर आवत येह। कोटीभट आगे हो लेह ॥१६६७

(१६६२) कंचन = सोना। रयन = रत्न। (१६६३) चतुरंग दल = घोडे, हाथी, पैदल, रथ, इन चार अंगों वाली फौज।

यह सुन तब सनमानो राव। सनमुख गयो भयो मन चाव १६६८
उपज्यो नेह देखियो जबै। कण्ठा लंबन कीनो तबै॥
पट्टन शोभा करी अपार। निज मंदिर ले गये उदार॥ १६६९
बैठानों सिंहासन जाय। सब अन्तेवर देख्यो आय॥
राय सकल बूझो परिवार। देखत ही तन कियो विचार॥ १६७०
शुभ दिन सोध लगन धरवाय। ठयो व्याह मन में सुख पाय।
मंगल भए तूर गुञ्जरे। कुल आचार दुहू को करे॥ १६७१॥
पाणिग्रहण तास को कियो। कन्यादान कुम्वर को दियो॥
सोवो दियो तुठि अणिवार। कवि परिमल्ल न जाणेंसार १६७२
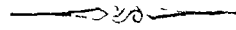
२४–श्रीपालका अनेकराजपुत्रियोंसे विवाह।

तहां रहत सुख उपज्यो जाम। और एक चर आयो ताम॥
कोटी भट सो इम उच्चरै। बार बार बहुती थुति करै॥ १६७३
माननी मान निकन्दन हार। सज्जन जन रंजन शुभसार।
तुमसों कहुं सुणो विरतंत। कंचनपुर पाटन निवसंत॥ १६७४
वज्रसेन है ताको राव। बहुत सेनको कहै बढ़ाव॥
ताकै कंचनमाला धणी। रूपवती त्रिभुवन मोहनी॥ १६७५
ताकै चारि पुत्र गुण सर्व। प्रथम शुशील दुतिय गंधर्व॥
तृतीय यशोधर साहस धीर। चौथो सुत विवेक गंभीर॥ १६७६
नौसै पुत्री अंत न लहूं। तिनको रूप वरण किम कहूं॥
रूपवंत सब गुण ही निधान। एक विलासमती परधान॥ १६७७

(१६६८) कंठालंबन = गले लगाना। (१६७१) आचार = रीतिरस्म (धर्म्म)
(१६७२) पाणिग्रहण = विवाह। (१६७४) निकंदन = दूर करने वाला। (१६७५) धणी = स्त्री

ते तेरी संबंधिनी जान । श्री मुनीश्वर कह्यो वखान ॥
चलो वेग श्रीवंत कुमार । परण तिनहू मनि लावो वार ॥ १६७८
यह सुन श्रीपाल विहसियो । सुसरा पें तिन आयस लयो ॥
पहुंतो कंचन द्वीप मो तहां । राजा आगे लीनो जहां ॥ १६७९
अति हर्षित होय घर लेगयो । सब कुटम्ब आनंदित भयो ॥
शुभ दिन लग्न ठरायो तबैं । कन्या व्याह दई ते सबैं ॥ १६८०
सोवो दियो जितो परमान । कवि परिमल्ल न सके वखान ॥
नए महल दीने करवाय । तहां भोग भुंजे बहुभाय ॥ १६८१ ॥
कछुक दिवस गए सुख जहां । एक पुरुष आयो अरु तहां ॥
तब सोयू बोल्यो विहसाय । स्वामी सुनो बात चितलाय ॥ १६८२
कुङ्कुम पट्टन मही वखान । ताकी शोभा नगरन आन ॥
कंचन रयण भरित अधिकार । घर घर गावें मंगलचार ॥ १६८३
अति रमणीक मनोहर सोय । मानो इन्द्रपुरी सम होय ॥
ताको भूप नाम यशसेन । दल कर इन्द्र रूप करि मैन ॥१६८४
दुर्जन दल जीतन प्रचण्ड । भुज बल भीम महा बलिमण्ड ॥
राजनीत पार अधिकार । ताकी कीरति अति विस्तार ॥ १६८५
चौरासी सुन्दरी ता गेह । जेठी गुणमाला जस रेह ॥
रूपवन्त सब लक्षण सार । ताके सुन्दर पांच कुमार ॥ १६८६ ॥
स्वर्ण बिंब गुणबिंब अरजेह । जित शत कर्ण पंच सुन एह ॥
सोरहसे कंचन मय रवण । अक्षरसम देखिये रवण ॥ १६८७ ॥
तिन मैं पुत्री आठ प्रधान । लक्षण बन्ध सबै गुणजान ॥
कहैं समस्या पूरे जोय । चन्द्रमुखी ते व्याहे सोय ॥ १६८८

(१६८१) सोवो = दहेज ।(१६८३)मही = पृथ्वी । कचन = सोना (१६८४)दल = फौज मैन = कामदेव(१६८६)रेह = रेखा (१६८८)समस्या = समासार्थ(छन्दका एकपाद कहना तीनन कहने

या मही मंडल में परवान। कोऊ बात न सकिहै जान।
तुम आगछौ चलो कुमार। परण: तिनें रूपकी सार ॥ १६८९॥
शीघ्र ही तहां चाल्यो वरवीर। तिह पुर जाय पहूंच्यो धीर।
नृप जस सेन कियो सनमान। निज मंदिर ले गयो सयान १६९०
अति हुल्हास जिय कहत न बने। कियो महोछव घर आपने॥
ता छिन ते आई सुख मान। देखत ही मोही शुभ जान॥ १६९१
बैठी आय समीपह जाम। श्रीपाल ते पूछी ताम॥
मन में बसे समस्या जिसी। मेरे आगे भाषो तिसी॥ १६९२॥
तब श्रृंगार गोरी उच्चरी। सुणो धीर मन इछा करी॥

श्रृंगारगोर्युवाच॥

जहं साहसतह सिद्धि १६९३

कोटीभट उवाच॥ दोहा॥

सत शरीरा आयतौ दई आय तिय बुद्धि,
कंत सहायन छांडिए जह साहस तह सिद्धि॥ १६९४॥

सुवर्णदेव्युवाच। गोपेखन्तह सव्व

कोटीभट उवाच

धम्मण विलसोधणनि, कृपण हैं संचय दव्व।
जूवा रायपलेवणो, गोपेखन्तह सव्व॥१६९५

पौलोमीदेव्युवाच। ते पंचायण सीह

कोटीभट उवाच

शील विहूणा जेवि नर, तिनकी देह मलीन।
ते चारित्ता निर्मला, ते पंचायण सीह॥१६९६

(१६८४) साहस = हठ (यत्न)।

सुहागगौर्युवाच । तसु काचरा सुमिठ

कोटीभट उवाच

रयणायर थोडो चवे, दादर कुवे बइठ ।
जिह नालेर न चाखिया, तसु काचरा सुमीठ ॥१६९७

सोमकलोवाच । कास पिवाऊं खीर

कोटीभट उवाच

रावण विद्या साधियो, दश मुख एक शरीर ।
माई संसे पडि रही, कास पिवाऊं खीर ॥१६९८

शशिरेखा उवाच।सो मैं कहू न दिठ

कोटीभट उवाच

सातो सायर हूं फिरो, जंबूद्वीप पईठ ।
शांत पराई ना करे, सो मैं कहू न दीठ ॥१६९९

संपदादेव्युवाच । काई विठियो तेण

कोटीभट उवाच

कुन्ती जाए पंच सुत, पंचो पंच सयेण ।
गंधारी सो जाइया, काय विठियो तेण ॥१७००

पद्मावती देव्युवाच । सोतसुकाय करेय

कोटीभट उवाच

सत्तर जासु च उगणी, पावली परणेय ।
अक्षर पास बइठडी, सो तुस काय करेय ॥१७०१

चौपाई

पूरी आठ समस्या जवें । सब कुटुम्ब आनन्द्यों तवें ।
शुभ दिन सोधो मंडप छयो । पंच शब्द तहां मंगल भयो ॥ १७०२

(१६९७) रयणायर = समुद्र । काचरा = कौडा कचरा । (१६९८) सायर = समुद्र ।

वाजे तहां बाजित्र अपार। व्याही सोरहसै श्रीपार।
सोवो दियो अति अधिकार। हय गय चमर छत्र भंडार ॥१७०३
लागो सुख भुञ्जत तिह ठाय। बहुतक दिवस बीते ते जाय
कोटीभट विनयो यह राव। देह विदा हमको घर जाव ॥ १७०४
रहसवन्त हो पहुंचो तहां। निवसे नौसे सुन्दरी जहां।
तब राजा बोलो वरवीर। दुर्जन भंजन साहस धीर ॥१७०५
सुन सुन कोटीभट कुलचन्द। महाबली करुणा के कन्द।
तू तो पुण्यवन्त गुणवन्त। हम सेवक तू होहु महंत ॥१७०६
देह छत्र सिर पर शुभसार। रैयत सबै सेवे दरबार।
तब श्रीपाल कहे हो राय। मैं तुम दास सेय हों पाय ॥ १७०७
मोकूं आयस देय तुरन्त। सोई करुं राय शुभ संत।
मैं इहठां सुख पायो घणो। प्रगटो विभव कहां लो भणो १७०८
दीजे अब आयस नरनाह। चलें तुरत मन में उत्साह।
मोसे दास तुम्हारे घने। मोह राख जो मन आपने ॥१७०९
तब राजा भाषे शुभ चित्त। सुन कोटीभट मेरे मित्त।
तो सम हितू न दूजो कोय। तोह तजे कैसे सुख होय ॥१७१०
कछू दिवस रहिये यह ठोर। बहुत कहा कहिये कछू और।
कोटीभट यह सुनियो जाम। लियो मौन नहि बोलो ताम ॥१७११
कछू दया उपजी अति गात। विहसो तज गोने की बात।
सोरहसै सुन्दरी गुणाल। तिन में आठ महा सुखमाल॥१७१२
रहे रयन दिन तिन के संग। सुर सम नेह भुंजे बहु रंग।
निश दिन गेह मंड में रहे। पुण्य पयोधर को सुख लहे॥ १७१३

(१७०३)सोवो = दहेज(१७०६)करुणा = दया(१७०८ विभव = धन। (१७११)मौन = चुपरहना।
(१७१२) गोने = जाना। गुणाल = गुणमन्दिर। (१७१३) रयन = रात्रि। पयोधर = स्तन

बैठें नारी चहुन्धा घेर । लोचन आनन्दे मुख हेर ।
तिन में सो दास मकरन्द । मानों शरद उड़गण में चन्द ॥ १७१४
क्रीडित गए बहुत दिन जाम । बहुरो नृप सो बिनयो ताम ।
अब नृप आपन कृपा करेह । रहसवन्त होय आयस देह ॥ १७१५
सुन के तबै नवायो सीस । मुखकर कछून कहो महीस ।
तब मन पायो चलो कुमार । नृप को नमस्कार कर सार ॥ १७१६
कछू सेन नृप दीनी संग । बाजे पंच शब्द धुन चंग ।
मन में हर्ष बढो अधिकार । सारहसे संजुक्त उदार ॥ १७१७
बहुत बात को कहे बढाय । कंचनपुर तहां पहुंचा जाय ।
बज्रसेन राजा भेटियो । कछू दिवस ताको सुख दियो ॥१७१८
बहुरो नृप तें आयस लियो । त्रियगण सहत पयाणें कियो ॥
पुन पुंडरि देस को कन्न । दोय सहस व्याही योवन्न ॥ १७१९
पुणुमै वार देश की नार । परणीशत को कहे बिचार ॥
तिन लोगन को अति सुख दियो । आगे बहुरपयाणो कियो१७२०
तब सो पहुंचो देश तिलंग । एक सहस व्याही वरचंग ॥
पुन सो पुण्यवंत रंजाय । पहुचो दल पट्टण सुख पाय ॥ १७२१
रयणमंजूषा अरगुणमाल । भेटयो आय राय भूपाल ॥
भुञ्जे सुख भोग परवान । पाले सिद्धचक्र विधितान ॥ १७२२
मुनिवर मान धरे अधिकार । दुखियन का कीजे प्रतिपार ॥

३५—श्रीपालकाराणियोंसहत उज्जैनीको चलना

एकरैण सेवत सुख पाय । चिंता ताहि भई पुनि आय॥१७२३

(१७१४) उडगण = तारों का समूह ।(१७१८) त्रियगण = स्त्रियों का समूह । कन्न (कन्या) = लडकियां ।(१८२०) मेवार = उदयपुर । शत = सौ । (१७२३) रैण = रात्रि ।

मैनासुंदरी के दिन अवैं। कछुयक रहे गए अरु सवै॥
जो हूं चलो न अपयश पाय। तो वह सुन्दरी मोतैं जाय॥१७२४
जा पसाय दुख दारिद गयो। जा पसाय हूं प्रगट्यो भयो॥
जापसाय व्रत पायो सार। यह परलोक सवारण हार॥ १७२५
जा प्रसाद श्रीपाई एन। महा दुख पावत है तेन॥
जो पै अब न जाउं हिथ वार। तोहू ताहि न देखो सार॥१७२६
या चिनताहि भयो विहान। राजा प्रति विनयो सुजान॥
भो नरपति रायन के राज। हम घर जाहि तुरत ही साज १७२७
यह सुण के राणें दुख लयो। भो कुमार तैं अजुगत कहयो॥
तू यह राजभार सहु लेहू। सेव करुंमें आयस देहू॥ १७२८
यासुण कुमर रहे विहसात। भो नृप पुण्यवंत सुण वात॥
तो पसाय सुख भुंज्यो घणों। अर यह विभो कहां लौ भणों १७२९
अब हम ऊपर कृपा करहू। आपण विदा गुसांई देहू॥
ऐसो वचन राय जबसुणों। अति दुःखलहियो सीसतवधुणों१७३०
हठ राखे उपजे विस्माय। मन ही मन चिंतै वहराय।
कौन उपाय रहे यह वार। राखन हेत श्रीपार कुमार॥ १७३१
ताकों फिर उत्तर नहि दियो। मन धर ठौर महल में गयो॥
राणी सौं यह प्रगटी बात। अति दुखभयो परसीनौं गात १७३२
पुन राणी बोली शुभ सार। सुणहु राय सब विधि व्योहार॥
कन्या व्याह दई कर साज। सोपरनई न तासों काज॥१७३३
जो अब कीजे कोटि उपाय। एको छिन राखी नही जाय॥
नाना विधि पकवान अपार। अर मुक्ताफल जे शुभ सार॥१७३४

(१७२५) पसाय = कृपा। (१७२७) विहान = प्रभात।
(१७३४)मुक्ताफल = मोती।

चढे जिनेश्वर आगें जबें। ते पर होय पलक में सबें॥
यही बात देखो जिय जोय। त्यों निज ते कन्या पर होय॥१७३५
यासुन राव विचारियो भाव। मनको सब छांड्यो विसभाव॥
कछू दिवस बीते सुख भयो। बहुरो श्रीपाल बीनयो॥ १७३६
विनय वचन कह के अधिकार। प्रणमति बहु कीनी श्रीपार
राजा को मन पायो जबें। शत्रु दवण सुन चलिया तबें॥ १७३७
चलतां राव उठो विहसंत। एक हजार दिए गजदंत॥
चार सहस्र सब दिये तुरंग। दिए छत्र चामर दोय चंग॥१७३८
दियो धन तिह अगम अपार। कवि परिमल्ल न जाने सार॥
वस्त्राभरण दिये शुभ घणे। जिन सौं नग निर्मोलिक बणे १७३९
आपण तिलक करो नरनाह। सब नगरी मिट गयो उछाह॥
मंजूषा गुणमाला कण। बहुआभरण दिए सावण॥ १७४०
बहु दिए इसे चंडार। जिन्हें लगे मुक्ताफल जोर॥
अंतवर अति देख्यो जिसो। नीके कर सनमान्यो तिसो॥ १७४१
राणी को अति उमगो हियो। कंठालंब सुता सों कियो॥
वार वार कहे विलखाय। विधि की कथा न वरणी जाय॥१७४२
कित दश मास गर्भ ये धरी। कित मेरे कन्या अवतरी॥
कै मैं प्रीति निरंतर ठई। हा पुत्री परदेसण भई॥ १७४३
बार बार कहे दयछोह। बहुरि कित देखोगी तोह॥
मन की मोहनि प्राण पियार। दर्शन दुर्लभ हुई कुमार॥ १७४४

(१७३७) प्रणमति = प्रणामें।
(१७३८) तुरंग = घोडे। (१७३९) बने = जुडे हुवे।
(१७४१) अंतवर (अन्तःपुर) = राणियां। (१७४२) कण्ठालम्ब = गलेलगाना।
सुता = पुत्री। (१७४४) कुमार = कुमारी।

यह कह कण्ठ लगी अकुलाय। पुत्री तब रोई बहुभाय।
कंपत अधर न आवै बात। पुत्री शिथिल भई अति गात।१७४५
वचन तातरे दई असीस। बाबुल जीवो कोडि वरीस।
भ्रातनकी जोड़ी बहु बढो। शुभकी कला दिनही दिन चढो १७४६
धर्म वेलि परमरो यूं भणों। सदा सुहाग रहो तो तणों।
निवसो सदा शील सो नेह। कहै सुता जननी सुन एह ॥१७४७
तब राणी बोली भर नैन। गलै खापरे मीठ बैण।
सुन पुत्री तू कुल आचार। त मति पुत्री विसरहि सार ॥१७४८
पिय आयस मति भूलो चित्त। सासू सेव कीजियो नित्त।
निवसो सदा शीलको भार। वढा सासरा आर सोमार॥ १७४९
करो राज महि ऊपरि सन्त। चिर जीवा कोटीभट कन्त।
सदा नेह निवसो पिय संग। धर्म बुद्धि रहियो वर चंग॥ १७५०
बहु विभूति बाढो तुम गेह। कबहू मलिन होय मति देह।
कर हू राज तुम इन्द्र समान। मही मण्डल फिरो तुम आन १७५१
शील संयुक्त भोगवो भोग। मेरी यह असीस तुम जोग।
लोचन दुहु वहे परवाह। कण्ठा लम्बन मूकी धाह॥ १७५२
बहुरा राणी अति बिलखाय। रयण मञ्जूषा भेटी धाय।
अर आभरण मनोहर जिते। आपण राणी दीने तिते॥१७५३
विछुरत अति दुःख पायो घणों। ताकी कथा कहां लो गिणों।
कोटी भट चलियो ले जोग। करें रुदन नगरी को लोग॥१७५४
बार बार राव विलखाय। कहे सुनो कोटीभट राय।
यह विनती मेरी है तोय। मन में मति भूले तू मोय ॥१७५५

(१७४५)अधर = ओठ। (१७४६) तोतरे = थथला। (१७४८) आयस = आज्ञा।
(१७५१) मही = जमीन। (१७५३) आभरण = गहने

बिनती यही कही कर जोर । कबहू दीजे दरस वहोर ।
पूर्व शुभ प्रकटयो हो मोहि । तांते दरश भयो हो तोहि ॥१७५६
अबसों वहुरि जिन है गयो । दारुण पाप सहाई भयो ।
कहां करुं विधि को निरमाण । तोसों सज्जन करै पयाण ॥ १७५७
तव बोल्यों श्रीपाल कुमार । भो नृप तुम सम कौन उदार ।
तुम मोको सुख दियो अपार । तुम तें प्रकट भयो संसार ॥१७५८
कछू दिवस सुख पायो घणा । अबलो पियो भाग तो तणो ।
घटो पुण्य कछु कही न जाय । छूटे राय तुम्हारे पाय ॥ १७५९
भरि अंक भेटयो भूपाल । कोटीभट चलियो अरिसाल ।
ढुरे चमर शिर दीनो छत्त । श्रीपाल भयो राव महत ॥ १७६०
चतुर रंग दल चाल्यो परचण्ड । उडी धूल छायो सुरखण्ड ।
भयो कहराउ गयो लुपभान । अति गंभीर वाजे नीसान ॥१७६१

वस्तु छन्द

नीसाण वज्यो सैण साज्यो हलै वासिगि राउ ।
रैण उडी आकास पूरो वहै नाही वाउ ।
हय खुरनिखुंदहि धरणि रुंधहि कसमस्यो जु कुरंभ
गय घंट वाजहि मतंग गाजहि प्रवलदल आरम्भ
कियो पयाणो भूपति को ऊनता हि समान ।
कहे कवि परिमल्ल प्रकटे देश देश हि आन ॥ १७६२

चौपई ।

जो सब सेन प्रकट कर कहूं । वढे कथा कछू अन्त न लहूं ।
बहुत बात को कहे बढाय । सोरठ देश पहुंचो जाय ॥ १७६३

(१७५६) दरश = दर्शन । (१७६०) अरिसाल (अरिशल) = शत्रुवों को दुःखदायी । (१७६१) लुप = लुप । भान(सूरज) । (१७६२) रैण = धूलि । हय = घोडे. धरणि = जमीन गय = हाथी

सनमुख आय मिलो ता राव । बहु आदर कीनो धर भाव ।
कन्या गण शत पंच सुभाव । जानैं व्याह दई उह राव ॥ १७६४
राजा सों बहु नेह उपाय । चालो मरहट पहुंतो आय ।
कन्या वरी पंचसौ तहां । विरम्यों दिवस द्वियक नर जहां ॥ १७६५
फुनि गुजरात गयो जैकार । कन्या वरी तहां सैचार ।
फुनि वैराट गयो वरणई । चन्द्रमुखी द्वय सै परणई ॥ १७६६
और राय बहु सेवा लिए । सब नरपाल घेरि वशि किए ।
जे नृप चक्रेसुरही समान । ते सेवक कीने परवान ॥ १७६७
चलियो महा बहुत सुख पाय । पुर उज्जैणी पहुंचो आय ।
बेढो नगर घेरि चहुंपास । ठौर ठौर दल परो विकास ॥ १७६८
गहर शब्द बाजें नीसान । प्रलयकाल घन गर्ज समान ।
तहां अन्तेवर उतरो सर्व । देखत जाय इन्द्रको गर्व ॥ १७६९
लागी होण रसोई जहां । इन्धन नीर न पूगै वहां ।
प्रगटो धूम लग्यो आकाश । पठियो दूत मानो हरि पास ॥ १७७०
दिन दश रह्यो अंतपुरि ताल । अति भयभीत भये दिगपाल ।
अर वसुधा सभ रहियो मांड । वनचर जीव गए थल छांड १७७१
अन्धकार तिह अवसर भयो । मानों स्वर्ग सूर आथयो ।
हय हींसैं गज करें पुकार । प्रगटो शोर नगर में सार ॥ १७७२
मुख वाणी सुनिये नहि कान । सैन नहीं बोलैं अकुलान ।
व्यापारी मंत्री परधान । सब जकि रहे गए अवसान ॥ १७७३
सब ही नगर भयो कहराव । सबे कहैं यह भयो उतपाव ।
पर चक्री नृप कही न जाय । सिर पर वैरी पहुंचो आय ॥ १७७४

(१७६५) विरम्यो = ठहरा । (१७६८) गर्व = अभिमान (१७७०) इन्धन = लकड़ी नीर = पानी ।
(१७७१) वसुधा = जमीन । (१७७३) सैन = नींदसेसोजाना । (१७७४) उतपाव (उत्पात) उपद्रव

लही सुद्धि पहुपाल नरेश। तब मन में दुःख भयो अशेष।
मंत्री बोल लिए तिह पास। भाषै तिनसों चित्त उदास॥ १७७५
कछू मंत्र तुम करो विचार। प्रलय पाश किम होय उबार।
मंत्री मंत्र करें थकि रहा। फुरत नहीं राजा से कहो॥ १७७६
काहू के मन कछु उपाव। कोऊ कछू कहै धर भाव।
उसरा उसर करत दिन गयो। भई रयण दिन कर आथयो १७७७

३६–श्रीपालकामाताऔरमैनासुन्दरीसेमिलाप

तब श्रीपाल विचारो भाव। बहुत सु चिंत भयो यह राव।
को जानें शुभ दिन कब होय। कबधो नृपमिल है जिय जोय१७७८
प्रात होत ही सब गुण भरी। दीक्षा ग्रहण करे सुन्दरी।
या विचार ऊठियो वरवीर। पछिम रयन अकेलो धीर॥ १७७९
तीनकोट नाषे तिह वार। गयो गेहको लेय न सार।
द्वारे सो ठाढ़ो ह्वै रहो। सुन्दरी कुन्दप्रभा सों कहो॥१७८०
पुत्र तुम्हारे साहस धीर। अजों न आयो गुण गंभीर
अब मोपै न सहारो जाय। नर भवजात अकारथ माय॥ १७८१
अब तो हूं सब सुख परि हरुं। सुप्रभात जिन दीक्षा धरूं।
नाहक मोह इतने दिन भए। बाराबरस अकारथ गए॥१७८२
निश दिन ते सेये तो चरण। अब मो भोर जिनेश्वर शरण।
कुन्दप्रभा सुन के गह भरी। तब तिन एक बात उच्चरी॥१७८३

(१७७६) पाश = फाशी। (१७७७) उसरा उसर = यूं है यूं करो, ऐसे वृथा वाद से।
रयन = रात। दिनकर = सूरज। आथयो = अस्त होगया।

(१७८१) नरभव = मनुष्य देह।

(१७८२) हूं = मैं। अकारथ = वृथा। (१७८३) निश = रात्रि। भोर = प्रभात।

धीरो मन कर पुत्री आज। दिन दोय बीते कर हैं काज।
हम तुम दोऊ दीक्षा लेह। दुःख जलांजल पानी देह ॥१७८४
सुन सुन्दरि कहे विलषाय। तुम तो अजुगति कहत हो माय।
अब जो मन मेरो थिर रहो। नाथ वियोग महा दुःख सहो ॥१७८५
अब मोपै क्षण रहो न जाय। निश्चय शरण जिनेश्वर पाय।
काहू कही न पिय की वात। तातैं दुःख व्यापो अति गात ॥१७८६
कै ताको मारग भुल गियो। कै काहू कामनि बश कियो।
कै फुणि मन कर वंछी नार। मैं जिय ते डारी जु विसार ॥ १७८७
तातैं खरो चित्त अकुलाय। रात दिवस मो कछु न सुहाय।
बहुत दुख मैं किस से कहूं। सुप्रभात जिन दीक्षा लहूं ॥१७८८

अडिल्ल

अब जो हो पिय नाम हिये में आव तो।
तातै दुर्जन काम न मोह सताव तो॥
अबै गयो वह भूल बढो दुःख किम सहुं।
जो जिनशरण न जाऊं तो विरहानल दहुं॥
बीते द्वादश वर्ष सुध नहि पाइयो।
अब जो आशा लुब्ध चित्त समझाइयो॥
मोकूं तो अब दुख वखानों सो भयो।
एक न मिलियो कन्त अर दूजो तप गयो॥ १७८९

दोहा

पसरी या संसार में, आशा पास अपार।
प्राणी बन्धे न छूट हीं, पावें दुःख अधिकार॥ १७९०

(१७८८) द्वादश = बारह। लुब्ध = लालची (१७९०) आशा = आस।

गाथा

आसा पिसाच गहियं जीवो पावइ दारुणं दुक्खं
आसाजोणिनिरुत्तं तेणिरुत्तापसहयदुक्खाइं १७८१

चौपाई

अबजो हूं आशा वश रही। दुःख पारी विरहानल दही।
दुहूं पवारे भयो विगार। काहू भांति न पाऊं पार॥ १७८२
यह दुख मोको भयो अधिकार। मा ते गयो महातप सार।
पिय को तो दुःख कछू न मोह। ताते माता विनऊं तोह॥१७८३
जाते दुख सब मिटे कलेश। सुप्रभातही सेवुं जिनेश।
दुर्गति मेटन शुभगति करण। आदि अन्त जीवनको शरण १७८४

कुन्दप्रभोवाच

सुन सुन पुत्री मेरी बात। कायर भूल होहु मत गात।
दया हेत दिन दो थिति मांड। हिये विचार देख हठ छांड॥१७८५
तेरो प्रीतम यह भरतार। मैं दश मास धरो उर धार।
क्यों मैं दरस देय जो आय। होय निशल्य सल्ल सब जाय॥१७८६
सुन्दरि मनमें देख विचार। दिन दोय रहे मिटे सब गार।
अब जो हम तुम दीक्षा धरें। पुरजन लोग घेर सब करें॥ १७८७
कोटीभट जो पहुंचे आय। सूनों घर देखे पछिताय।
अति दुख लहे चहुंधा चाहि। संपति बढी दिखावे काहि॥ १७८८

(१७८२) विरहानल = विछोड़ा रूप आग। पवारे = तरफों से।
(१७८४) शरण = रक्षा करणेवाला। (१७८५) थिति = ठहरना।
(१७८६) सल्ल = दुःख।

मैनासुन्दर्युवाच

माता सुनो धर्मको भाव । अव यह वेर भयो वेराव ।
आसा पास काट गति मोह । निर्मल भई बुद्ध तज कोह ॥ १७९९
पिय को हेत अवे जो रहुं । तो यह वेर महा दुख लहुं ।
माता तुम हू मोह छिटकाय । दोऊ सेवे जिनवर पाय ॥ १८००
तुम तो हो जननी ता तनी । देखो सुत विभूति जो घनी ।
मोसी ते दासी ता गेह । है हैं बहु स्वरूप गुण रेह ॥१८०१
अब जो रहुं धर्म छिटकाय । हूं हुं मानहीन सुन माय ।
यह सुन श्रीपाल भयो छोह । उमगो हियो बढो अति मोह ॥१८०२
तब सो बोल्यो कही विचार । हे सुन्दरि यह द्वार उघार ।
शब्द सुनत उठी विहसंत । उदघाटे जु कपाट तुरंत ॥१८०३
भीतर कुंवर गयो विहसाय । नमस्कार कर बंदी माय ।
तिन देखो सुत नैण पसारि । मन में हर्ष कहै विचारि ॥ १८०४
दई असीस रंजि कैचित्त । सुख सौं लछि भुञ्जियो नित्त ।
श्रीपाल देखी सुंदरी । दुर्बल दीन और गह भरी ॥ १८०५
तब सोगयो सेज बिहसाय । मैनासुंदरी पकरे पाय ।
तब कोटीभट को सुख होय । कंठलाय आलंबी सोय ॥ १८०६
भयो सुख उमग्यो तब हियो । मैना सुंदरि पूछन लियो ।
कहो कंत अब मोसौं बात । कुशल क्षेम नीके हो गात ॥ १८०७
धन्य यहवासुर धन्य यह घरी । तुम पिय देख नैननि भरी ।
मो सौं बोल निवाहयो साख । तुम घर आये पायो लाख ॥ १८०८

(१७९९) वेराव = वैराग्य । कोह = क्रोध । (१८००) हेतु = कारण (१८०१) सुत = पुत्र
(१८०३) द्वार = दरवाजा । उदघाटे = खोले ।
(१८०७) क्षेम = कल्याण ।

तब श्रीपाल कहै सुन नारि। तो सौं कहौं बात मन हारि।
सुंदरि कछु शोच मति करै। बहुत विभो ल्यायो जी धरै॥ १८०९
चतु रंग दल अगम अपार। पाया सिद्ध चक्र फल सार।
कुंदप्रभाअर सुंदर नारि। दुहले गयो कटकमंझारि॥ १८१०
जननी को सिंहासन दियो। सुंदरि ता तरि ही वैसियो।
सकल लोक वंदे सब आय। दई असीस तब बैठे जाय॥१८११
श्रीपाल तब मन विहसाय। सब अंतेवर लिए बुलाय।
कहो मंजूषा सों दुख हरण। मो जननी यह वंदो चरण॥ १८१२
मैनासुन्दरी पहिली नार। यह पसाय रिद्ध पाई सार।
आठ सहस आई रंजाय। सब ही गहे सासू के पाय। १८१३
पहले रयणमंजूषा वाल। ता पीछे आई गुणमाल॥
बहुरो चित्ररेख सों आय। रंभा जावंती फुनि धाय। १८१४
नौसै वज्रसेनकी धिया। लागी पाय सबही हर्षिया॥
सोरहसै जस सैनि कुमारि। नमस्कार चरणनको कारि।१८१५
और जु हैं भामा अणिवार। लागी पाय रूप इकसार॥
बहुरो लगो दिखावन नाथ। मैनासुंदरी लीनी साथ॥ १८१६
हय गय वाहन दासी दास। रतनन के बहु पुंज सुहास॥
अपनों विभो निहार निहार। सबैं दिखायो वाह पसार। १८१७
पटबांधो मैना के सीस। सब ही ऊपर कीनी ईश॥
प्रथम हि मंजूषा गुणमाल। अवर त्रिया जे रूप विशाल। १८१८
सबन चरण परसेवेता तने। शोभा कछु कहन नहि बने॥
मैना सुंदरी अति विहसाय। रोमांचित सो अंग न माय॥ १८१९

१८०९) विभो = विभव (धन)। (१८११) जननी = माता। तरि = नीचे को।
(१८१६) भामा = स्त्रियें। (१८१८) पटबांधो = पटराणी बनाया। मैना = मैनासुंदरी।

तिह बेरां दीसे सो तिसी। इन्द्र गेह इन्द्राणी जिसी॥
किम कर कहुं सरस अति वणी। मानों कामदेवकी भणि। १८२
श्रीपाल उठि ठाढो भयो। द्वय कर जोरिसुयौं वीनयौ॥
सुन सुन्दरी मैं कहूं सुभाव। जो कछुहै सो तोहि पसाव। १८२१०
चतुरंग दल अवर ए नारि। अवर विभूति सुदेख निहारि॥
यह प्रसाद तेरो है सर्व। मैं तो वहीपुरुष नही गर्व। १८२२
मैना सुन्दरीबोली तबै। मेरो बचन सुनो पिय अबै॥
तुम कोटीभट साहस धीर। पुण्यवंत अरु गुण गंभीर। १८२३
कमला दासी सेवै पाय। रही कीर्ति दिग दश छाय॥
जा पर कृपा तुम्हारी होय। मन वांछित सुख पावै सोय। १८२४
अरुजो भयो सवै मोकाज। एक वचन मो दीजे आज॥
मेरो पिता कर्म पर भणो। मान भंग कीजे ता तणो। १८२५
कामरि पहरि कुहारी कंधि। कांटे कोपीनां डोरी बन्ध॥
ऐसी विधि जब मिली है ताय। तबही सुख उपजेगोमोय।१८२६
यह सुन कोटीभट जक रहो। सुन्दरि तें अजुगत यह कहो॥
तेरो पिता कियो गुण मोय। तासों इसी बात किम होय। १८२७
कन्या रतन महा गुण भरी। कोढी कों दीनी सुन्दरी॥
जिस दिन सबै हितु परि हरे। तिह दिन इस सहाव मो करो॥१८२८
तातैं मोकरवों यों नाहि। मेरे इसो न कोउ जग मांहि॥
तब सुन्दरि बोली सुविचार। दोष रूप नहि कहों पुकार॥ १८२९
याकै नहि धर्म परतीत। जानै नाहि न्याय अरनीत॥
तातैं तनक दिखावो मर्म। तो या मन आवे जिनधर्म। १८३०

(१८२१) पसाव = प्रसाद = (कृपा) (१८२४) कमला = लक्ष्मी। (१८२६) कामरी = कंबल कंध = कांधे पै॥ काटि = लक्क। कोपीना = लंगोटी। (१८२७) जक = घबराया।

यह सुन कोटिभट हर्षियो । त्रिया वचन मन में परषियो ॥
यह सुन दीनो दूत पठाए । तासों कही बात समझाय । १८३१
ऐसे भेष मिलो निकुनाय । नातरि देश मारि हौं आय ।
यह सुन दूत पहुंचों तहां । सिंहद्वार रायको जहां ॥१८३२
प्रतिहारी पूछो व्योहार । पुण ले गयो जहां नरपार ॥
वारबार कीनो परनाम । तब पहुपालकीया सनमान । १८३३
दियो वहसंत वोल उठाय । पूछे राव ताहि सत भाय ॥
कह कह दूत हिये धर भाव । कुण आयो है यह तो राव । १८३४
कवण देश किन्ह नगरजु गेह । नीकें कर कह मन धर नेह ॥
बोल्यो दूत तबें शुभ सार । भो नृप मत पूछो व्योहार । १८३५
दल वल पूरो अति भीय बाउ । या सम दूजा और न राउ ॥
महिमडलाके हैं नृप जिते । चरण कमल सेवत हैं तिते । १८३६
खग वरधर अगन अपार । सेवा करत नजानो सार ॥
अवर भेद मैं बरणूं सर्व । मानस तासोंकरे न गर्व । १८३७
नगर विध्वंसत निकस्यो आय । तू नृप मिल शंका छटकाय ॥
अपनों दल बल छाडो देव । पांव पियादो मिल करी सेव । १८३८
पहरो कंवल कंठ कुहार । सिर पर धर लकरी को भार ॥
यह विधि गहो राय के पाय । नातर नगर विध्वंसै आय ॥ १८३९
मारै बहुत वंदि बहु करै । कुल वल सहित तोहि संघरै ॥
सुन पहुपाल क्रोध अति भयो । मारौ मारौ सब सौं चयो । १८४०
बडे बोल बोलत परचंड । या पापी के करो शतखंड ॥
दुष्ट धीठ शंका नहीं करै । बार बार बुरी उच्चरै । १८४१

(१८३२) सिंहद्वार = कचहरी का दरवाजा । (१८३३) प्रतिहारी = द्वारपाल । नरपार = राजा । (१८३६) भीय = खौफ । (१८३७) गर्व = अहंकार । (१८४१) शतखंड = सौ टूक ।

या ऊपर अति अदया करो। यह पापी को सूरी धरो॥
तत्क्षण किंकर पहूंचे आय। दूत मार बांध्यो अकुताय। १८४२
तब मंत्री बोले कर जोर। स्वामी तुम लागत है खोर॥
भो नृप चूड़ा मणि पहुपाल। दूत न मारन जाय भोवाल। १८४३
अरु यह परचक्री परचंड। जाके दल हालत ब्रहमंड॥
याहि मिले नहि दोष विचार। लीजे अपणो देश उवार। १८४४
यह परदेशी निकस्यो आय। ज्योंही कहै मिलौ त्यों जाय॥
यह सुन राजा उपशम भयो। तबैं दूत तिन छोर जो दियो। १८४५
तासों बचन कहो निकुनाय। राजा सों यों कहियो जाय॥
जो तुम आयस दीनो मोहि। त्यों हि आय मिलूंगो तोहि। १८४६
यह सुन दूत पहूंचो तहां। कोटीभट बैठो हो जहां॥
लाग्यो कहन सुनोहो राय। तुम ज्योंकहो मिले त्यों आय। १८४७
कछू न गर्व कियो वरवीर। अबै आवत सुनियो धरधीर॥
यह सुन श्रीपाल विलषाय। मैना सौं जंपै परजाय। १८४८
तैसी कही बात समझाय। जैसी दूत कही है आय॥
सुन्दरि याकौं दीजे दान। जिन यूं कहो कियो परवान। १८४९
तब आयस दीनो बिहसाय। भावै तुम्हें करो सोजाय॥
यह सुन शत्रु दवन सुन बात। दूत बुलायो फूल्यो गात। १८५०
ता सों कहो सबै व्योहार। जाय राय सों ऊचरो सार॥
कछू शंक मत जिय में धरो। रोस आपणों सब पर हरो। १८५१
हय गय दल बल सौं विहसाय। राजहि मिलो चित्त छिटकाय।
यह सुन दूत पहुंचो तहां। नृप पहुपाल सचिंत्यो जहां। १८५२

(१८४३) खोर = दोष। (१८४४) ब्रहमंड = संसार। उबार = बचाना। (१८४६) आयस = हुक्म। (१८४९) परवान (प्रमाण) = मान लेना। (१८५०) भावे = जो इच्छा हो।

नमस्कार कर बोलो तबैं। नृप पहुपाल सुनो तुम अबैं॥
जो कछू दल बल है तुम सेश। मिलो समेतह कहो नरेश। १८५३
यह सुन राव आनंदित भयो। बहुत पसाव तास को दयो॥
लीनी संग सेन अनिबार। बरणत कथा होय विस्तार। १८५४
यह इत तैं मतंग चढि जाउ। वह उततें हस्ती चढआउ॥
श्रीपाल इह देष्यो जाम। भयो पयादो उतरो ताम। १८५५
तब वह भयो पयादो राव। दोऊ मिले चित्त धर भाव॥
परस परस उपज्यो अति नेह। पहुपाल उपज्यो संदेह। १८५६
ता तन रहो मुहा मुह चाहि। नैकपिछान सकि नहींताहि॥
तब श्रीपाल कहे सुन राय। नीके देख मोहि निकुताय। १८५७
तब पहुपाल कहै कर जोर। तुम स्वामी लीनो चित्त चोर॥
तातैं समझ न परि है मोहि। कहां जानि अवलों को तोहि।१८५८
तब श्रीपाल हस्यो सुन बात। उपज्यो बहुत मोह सुन गात॥
सुन पहुपाल राय पहिचान। हूं तो तोहि जवाई जान। १८५९
मैनासुन्दरि को वरकंत। तुम को आय मिल्यो शुभ संत॥
बारा बरस दिशंतर गयो। तो प्रसाद फल ऐसो भयो॥१८६०
यह सुन बहुरो उठियो राव। कंठा लंब कियो धर भाव॥
दहूराय आंसू भरे लए। नाना विधि रोमांचित भए॥ १८६१
भेरि तूर बाजें अनिवार। नगर लोक हरखो तिहवार॥
श्रीपाल पहुपाल सुहास। पहुंचे मैनासुन्दरी पास॥ १८६२
बिनती करै राय विलषाय। द्वय कर जोरे सीस नवाय॥
भो पुत्री सब ही गुण जान। शील धुरंधर सुख निधान॥ १८६३

(१८५४) पसाव = इनाम।(१८५५) मतंग = हाथी। उततें = उधर से। हस्ती = हाथी।
(१८६०) कंत = पति। देशांतर = दूसरे मुल्कों में।

तू अति दयावंत जिय जोय। तो सम औरन दूजी कोय॥
मैं तेरो देख्यो अब कर्म। अरु आरा धिन जिण वर धर्म ॥१८६४
मैं पापी तो अविनय करी। अविनय सौं तूं अति दुःख भरी॥
यह सुन सुन्दरि तूठी अंग। चलो आप अन्तेवर संग ॥ १८६५
हर्षित ह्वै पहुपाल नरेश। पट्टन शोभा करी अशेष।
पाटम्बर छाए बाजार। रोपे तोरण बंदरवार ॥ १८६६
वाजे तहां वाजै अधिकार। भेरी मृदंग तूर सहनार॥
अर अति भई शंख गुञ्जार। अर नीशान वाजे अनिवार ॥८१६७
राजा हर्षि कियो अति मान। याचक जन दीनो बहु दान॥
होत उछाह नगरी मोतवें। लोग परस्पर जंपै जवें ॥१८६८
देखो पुण्य तनो परभाव। आयो श्रीपाल यह राव॥
ल्यायो विभव स्त्री बहु ल्याहि। पूर्ण हैं सबही गुण जाहि॥१८६९
शील धुरंधर सुख निधान। जो सम और न दूजी जान॥
बहु विभूति लाये अधिकार। सेवक बहुत किये अनिवार॥१८७०
बहु विभूति है इन्द्रह तनी। सो हम पै नहि जाय है गिनी॥
जय जय शब्द भयो तिह काल। पुर प्रवेश कीनो श्रीपाल १८७१
आठ सहस अन्तेवर संग। भेटे तवें सात से अंग।
बारम्बार रहे उरलाय। निज मन्दिर सो पहुंचो जाय ॥ १८७२
कंचन कलशन निर्मल नीर। न्हायो निर्मल कीयो शरीर।
बैठो सिंहासन परि धाय। सुख भुंजे दुःख गयो विलाय ॥१८७३
विलसै श्रीपाल शुभचरै। काम भोग मन वंछित करै॥
राज रीत पालै अधिकार। आठ सहस भोगवै नार॥ १८७४

(१८६५) तूठी = खुश। (१८६६) तोरण = लाट। (१८६८) याचक = मंगते।
(१८७२) सहस = हजार

अंग सात सै राखे मान। याचिक जन को देवे दान।
आठवीं सन्धि पूरण भई। मूल देख भाषा वरणई॥ १८७५

छन्द त्रिभंगी।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं।
बुध जन मन रंजन पातिग गंजनं सिद्ध चक्र विधि दुःखहरणं।
त्रिभुवनसुखकारण भवजल तारण चौपई बन्ध परिमल्लकृतं॥
सब रोरविनास्यो सुखपयास्यो आठ सहस सुन्दरी वरियं।
महिमंडल जानों सब नर मान्यो सुजन वखान्यों दुःख हरियं
हय गय रथ सारं अगण अपारं बहु विभूति परि सिद्धिभयं।
मारव बहु देशं फिरि परदेशं पुर उज्जैणि राज कियं॥ १८७६

३७–श्रीपाल का चंपापुर जाना।

चौपाई।

भुञ्जे सुख श्रीपाल असेश। करै नेह पहुपाल नरेश।
एक दिवस मन में सन्देह। कोटीभट जी सोचे एह॥ १८७७
अतुल लछि पाई मैं घणी। भुगतं जाय भूम आपनी।
कहां करोता सुत सौं काज। जो नहि वहै पिता को राज १८७८
जिह न सुजस महि मंडल करचो। ताको गर्भ उदर किनगिरयो।
यह चिन्तत जिन वर संभरचो। पंचपरम गुरुजियमें धरचा१८७९
गुण गंभीर अरिदवण उरसाल। पहुंचो तहां जहां पहुपाल।
विनती करी जोर द्वय हाथ। हमको विदा देह नरनाथ॥ १८८०

(१८७७) असेष = सकल (सभ)।
(१८७८) भूम = जमीन। (१८७९) उदर = पेट।

तुम प्रसाद निज पाटन जांह। कृपा तुमारी राज कराहि।
यह सुन राव कहै विरसाय। अजुगत बात कही तुम आय १८८१
जो तुम राज भूख है देव। करो राज मैं करिहों सेव।
ऐसी सुन श्रीपाल कहाय। मेरी बात सुनो हो राय ॥ १८८२
तुम मोसौं तो ऐसो कियो। कन्या रयण अमोलक दियो।
जा प्रसाद इतनौं फल भयो। तुम सो आप देखि ही लयो १८८३
तुम सब बात जोग हो देव। मोसे दास घणे हैं सेव।
तुम समओर न दूजो राव। जाके मन में केवल भाव ॥ १८८४
मेरे मन यह धोषो भणौं। तुम प्रसाद दल पायो घणौं।
अब जो राज पिता को वहुं। तो महिमंडल में, जस लहुं ॥१८८५
तातैं विदा देहु नर नाथ। आप सैन कछु दीजे साथ।
तव पहुपालने आयस दयो। दलबल सहित सो गोहण भयो१८८६
कोटीभट दल साजन कह्यो। चल्यो आप मन में सुख लह्यो।
मैनासुन्दरि है परधान। आठ सहस अन्ते वर आन ॥ १८८७
ते चलिया सब चढि चंडोर। जिणें लगे मुकताहल जोर।
विच विच नग लागे अतिघणें। सो तो कछू कहित नावणें। १८८८
गज अंबारी में कछु भई। कछु सुखासण में चढ़ लई।
कछु इक चली पालकी साज। लाल पटम्बर छाई गाज ॥ १८८९
अग्रभाग मैनासुन्दरी। चढ़ चंडोर चली गुणभरी।
पीछे रयणमंजूषा वाल। ता पीछें सुन्दरी गुणमाल ॥ १८९०
पीछैं आठ सहस जे आन। चलीजाय अपसरा समान।
बहुत बात को कहे बढ़ाय। देखत गर्व इन्द्र को जाय ॥ १८९१

(१८८३) रयण = रत्न ।(१८८६) दल = फौज। गोहण = साथ होया।
(१८८७) अंतेवर = राणियां ।(१८८८) गज = हाथी (१८९० अग्रभाग = सब राणियोंके आगे

चलो सेन ले अगण अपार । हय गय वाहन लहे न सार ।
अबर सुभट बहु चलिया साथ । आप आपने आयुध हाथ १८९२

दोहा ।

बहुत भूप संग्रह भये, दियो दण्ड बहु माल ।
कोलाहल होवत भयो, चलो राव श्रीपाल ॥१८९३

वस्तुबन्ध ।

श्रीपाल चलों मेरु हलो जागो वासक सेश ।
गजघण्ट गाजहि प्रबल साजहि भजे अरि तज देश ।
निसान बाजो सैन साजो गिण्यो कांपे जाय ।
कलमले दश दिक्पाल कंपे थरहरे बहु राय ।
गगन उड आकाश छायो लुपि गयो तब भान ।
खल भलो भुविलोक अति ही शब्द सुनिये न कान ॥१८९४

दोहा ।

अन्धकार प्रकटो तहां, जुरो सेन गम्भीर ।
और कही दशउं दिशा, तूट गयो तृण नीर ॥१८९५

चौपाई

कसम साइ कूरम कलमल्यो, कास सों.कलो डेरा परयो ।
वह गिरिवर नाषंत परवान । बन थल नदी सरोवर थान ॥१८९६
झाडे बहु पाटण परदेश । और बहुत वस किये नरेश ।
बहु दिन मैं को कहै वढाय । चंपासुर सो पहुंचा जाय ॥१८९७

(१८९२) अगण = जिस की गिणती न हो । हय = घोडे, । गय हाथी ।
आयुध = हथियार । (१८९३) कोलाहल = शोर ।
(१८९४) वासक, शेष = ये दोनों नागों के राजा हैं । गगन = आकाश ।
भान = सूरज (१८९६) कूरम = कछुवा ।

परचो जु सैन नगर चौफेर। देखत पुर शंक्यो तिह वेर।
ज्यों चक्रेश विजय कर आय। घेरो कामदेव पुर जाय ॥१८९८
कपिवंशा नृपलीने साथ। ज्यों लंका घेरी रघुनाथ।
ज्यों सरवर के चहुधा पार। त्यों दल दीसै दिष्ट पसार ॥१८९९
डेरा सघन दीन अनिवार। अरुण श्वेत अरु श्याम अपार।
हरित जंगाल जरद अधिकार। ज्यों बादर पावस पयसार ॥१९००
हय हींसत देखिए सु ठाम। गज गाजैं घन गरज समान।
नगरी मांहि शोर अति भयो। मानों सुख सबैं भज गयो ॥ १९०१
सुख सब चल्यो अगण अपार। हय गय वाहण लहै नसार।
अवर सुभट बहु चलिया सोय। आप आपने आयुध जोय १९०२
सर्व लोग यह कहैं विहाल। आयो अनचिन्तो यह काल।
याकों दल देखियो अशेष। मानों परयो भरत चक्रेश। १९०३
काहू देखत इसो निहार। जो परलय से लेय उबार।
तब यह बात कही श्रीपार। अब ही चलिय नगर मझार।१९०४
निरविकार मन साहस धीर। कछू न भेद लहो वरवीर।
यह सुन मंत्री बोले तबैं। सुनो राय हम विनवें अबै ॥१९०५
आगै होय न मिले जो आय। कछू गर्व तहि करेवै राय।
प्रथम दूत पठवो तुम तहां। वीरदवण राजा है जहां ॥१९०६
नाम तुम्हारो प्रकटे जाय। मन सूधो तो मिल है आय।
जो लौ बातनहि लहिए राज। तो लौं कहा विगारो काज १९०७

(१८९८) कपिवंशी = वानरवंशी। रघुनाथ = रामचंद्र।

(१९००) अरुण = लाल। हरित = सावा। (१९०२) आयुध = हथियार।

(१९०६) वैराप = वैर करता है।

अवर सुनहु रे दूत अयान । पहली कथा कहुं परवान ।
जाको भरत चक्र वरवीर । देश निकासे अपने वीर १९२९
राज हि काज विभीषण बन्ध । मरवायो रावण मद अन्ध ।
राज काज बहु दुख भरे । कौरव पांडव सो लड़ मरे ॥ १९३०
सो किम मोपै दीनो जाय। ऐसी बात न मोहि सुहाय।
यह सुन दूत कहो कर सेव । ऐसी बात न कहिए देव ॥१९३१
है श्रीपाल राव परचण्ड । लीयो सब रायन पै दण्ड ।
तासौं गर्व न कीजे जान । देहु राज अर सेवा मान ॥ १९३२
यह सुन वीरदवण पर जरो । तासौं कोप वचन उच्चरो ।
कितो कहै श्रीपाल कुमार । जाणैं कहां युद्ध व्योहार ॥ १९३३
मेरे बल को इन्द्र न चन्द्र । मेरे बल को सुर न फणिंद ।
नर बापुर कितनेक सर्व । कितेक विद्याधर गन्धर्व ॥ १९३४
कहां आपणौं बल हौं भणौं । श्रीपाल बालक मो तणौं ।
तासौं कहां युद्ध मैं करुं । छिनक मांहि कोटि संघरुं ॥ १९३५
यह सुण दूत कहै हो राय । मनको गरव देयछिटकाय ।
श्रीपाल रायन को राय । इन्द्र समान जास परभाय ॥ १९३६
जिते भूप महिमण्डल तणें । सैन असंख्य अतुल को गिणें ।
जिनके तासे पायकघनें । महिमा कछू कहत नहीं बनें ॥ १९३७
गर्व छांडि सब डारत पाय । तुम छौ कवण बात मैं राय ।
जोवन जीव होंय अनिवार । रयपण गज की एक अपार ॥ १९३८

(१९३२) परचंड = बली, कठोर । गर्व = अभिमान
(१९३४) फणिंद = शेष नाग । (१९३५) कोटि = करोड ।
(१९३६) परभाव = प्रताप ।
(१९३७) तोसे = तुम जैसे । पायक = दास ।

जो दन्ती बल जुरे हजार । भाजे केहरि करे गुञ्जार ।
जो जुरि आवैं कोटिक स्वान । एक तरक करै क्षयमान ॥ १९३९
बहुते होय भुजंगनि थंक । मारहि मोर करै नहि संक ॥
तो से जुरें कोटि नरनाहि । मारै श्रीपाल छिन माहि ॥ १९४०
यह सुन वीर दवण पर जरयो । बहुरयो कोप वचन उचरयो ।
अरे दूत तूं धीठ गवार । तोह कहां मारो यह वार ॥ १९४१
राजनीति को धर्म्म न होय । दूत मारे शोभा नही कोय ।
मेरे आगै निन्दहि मोहि । नांतरि सूरी थाऊं तोहि ॥ १९४२
थाप्यो श्रीपाल को हीन । तो कूं भय न वज्ञाए दीन ।
वह मो बालक देख विचारि । सब दिनमैंलीनौं प्रतिपारि ॥१९४३
मैं वांको बल देखो तवैं । घर सैं निकसत रोयो जवैं ।
कोढ़ी होय निकसि बन गयो । अब सोबलाकहांतेभयो ॥ १९४४
कहां सैन इतनों उन लहो । मोसों सन्मुख होण ज कहो ।
अर वह जुरण कहत संग्राम । हांसी आप करै वेकाम ॥ १९४५
ऐसी सुनत दूत अकुलाय । बहुरो बोलों सुन हो राय ॥
यह सीख अपने जिय धरो । स्वामी भूलि गर्व मत करो ॥ १९४६
प्रथम ही गर्व कियो भरतेश । जाकै सेना अगण अशेष ।
छहों खंड को पति परवाण । बाहुबलि ताहमोडयोमान ॥ १९४७
रावण गर्व कियो अधिकार । तीन खण्ड को भोगन हार ।
तापर दई रिसानौं जाय । एक ही लक्षमण मारों ताय ॥ १९४८
करो गर्व दुर्योधन वीर । काहू की तिन शंक न धीर ।
ता पर दई कोप जब भयो । भीमसेन तब मारण गयो ॥१९४९

(१८३८) दन्ती = हाथी । बल = समूह । केहर = शेर । तरक = हिरणोंको खाने वाला(तरख)
(१८४०) भुजंग = सर्प (सांप) ।(१८४८) दई (दैव) = ईश्वर । रिसानो = गुस्से हुवा ।

जरासन्ध गरव्यो अधिकार। जाके दल बल अगण अपार।
अदया भई विधाता तणी। मारचो नारायण थुति भणी॥ १९५०
सुर नर असुर और गंधर्व। कीनो गर्व गये ते सर्व।
तू मति गर्वै नृप विन काज। गर्व करै तो होहै लाज॥ १९५१
श्रीपाल कू मानो देव। राज छांडि कर वाकी सेव।
जो कोटीभट आयस करे। एको वीर तोहि संघरे॥ १९५२
वीर दवण यह सुनियो जवै। मारण दूत कहो तिन तवै।
दःखदे याको निग्रह करो। वेगै खाल काटि भुस भरो॥१९५३
बार बार मो निन्दा करै। जिय मैं कछु न शंका धरै।
यह सुन मंत्रिन बिनियो राव। है दूतनको यही सुभाव। १९५४
करड़ी वात कहें तज शंक। ए मारियेन रायमयंक।
धन्य ए दूत सुनो हो राय। इनको साहस कहो न जाय॥ १९५५
मन चिंतवै स्वामी को काज। दुःख मैं परें छांडि सुख साज।
आपणे नृप को जस उचरें। पर नृप की अति निंदा करैं॥ १९५६
दलबल विभौहीन कर गिणे। यह अति शूर कहत नहि बणे।
इनके अवगुण सब परिहरो। स्वामी हेत मन भीतर धरो॥ १९५७
इनको दान दीजिये इसो। अपने नृप सो भाषे तिसो।
सदा राज जिनके कुल भयो। तिन दूतनको अति सुख दयो १९५८
तो तुम हू मही पर यश लेह। या भावे सोई सुख देह।
मारे दूत ह्वै है दोष। अर नृप कबहू न पावे मोष॥१९५९
यह वच सुनो भूप ने जवै। बोल दूत सो कहियो तवै।
यह कह श्रीपाल सो जाय। मोसों जुरो झूझ तुम आय॥१९६०

(१९५०) विधाता = विधना। (१९५२) आयस = हुक्म। (१९५३) भुस = तूरी। (१९५५) रायमयंक = हे राजों में चन्द्रमा समान (१९५६) पर = दूसरा। (१९६०) झूझ = लड़ाई।

जाको दई मया कर देह। ताको राज मार सो लेह ।
बहु सनमान तास को करो। बहुत दान दे दारिद्र हरो ॥१९६१
तब ही दूत राय को नयो। बहुरो कछून उत्तर दयो।
मन विलखानो पहुंचों तहां। कोटीभट हो वैठो जहां ॥ १९६२
कर प्रणाम कहे सो जान। स्वामी सुनो करो परवान।
वीरदमण बल भाषे इसो। सुर अरु असुर न बोले तिसो ॥१९६३
बहुत कहां मैं कहूं बढाय। कहे जुरो संग्राम हि आय।
आपन दई तूठि जा देय। सोई राज आन वह लेय ॥ १९६४

४०–श्रीपाल का चाचा वीरदमन से युद्ध ।

कोटीभट यह सुनियो जाम। क्रोध रूप ह्वै उठियो ताम।
उपजो कोप बहुत पर जरो। मानहूं वैसांतर घृत परो ॥ १९६५
भाषे मार मार तिह वार। हय गय साज लेय हथियार।
जो संग्राम भिडे हम धाय। जैसे जीवत एक न जाय ॥१९६६
यह कहत गज ऊपर चढो। कर ले खड्ग चालो रिस बढो।
ता देखत ही सबैं झूझार। धाये काल रूप तिह वार ।१९६७
हय पाखर गय पाखर परी। जे गज वेल लोह बहु जरी।
तिन की शोभा अवरन आन। ते चिमके विजुरी समान ॥१९६८
तिन पर साज चढे असवार। मानो सब इन्द्र इकसार।
पैदल चलियो अगम अपार। लिये सबै हथियार सुसार ॥ १९६९

(१९६१) दई = दैव (किस्मत)। (१९६५) परजरो = प्रज्वलो (भडक उठो)।
वैसांतर = आग। घृत = घी।
(१९६७) कर = हाथ। खड्ग = तलवार। रिस = गुस्सा।

खड्गकटारी अरु तरवार । वरछी सांग लई पटतार ।
फरी गुरैणी गोफण घणी । कुन्तन सेल जाय नहीं गिणी ॥१९७०
चक्रगदा कैयक ले चले । कैयक सूर शकति ले भले ।
वरकु हवाई गोला जन्त । तोप मदार को जाने अन्त ॥ १९७१
बहुतक लिये और हथियार । तिन को कछु न जानो सार ।
नख शिख मंडे सवें जन लोहू । स्वामी काज भरकाए छोहू १९७२
अरु वाजित्र बजे अनिवार । तूर मृदंग भेरि सहनार ।
मानो भेर बजे करनार । अरु अति भई शंख गुञ्जार ॥१९७३
अरु तहां बाजे गहर नीसान । प्रलयकाल घन गर्ज समान ।
हलो मेरु वासिक खल भरो । दिकपालन मन संशय परो ॥१९७४
कौतूहल को सुरपति गाज । देखत है ऐरावत साज ।
कविपरिमल्ल वरणन जो कहे । वरष एकलो अन्त न लहे ॥ १९७५
उमगो श्रीपाल जब अंग । वीर सात सै ताके संग ।
मार मार कर उठियो धाय । पुर के सन्मुख रुपियो आय ॥ १९७६
यह सुध वीरदवण जब लही । क्रोधहो सैन्यपलाणन कही ।
साजो सूर धरो जिय लाज । आय भिरे स्वामी के काज ॥ १९७७
यह सुन सूर कोह अति भए । घर घर साज सबन ही ठए ।
घर घर पियसों जंपैं नार । मन की इच्छा कहें संभार ॥ १९७८
कोऊ त्रिय मांगे यह दान । मिलयो कन्त जनम तुम आन ।
कोऊ कहें दुहूं भुज तणों । दरसा जो पिय तम आपणों ॥ १९७९
कोऊ सीख दय कुलवाम । झूझ हार मत आवो धाम ।
बहुत वरष जो खाया माल । स्वामी काज अब करो हलाल १९८०

(१८७१) सूर = योधा । शकति = वरछी (१८७४) घन = बादल । वासिक = शेषनाग । (१८७५) कौतूहल = युद्ध कौतुक। ऐरावत = इन्द्रका हाथी (१८८०) कुलवाम = कुलकी स्त्री । धाम = घरमें

कोऊ भयमती कहवे नार। भजियो पिय जो जानों हार।
एक कहे मुतियन की मार। अरु पाटम्बर चीर अपार ॥१९८१
गजमस्तक शोभा को वर्णो। भजै फौज तो लीजो घणों।
एक कहे कौतुक देखियो। आय परें तब ही झूझियों ॥१९८२
काहू कछू काहू कछू चयो। घर घर सूर वचन सुन लयो।
आप आप त्रिय को मन राष। चले कोपते जय जय भाष ॥१९८३
हय खुररेण उरी गज वहे। गहर शब्द बाजे चहुं धहे।
जुरी फौज को करे वखान। दुहूं न के बाजे नीसान ॥ १९८४
इत ते श्रीपाल परचण्ड। उत तैं वीरदवण बलिवण्ड।
दोऊ फौज जुरी इकसार। वर्णत कोउ न पावे पार॥ १९८५
दुहूं के चित्त क्रोध अति भरो। दुहून मार मार उच्चरो।
यह सुन सूर उठे गल गाज। लगे झूझ करण धर साज ॥ १९८६
गज सो गज रोपो कर कोह। हय सो हय लागे कर छोह।
रथ सो रथ जोरे अधिकार। पायक सो पायक अनिवार॥ १९८७
एक हि एक झूझ अति होय। ऐसो झूझ न कर है कोय।
वाजो सारंग भयो कहराव। दिनकर लुपो वहे नहीं वाव ॥१९८८
अंधकार बाढो असमान।काहू शब्द न सुनिये कान।
कोऊ काहू न देखा छाह। मार हि मार होय रण माह ॥ १९८९
इन्द्र आदि सब अलख अभेव। देखत सवें तमासो देव।
महाबली योधा संघरे। बहुतक रूंड मुंड धड पडे ॥ १९९०
मंत्रन मंत्र विचारो तवै। कहें परस्पर कीजे अवैं।
यह तो इन के घर को राज। झूझत सूर नहीं कछू काज ॥ १९९१

(१९८१)। मार = माला। (१९८२) गजमस्तक = हाथी के माथे का मोती। (१९८४) हय = घोडे. (१९८७) गज = हाथी। पायक = पैदल। (१९८८) दिनकर = सूर्य। लुपो = छुपा।

भिडें परस्पर दोऊ जने। जा जीते ता राज हि भने।
मंत्री दुहू विचारी जिसी। निज निज नृप सो भाषी तिसी १९९२
मानी दुहू राज सुख लहो। वीरदवण तब ऐसे कहो।
आवो हम तुम भिरें पचार। जाको राज लेय सो मार १९९३
यह वचन कोटीभट सुनों। सुगुणमान यों मनमें गुणों।
वीरदवण भाषा शुभ चई। यह पुन बात भली अति भई ॥१९९४
सुन श्रीपाल फूलियो गात। बोले वीरदवण सुन वात।
अज हूं जा तूं कहूं,बचाय। राज परायो दे छिटकाय ॥ १९९५
मैं तोहे पिता बराबर गिनुं। कहा आपने हाथ ही हनुं।
सुन कर वीरदवण रिस करी। मन में कोप वात उच्चरी ॥ १९९६
श्रीपाल तूं अजा कुमार। जानत नहीं झूझ व्यवहार।
जब रण झूझिय तह चित चाहि। काको पिता पूतको काहि१९९७
मैं तू पहले ही वरजियो। मानी नहीं आय गरजियो।
अब के डर पै कहां सिराय। मो पै तू किम जीवत जाय॥ १९९८
यह सुन कोटीभट रिस भयो। ताहि कोप कर उत्तर दियो।
वीरदवण देखो जिय जाय। तो सम अवरन मूर्ख काय ॥१९९९
पर रमणी सो मांडो आर। परवश होय जो काढै गार।
पराधीन जो भोजन लहे। ज्ञान हीन जो तन को दहे ॥ २०००
परधन ऊपर सुख व्योहरे। विसहर सो मित्रताई करे।
भामन को जो करे विसास। बैरी भय वस करे उल्हास॥ २००१
सुरत कथा सब ही सो कहे। संपति मय जो परवश रहे।
वित विन देन कहे जो दान। गणिका के संग राखे प्राण ॥२००२

(१९९६) हनौं = मारो। रिस = गुस्सा।(२००१) भामन = स्त्री। विसास = विसाह।
(२००२) वित्त = धन।

सत्य जो रहे कुशीले संग। शुभ मति रहे जो पीके भंग॥
पद पद पंडित मारे गाल। मान सरोवर तजे मराल॥२००३॥
वेश्या होय लाज मन धरे। जुवा खेल सांच उच्चरे॥
पर विभव पाय ललचाय। मूरख इनतें अति पछिताय॥ २००४
यह सुन वीरदवण क्षितराज। सीस नवायो उपजी लाज॥
चहुंधा चित रोस अति भयो। दुहू कोप कर धनु कर लयो२००५
ज्यूं बाहूवलि भरत चक्रेश। दुहूं ने कीनो झूझ अशेश॥
जैसे जिन रतिपति सो लरो। ज्यूं लछमन रावण सो भिरो॥२००६
जैसे भीम भिरो गज दन्त। जरासिंध सो कमलाकन्त।
ज्यूं अर्जुन अर करण झुझार। तैसे वीरदवण श्रीपार॥ २००७
धन हर चक्र खड्ग तलवार। गदा शक्ति दुहू लई पचार।
मुदगर क्रांत लयो परतार। दुहूं बराबर आई हार॥ २००८
तब ये कोप चढे दोऊ राय। भिडे मल्ल जो दोऊ धाय।
बांथक बांथकरे दोऊ वीर। लोटे परे गिरे दोउ धीर॥२००९

४१—वीरदवन को जीत श्रीपाल का राजकरणा

ऐसे बहुत वेर जब भई। श्रीपाल को अति रिस चई।
ताके दोनों पकरे पाय। अति आतुर ह्वै लयो उठाय॥ २०१०
धरती पटकन लागो जवै। जय जयकार कियो सुर तवै।
कुसममाला नाखी ता गरे। इन्द्र आदि सब यों उच्चरें॥ २०११

(२००३) मराल=हंस।
(२००५) क्षितराज=पृथ्वी का राजा। धनु=कमान। कर=हाथ।
(२००६) रतिपति=कामदेव। (२००७) कमलाकांत=नारायण।
(२०१०) रिस=गुस्सा। चई=बढा। (२०११) कुसम=फूल।

तू तो दयावन्त है राय। या मूरख को दे छिटकाय।
यह सुन छाड दियो हर षाय। लागो कहन बात विहसाय॥२०१२

वीरदवण उवाच

तेरो पुत्र राज ले घनों। मैं परखो बल अब तोतनों।
सब जग में जाकी परशंस। तोसे चहियें हों इस वंश॥ २०१३
वीरदवण यह भणियो जाम। श्रीपाल सुन विहसो ताम।
लागो कहन बात सुन तात। तोको धरी सीकाकन सात॥ २०१४
कित ते जननी मारी भार। अपजस मही पर लहो अपार।
अज हों छाड गेह को काम। ले जिनदीक्षा अरु जिननाम॥२०१५

वीरदवण उवाच

सुनहु कवर मो जुग तो येह। तुम को राज देहूं कर नेह।
बहुरो दीक्षा लेहूं जाय। भव सुख सयल देहु छिटकाय॥ २०१६
यह सुन श्रीपाल सुख भयो। चावरंग दल संगह लयो।
भेरी मृदंग तूर सहनार। जय जय शब्द भयो अनिवार॥ २०१७
विरदावली बोलें वहु भट्ट। याचक दीजे हय गय पट्ट।
अति आनन्द भयो तिह काल। पुर प्रवेश कीनो श्रीपाल॥२०१८
घर घर सब ही मंगल भयो। हरषित गेह पिता के गयो।
तहां सिंहासन रत्नन जरो। कंचन को राजत है खरो॥२०१९
कंचन कुम्भ खीर जल नहाय। हरषित ता पर बैठो जाय।
आपन वीरदवण नर ईस। बांधो पट्ट कोटीभट सीस॥२०२०
कियो तिलक आपन कर साज। जय जय भाष दियो तब राज।
नारी गावें मंगलचार। राज तवै बैठो श्रीपार॥ २०२१

(२०१३) परशंस (प्रशंसा) = स्तुति। (२०१५) अपजस = निन्दा। मही = जमीन
(२०१६) जग = योग्य।

वीरदवण उवाच

सुन हो श्रीपाल धरधीर। राज लक्ष भुञ्जो वरवीर।
दुःखित जन कीजो प्रतिपाल। याचक जन को दीजो माल २०२२
परजा को प्रतिपाल करेह। काहू भूल दुःख मति देह।
तब उदास भयो मन काय। परिगह सकल दिया छिटकाय २०२३
नगर लोग में बहु सुख भया। वीरदवण दीक्षा मन छयो।
घर पट्टणपुर पट्टण सर्व। छिन में छाड दियो तिन गर्व ॥२०२४
श्रीपाल सों क्षमा क्षमाय। सो बन माही पहुंचों जाय।
तहां जिनवर को लीनो नाम। वस्त्राभरण उतारो ताम ॥२०२५
पंच मुष्टि सिर लोचन करो। राग द्वेष दऊ परिहरो।
पंच महाव्रत मांडे सार। विषय कषाय सकल तिन डार ॥२०२६
तेरह विधि चारित्र पालंत। एकाकी गिरि बन निवसन्त।
मास दिवसमें भोजन करे। आठ बीस गुण पोषण धरे॥२०२७
चेतन पद तिन लीनो चाहि। केवल ज्ञान ऊपजो ताहि।
बहुत धर्म को कियो प्रकाश। आठ कर्म को कीनो नाश॥ २०२८
तन परिहर सो मुकत हि गयो। निर्भय अलख अगोचर भयो।
नवमी संधि पूरण भई। मूल देख भाषा वरणई॥ २०२९

दोहा

राज सुख कीरत अचल, होय मिटे सब सल्ल।
मुकति जाय मर के सो नर, पुण्य करे परिमल्ल ॥२०३०

छन्द त्रिभंगी

इति श्रीपाल चरित्रे महापुराणे भव्य संग मंगल करणं
बुधजनमनरंजन पातकगंजन सिद्धचक्र विधि दुख हरणम्।

(२०२७) एकाकी = अकेला। (२०३०) कीरत = जस। सल्ल = दुःख

त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्ल कृतं
सह राज विछंडो भव भ्रम खंडो वीरदवण सो मुकति गयं।
श्रीपाल नरेसो महापरमेसो चंपापुर सा राज कियं। २०३१

चौपाई

वीरदवण सों मुकतिह गयो। परम सिद्ध सिद्धालय भयो।
श्रीपाल भुञ्जे बहुराज। सिद्धचक्र को फल शुभ साज॥ २०३२
सर्व जीव की रक्षा करे। पुण्य भाव सब जिय में धरे।
मनमें परिग्रह संख्या धरो। अवर विभूति सवै परहरी॥ २०३३
आठ सहस्र अंतेवर संग। वीस सहस हाथी मय मंग।
वीस लाख राखिया तुरंग। सोलह लाख सु रथ वरचंग॥२०३४
पट्टन संख्या कही न जाय। बहुत रिद्धको कह बढाय।
संख्या सकल वरण के कहूं। कहत कथा कछु अंत न लहूं २०३५

दोहा

अशुभ कर्म भयो दूर सब, शुभ प्रगटियो अखंड।
राज करे विलसे विभव, श्रीपाल बलिवंड॥२०३६
कीनो यश भुवलोकमें, दुर्जन को उर सल्ल।
सकल जीव रक्षा करण, श्रीपाल भुविमल्ल॥२०३७

चौपाई

सत्य राज्य पाले धर धीर। दुष्ट जनन मर्दन वरवीर।
दयावन्त नहि ताहि समान। कोऊ मेट न सकहि आन॥२०३८
एक छत्र सो भयो नरेश। जाके परिग्रह बहुत अशेश।
द्वीपन ते नृप आये साथ। बहु सुख दे सब को नरनाथ॥२०३९

(२०३४) सहस्र = हजार। तुरंग = घोडे। (२०३७) उर = दिल। भुवि = जमीन में
(२०३८) मर्दन = नाश करने वाला। (२०३९) अशेश = सर्व।

तिन सो नेह कियो सनमान। मानें श्रीपाल की आन।
सेवक व्है अपने घर गये। अति निर्भय सब ही ते भये॥२०४०
भरत चक्रधर पाली जिसी। राजनीति पाली है तिसी।
जिनवर चरण लाइयो चित्त। अतुल सुख सो भुञ्जे नित्त॥ २०४१
यह विधि राज करे नरनाह। सब ही जन मन भयो उछाह।
दीन दुखित जन पोषे प्रान। कोटि टका नित दीजे दान॥ २०४२
बहुत दिवस यों बीते जाम। रहो गर्भ सुन्दरी के ठाम।
मैनासुन्दरी के मन चाव। भयो दोहरा निर्भय भाव॥२०४३
दान पुण्य पर राखे चित्त। आराधे जिन नाम पवित्त।
पुण्य दोहरा उपजो इसो। श्रीपाल सब पुरियो तिसो॥२०४४
पूरे भये जबैं दश मास। जिन गुण गावत सुख विलास।
भयो पुत्र सब लक्षण सार। कुल शशी हर उगियो जुकुमार २०४५
सब कुटुम्ब आनन्दित भयो। अतुल द्रव्य याचकजन दयो।
कहो जोतिसी सब सुख धाम। है धनपाल ही याको नाम॥२०४६
महीपाल ता पीछे भयो। तीजो पुत्र देवरथ जयो।
चौथो भयो महारथवरी। चार पुत्र मैनासुन्दरी॥ २०४७
मंजूषा जाये सुत सात। दुर्जन भंजन जिन के गात।
पांचपुत्र जाये गुणमाल। अति वलिष्ठ अरु गुणही विशाल २०४८
सब सुन्दरिन सुत उर धरे। एक एक थे गुण आगरे।
कोटीभट सब सुत वरणए। बारा सहस्र आठ से भए॥२०४९

---

(२४१) अतुल = जिस की तुलना नहीं।
(२०४३) दोहरा = गर्भ के होने पर स्त्री की इच्छा।
(२०४४) पुण्य (शुभ) = पवित्र। (२०४५) शशी = चंद्रमा।
(२०४८) सुत = पुत्र। बलिष्ठ = बड़े बल वाले।

बाढें दिन दिन सर्वें कुमार । और ही रूप और व्यवहार ।
मंडलेश श्रीपाल नरिंद । दीसे मानों दूसरो इंद ॥ २०५०

दोहा

जातें ऐसो फल भयो, मिटो अशुभ सब कर्म ।
यह जान नरलोक में, पाले जिनवर धर्म ॥ २०५१

चौपाई

धर्म एक त्रिभुवन में सार । धर्म कुरीति बिनाशन हार ।
धर्म एक सब सुख को कन्द । धर्म एक भंज हि दुख दण्ड ॥२०५२
धर्म पसाय सुरग पद जुरे । धर्म पसाय सहाई करे ।
धर्म पसाय चमर सिर ढुरे । धर्म पसाय छत्र सिर धरे ॥२०५३
धर्म पसाय रूप अधिकार । धर्म पसाय सेवें नर पार ।
धर्म पसाय सुयश विस्तरें । धर्म पसाय सकल अघ टरें ॥ २०५४
धर्म पसाय शोभितनर होय । धर्म पसाय जाय गद जोय ।
धर्म पसाय मिले वर नार । शशिबदनी रंभा उनहार ॥ २०५५
अमृत वयणी सुखकी धाम । शील धुरंधर सेवें काम ।
धर्म पसाय होय सुत घणे । जिन की शोभा कहत न बणे ॥२०५६
धर्म पसाय सेज सुख बसे । धर्म पसाय काल नहि डसे ।
धर्म पसाय न बैरी लरै । धर्म पसाय छेद नहि छरै ॥ २०५७
धर्म पसाय सिंह वश होय । धर्म पसाय जाय गद सोय ।
धर्म पसाय ज्वाला न जरे । जो प्राणी आतुर हो परे ॥ २०५८

(२०५२) पसाय = (प्रसाद) कृपा ।
(२०५४) नरपार । (नरपाल) राजे । अघ = पाप ।
(२०५५) शोभित = शोभा वाला । गद = रोग । रंभा = अप्सरा ।

धर्म पसाय रोग मिटजाय । धर्म पसाय परे सब पाय ।
धर्म पसाय न मूसे चोर । धर्म पसाय न व्यापे घोर ॥ २०५९
धर्म पसाय होय जल पार । नदी सरोवर सागर वार ।
धर्म पसाय न ह्वै है घाव । धर्म पसाय मिटे खलभाव ॥ २०६०
धर्म पसाय देव वश रहे । धर्म पसाय भली सब कहे ।
धर्म पसाय उच्चाट न लगे । धर्म पसाय देख रिपु भगे ॥ २०६१
धर्म पसाय सुजस सभ लहे । धर्म पसाय शोक सब वहे ।
धर्म पसाय मोह मंद होय । माया मोह निवारे सोय ॥ २०६२
धर्म पसाय देय बहु दान । धर्म पसाय मिटे अवसान । २०६३
धर्म पसाय पंचव्रत धरे । भव के दुःख सगरे परिहरे ।
धर्म पसाय होय शुभ चित्त । आराधित जिननाम पवित्त ।
धर्म पसाय कर्म को नाश । धर्म पसाय ज्ञान परकाश ॥ २०६४
धर्म पसाय बहुत को कहे । प्राणी मुकति वधूवर लहे ।
इंद्र आदि सब सेवें पाय । बहुरि न भव में आवे जाय ॥ २०६५

दोहा

प्राणी सुनो चरित्र सब, अरु देखो जिय जोय ।
धर्म हितू संसार में, जातें शिव पद होय ॥ २०६६

चौपाई

एक ही दिन श्रीपाल नरेश । बैठो सिंहासन अलवेश ।
वाम अंग मैनासुन्दरी । रूपवन्त सब ही गुण भरी ॥२०६७
ढुरें चमर सोहे सिर छत्त । हर्षित नित्त महा शुभचित्त ।
आगे नाटक नचें अपार । गीत विनोद होय अधिकार ॥ २०६८

(२०५८) घोर = भयंकर नरकादिक । (२०६१) रिपु = शत्रु ।
(२०६५) भव = संसार । (२०६६) शिवपद = मोक्ष ।

बुधजन भाषें महापुराण। सुनिये ताको अर्थ वषाण।
कस्तूरी चोवा अरु मेद। कपूरादि वास के भेद॥ २०६९
कुङ्कम सो मरदें सब अंग। चहुंधा फैला वास अभंग।
इस विध आसन बैठा जाम। बनमाली सिरणायो ताम॥२०७०
ऐसे भाषो प्रण कर सेव। भो भूपति चूड़ामणि देव।
ये फल फूल छहूं ऋतु तणे। जिनकी शोभा कहत न बणे॥२०७१
उपबन सब परफुल्लित भयो। देखत दुःख मेरो सब गयो।
अब आगमन भया मुनि तणों। ता शोभा कैसे कर भणों॥ २०७२
यह सुन श्रीपाल तूठियो। सिंहासन तें उठ हर्षियो।
सात पैंड उतरो तब सोय। परोक्ष नया मन में सुख होय॥ २०७३
वस्त्राभरण उतारे सबै। बनमाली को दीने तबै।
फुनि बैठो रायन को राव। सेन समारण उपजो चाव॥ २०७४
अति उदार ताका चित्त भयो। बहु द्रव्य बनपाल हि दयो।
आनन्द भेरी दिवाई तबै। नगर लोक तिन लीनो सबै॥ २०७५
चवरंग दल चालो अभंग। अंतेवर सब लीनो संग।
ते परफुल्लित चले विशाल। जिन गुण गावत आछी वाल॥२०७६
करे संग सब मंगलाचार। बहु परिगह चलियो अधिकार।
पंथ न सूझे छिपियो भान। श्रीपाल मनमें रंजान॥ २०७७
ऐसे दल सों पहुंचो तहां। उपबन महामनोहर जहां।
कुसमित कुसम बृक्ष अधिकार। जह तह वास लेत अलिमार॥२०७८

(२०६८)बुधजन = पंडित लोग। वास = सुगंधि।(२०७०) कुंकुम = केसर। (२०७१) प्रण = प्रणाम। ऋतु = वसन्त आदि छः मोसमें (२०७३) परोक्ष = आखों केपरे। नयो = नमस्कार करी।(२०७६)वाल = बाला (जवान स्त्रियें)(२०७७)भान = सूरज (२०७८) कुसमित = फूलों वाले। अलिमार = भौंरो की पंक्ति।

मंदपवन अति शीतल बहे। अति सुवास मन को दुख दहे।
कछू फ द्रुम मोरे कछू हरे। कछू रूप फूले कछू फरे॥ २०७९
ऋतु वसन्त सोहन बन जिसो। मुनिवर पुण्य भयो सो तिसो।
द्रुमअशोक सुन्दर ता माहि। ताकी अतिसुन्दरशुभ छाहि॥ २०८०
सब सुख कर श्रीपाल है दीठ। ताको लागो मन को इठ।
ता तर शुद्ध चित्त दुःख हंत। मुनिवर बैठा महा महंत॥२०८१
देखो श्रीपाल परमेश। मनमें उपजा सुख अशेश।
एक परमपद जाने सोय। चेतन गुण आराधे जोय॥२०८२
राग द्वेष न जाके चित्त। संयम केवल पाले नित्त।
तीन गुप्त पालन परमथ। रत्न त्रय धारण समरथ॥२०८३
तीन शल्ल मेटन शिवकन्त। ज्ञान धरण जग बलभ सन्त।
भव जल तारण तरण जिहाज। पंच महाव्रत धर मुनिराज २०८४
मकरध्वज खंडा धर भाव। छहों द्रव्य भासन गुणराव।
आठ कर्म माया मद हरण। आठ सिद्ध गुण धारण धरण॥ २०८५
नव विधि ब्रह्मचर्य प्रतिपाल। दशलक्षण गुण धरण दयाल।
एकादश प्रतिमाजीय जाहि। द्वादशांग भाषन जो आहि॥ २०८६
तेरा विधि चारित्र प्रमान। पाले जो व्रत धरण सुजान।
देखत उपजे हर्ष विशाल। ऐसो मुनि बन्दो श्रीपाल॥२०८७
तीन प्रदक्षिणा दीनी ताय। नमस्कार कर लागो पाय।
आपन अंतेवर परवान। नगर लोक संयुक्त समान॥ २०८८
बैठो ताहि चरणके पास। अति आनन्दित भयो उल्लास।
सबने मिल स्तुति कीनी जवै। धर्म वृद्धि मुनि दीनी तवै॥ २०८९

(२०७९) द्रुम = वृक्ष। (२०८३) द्वेष = दुश्मनी। (२०८४) शिव = मुक्ति।
(२०८५) मकरध्वज = काम देव। धरण = जमीन। (२०८७) हर्ष = खुशी।

बहुरो नमस्कार कर राव। पूछन लागो मन धर भाव।
भो मुनिवर करुणा वरवीर। कहो धर्म विधि गुण गंभीर ॥२०६०
जातें जामन मरण न होय। जाते भय न शरीर है कोय।
दुर्गति पंथ निवारण हार। ऐसो धर्म कहो शुभसार ॥२०६१

मुनीश्वर उवाच

यह सुन मुनि जंपै शुभकन्द। सुनो राय निज कुलकेचन्द।
धर्म विधि मैं भाषूं तिसी। श्री जिन आपन भाषी जिसी ॥२०६२
बडो धर्म दशलक्षण जान। गुण अनन्त किम कहुं बखान।
अरु सम्यक् दर्शन शुभ जोय। धर्म मूल है प्रथम हि सोय ॥२०६३
अतुल लच्छ समकति तें सर्व। समकित तें लहिये बहु दर्व।
समकित तें तीर्थंकर होय। समकित ते अनन्त गुण जोय ॥२०६४
समकित सर्व दोष दुख नाश। समकिन सब ही सुख को वास।
समकित बिन दुःख बाढै तवे। समकित बिन भवभव दुखसवे२०६५
समकित गुण जाके मन आय। सब ही गुण आलंबें ताय।
जप तप संयम ब्रत अरु पुण्य। समकित एक बिना सब शून्य २०६६
अर तूं सुन श्रावक ब्रत राय। संक्षेप हि मैं कहूं समझाय।
मनबच काय विशुद्धो चित्त। जीव हिभय नहि दीजे मित्त ॥२०६७
थावर बिन कारण टारिये। प्रथम अणुव्रत यह पारिये।
सांचो मुख सांचो जिय रहे। मिथ्या वचन भूल नहि कहे ॥२०६८
अलियों बोल बोलिये जवै। जीव विरोध न उबरे तवैं।
पुर पट्टण मारग में जाय। परधन दृष्टि परे जो आय ॥ २०६९

(२०६१) जामण = जन्म।(२०६४) समकित = सम्यक्त्व (श्रद्धा)। (२०६६) आलंबें = आश्रय लेवें। शून्य = सूने। (२०६७) संक्षेप = थोडे से बहुत कहना। (२०६७) काय = देह। (२०६८) मिथ्या = झूठ। (२०६९) दृष्टि = नजर।

लेय अदत्त न उत्तम लोय। तृण हि तणे सम देखे जोय।
कबहू न चोर संग जाइए। ताको हरो न धन लाइए॥ २१००
परदारा न देखिये नैन। मात वहन सम बोले वैन।
हय गय रथ अरु दासी दास। वस्त्राभरण और घर वास॥ २१०१
गाय भैंस और खेत वखान। इन संख्या कीजिये परवान।
पंच अणुव्रत कहे निरधार। और दया गुण जिय में सार॥ २१०२

॥ दोहा ॥

जो को पारे भाव धर, सुख भुंजे नर सोय।
भव दुःख सकल निकन्द के, मुकति श्रीफल होय॥ २१०३

चौपाई

पुन ते गुणव्रत सुन हो राय। दिश अरु विदिश ग्रामको जाय।
इनकी संख्या लेह जोय। एक प्रथम गुण जाने सोय॥२१०४
हीन म्लेछ बसत हैं जहां। कबहू भूल न जइये तहां।
पुण्य प्रभाव जहां नहि होय। जहां विवेकी लोग न कोय॥ २१०५
नखी मंजार स्वान जीव जिते। भोजन औसर तजिये तिते।
सण अरु लोह लाखअरु राल। महूव मैंन तिलकी भडसाल २१०६
यह उद्यम सब ही गुण हीन। अरु इन दंडन लेय परवीन।
प्रथम ही जिन चैत्यालय जाय। तब उद्यम आरंभो आय॥२१०७
कै प्रतिमा पूजे निज गेह। तब भोजन सो पाले देह।
उत्तर दिश सन्मुख शुभ थान। पालिक शयनकरे नर जान २१०८
कीजे सामायिक त्रिकाल। मूल मंत्र जपिये जु विशाल।
राग द्वेष दीजे छिटकाय। पंच परम गुरु चित्त गुणाय॥२१०९

(२१००) अदत्त = न दिया हुवा। तृण = घास। (२१०१) दारा = स्त्री।
हय = घोडे। गय = हाथी। (२१०६) मंजार = बिल्ला। औसर = वक्त

संयम तरुवर बैठे छांहि । शुभ भावना धरे मन मांहि ।
तिह आसन मांडे दृढसार । पौन जहां न लहे पैसार ॥ २११०
एक मास में पंचह वार । कीजे व्रत मन शुद्ध विचार ।
वस्त्राभरण रत्न अरु धाम । पान सुगंध भोग जे राम ॥ २१११
इंद्रिय पोषनके जो भाय । इन की संख्या कीजे राय ।
अैसी विधि से बाढै धर्म । नाशे सकल पाप अरि कर्म ॥ २११२
मुनि आर्जिका श्रावक बहु वास । अरु जे रोग लीनेजन पास ।
चार प्रकार दान जो देय । मन वंछित फल सो यह लेय ॥ २११३
द्वारापेषण करै निहार । जोलौं दोय पहिर परचार ।
करे सोध घर भीतर जाय । सोई जानो श्रावक लोय ॥ २११४
सर्व जीव करुणा राखिये । अमृत बोल सब सो भाषिये ।
जबलों अपनो कछु वसाय । जीव विराधित लेय छुडाय ॥२११५
निशल्य मरण कर भ्रमें विदेह । काल पाय पावे शिव गेह ।
यह बारहव्रत विधि प्रकार । या संसार माहि हैं सार ॥ २११६
कहे मुनिन्द सुनो श्रीपार । इतने धर्म बढे अनिवार ।
हरषो नृप यह सुनियो जबै । पणविवि के मुनि पूछो तबै ॥ २११७

दोहा

ज्ञान दिवाकर परम गुरु, गुण रत्नाकर जान ।
मोह भवांतर हं जिने, तैसे कहो बखान ॥ २११८

(२११०) तरुवर = वृक्ष ।(२१११) मास = महीना । आभरण = जेवर धाम = मकान राम = रामा (स्त्री) । (२११२) अरि = दुश्मन ।
(२११४) द्वारा पेषण = भोजन के समय द्वार में खडे होकर मुनिको देखना ।
(२११७) पणविवि = प्रणाम करके ।
(२११८) दिवाकर = सूर्य ।

चौपाई

कवन कर्म कर कोढी भयो। क्यों मैं सिद्धचक्र व्रत लयो।
किम मैं परो समुद्रह जाय। किमकर जलतिरयोनिकुताय॥ २११९
कौन कर्म स्वामी मो तणों। भांड विगोवो कीनो घणों।
कौन कर्म ते मिटियो सोय। यह संशय मेरे मन होय॥ २१२०

मुनीश्वरउवाच

यह सुन मुनिवर बोले तवै। सुन श्रीपाल कर्म निज सवै।
भरतक्षेत्र सब सुख निधान। जिस में कोट गांव परवान॥ २१२१
जामें रत्नसंचयपुर जान। बन उपबन कर शोभित मान।
तहां श्रीकंठराव बलिवंड। विद्याधर सो है परचंड॥ २१२२
विद्या जाने अति चतुरंग। कुल जल रुह सारंग अभंग।
तसु भामा श्रीमती सुजान। सव अंतेवर में परधान॥२१२३
अह निश पिय मन रंजन करण। रूपवंत शोभित मन हरण।
जैनधर्म पालन परवीन। पात्र हैं दान भक्ति अति लीन॥ २१२४
अन्य दिवस नृप ताहि समान। गयो जिनमंदिर मन कल्याण
महा मुनीश्वर बन्धो जाय। पुन ता ढिगबैंठो सुख पाय॥ २१२५
मुनि सुप्रसन्न भयो तिह वार। लागो भाषण धर्म विचार।
पुण्य पाप जैसो फल होय। कहा प्रगट राजा सों सोय॥ २१२६
सुन नृप मनमें हरषो जान। जैसो मुनिवर कह्यो वखान।
आनन्दो राजा घर गयो। जैनधर्म पालो सुख भयो॥ २१२७

(२१२३) भामा = स्त्री। परधान = मुखिया।
(२१२४) अह = दिन। निश = रात। रंजन = खुश करना।
(२१२५) अन्य = दूसरे।

बहुरो अशुभ उदय भयो आय। श्रावक ब्रत दीने छिटकाय।
यौवन मद श्रीमद भयो राव। भयो विकलको कहेवढाव ॥ २१२८
मिथ्या कर्म उदय भयो आय। सेवे मिथ्या गुरुके पाय।
कब हू जैनपंथ नहि जाय। मिथ्या ज्ञान सुने चित्त लाय ॥ २१२९
एक दिवस सात सै अंग। बन क्रीडा पहुंचो ले संग।
मुनिवर एक देखियो इसो। जाने चेतन गुण है जिसो ॥ २१३०
सहे परीषह बाईससार। मलिन देह क्षीणी अधिकार।
हिम पटलन सो रहियो छाय। रवि आकार न वरणी जाय॥२१३१
ध्यानारूढ शुद्ध मन धीर। देख योग ठाढो गंभीर।
ताहि देख तिन असुगन कियो। कोढी कोढी जंपन लियो॥२१३२
सायर में डरवायो सोय। जाको मन चल नेकन होय।
पुन करुणा मन उपजी आय। जल में तें निकसायो धाय॥२१३३
कछू पाप तो बंधो गयो। निज मंदिर सो आवत भयो।
अन्य दिवस बन गयो तुरंत। देखो तिन मुनिवर आवंत ॥ २१३४
परम तत्व जाने मुनिराव। राग द्वेष छाडो धर भाव।
धीरवीर तप क्षीणों अंग। भरो धूल सों दीसो भंग ॥२१३५
रत्न त्रय ब्रत धारे चित्त। मास एक दिन हार निमित्त।
आवत सो जो नगर मझार। देखराव दुःख कियोअपार ॥ २१३६
बोल्यो मुनिवर सों तिह वार। तें कित खोई लाज गंवार।
नांगो भयो फिरत बेकाज। काया मैली अति बेसाज ॥ २१३७
मार मार कर उठियो ताहि। असि वरले सिर काटो याहि।
बहु उपसर्ग तास कों करो। बारम्बारभ्रष्ट उच्चरो ॥ २१३८

(२१२८) छिटकाय = छोड दिये। यौवनमद = जुवानीका अहंकार। श्री = धन।
(२१३१) छीणी = सूकी। हिम = वरफ। पटल = समूह (ढेर)। रवि = सूरज।
(२१३३) करुणा = दया। (२१३६) मास = महीना। हार = आहार (भोजन।

अति उपहास कियो ता तणो । कविजन कहे कहां लो भणो ।
बहुरो कृपावंत अनि भयो । ताहि बरज आगे चल गयो ॥ २१३९
महा पाप सो बांधो गयो । कोऊ श्रीमती सों यह कहो ।
अजुगत बात करत तुम कंत । मुनि निन्दत डोलत विहसंत॥२१४०
कबहू जल में देत डराय । भांति भांति उपसर्ग कराय ।
यह सुन राणी विलखी भई । यह बात मन सोचन लई ॥२१४१
कौन पाप यह करत गंवार । जानत नहीं धर्म व्यवहार ।
महा कुसंगति मोको भई । हा विधि कर्म कहा गति भई ॥ २१४२

दोहा

यह चिन्तत राणी हिये, मलिन भई विलषाय ।
निन्दा अपनी करत सो, पौढ रही मुरझाय॥२१४३

चौपाई

राजा आय गयो तिहवार । पहुंचो सो राणी ढिगसार ।
देखे तो तिय विलषी आहि । लागो सकुचत पूछन ताहि ॥ २१४४
प्राणपियारी हे वरनार । कारण कहासो कहो विचार ।
हंसे न बोले रही मुरझाय । राणी कया विरतन्त सुनाय ॥ २१४५
बोली एक चेटका तवें । राजा बात सुनो या अवें ।
तुम श्रावक व्रत दीनो छांड । तुम मुनिवर निन्दे मन मांड ॥ २१४६
अरु जलमें दीने डरवाय । कर उपसर्ग अरु लिये कढाय ।
काहू कहो राणी सो आय । तातें पौढ रही मुरझाय ॥ २१४७

(२१४०) अजुगत = अयोग्य ।
(२१४१) डराय = फैंकवाना । भांति = अनेकतरहके । (२१४३) पौढ = बेचैन हो पड़ जाना । मुरझाय = कुमलाय कर । (२१४४) तिय = स्त्री ।

यह सुन राव सलज्जित भयो। अपनी चूक जान परणयो।
बारबार जंपै हे त्रिया। मैं पापी अकर्म सब किया॥ २१४८
मोतें अशुभ उदय भयो आय। सेये मिथ्यागुरु के पाय।
ताकी सीख नीके सुन लई। हमरी सुमति कुमति अतिभई २१४९
मैं पापी पातिक को मूर। मैं गुणहीन महा जड कूर।
मैं अभिमान महामद भरो। देखत अंधकूप में परो॥ २१५०
तोसों कहा कहूं मैं भाख। नरक पंथ से ले मुहिराख।
राणी वचन सुने ये जबैं। दयावन्त है बोली तबैं॥ २१५१
स्वामी तुम अजुगत सब करी। धर्म कथा मनसे विस्सरी।
मुनिवरको तुम अतिदुख दियो। धर्म अधर्म भेद नहीं कियो २१५२
अब तुम सुनो धर्म की रीति। बहुत भाव मन राखो प्रीति।
जिनशासन व्रत निन्दे जोय। भवमें चहुंगति भ्रम है सोय २१५३
जो पापी निन्दे बहुभाय। सो निश्चय कर नरक हि जाय।
पंच प्रकार से देखे दुःख। किंचित् कबहू न पावे सुख॥ २१५४
सो प्राणी पीडिये दुखाय। कांपित शूली दीजे जाय।
पुन खल्ल में धरिये सोय। मूलमेट जब ताको होय॥ २१५५
बहुरो उपजे ताहि शरीर। बहु दुःख पावे प्राणी कीर।
संडासन तन तोर मार। निन्दे ताहि देय दुख गार॥ २१५६
गाल रांग ताको मुख भरे। कुन्सघाल मुह ऊंचो करे।
दह दहंत सो पुतरी लाय। भेटावे गिर कंठ लगाय॥ २१५७
परतिय रमण लेह सुख येह। भोग करो यासों कर नेह।
कछु जीव मत करहु संताप। सो कहि जान किये तें पाप २१५८

(२१४८) सलज्जित = शरमिंदा। परणयो = धर्म पलट गया। (२१४९) कुमति = खोटी बुद्धि। (२१५०) मूर = मूल। (२१५३) भव = संसार। (२१५६) कीर = तोता।

तैं जिनव्रत मेटो नहि डरो। तैं परधन हरष है हरो।
तें मुनिवर निन्दे अनिवार। बिन कारण दुःख दिये अपार २१५९
तैं परिहरो शीलव्रत जान। तू केवल पापन की खान।
यह दुःख भुंज जाहि संसार। कर हि धर्म सुख इछ गवार २१६०
सुन स्वामी नरकी दुःख इसो। तासों मैं जु पयासो जिसो।
फेर भाव कछु पुण्य उपाय। मुनि पै जिनवर व्रत ले जाय॥२१६१
यह सुन राजा त्रिय वच मान। पहुंचो जाय जिनेश्वर थान।
तहां मुनीश्वर देखो धीर।सुखकीनिधिअरु गुणह गंभीर २१६२
ज्ञान धरण मन शुद्ध उदार। बन्दे चरण कमल युग सार।
जंपै राव जोर द्वय हाथ। मैं पापी अति सुन हा नाथ॥ २१६३
बहुत पाप मैं कियो अविचार। नरक पडत तुम लेह उबार।
धर्म पयास पंच व्रत धरण। अब हू आयो तेर शरण॥ २१६४
यह सुन मुनिवर भयो दयाल। सिद्धचक्र व्रत ले भूपाल।
सुनतें होय पाप को छेद। ताकी युक्ति सुनो यह भेद॥२१६५
कातिक फागुण मास असाढ। श्वेतपक्ष सब सुख को वाढ।
अष्ट दिवस उपवास करेय। वसुविधि सिद्धचक्र पुजेय २१६६
अंतह निश जागरण करेय। दान सुपात्रह सो पुन देय।
वसु दिन शीलव्रत पारिए। भेदाभेद चित्त धारिए॥ २१६७
फुन उद्यापन कर धरभाव। करे प्रतिष्ठा आठ बनाव।
अथवा शांतिक बहु विधि करे। श्री जिन पूज करे भव हरे २१६८
अर्जिका साडी दीजे दान। पुस्तक दीजे मुनिवर मान।
भृंगार तार वर दीजे इते। आठ प्रमाण कहे हैं जिते॥ २१६९

(२१६२) त्रिय = स्त्री। (२१६३) युग = दोनों। द्वय = दोनों।
(२१६४) उबार = बचाव। (२१६६) श्वेत = चान्दना। (२१६९) साडी = धोती।

श्रीगणधर भाखो व्रत येह। करे सुख भुंजे शिव गेह।
यह सुन राव जिनेश्वर बन्द। त्रिय संजुत्त गृह गया अनंद २१७०
गहो व्रत मन वच अरु काय। पूजे सिद्धचक्र सुख दाय।
तीन धार सो दे परवान। जनम जरा नाशन सुख खान॥२१७१
कुंकम अरु कपूर वरगार। चंदन पूज करे सु निहार।
अरु अखंड अक्षत बहुलेय। उज्जल पुंज मनोहर देय॥ २१७२
अरु केवरो केतकी माल। चंबेली अरु बेल गुलाल।
चंपक जुही मालतीसार। अति सुगंध अंबुज मंदार॥ २१७३
नाना विधि के पहुप अपार। पूजे भर अंजुरि शुभ सार।
षट् रस नैवेद्य शुभ जोय। बहु पकवान चढावे सोय॥ २१७४
दीपक पूर धरे परजार। बहु कृष्णागर खेवें वार।
नानाविधि फल पूजे भाव। जलगंधाक्षत पुष्प बनाव॥ २१७५
नैवेद्य दीपक अरु धूप। सुन्दर फल तहां धरे अनूप।
देय अर्घ पूजे शुभ चित्त। सिद्ध यंत्र आराधे नित्त॥ २१७६
पुन उद्यापन कर धर भाव। करी प्रतिष्ठा धर्म सहाव।
अंत अवस्था आई जबै। सन्यासह तन छोडो तबै॥ २१७७

दोहा

दिव्य देह सुर्गा भयो, भुंजो सुख अधिकार।
आयु भुक्ति चय आइयो, सो तू है श्रीपार॥ २१७८

चौपाई

सुन श्रीमती अणुव्रत पाल। पहुंची स्वर्ग देह तज नार।
तहां ते चय आई गुणभरी। सोये है मैनासुन्दरी॥ २१७९

(२१७१) जरा = बुढापा। (२१७२) अखंड = सबूत। अक्षत = चावल।
(२१७७) तनु = शरीर। (२१७८) दिव्य = देवता रूप। आयु = उमर।

अरु ये देख सातसै अंग। पूर्व मित्र जु रहे ते संग।
मुनिवरको तैं कुष्टी कहो। तातें कुष्ट रोग तें लहो ॥२१८०
तैं मुनि जल बोडन उच्चरो। तातें तू सागर में परो।
दयावन्त व्है काढो सार। ताही से तैं पायो पार॥ २१८१
जो तैं भृष्ट भ्रष्ट सो चयो। तातैं भांड विगोवो भयो।
असिवर सो मुनिमारण कहो। तातें त्रास महा तैं लहो ॥ २१८२
पूर्व भवांतर सुनियो राय। सुख दुख यह भरम छिटकाय।
यह सुन मुनिवन्दो श्रीपार। व्रत आचरो सुख अधिकार॥ २१८३
आदि अंत पूर्व भव शरण। दुख विनाशन शुभगतिकरण।
वारम्बार निवायो सीस। घर आपने गयो नरईस॥ २१८४
सिद्धचक्र आराधे चित्त। जैनधर्म प्रतिपाले नित्त।
पुत्र कलत्त मित्र सब ठान। करे राज चक्रेश समान॥ २१८५
इच्छत काम भोग रस लेय। मैनासुन्दरी मान धरेय।
नाटक नचें गीतध्वनि होय। सत्य राज पारे नृप सोय॥२१८६
दुर्जन वश कीने बलिवंड। दुष्टन जन लेवे बहु दंड।
आठ सहस्र सुन्दरि भोगवे। जा प्रताप महीमंडल नवे॥ २१८७
बांचे वुधजन काव्य पुराण। दिन दिन सुनिये अर्थ वखाण।
इंद्र तुल्य सुख जाय न गिणो। महाराज सबही विधि वणो २१८८
बहुत काल गयो यह रीत। वसुधा सकल करी वश जीत।
गज गुंजरे महा मदमंत। हय हींसे देखिये अनंत॥ २१८९
सेवें पाय बहू नरपाल। नित प्रति आवें सरस रसाल।
गुणियन राखे बहु दरबार। पावें हय गय विभव अपार॥ २१९०

(२१८२) असिवर = तलवार। त्रास = भय। (२१८५) कलत्त = स्त्री।
(२१८८) वसुधा = जमीन। गज = हाथी। हय = घोडे।

४२—श्रीपालका दीक्षा ले तप करना

एक हि दिन आसन विहसंत। चहुं ओर राजा जोवंत।
उलकापात भया अति जाम। देखत ही चित्त चेतो ताम॥ २१९१
जो चिंतत यह गयो विलाय। त्योंही मो विभूति सब जाय।
राज्य भोग धन यौवन गर्व। ऐसे ही मो जै हैं सर्व॥२१९२
यह मन में चिन्तवे नरेश। सो उदास मन भयो अशेश।
धन्यपाल सुत लियो बुलाय। कहे राज ले सब सुख दाय॥२१९३
सत्य राज पालो धर धीर। हम निज काज सवारें वीर।
यह सुन विलखो भया कुमार। यह वचन तुम कहा असार २१९४
बालपने सुख सक्यो नहि जान। इयसुख गयसुख लियो न मान
होय निचिंत न कीयो भोग। राज भार मैं नाहीं जोग॥ २१९५
तुम बिन राज्य न मोपै होय। महा दुःख को दीखे जोय।
तासों राव कहे सुन धीर। कुल मारग प्रगटो वरवीर॥ २१९६
पुत्र न गहे पिता को राज। कहां सरो तिन जाये काज।
जो सुत पिता सुख नहिं देय। अरु कुटुम्बको भार न लेय २१९७
अरु जे कुल कलंक नहि हरे। ते सुत मही भार अवतरे।
तूं तो सब लायक गुण सार। तुरत हि लेहू राज्यको भार २१९८
यह सुन कुवर विचारो चित्त। राज भार तब लियो पवित्त।
राय हरषित सुत को सुख चाहि। राजपट्ट सिर बांधो ताह २१९९
कहे राय सुन कुवर सुजान। नीके सीख लेहू प्रमान।
शील भार जो अब हि बन्ध। पर रमणी देखो मत सन्ध॥ २२००

(२१९२) यौवन = जुवानी। (२१९८) मही = जमीन।
(२२००) पर रमणी = पराई स्त्री।

मिथ्यादर्श न देखे जाय। लोचन सफल सुदर्शन पाय।
विषय राग कबहू नहि सुने। मिथ्या कथा न मन में गुणे।२२०१
अरु कबहू न सुने पर पीर। तेई श्रवण सफल सुन वीर।
नानाविधि के पुष्प अपार। जिनकी अति सुवास अधिकार २२०२
तिन तें प्रमुदित होय सुचित्त। नासा सफल जानिये मित्त।
कबहूं हीन बात नहि चवे। कहे न गुण अपने मुख कवे॥२२०३
स्वाद प्रमाद नमाने जोय। रसना सफल मानिये सोय।
सुरत संग नहीं वंछे चित्त। इन्द्रिय सफल महा शुभ वित्त २२०४
दयाभाव मन में राखिये। मधुर वैन सब सो भाषिये।
न्याय पंथ पेलिये न जान। तजिये नहीं धर्म की बान॥ २२०५
सुख रहीये माया के पास पुण्यवन्त सो रहे उदास।
पिशुन बात सुनिये नहि कान। पाप वैन भाषे नहि जान २२०६
पर उपकार कीजिए प्रीति।बोले सांच राज की रीति।
वहुत सीख दीनी अधिकार। आपन बन पग धारो सार॥ २२०७
बन गछन जानियो नरेश। धायो पुरजन सकल अशेष।
कोउ रुदन करे बिलषाय। कोउ विहसे अति सुख पाय ॥ २२०८
कोउ कहे बुरी अति भई। चंपापुर की शोभा गई।
दयावन्त सब सुख को धाम। रूपवन्त मानों सुर काम॥ २२०९
महाबली भुजबल उनहार। दल अरु विभव चकवे चार।
राज रीति रघुवंशी राम। महिमंडल में जाको नाम॥ २२१०
जाके राज सबै सुख लहैं। कबहू दुःख दारिद्र न गहैं।
जाके राज दान सब दए। कब हूं मान हीन नहीं भए २२११

(२१०२) श्रवण = कान।
(२२०४) रसना = जबान। (२२०६) पिशुन = चुगलखोर।

जाके राज आठ मदमते। जाके राज भोग रस रते।
जाके निवह्यो कुल आचार। भामनी धरे शील को भार ॥२२१२
जाके राज न मूसे चोर। जाके राज न व्यापै खोर।
जाके राज बढो परिवार। दुःखी दीन जन को आधार॥ २२१३
ताकी कथा कहे सब कोय। ऐसो भयो न दूजो होय।
यह गुण सुमिरे अरु ललचाय। नर नारी घर घर पछताय २२१४
मैनासुन्दरी दीक्षा काज। चाली तुरत छांड सुत राज।
आठ सहस्र भामन जे आन। तेउ संग भई परवान॥ २२१५
सकल परिग्रह सुख छिटकाय। चाली श्रीपाल की माय।
अरु जे पुरवासी नरनार। दीक्षा कारण चले विचार॥ २२१६
कोटीभट बन पहुंचों जवें। महामुनीश्वर देखो तवैं।
वंदो ज्ञान धरण परमेश। लागो स्तुति जु करण नरेश॥ २२१७
जय भविजन जल रुह के भान। जय दुर्गति वारण परवान।
जय जय शिवरमणी गल हार। जय जय रत्नत्रय व्रत धार २२१८
विषय भवन चूरण गजदन्त। जय जय गुण रत्नाकर संत।
जयजयराग दोष दुख हरण। जयभवजलनिधि तारणतरण २२१९
जयजय मोह मार खग राज। जयजय कल्पतरु सुख साज।
जय जय कोह दवानल नीर। जय जय निर्नाशन भवभीर २२२०
जय जय मोह पास हत वीर। जयजय मुनि कुंजर धरधीर।
जय जय आठ कर्म कुलनास। जय जय केवलज्ञान पयास २२२१
जय जय व्रत भूषण मुनिराय। जय जय सुरनर सेवत पाय।
जय जय क्षमावन्त शुभ कंद। जयजय प्रभु नाशन भवफंद २२२२

(२२१३) खोर = दोष। (२२१८) जलरुह = कमल। भान = सूर्य। (२२१९) भवजलनिधि = संसार रूप समुद्र। (२२२०) खग राज = गरुड। कोह = क्रोध। (२२२१) कुंजर = हाथी।

दोहा

भो गुणसागर परमगुरु,शरणे आइयो तोहि।
या संसार समुद्र तें, बूडत राखो मोहि॥ २२२३

चौपाई

मोकों व्रत दीजे शुभ सार। जो चहुंगति दुःख छेदनहार।
सुन कर मुनिवर जंपे येह। धन्य तू जिस यह कीनो नेह॥२२२४
बहुरो तू अब दुःख नसहे। जामण मरण सवै ही दहे।
यह सुन श्रीपाल जिय धरो। क्षमा क्षिमंतर सब सो करो २२२५
मित्र भाव सब सो परकाश। राग रोस दोऊ जिय नाश।
फुन सेहर मणि भूषण सीस। छिन महि ताहि उतारो ईस २२२६
कंचन कुंडल दीने डार। सगरे वस्त्राभरण उतार।
पंच महा व्रत पर चित दियो। पंचमुष्टि सिरलोचन कियो २२२७
वाह्य अभ्यंतर शुध सो भयो। अति निरग्रंथ भयो ग्रंथ गयो।
जाहा सब सुख सेवन जान। तिन दिक्षा लीनी परवान॥ २२२८
कुन्दप्रभा राणी शुभ चित्त। होय अर्जिका भई पवित्त।
मैनासुन्दरी सब सुख करण। तिन दीक्षा लीनी जिनशरण २२२९
वस्त्राभरण भोग सब सर्व। छिन में छाड दीयो तिह गर्व।
रयणमंजूषा अरु गुणमाल। तिन हूं दीक्षा लई गुणाल॥ २२३०
चित्ररेख पुहमा परधान। अर जे अंतेवर कछू आन।
दीक्षा सबन लई धर भाव। माया को सव तजो उपाव॥२२३१
अवर जे हुते सात सै अंग। दीक्षा तिन हूं लई अभंग।
जे कछू राजा मित्र हैं और। दीक्षा सबन लई तिह ठौर॥ २२३२

(२२२६) सेहर = शेखर (सिरके)। (२२२७) कचन = सोनेके।
(२२२८) वाह्य = बाहिर से। अभ्यंतर = भीतर से। ग्रंथ = हृदय की गांठ।

तब श्रीपाल भ्रमें बन राय। महा मुनीश्वर भयो सुभाय।
चालो महाव्रत की छाह। इंद्रिय बन डारो छिन माहि ॥ २२३३
दिढ चारित्त धरो जिय जोय। आठवीस गुणपाल सोय।
निज पद आराधे गुण राव। भ्रमें अकेलो चित्त सुभाव ॥ २२३४
देय योग बन भीतर जाय। बहुत सहे उपसर्ग सुहाय।
धरे ध्यान अति धीरो चित्त। ठाढो मानो मेरु पवित्त ॥ २२३५
मास एक दिन लेय अहार। सहे परीषह बाईस सार।
पावस ऋतु द्रुम तल सो रहे। ग्रीषमऋतु गिरिपर दुख सहें २२३६
शीतकाल सागर के तीर। योगदेय दुःख सहे शरीर।
बहुत भई अति क्षीणी देह। छाडे सबै सुख भव नेह ॥ २२३७
हिमपटल तन छायो ताहि। सहे दुख हिये जानत नाहि ॥
एक ध्यान ठाढो सो रहे। कोऊ ताको भेद न लहे ॥ २२३८
कोऊ कहे चित्र निर्मयो। काहू ने पाषाण को चयो।
कोऊ कहे काठ की देह। मन वच क्रम ऐसो थिर नेह २२३९
बनचर जीव न भय मन धरें। तासो देह घसे सुख करें।
पंछी बैठें अरु उड जाय। ताकी संक न कछू कराय ॥ २२४०
हंसतूलकी सेजा वीर। जाहि सोवतो साहस धीर।
गिरि कंदरन शयन सो करे। कछून दुःख मन आपन धरे ॥२२४१
जो चलतो बहु दलबल साज। गय ऊपर जो चढतो गाज।
क्षण हि सुखासन चढतो राव। मही पर कबहू न देतो पाव २२४२

(२२३३) बन = समूह। डारी = वश किया।

(२२३६) पावस = बरसात। द्रुम = वृक्ष(दरखत)। गिरि = पहाड।

(२२३८) ठाढो = खडा। (२२३९) चित्र = तसबीर। पाषाण = पत्थर।

भ्रमें उघारे पांय न सोय । ताके चित्त महासुख होय ।
छत्रछांह चल तो दिन रात। रहतो सदा सुख में गात ॥ २२४३
ताके सिर पर ग्रीषम भान । महातपै को करे वखान ।
वरषा शीत परे असरार । सहे दुख बन में अधिकार ॥ २२४४
कृष्णागर बहु कुंकम गार । चरचन तन निहार निहार ।
सो तुषार छायो ता देह । तब तें अब यासो अति नेह ॥ २२४५
आठ सहस त्रिय रमतो जोय । सहे परीषा बाईस सोय ।
मन वच काय विचारे चित्त । जाने एक शत्रु अर मित्त ॥ २२४६

——⊙——
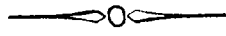
४३-श्रीपाल का केवलज्ञान पाय मुक्ति जाना

दोहा

तप करता मन शुद्ध वर, कीयो कर्म को नास ।
ताको उपजो विमलपद, केवलज्ञान पयास ॥ २२४७

चौपाई

आसन कंप देवन तनें । आये सुर सब जय जय भनें ।
धनपति निर्मायो शुभ थान । गंधकुटि रचियो परवान ॥ २२४८
कंचन मणि रत्नन सो जरी । अति रमणीक विराजे खरी ।
उभय चमर दीनो सिर छत्र । चोसंगह बंदियो महत ॥ २२४९
तीन प्रदक्षिणा दे सुरराव । लागो करन स्तुति धर भाव ।
जयजय आठकर्म निरदलन । जयजय प्रभु त्रिभुवनके शरन २२५०
जयजय श्रीमंडल परमेश । जय जय मुनिगण वन उपदेश ।
सिद्धचक्र फल पावन देव । जय सुर नर असुर कृत सेव ॥ २२५१

(२२४५)यासो = इसबरफसे २१४४ भान = सूरज २२४५तुषार = बरफ २२४८धनपति = कुबेर

जन्म जरा मृति नाशन हार। जय मिथ्यातम खंडन सार।
जयजय शुभफल चाखन कीर। जयजय प्रभु नाशनभवपीर २२५२
जयजय काम कंज हिम पूर। जय जय अघतम नाशन शूर।
जयजय पंचमहाव्रत धरण। जय जय मोहबली बलहरण॥२२५३
जय जय कोहसिंह हत वीर। जय जय धर्म धुरन्धर धीर।
जयजय चौगयकंद निकंद। जयजय जग भंजन दुहदंद॥ २२५४
जयजय अरि जीतन शुभसंत। जय जय मुकति बधूवरकंत।
जयजय चरण धराधर शेष। जय जय भासुर मनहर भेष २२५५
जयजय ज्ञान कोष मुनिराय। जय जय त्रिभुवन जीव सहाय।
जयजय सम्यक्दर्शन शूर। जयजय मोह महीरुह चूर॥ २२५६
यह विधि स्तुति करी अनिवार। इन्द्र आदि सुर नए अपार।
पणविवि सुरलोकां गए सवें। निज थानह मुनि बैठो तवें २२५७
लोकालोक पयासो सोय। निर्मल वाणी ताकी होय।
भव्य जीव प्रतिबोधे जैन। मिथ्या तिमिर बिनाशो तेन॥ २२५८
सिद्धचक्र व्रत प्रगटही करो। राग द्वेष सव ही परिहरो।
धर्माधर्म प्रकाशन संत। भाषो जिन व्यवहार महंत॥२२५९
कछुयक काल व्यतीतो जबें। कर्म घातिया चूरे सवें।
फुान श्रीपाल विमलपद गयो। अजरा अमर सिद्धसो भयो २२६०
आठ महागुण पाई सिद्धि। परमानंद लही नव निधि।
जन्म जरा तिन चूरो मरण। सो भयो स्वामी त्रिभुवन शरण२२६१
सुर नर गण गंधर्व धर भाव। आराधैं मन में कर चाव।
दशवीं सन्धि पूरण भई। मूल देख भाषा वरणई ॥२२६२

(२२५२)मृति = मरण। कीर = तोता (२२५३)अघ = पाप(२२५४) कोह = गुस्सा। चौगय = चतुर्गति।(२२५५) भासुर = दीप्तिमान। (२२५६) महीरुह = वृक्ष (२२५८) तिमिर = अज्ञान

दोहा

सिद्धचक्र व्रत प्रगट कर,पंच महाव्रत मांड।
श्रीपाल मुकतिह गयो, भवदुःख सयलविछांड ॥२२६३

छन्द त्रिभंगी

इति श्रीपाल चरित्रेमहापुराणे भव्य संग मंगल करणं
बुधजनमनरंजन पातकगंजन सिद्धचक्र विधि दुख हरणम्।
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्ल कृतं
बहु राजहि कीनो जग जस लीनो बहु विभूतिको वर्ण कहं
बसु सहसवीनारी बहु सुखकारी बहु नंदन बहु सुख लहं
पुरपाटण संचं परिग्रह गछं पंच महाव्रत सार लयं।
शुभज्ञान उपायो त्रिभुवन गायो कोटीभट सो मुक्तिगयं॥२२६४

चौपाई

अरु मैनासुन्दरी व्रत लीन। करे महातप तन अति क्षीन।
सहे परीषा कहीय न जाय। नाना विधि को कहे बनाय॥ २२६५
कंचन वर्ण देह अवतरी। कुंकम मंडित तिह पल घरी।
कामातुर रहती पिय संग। सो वन वसे सहे दुःख भंग॥ २२६६
अति सुवास कुंकुम रस गार। भूषन ही पत्रावली नार।
सरद महल रहती सुखवास। कुसम सेज सोवती उल्लास ॥२२६७
दीप जोति दहतिही जाहि। सुख लहती रतनन की छाहि।
मंदपवन वहती दिन रात। कुसमन की बीजनी सुहात॥२२६८
आप आयत्रो सिरे सुजान। दासी सेवत ही दिनमान।
मही वसन पहरती शरीर। पड़ती तहां स्वेद की नीर॥ २२६९

(२२६५) तन = शरीर। क्षीन = सूखी।
(२२६६) कंचन = सोना। (२२६७) कुसुम = फूल। (२२६८)स्वेद = पसीना।

अंजन मंजन भूषण साज। तन भूषण धरती पिय काज।
अंबुज दल रहती कर लिये। रहती पद पालिक पर दिये ॥ २२७०
खाती अति सुगंध बनसार। सोभी तप करती अतिभार।
सो ठाढी गिरि पर सुकमाल। सिरपर तपै भान तिहूकाल ॥२२७१
भूपर भूल न धरती पाव। कोमल कमल नयन अधिकाव।
दासी लावती पोहपकीमाल। अतिशरीर कोमल मन भाव॥२२७२
सिद्ध वरत उत यह की वार। महि ऊपर सुवती शुभसार।
तब पग देती मनो रसाल। श्याम वरण छिप तो बहुभाल॥२२७३
यह विधि जिन चैत्यालय जाय। मुनिवन्दती सयल सुख पाय
अब सो बन मारग पग धरे। ग्रीषम ऋतु सरता पर जरे॥२२७४
सरद सोम सम वदन विगास। यों मन करती पोष उपास।
ग्रीष्म महल माहि परभात। हो तो मलिन शीत को गात॥ २२७५
हिमपटलन कर छायो सोय। पांडुरवरण कहे सब कोय।
यह विधि कष्ट सहे वरनार। नाना विधि को कहे बिचार॥२२७६
संन्यास हि तन तजो शरीर। स्त्री परयाय उच्छेदो धीर।
अच्युत स्वर्ग देव भयो तेह। अपचर कोटीभई ता गेह॥ २२७७
बाईस सागर आयु प्रमाण। विलसे सुख को कहे बखाण।
बहुरो चय जय है शिव थान। व्है है सो परमेस प्रमान॥२२७८
कुंदप्रभा राणी शुभ चित्त। उसही विधि तप करती नित्त।
तन छाडो सन्यासही जाय। वैही स्वर्ग भयोसुर सोय॥२२७९
रयनमंजूषा तप अति करो। पहुंची स्वर्ग महा सुख धरो।
करो महातप और जे नार। शुभगति सब को भई विचार॥ २२८०

(२२७०) अञ्जन = सुरमा।
अंबुज = कमल। (२२७१) सुकमाल = नाजुक। (२२७६, पांडुर = पीला,

यह श्री सिद्धचक्र फलसार। जो भव दुख बिनाशन हार।
सब ही जीवन को है शरण। जन्म जरा नाशन शुभ करण॥२२८१
भो मगधेश सुनो धर भाव। यह श्रीसिद्धचक्र व्रत ध्याव।
ऐसी विधि श्रेणिक नरपार। गणधर पै सुनियो शुभसार॥२२८२
मनमें गहो व्रत धर भाव। नाना विधि मन उपजो चाव॥
करे राज सो इंद्र समान। कीरति महीमंडल परवान॥२२८३
मनवचक्रम बंदो जिन नाह। पहुंचो नगरी बधो उछाह।
हय गय रथ अरु दासी दास। अतुल लछ अरु भोगविलास॥२२८४

दोहा

भुंजो सुख संसार को, श्रीपाल इंद्र समान।
सिद्धचक्र विधि पालकर, पहुंचो मुक्ति विलान॥ २२८५

चौपाई

अरु नरनारी उत्तम लोय। सिद्धचक्र आराधै कोय।
मन को भरम देय छिटकाय। पूजे जंत्र हि थिर मन लाय॥२२८६
जल गंधाक्षत पुष्प अनूप। नेवज दीपक अरु शुभ धूप।
फल नाना विधि अर्घ चढाय। अष्ट प्रकारी पूज कराय॥ २२८७
ताके रोग शोक नहीं रहे। अरु सब दुःख दालिद्र हि दहे।
पुत्र कलत्र वियोग न होय। भूत पिशाच न दुखवे कोय॥२२८८
डायण सायण योगनी जात। जे मसान गाहें दिन रात।
इन को भय नाहि संचरे। जो कोऊ सिद्धचक्र व्रत करे॥ २२८९
नयन निरंध नयन द्वय लहे। रसना हीन वेद पढ कहे।
श्रवण हीन सब सुने सरूप। कुष्टी तन सो होय अनूप॥ २२९०

(२२८२) मगधेश = हे श्रेणिक। (२२८७) नेवज = नैवेद्य। (२२८८) कलत्र = स्त्री
(२२९०) रसना = जिव्हा। श्रवण = कान।

कनक वरण तन ताको होय। मन वच क्रम व्रत पाले जोय।
सुख अपार भुंजे संसार। पावे हय गय अगन अपार ॥ २२९१
पावे रतन हीरमणि चन्द। पावे हेम प्रेम सुख कन्द।
अंतेवर अप्सर उनहार। पावे मन वंछित शुभ सार ॥२२९२
होय दास अरु दासी घने। सेवें पति महीमंडल तनें।
दंत गहें ते माने हार। आयस नेकन सकहि टार ॥ २२९३
भुंजे सुख जो मन में धरे। इन्द्र समान राज सो करे।
अति महिमा को कहे बढाय। निश्चयसो नरमुक्ति हि जाय २२९४
श्रीपाल जैसो फल लहो। कवि परिमल्ल प्रगट कर कहो।
भविजन सुने सकल जिय जान। यह व्रत आराधे परवान ॥ २२९५
एक चित्त राखो मन ध्यान। सुख निधि उपजे जैसे ज्ञान।
या संसार सयल सुख लहे। बहुरो मुक्ति पाय दुख दहे ॥२२९६

शार्दूलविक्रीडित छन्दः

उग्रंगोपगिरिं च दुर्गमगढं रत्नांबरं भूषितं
यं घोरं कृति मध्वरं मदगलं पाषाण ऐरावतं।
तन्मध्ये श्रीमानसाह्विधयते भूलोकवरविद्यते
तद्राज्यं सुरनाथ तुल्यगदितंतत्केनसंवर्ण्यते २२९७
मत सजलहर जात कुशलो नाम्ना चंद्रानयं
तत्पुत्रो गुरुरामदास विपुलो भुक्तांतु भोग्यं सदा।

(२२९१) कनक = सोना। (२२९६) सयल = सकल।

तत्सूनुःकुलदीपवस्तुप्रगटनामासकरणाशुभं
तत्पुत्रःपरिमल्लधर्मसदनंग्रन्थोहितेनक्रियते

चौपाई

गोपागिरगढ उत्तम थान। शूरवीर जह राजामान।
ता आगे चंदनचोधरी। कीरति सब जग में विस्तरी॥२२९९
जाति वरैया गुणह गंभीर। अति प्रताप कुल रंजन धीर।
ता सुत रामदास परवान। ता सुत अस्ति महासुर ज्ञान॥ २३००
तास कुल मंडन परिमल्ल। बसे आगरामें अरि सल्ल।
ता सम बुद्धिहीन नहि आन। तिन सुनियो श्रीपाल पुरान २३०१
ताकी छाह कछु मति भई। यह श्रीपाल कथा वरणई।
नवरस मिश्रित गुणह निधान। ताको चौपाई कियो वखान २३०२
होय अशुद्ध जहां पद हान। फेर सवारो कवियन जान।
बार बार जंपू कर जोर। बुधजन मोह देहु मत खोर॥ २३०३
बन्दूं जिनशासन को धर्म। जा पसाय नाशै अधर्म।
बन्दूं गुरु जे गुणके मूर। जिनसे होय ज्ञानको पूर॥ २३०४
बन्दूं सारदा जो जिन भनी। जानें सुमति होय अति घनी।
बन्दूं मुनिवर जे गुण धर्म। नव रस महिमा उदित कर्म॥ २३०५
बन्दूं सज्जन कुल सुख धाम। बन्दूं धर्म वुद्धि वरनाम।
जयवन्तोअकब्बर सुलतान। महिमा सागर महा सुजान॥ २३०६
जाके हृदय दया को वास। जीवन कबहू देय न त्रास।
तामें एक अपूर्व रीति। सुरभी सो अति राखे प्रीति॥ २३०७

(२३००) सुत = पुत्र। (२३०२)छाह = आश्रय। (२३०३) पदहानि = पदों (लफजों) की चूक। खोर = दोष। (२३०४)मूर = मूल कारण। (२३०७) त्रास = भय। सुरभी = गांय

सुख से जल पीवे तृण खांय। अपने मारग आवें जांय।
तिन की शंक सिंह मन धरे। अकबर के आयस तें डरे ॥२३०८
नृप अनेक सेवें दरबार। दुःखी दीन जन को आधार।
सुखी भए जिन सेये पाय। विमुख भए दुख लहें अघाय॥ २३०९
परनारी परधन अति आहि। तिन पर कोऊ सकयन चाहि।
सत्य राज महि मंडल तेज। सरपति हूं थे अधिक मजेज॥ २३१०
जाके नये साके बर नये। विक्रम भोज सबै छिप गये।
बसो नगर आगरो थान। जंबूद्वीप में प्रगट प्रवान॥ २३११
चहुंधा बन उपवन अति बने। नाना भाँति महीरुह घने।
अति उतंग गिरवर सम गेह। कंचनमय अति मंडित तेह॥ २३१२
अति रमणीक सुहट्टबाजार। बसे तहां चहू संग अपार।
तिन के विभव अंत को लहै। दरशन दारिद मारग गहै॥२३१३
जीव दया पाले दुख हरे। अशुभ बोल कबहूं न उच्चरे।
आप आपने बित सब सुखी। कर्म्म योग शक्ति नर दुखी॥२३१४
तहां कथा यह पूरण भई। कवि परिमल्ल अर्थ ले कई।
अल्प बुद्धि में कियो बषान। फेरि सवारो गुनियन जान॥२३१५
थिर मन कथा सुने जो कोय। मन वांछित फल पावे सोय।
अरु जो पढे पढावे कहे। ताके पोते अशुभ न रहे॥ २४१६
अरु जो नर नारी ब्रत करे। सो चहुंगति को भरमन हरे।
भव्यन को उपदेश बताय। निहचै सो नर मुक्ति हि जाय॥ २३१७

॥ इति श्रीपालचरित्र सम्पूर्णम् ॥

(२३१०) सरपति = इन्द्र।
(२३१७) भरमन (भ्रमण) = जन्म मरण रूपसे फिरना। हरे = नाश करे है।

सूचीपत्र।

यह पुस्तकें हमारे यहां बिकती हैं

हमारी छपवाई पुस्तकों के नाम

श्री मोक्षमार्ग प्रकाश हिन्दी भाषा २॥)
तथा जिल्द सहित ... ... २॥।≠)
श्रीआत्मानुशासन हिन्दी भाषा २)
तथा जिल्द सहित ... ... २।/)
श्री पद्मपुराण हिन्दी भाषा वचनिका महान् ग्रंथश्लोक २३०००बिना जिल्द ६)
तथा अंगरजी मुनहरी जिल्द सहित ७)
इन में से कमीशन नहीं काटा जावेगाबिना जिल्द के पूरे ६) देने होंगे क्योंकि इसका असली दाम बिना जिल्द के ८) जिल्द सहित के ९)रु० हैं।
एकी भाव भाषा संस्कृत ... ..)॥
निर्वाणकांड भाषा ... ...)।
भक्तामर भाषा और संस्कृत ... /)॥
सामायिक भाषा ... ...)॥।
विषापहार भाषा और संस्कृत ...)॥
जैनशास्त्रोच्चारण भाषा ... ... ॥
व्याहलाबारहमासानेमिनाथराजलभाषा /)।
बारहमासासीता (सीताकारुदन)भाषा)॥।
शिखरमाहात्म्यसार(फलयात्राशिखर))॥
चार पाठ संग्रह १ कल्याणमंदिर २ भोपाल चौबीसी ३ जिनगुणमुक्तावली ४ सोलह कारण भावना भाषा ... ... /)
इष्टछत्तीसी(पंचपरमेष्टीके१४३मूलगुण)।
निर्वाणकांड गाथा ... ...)।
बारहमासा वज्रदंत भाषा ...)॥
पंचमंगलप्रच्छालन विधिमंत्रसहित /)।
जैनसहस्रनाम ... ...)॥।
कर्मचरित्रसार भाषा ... .. ≠)
जैनपद संग्रह मंगतराय कृत ... /)
अध्यात्म पंचासिका भाषा ... ...)।
धर्मपचीसी भाषा ... ...)।
तत्वार्थ सूत्र मूल संस्कृत संपूर्ण /)
जैनपद संग्रह मंतलालकृत ... /)
जैनदिगम्बर मतके ३०५ भाषा जैनग्रंथों की नामावली /)
जैनतीर्थयात्रा (घरका डाकटर) हिन्दुस्तान के कुल जैन तीर्थों का मार्ग और अनेक डाकटरों और हिकमतके बडे बडे तजरबे कार नुसखों सहित ... ... ॥।)
यमनसेनचरित्र १३२ पृष्टों पर श्री मुनियमनसेनका वृत्तान्तपूजनपदलावनी मुनिवरके आहारकी विधिविदल रसवगैर का वर्णन सहित ... ... ।)
तथा जिलद सहित ... ... ।)॥
२ प्रकार की बारह भावना संग्रह)॥
२ प्रकार की परमार्थजकडी संग्रह)॥
सूरत की बारहखडी ... ...)॥।
शीलकथा भाषा छंदबंद कठिनशब्दों के अर्थ सहित ... ।/)
श्रीपालचरित्रभाषाचौपाई बंदकठिनशब्दों के अर्थ सहित ... १॥)

दूसरों की छापी पुस्तकें।

न्यायदीपिका संस्कृत .. .. ।।।)
भक्तामर संस्कृत भाषा अर्थ सहित ।)
धर्मपरीक्षा .. .. १।(
विवाह पद्धति ।।।)
चर्चाशतक भाषा १।।)
ब्रह्मविलास पंडित भैयाभगवतीदासकृत भाषा दोनों भाग १।।)
सुकुमाल चरित्र भाषा ... ... ।।।)
उपदेशसिद्धांतरत्नमालाहिन्दीअर्थसहित ।।)
द्वादश अनुप्रेक्षा भाषा ... ... ।≠)
सुधारादर्शकनारायणहीराचंदकृतभाषा ≢)
पार्श्व पुराण हिन्दी भाषा छन्दबन्द १≠)
तथा जिलद सहित ... ... १।≠)
जिनदत्त चरित्रहिन्दी भाषा छन्दबन्द १)
सूक्तमुक्तावली भाषा बनारसीदास कृत ।)
पूजनचौबीसीपाठवृन्दावनकृतभाषा ।।≠)
बारहमासा मुनिराज भाषा ... ⁄)
मिथ्या प्रचार भाषा ... ... ⁄)
घरका दरजी कपडे का ब्योंत सिखाने वाली पुस्तक हिसाब और चित्र सहित ।
नारी रोगदर्पण गर्भाधान संबंधी स्त्रियों के रोगों का इलाज ... ... ।)
ज्ञानानंद रत्नाकर बडी नई छापी हुई इस मे मुनशी नाथूराम कृत जैनलावनी पहले दोनों भाग वाली और बहुत सी नई छपी हैं ... ... ।।)
जैनव्रत कथा नव रत्न भाषा जिस में। १ ऋषिपंचमी व्रत कथा २ सुगंध दशमी व्रत कथा ३ अनंतचौदश व्रत कथा ४ रत्नत्रय व्रत कथा ५ दशलक्षणव्रत कथा ६ मुक्तावली व्रत कथा ७ रविव्रत कथा ८ पुष्पांजली व्रत कथा ९ नंदीश्वर व्रत कथा यह९कथा हैं।⁄)
निशि भोजनव्रत कथा भाषा बडी ≢)
दान कथा बडी भाषा ... ।)
रक्षाबन्दन कथा ... ⁄)।।
रविव्रत कथा बडी ... ⁄)।
जम्बूस्वामी चरित्र भाषा ... ।⁄)
चेतन चरित्र भाषा .. ≢)
छहढाला द्यानत अर्थ सहित भाषा ≠)
छहढाला बुधजन अर्थ सहित ≠।।
स्वानुभव दर्पण भाषा ... ।)
तत्वार्थसूत्र भाषा बचनिका ... ।)
स्तोत्र संग्रह भाषा ... ... ⁄)
होली संग्रह भाषा ... ... ⁄)
बीनती संग्रह भाषा ... ... ⁄)
उपदेश और पुकारपचीसी ...)।।।
साधु बंदना ... ...)।।
भाषा पूजन संग्रह ... ... ।।)
फारसी अक्षरों में उर्दू जैन इतिहास १)
जैन दूसरी पुस्तक नाथूराम कृत ।≠)
संगीतमाला जिसमें जैनधर्म के बडे २ कवियों के पदों में से गाने के लायक १०० पद छांटकर छपे हैं ... ≠)।।
पद्मनंद पचीसी मरहटी और हिन्दी अर्थसहित ... २।।)

☞ मिलनेकापताः—

बाबू ज्ञानचंद्र जैनी

मालिक दिगंबरजैनधर्म पुस्तकालय लाहौर

विषय सूची।

॥ ऊँनमः सिद्धेभ्यः ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

ऊँकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ऊँकाराय नमो नमः॥१॥ अविरलशब्दघनौघ प्रक्षालितभूतलमलकलङ्का मुनिभिरुपासिततीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितम्।२। अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।३। परमगुरवे नमः। परम्पराचार्यगुरवेनमः॥ सकलकलङ्कविध्वंसकं श्रेयसांप्रवर्द्धकं धर्मसम्बन्धकं भव्यजीव प्रतिबोधकारकमिदं शास्त्रं श्रीपाल चरित्रनामधेयं। तस्य मूलकर्तारः श्रीसर्वज्ञदेवाः तदुत्तरकर्तारः श्रीगणधरदेवाः तेषां बचनाऽनुसारमासाद्याचार्यैः विरचितम्। तदनुसृत्य भाषायां परिमल्लकविना प्रणीतम्। मङ्गलं भगवान् वीरोमङ्गलं गौतमोगणी। मङ्गलं कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मस्तु मङ्गलम्। वक्तारःश्रोतारश्चसावधानतया कथयन्तुशृणवन्तु।